Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रज चन्द्र विनोद

(उत्तरार्द्ध)

किशोर चन्द कपूर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रज चन्द्र विनोद

(उत्तरार्द्ध)

किशोर चन्द कपूर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आपकी
आध्यात्मिक
उत्प्रेरणा
हेतु
सादर
समर्पित

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रज-चन्द्र विनोद

उत्तरार्द्ध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रज-चन्द्र विनोद

उत्तरार्द्ध

कृतिकार

किशोर चन्द कपूर "किशोर"

☆

"स्कैन्ड / Scanned"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुस्तक	:	ब्रज-चन्द्र विनोद (उत्तरार्द्ध)
कृतिकार	:	किशोर चन्द कपूर "किशोर"
प्रकाशक	:	मोहन चन्द्र कपूर, एडवोकेट मदन चन्द कपूर 'हींगवाला' ३१/११६, लाठी मोहाल, कानपुर-०१
संस्करण	:	द्वितीय, १६६६
मूल्य	:	१२०.०० (एक सौ बीस रुपये मात्र)
शब्द सज्जा	:	आशीष ग्राफिक्स, जूही, कानपुर
मुद्रक	:	अजित आफसेट, रामबाग, कानपुर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्मतियाँ

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी

(अध्यक्ष हिन्दी विभाग)

सागर विश्वविद्यालय, सागर

कानपुर के कवि समाज के सम्मिलन-केन्द्र के रूप में श्री किशोरचन्द्र कपूर का निवास स्थल चिर-प्रसिद्ध है इस नगर की साहित्यिक एकसूत्रता अनेक अंशों में श्री कपूर की सहृदयता और काव्य प्रेम का परिणाम है । श्री कपूर विशेषतः महाकवि 'सनेही' के स्नेह-पात्र रहे हैं और उनकी प्रेरणा से उन्होंने कुछ साहित्यिक कृतियाँ भी प्रस्तुत की हैं, जिनमें से अद्यतन कृति 'ब्रजचन्द्र विनोद' है, जिसके लिए मैं कुछ आरम्भिक शब्द लिख रहा हूँ । श्री कपूर की यह कृति मुख्यतः धार्मिक है और सरल भाषा, सरल छन्दों में, सर्वजन हिताय प्रस्तुत की गई है । श्री कपूर स्वयं धार्मिक प्रवृत्तियों के एक सच्चे कर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं, अतएव उनकी इस कृति में उनके हृदय की धार्मिक भावना उभर आई है । इस ग्रंथ में कृष्ण चरित्र के प्रायः सम्पूर्ण पक्ष अभिव्यक्त हुए हैं, अतएव दैनिक पारायण के लिए यह पुस्तक अतिशय उपयोगिनी है । इसमें कवि ने जो सहज श्रद्धा-भावना कृष्ण के महान चरित्र के प्रति आद्यंत व्यक्त की है वह इसे धार्मिक प्रकृति के पाठकों के लिए विशेष रूप से प्रेरणाप्रद बना देती है । हिन्दी कवियों के साहचर्य में निरन्तर रहने के कारण श्री कपूर ने काव्यात्मक गुणों का भी इस पुस्तक में नियोजन किया है, जिससे यह और भी सुपाठ्य बन गई है । मैं इस पुस्तक का अभिनन्दन इसके उद्देश्य और उपयोगिता के महत्व को ध्यान में रखकर कर रहा हूँ । मुझे आशा है कि श्री कपूर की लेखनी से भविष्य में और भी समृद्ध कृतियाँ निःसृत होंगी ।

२०-५-६२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

डॉक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

श्री किशोरचन्द जी कपूर 'किशोर' का 'ब्रजचन्द्र विनोद' मिला । मुझे अतीव प्रसन्नता हुई इस रुचि रुचिर रम्य रचना को पढ़कर । दोहा-शैली आपकी बड़ी ही प्रवाह-पूर्ण और धारावाहिनी है । दोहा छन्द प्रायः मुक्तक काव्य में ही विशेष रूप से प्रयुक्त किया गया है और ऐसा विचार भी है कि छोटे-छोटे भावों और सामान्यतया मृदुल भावनाओं के लिए यह छन्द अधिक समीचीन है, विशेषतया नियम ग्रन्थों में नियम-निर्देशार्थ इसका प्रयोग किया गया और अद्यापि किया जाता है । आपने इसका बड़ा ही सुन्दर उपयोग प्रबन्ध या कथाकाव्य में किया है । सतसई रचना में दोहों का ही प्राधान्य रहा है और कथाकाव्य में इसका उपयोग इतने विशद् रूप में ऐसी चारुता के साथ देख सराहना करते ही बनती है ।

इसके साथ ही प्रबन्ध या कथा की धारावाहिकता में किसी भी प्रकार की ऊनता नहीं आ सकी । यह और भी श्लाघ्य है इससे आपके इस छन्द में चिराभ्यास का पता चलता है ।

भाषा सर्वत्र बहुत ही सरल सुबोध तथा स्पष्ट है साथ ही यथेष्ट सरसता और भावानुकूलता भी रखती है । शैली भी सरल-सरस और सुन्दर है । समासाल्पता तो इसे और भी अधिक सुबोध और स्वाभाविक बनाती है ।

सारी रचना रस-संसिक्त है । रस-प्रवाह भी बराबर चलता रहता है और सहृदयता को स्पष्टतया सूचित करता है । आपका भक्त हृदय, सर्वत्र निखर और बिखर रहा है । रचना में अलंकार-योजना भी स्वाभाविक और नितांत उपयुक्त है ।

इस पर आपको साधुवाद न देना वस्तुतः अन्याय करना है । मैं पुनः आपको इस श्लाघ्य रचना के लिए हार्दिक बधाई देकर अपनी प्रसन्नता प्रकट करता हूँ ।

इलाहाबाद

ता० २२-१-६२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महर्षि जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल वैद्य

आयुर्वेद पञ्चानन, साहित्यवाचस्पति, प्रयाग ।

श्री किशोरचन्द्र जी कपूर 'किशोर ने श्रीमद्भागवत औ. 'महाभारत' के प्रसंगों का आधार लेकर कृष्ण चरित्र की मधुर महाकाव्य रूप में रचना की है और वह पुस्तक प्रेस में छप रही है । मुझे उसके कुछ मुद्रित और कुछ हस्तलिखित अंशों को देखने का सुअवसर मिला । आपने दोहों की रचना में अच्छी सफलता और कौशल प्राप्त किया है । श्रीमद्भागवत और महाभारत के अंशों का हिन्दी अनुवाद तो प्रेमसागर, शुकसागर आदि के रूप में प्रसिद्ध हो चुका है किन्तु इसकी पद्यबंध रचना न होने से पाठकों की अनुरक्ति और आकर्षण जैसा होना चाहिए वैसा नहीं हो पाता । मुझे आशा है कि श्री 'किशोर' जी की कृति 'ब्रजचन्द्र विनोद' ऐसे आकर्षण को केन्द्रित करने में सफलता प्राप्त करेगी ।

मुरलीधर की मुरली-वादन-पटुता, चन्द्र खिलौना माँगने का हठ, कृष्ण की विद्या प्राप्ति, सुदामा-कृष्ण मिलन आदि प्रसंग बहुत मधुर एवं आकर्षक बन पड़े हैं । यों तो नन्दकिशोर और देवकीनन्दन की सभी लीलाएँ भक्ति और प्रेम से सराबोर बन सकी हैं और सभी में आपकी वर्णन-कुशलता और सुरुचि का परिचय मिलता है । स्थान-स्थान पर आपकी स्वतंत्र वर्णन-शैली और रहस्योद्घाटन-पटुता का परिचय मिलता है । जहाँ-तहाँ प्रसंग के ढंग को आपने ऐसा रूप दिया है कि कथा की मनोहारिता बढ़ गयी है । मैं इस सफलता के लिए 'किशोर' जी को बधाई देता हूँ ।

कथा प्रसंग ही नहीं ज्ञानस्रोत का प्रवाह भी वैसा ही स्वाभाविक और मनोहर बन पड़ा है । श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद जैसा सरस और विषय के स्वरूप को स्पष्ट करने वाला है उससे मुझे विश्वास है कि पाठक को संस्कृत का अर्थ समझते और हिन्दी काव्य का रसास्वादन करते हुए उसे हृदयंगम करने में अधिक सुविधा होगी । मुझे आशा है कि यह 'ब्रजचन्द्र विनोद' ब्रजचन्द्र के चरित्र को चन्द्रप्रकाश के समान सुखद और मानसिक विनोद-वर्धन में सहायक होगा । हिन्दी में यह अपना उचित स्थान प्राप्त करने में सफल हो, यही मेरी मानसिक अभिलाषा है ।

भाद्र शुक्ल ११, सं० २०१८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

डा० मुंशीराम शर्मा
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डी० ए०-वी० कालेज, कानपुर ।

यह युग विज्ञान का युग है जिसने प्रकृति के रहस्यों के उद्घाटन के साथ उसके अणु को भी चीर-फाड़कर अद्भुत शक्ति का चमत्कार प्रकट किया है । अपने विलक्षण आविष्कारों के लिए यह युग इतिहास में महाभारत के समान ही प्रसिद्ध रहेगा । भूमि एवं अन्तरिक्ष की माप ही नहीं, लोक लोकान्तरों में, ग्रह-ग्रहान्तरों में भ्रमण की चर्चा भी आज सर्वत्र हो रही है । चन्द्र और शुक्र में पहुँचकर वहाँ की भौगोलिक एवं मानवी परिस्थितियों से परिचय प्राप्त करने के लिए आज का वैज्ञानिक आतुर हो रहा है ।

ऐसे युग में अपने प्राचीन कथानकों का विस्मृत हो जाना आश्चर्यजनक नहीं है । नवीन मान्यताओं के वृद्धि-वेग में पुरानत मान्यताओं का लुप्त हो जाना सुगम है । पर यह सत्य है कि पुरातन से एकान्त विच्छिन्न होकर नवीन में साधार प्राण-प्रतिष्ठा नहीं हो सकेगी । परम्परा की कड़ी जुड़ी रहनी चाहिये, अन्यथा परम्परा का अर्थ ही नष्ट हो जायगा ।

परम्परा की रक्षा के लिये नवीन को प्राचीन से संयुक्त रखना आवश्यक है । दोनों के हित में भी इसकी अपेक्षा है । उपेक्षा दोनों के लिये अनिष्ट कारिणी है । पर यह कार्य भी सरल नहीं, सहज साध्य नहीं, दुष्कर और दुराराध्य है । उल्वण-रहित श्रृंखला बिना तार टूटे बढ़ती चले, इसके लिये वैयक्तिक एवं सामाजिक उभय प्रयत्न चलने चाहिये । जो व्यक्ति और जो समाज जितना ही अधिक जागरूक होगा उसमें उस प्रकार की योजना उतनी ही अधिक बलवती होगी ।

ब्रजचन्द्र विनोद में इस परम्परा को सुरक्षित रखने का प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है । उसमें श्रीमद्भागवत एवं महाभारत की कहानियाँ सरल भाषा में सरल छन्द में, सरल शैली में वर्णित हुई हैं । कविवर श्री किशोरचन्द कपूर ने इन कहानियों के माध्यम से अपनी भक्ति भावना का अभिव्यंजन तो किया ही है, कहानियों को वैज्ञानिक आवरण देकर उन्हें इस युग के अनुकूल बनाने की भी चेष्टा की है । सुदामा चरित्र के आख्यान में महारानी रुक्मिणी द्वारा चावल की पोटली के हरण में जिस बुद्धि-वैभव एवं कलाकौशल का प्रयोग हुआ है, उसने आख्यान को भाव-गत दोषारोप से बाल-बाल बचा दिया है और दाम्पत्य-विनोद के साथ भक्ति-भावना की संवर्धना भी की है । अन्य आख्यानों में भी कवि ने अपनी इसी वैयाश्चिती वृत्ति से कार्य लिया है । वर्तमान सन्तति ऐसे ग्रन्थों को पढ़कर अपनी पुरातन से तो परिचित होगी ही, उसे इस अध्ययन द्वारा अपने भाव एवं विचारों के परिष्कार में भी अनुपम सहायता प्राप्त होगी ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रजचन्द्र विनोद की भाषा ब्रज एवं खड़ी दोनों बोलियों का सम्मिश्रण है । परम्परा की रक्षा इस रूप में भी हुई है । क्रिया पद बढ़ाय, दर्शाय, आयकै, लैंय आदि के साथ गिर पड़ा, भीग गई, छिप गये, आदि खटकते नहीं । तुक मिलाने में अरबी, फारसी के शब्द भी यथास्थान आ गये हैं । बर्फ के साथ तर्फ, हर्फ, विद्वान के साथ इन्सान, नीर के साथ तस्वीर आदि के प्रयोग सरल हिन्दी की दृष्टि से क्षम्य एवं ग्राह्य हैं । ऐसे प्रयोग संख्या में अधिक भी नहीं हैं । सामान्य रूप से भाषा का रूप रुचिकर है ।

श्रीकृष्ण चरित का लीला गायन इस युग में कवि श्रेष्ठ श्री मैथिलीशरण गुप्त के 'जय भारत' में तथा पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र के 'कृष्णायन' में विशेष रूप से हुआ है । 'जय भारत' खड़ी बोली में है तो कृष्णायन ब्रज-प्रधान अवधी में जो हिन्दी साहित्य के मध्ययुग की विशिष्ट साहित्यिक भाषा रही है । गुप्त जी भाव एवं भाषा दोनों के धनी एवं कुशल प्रयोक्ता हैं । पर जो काव्य-प्रौढ़ि कृष्णायन में परिलक्षित होती है, वह अपने में अभूतपूर्व है । किशोर जी का 'ब्रज-चन्द्र विनोद' दोनों की मध्यवर्ती कड़ी है ।

'किशोर' जी की साहित्य साधना उनकी परिनिष्ठित भक्तिभावना से मिलकर चली है जिसने सोने में सुगन्ध का कार्य किया है । कितनी लगन और कितने धैर्य के साथ उन्होंने भगवती वाग्देवी की उपासना की है, यह ब्रजचन्द्र विनोद की पंक्ति-पंक्ति से प्रकट होता है । ऐसे विशाल काव्य ग्रन्थ को देकर कवि तो अमर यश का भाजन बनेगा ही, पाठक भी उसे पढ़कर जनमेजय के शब्दों में कहने लगेंगे -

'नाहितृष्यामि श्रृण्वानः पूर्वेषांचरितंमहत्' सुनाइये, सुनाइये, पूर्वजों के महतचरित्रों के श्रवण से मैं तृप्त नहीं हो रहा हूँ । सुनने की अभिलाषा अधिक से अधिक जागृत होती जाती है ।

मैं श्री किशोरचन्द्र जी कपूर को ऐसे सरल एवं सरल काव्य के प्रणयन पर साधुवाद देता हूँ ।

१५-८-६२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

डा० सतीश चन्द्र चित्रे डी० साई०

साहित्यालंकार, एम० ए० (अ०), एम० ए० (फिला०), एम० एस-सी० एच०, बी० एस-सी० (एग्री) कोमेन्डोरो डी० लिट्०

मैं तो यह अपना सौभाग्य ही मानूंगा कि मुझे आदरणीय श्री किशोर चन्द्र कपूर की ब्रज-चन्द्र विनोद भाग १ तथा भाग २ कहीं-कहीं से पढ़ने का मौका मिला-पढ़ने के बाद मुझे लगा, कि जब तक किसी मनुष्य के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार उसे भगवान का कृपा पात्र नहीं बना देते तब तक मनुष्य तथा ऐसा सरस महाकाव्य लिख दे और वह भी योगीराज भगवान कृष्ण पर, और दोहों में जो प्रचलित छन्द होते हुये भी गागर में सागर भरने के समान है ।

यों तो भगवान कृष्ण के जीवन की घटनायें बिखरी बिखरी कई जगह पडी थीं पर यहां जन्म से लेकर महा प्रयाण तक की गाथा एक ही जगह मिल जाती है-मैं तो उस लगन और धैर्य की सराहना करता हूँ जिसका सम्बल न छोड़कर किशोर जी ने यह श्रेष्ठ कार्य समाप्त किया होगा ।

मैं किशोर जी को साधुवाद देता हूँ- उनके प्रयास की सराहना करता हूँ और उनकी भगवान कृष्ण के प्रति जो निष्ठा है, उसके आगे मस्तक झुकाता हूँ- मैं चाहता हूँ यह मधुर कृष्ण की भावमय कथा सभी के घरों में पहुँच जाये, क्योंकि यह इतनी सरल लिखी गई है, कि हमारी माँ, बहनें और हमारे बच्चे, सभी इसे पढ़ सकेंगे, समझ सकेंगे और यह महाकाव्य हमारे जीवन को कितना कुछ नहीं बना देगा इसमें सन्देह नहीं।

मैं भगवान से यही प्रार्थना करूँगा कि वह उन्हें प्रेरणा दे कि वह कुछ और ग्रंथ भी इसी प्रकार के देकर माँ भारती के गौरव के भागी बनें ।

१८-८-१९९२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रज-चन्द्र विनोद भाग २

कथा-सूची

क्र० सं०	नाम कथा	पृष्ठ संख्या
१.	मङ्गलाचरण	१३
२.	ऊषा अनिरुद्ध विवाह	१४
३.	पौण्ड्रक बध	३०
४.	नारद का द्वारकापुरी जाना	३४
५.	श्रीकृष्ण का आदिक कर्म और सुधर्मा सभा में जाना (राजसूययज्ञ)	३६
६.	शाल्व बध	५५
७.	दन्तवक्र और विदूरथ बध	५६
८.	सुदामा चरित्र	६०
६.	सर्वग्रास सूर्य्य ग्रहण	७७
१०.	राजा युधिष्ठिर का द्यूत युद्ध और बनवास	८८
११.	भगवान श्रीकृष्ण का दूत बनकर हस्तिनापुर जाना	११५
१२.	कुरुक्षेत्र में युद्ध के लिए राजाओं को आमन्त्रित करना	१२५
१३.	श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीतोपदेश	
	प्रथम अध्याय	१३०
	द्वितीय अध्याय	१३४
	तृतीय अध्याय	१४३
	चतुर्थ अध्याय	१४८
	पाँचवाँ अध्याय	१५४
	छठा अध्याय	१५८
	सप्तम अध्याय	१६५
	अष्टम अध्याय	१६८
	नवम अध्याय	१७२
	दशम अध्याय	१७७
	ग्यारहवाँ अध्याय	१८१
	बारहवां अध्याय	१८८
	तेरहवां अध्याय	१६१
	चौदहवां अध्याय	१६५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

	पन्द्रहवां अध्याय	१६८
	सोलहवां अध्याय	२००
	सत्रहवां अध्याय	२०४
	अठारहवां अध्याय	२०८
१४.	भीष्मपितामह का युद्ध व शरशय्या पर सोना	२१७
१५.	श्री द्रोणाचार्य का सेनापति होना	२२६
१६.	चक्रव्यूह में अभिमन्यु	२४१
१७.	कर्ण का सेनापतित्व	२६८
१८.	शल्य का सेनापतित्व	२७७
१६.	अश्वत्थामा का सेनापतित्व	२८५
२०.	श्रीकृष्ण को गान्धारी का शाप	२६३
२१.	भीष्मपितामह का उपदेश	३०१
२२.	स्वधाम प्रयाण	३१०
२३.	लेखक परिचय	३१८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

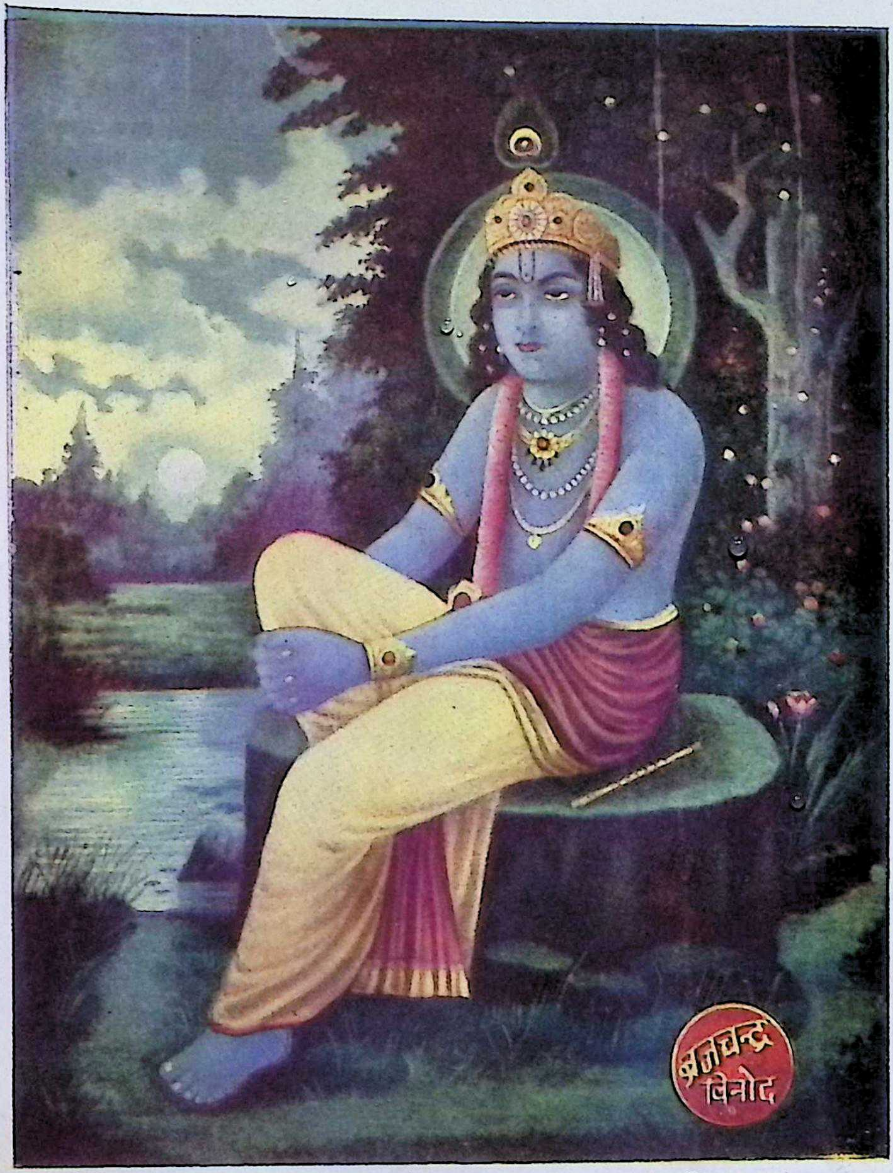

निराकार साकार हरि, परब्रम्ह निशकाम ।
द्वारिकेश यदुनाथ जै, योगिराज घनश्याम ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मङ्गलाचरण

गणपति पितु गिरिजापती, शंकर परम उदार ।
जगत्पिता भगवान शिव, नन्दी पर असवार ॥१॥
मुण्डमाल गल सोहती, कर डमरू तिरशूल ।
चन्द्रभाल मन हरन हर, मेटत सब भव शूल ॥२॥
राम भक्त तुम सम नहीं, सकल सृष्टि में और ।
राम भजत हैं आपको, सकल देव शिर मौर ॥३॥
विष्णु रूप धरि शम्भु तुम, करहु लोक कल्याण ।
विधिना बन करते रहो, सकल सृष्टि निर्माण ॥४॥
काल रूप धरके तुम्हीं, बनो जगत के काल ।
भोला बन करते तुम्हीं, सकल सृष्टि प्रतिपाल ॥५॥
गौर रूप छविधाम हर, गौरी लीन्हें संग ।
सघन विपिन कैलास पर, बसते सदा निहंग ॥६॥
योगी योगीराज शिव, वश में जिनके काम ।
देते सब को मुक्ति हैं, उत्तम काशी धाम ॥७॥
सुरमुनि तुमको ध्यावते, करते ऋषि मुनि गान ।
महा-शक्ति के ईश हर, परब्रह्म भगवान ॥८॥
अङ्ग भस्म सुन्दर लसै, सुन्दर चन्दा भाल ।
गङ्गा शिर पर सोहतीं, शोभा परम विशाल ॥९॥
नन्दीगण के साथ में, भूत प्रेत वैताल ।
नाच रही है योगिनी, ठुमुक-ठुमुक सहताल ॥१०॥
डिमिकि डिमिकि डमरू बजे, मीठे स्वर अनुकूल ।
नभ से हैं बरसा रहे, सुर गण सुन्दर फूल ॥११॥
माँ गिरिजा अति प्रेम से, सुत गणपति ले गोद ।
निरखैं छवि आनन्द से, मन में भर कर मोद ॥१२॥
सुन्दर विपिन सुहावने, सुन्दर थल कैलास ।
गिरिजा गणपति के सहित, शंकर करहिं निवास ॥१३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्पति पालन विश्व का, औ करना संहार ।
सब कुछ करते हुए भी, विलग रहे त्रिपुरार ।।१४।।
औघड दानी आप हैं, विश्वनाथ भगवान ।
हरदम भजता दास रह, तुमको कृपा निधान ।।१५।।
सुमिरन कर प्रभु आपका, चरण नवाऊँ माथ ।
ललित श्याम लीला लिखूँ, पूर्ण करौ गिरिनाथ ।।१६।।
दाता तुम सम है नाहीं, कोई दया निधान ।
श्रीहरि के गुन गान हित, दो 'किशोर' को ज्ञान ।।१७।।

ऊषा - अनिरुद्ध - विवाह

सुख से वसते नारि-नर, सँग में श्री घनश्याम ।
पावन परम पुनीत वह, धन्य द्वारिका धाम ।।१।।
खग मृग सुन्दर हैं सभी, सुन्दर सवके भाग ।
वसैं संग भगवान के, करहिं कृष्ण अनुराग ।।२।।
लता विटप वन वाग सब, धन्य सभी नर वाम ।
धन्य फूल फल वे सभी, आवें हरि के काम ।।३।।
परम मनोहर श्याम के, सुत सव उन्हीं समान ।
इसी भाँति सब पौत्र भी, रूप राशि गुण खान ।।४।।
इसी भाँति सुन्दर महा, सव प्रपौत्र शुचि वाल ।
करत वाल लीला लखैं, प्रमुदित श्रीगोपाल ।।५।।
हुआ व्याह अनिरुद्ध का, रुक्मी पौत्री साथ ।
परम हर्ष मन रुक्मिणी, प्रमुदित थे व्रजनाथ ।।६।।
पुत्र पौत्र व्याहे गये, हरि के परम उदार ।
द्वीप द्वीप के नृपों की, कन्यायें सुकुमार ।।७।।
अर्पी सवने श्याम गृह, कन्यायें सानन्द ।
हरि से कर सम्बन्ध शुचि, पाये परमानन्द ।।८।।
इसी तरह आनन्द में, सभी द्वारका धाम ।
सव निरख घनश्याम छवि, हर्षित आठों याम ।।९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निशिचर कुल भूषण रहा, बलि सुत हर का भक्त ।
वाणासुर बलवान वह, सुरपति से भी शक्त ।।१०।।
शोणितपुर में राज्य कर, रहता सदा निशंक ।
सेवक शंकर का रहा, मानत नहिं विधि अंक ।।११।।
पूजि-पूजि श्री शम्भु को, प्रेम भक्ति के साथ ।
सहस भुजा पाई रहीं, दीन्हीं भोला नाथ ।।१२।।
जीति चराचर लिये थे, लड़े नहीं दिक्पाल ।
हारी मानी इन्द्र ने, क्या वपुरे नर पाल ।।१३।।
भय खाता नहिं काल से, निर्भय पा वरदान ।
पूर्ण रूप वश में रहैं, श्री शंकर भगवान ।।१४।।
नहीं भक्त ऐसा हुआ, कोई जग मे और ।
था प्रपौत्र प्रहलाद का, जो कि भक्त शिरमौर ।।१५।।
दानी जग में थे हुए, बलि भी प्रवल महान ।
जिनसे माँगन हरि गये, बनि वामन भगवान ।।१६।।
उनका सुत हर भक्त वह, बाणासुर बलवान ।
हार मानता था जगत, बड़ी जगत में शान ।।१७।।
लड़ने से हारे जभी, देव दनुज नर नाग ।
जहाँ जाय लड़ने कहीं, रिपु जाते सब भाग ।।१८।।
अलसातीं भुज सहस वे, युद्ध विना इक साथ ।
तब तोड़न गिरि को लगा, मार हाथ पर हाथ ।।१९।।
वृक्ष उखाड़त जड़ सहित, जंगल करत उजाड़ ।
मुक्कन हनि हनि वह करै, धूलि समान पहाड़ ।।२०।।
फिर भी इच्छा तृप्त नहिं, खुजलाते थे हाथ ।
पहुँचा जा कैलास तब, विनयौ भोलानाथ ।।२१।।
हो प्रसन्न शंकर कह्यो, कहौ सुवन क्या बात ?
जो इच्छा हो माँग लो, मेरे प्यारे तात ।।२२।।
वाणासुर कहने लगा, सहस करो को जोर ।
जगत पिता सुनिये विनय, मैं हूँ करत निहोर ।।२३।।
बता देंय करके कृपा, लड़ूँ कौन के साथ ।
भुज अलसातीं हर समय, सुनिये भोलानाथ ।।२४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भाग गये दिक्पाल है, सुरपति मानी हार ।
युद्ध बिना चित अति दुखी, सुनिये शम्भु उदार ।।२५।।
विहँसि शम्भु ने कहा तब, धारहु मन में धीर ।
द्वापर में हरि अवतरैं, यादव कुल में वीर ।।२६।।
करैं युद्ध तुझसे वही, और लड़ेगा कौन ?
हँस-हँस शंकर ने कहा, रहो तभी तक मौन ।।२७।।
चरण परसि उसने कहा, सुनिये भोलानाथ ।
जन्मा रिपु किमि जान लूँ, बता देहु गिरिनाथ ।।२८।।
ध्वज देकर शिव ने कहा, ले जा इसको धाम ।
लगा भवन में दे इसे, फहरै आठों याम ।।२९।।
स्वयं गिरै जब यह ध्वजा, लेना तब तुम जान ।
प्रकट भये हरि आन के, कृष्णचन्द्र भगवान ।।३०।।
बार-बार चरणन पर्यो, हर्षित चित्त अपार ।
गद्गद हो गाता रहा, गुणगण श्री त्रिपुरार ।।३१।।
फेर गया निज धाम को, ध्वज ले अपने हाथ ।
फहराया निज महल पर, बाणासुर नृप नाथ ।।३२।।
बाट जोहता निशि दिवस, वैरी हो उत्पन्न ।
करूँ युद्ध उससे जभी, मन हो तभी प्रसन्न ।।३३।।
दुखित हृदय रहता सदा, बिना लड़े बलवान ।
द्वापर आवे शीघ्र ही, प्रकटें हरि भगवान ।।३४।।
युद्ध करूँ उनसे जभी, बुझै हिये की प्यास ।
जपि जपि शंकर माँगता, पूर्ण करौ मन आस ।।३५।।
धनि बाणासुर वीर है, शत्रु माँगता आप ।
डरता नहिं वह काल से, ऐसा प्रबल प्रताप ।।३६।।
कौन जानता होय क्या, लीला श्री भगवान ।
बता न पाया आज तक, कोई भी विद्वान ।।३७।।
देव दनुज नर नाग सब, होते हैं मजबूर ।
जो इच्छा भगवान की, होता वही जरूर ।।३८।।
होनी ही कन्या बनी, बाणासुर की आय ।
उपजी ऊषा नाम से, सुन्दर रूप बनाय ।।३९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भई सुता जब गेह में, बाजे बजे अनेक ।
बाणासुर के दान से, भिक्षुक रहा न एक ।।४०।।
सबको करि सम्पन्न वह, हर्षित चित्त महान ।
लक्ष गऊ उसने करीं, द्विजगण को फिर दान ।।४१।।
ऊषा-ऊषा ही रही, अति सुन्दर सुकुमार ।
परम मोहिनी रूप की, दुर्गा की अवतार ।।४२।।
चन्द्र कला सी बढ़ी वह, मुख सुन्दर जिमि चन्द ।
उसकी आभा लखि हुई, कैरव शोभा मन्द ।।४३।।
बाणासुर ने जब लखी, सात वर्ष की बाल ।
पढ़ने लायक हो गई, सोचा तब भूपाल ।।४४।।
गौरी शंकर शरण में, करूँ सुता ले जाय ।
पढ़ै वहाँ सब धर्म यह, मन चाहा वर पाय ।।४५।।
यही सोच लेकर चला, ऊषा सहित हुलास ।
रथ पर चढ़कर तुरत ही, जा पहुँचा कैलास ।।४६।।
सुन्दर घन बन गहन अति, हरा भरा चहुँ ओर ।
चाँदी सी हिमगिरि चमक, नाचत मनहर मोर ।।४७।।
सुन्दर वटका वृक्ष वह, शाखा बड़ी विशाल ।
बाघाम्बर आसन बिछा, बैठे शम्भु कृपाल ।।४८।।
वाम अङ्ग माँ गौरि थीं, बैठीं गणपति साथ ।
एकासन शोभित सभी, खड़े वृषभ के नाथ ।।४९।।
भूत प्रेत बैताल सँग, योगिन करतीं नाच ।
डिमिकि-डिमिकि डमरू बजै, गावें राग खमाच ।।५०।।
लाल-लाल शुचि नयन हर, सुन्दर कमल समान ।
निरखैं गौरी मात सँग, शंकर कृपा निधान ।।५१।।
उसी समय पहुँचा वहाँ, कन्या लेकर साथ ।
बाणासुर चरणन पड़ा, जोरि सहस्रों हाथ ।।५२।।
दीनबन्धु हर शम्भु कहि, विश्वनाथ भगवान ।
जगत पिता जगदीश शिव, गणपति पितु श्रीमान ।।५३।।
जय-जय-जय त्रिपुरारि जय, जय-जय शम्भु उदार ।
नील कण्ठ भगवान जय, महिमा महा अपार ।।५४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विनती करि मेली तुरत, ऊषा चरणन माँहिं ।
शरण आपनी राखिये, और चहूँ कछु नाहिं ।।५५।।
रहै यहाँ सेवा करै, उमा मातु के पास ।
देव पढ़ा पूरन करो, यह मेरी अभिलास ।।५६।।
इतना कह चरणन पड़ा, बाणासुर मति धीर ।
एवमस्तु कहि कर हँसे, पलटा तब वह वीर ।।५७।।
ऊषा सेवा करति नित, प्रेम भक्ति के साथ ।
उमा मातु के चरण नित, चाँपति अपने हाथ ।।५८।।
दी विद्या मां ने सिखा, नारि धर्म के साथ ।
गान कला औ नृत्य भी, आया उसके हाथ ।।५९।।
बाजे सभी प्रकार के बजते यों सुरताल ।
गिरिजा ने बतला दिये, समझ उसे निज बाल ।।६०।।
व्यंजन विविध प्रकार के, बनते जौन प्रकार ।
विधि बतलाई वह सभी, गौरी परम उदार ।।६१।।
सीखे ऊषा ने सभी, मातृ कृपा से काम ।
प्रेम भक्ति में रत रही, सेवा करि निष्काम ।।६२।।
एक दिवस वीणा लिये, कर में गिरिजा मात ।
गातीं सुन्दर गीत थीं, तब थी आधी रात ।।६३।।
निर्जन बन चहुँ ओर था, सँग में भोलानाथ ।
सुनती थी मधु गान वह, ऊषा बैठी साथ ।।६४।।
माँ गौरी गाती रहीं, सुन्दर-सुन्दर गान ।
वीणा के सुरताल सुनि, प्रमुदित शम्भु सुजान ।।६५।।
देख पिता औ मात का, मृदुल हास्य औ गान ।
ऊषा के मन में हुआ, मिलै कन्त मम प्रान ।।६६।।
तो मैं भी बीणा बजा, गाऊँ मनहर गीत ।
वे रीझैं मुझ पर जभी, करके पूरण प्रीत ।।६७।।
तो पाऊँ आनन्द मैं, पूर्ण होय यह आस ।
उत्सुक चित चंचल महा, मन में परम हुलास ।।६८।।
जानि बात सारी गयीं, जगत जननि जगदम्ब ।
बोलीं सपने में मिलैं, कन्त तुम्हें अविलम्ब ।।६९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फेरि मँगा लेना उसे, तुम करके उद्योग ।
सदा सुहागिन रहोगी, भोगोगी सुख भोग ।।७०।।
चरण परी ऊषा तुरत, लज्जित मन सानन्द ।
उठा मातु हिय से लगा, दीन्हा परमानन्द ।।७१।।
नित नूतन उल्लास से, ऊषा करि अति प्रीति ।
सेवा करती मातु की, समझ धर्म और नीति ।।७२।।
एक दिवस आया जभी, बाणासुर कैलाश ।
मातु उमा ने तब कहा, पूर्ण हुई तब आश ।।७३।।
सुता पढ़ी सब धर्म है, ऊषा परम प्रवीन ।
समझी है सब पाक विधि, रचती नित्य नवीन ।।७४।।
दक्ष भई गृह कार्य में, परम सुन्दरी बाल ।
सदा सुहागिन रहै यह, सुनौ बात भूपाल ।।७५।।
ले जाओ अब धाम निज, रक्खो अपने पास ।
उत्तम वर ढूँढ़ो अवशि, पूर्ण होयगी आश ।।७६।।
बाणासुर सुन बात यह, करके दण्ड प्रणाम ।
ऊषा को निज साथ ले, आया अपने धाम ।।७७।।
सुन्दर मणि से रचित गृह, बनवा कर तत्काल ।
ऊषा को रक्खा वहाँ, बाणासुर भूपाल ।।७८।।
और बिठाये पाहरू, निशिचर अति बलवान ।
सुन्दर वर खोजन लगा, हर्षित चित्त महान ।।७९।।
ऊषा बसती भवन में, सुन्दर सखियाँ साथ ।
प्रेम रहित नित पूजती, उमा मातु गिरिनाथ ।।८०।।
देवालय सुन्दर बना, मनहर परम पवित्र ।
ऊषा के गृह में रहा, उमा मातु का चित्र ।।८१।।
ऊषा ऊषा काल में, करके नित्य स्नान ।
भजती गौरी मातु को, बैठि उसी सुस्थान ।।८२।।
ब्राह्मी बेला पूजती, नित प्रति ऊषा आय ।
गुण गाती अति प्रेम से, वीणा मधुर बजाय ।।८३।।
इसी भाँति होते रहे, सन्ध्या और प्रभात ।
एक रात सोते समय, सुधि आई वह बात ।।८४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

याद भई उस दिवस की, जब थी वह कैलाश ।
दीन्हा था वर अम्ब ने, पूर्ण होयगी आश ।।८५।।
सोचत-सोचत सो गयी, हिय में प्रिय की बात ।
दिखे स्वप्न अनिरुद्ध तब, श्यामल सुन्दर गात ।।८६।।
परम मनोहर रूप के, वय किशोर छविधाम ।
कमल नयन शुक नासिका, विम्बाधर अभिराम ।।८७।।
दीर्घ बाहु कटि सिंह सम, वक्षःस्थल सुविशाल ।
काले घुँघराले रहे, बाल समुन्नत भाल ।।८८।।
पीत पटी पहने हुए, बैठा है मम सेज ।
सुन्दर मुख जिमि चन्द्रसम, मन्द सूर्य का तेज ।।८९।।
गले डाल बाँहें मुझे, हिय से रहा लगाय ।
खुली नींद ऊषा उठी, चित्त में अति अकुलाय ।।९०।।
नहीं दिखी वह मूर्ति जब, हुई बहुत बेचैन ।
रोते रोते ही कटी, फिर सारी वह रैन ।।९१।।
पड़ी सेज सोचत रही, कैसे मिलि हैं नाथ ।
हाय ! स्वप्न ही था भला, कह कर मलती हाथ ।।९२।।
कभी बैठती सेज पर, कभी जाति वह लेट ।
कभी थामती हृदय को, कभी पकड़ती पेट ।।९३।।
कभी उसाँसे भरत थी, कर-करके वह याद ।
हृदय बसी वह मूर्ति थी, वही स्वप्न संवाद ।।९४।।
पड़ी शयन गृह में रही, ऊषा विकल विहाल ।
रोते रोते हो गयीं, अँखियाँ दोनों लाल ।।९५।।
बीत पहर भर दिन गया, अनुचर सब घबरात ।
सखियाँ आपस में कहें, आज हुई क्या बात ।।९६।।
नित उठती जो भोर थी, ऊषा अति सुकुमार ।
आज पड़ी है शयन गृह, करती कौन विचार ।।९७।।
डरती थीं सब अनुचरी, कौन जगावे जाय ।
चतुर चित्र लेखा तभी, गयी वहां पर आय ।।९८।।
कहा हाल सबने तभी, ऊषा का समझाय ।
गई शयन-गृह वह सखी, धीरज सबहिं बँधाय ।।९९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाकर देखा वहाँ पर, ऊषा भरति उसाँस ।
रुदन करति विलखाति है, त्यागे हास विलास ।।१००।।
मुख पर कर फेरति भई, बोली मीठे बैन ।
आँचर आँसू पोछ कर, पूछति क्यों बेचैन ।।१०१।।
सभी हाल हिय का कहो, तुम मुझको समझाय ।
कौन बात ऐसी हुई, जो रोती बिलखाय ।।१०२।।
सखी समझ मुझसे कहो, छोड़ कपट छलछन्द ।
सत्य-सत्य जो कहोगी, मेटूँ सब दुख द्वन्द ।।१०३।।
ऐसा कोई काज है, नहीं जगत के बीच ।
जो न करूँ तेरे लिये, चाहे आवे मीच ।।१०४।।
उठो-उठो प्रिय सखी तुम, मुख धोओ तत्काल ।
धीरज धरि उर में कहो, मुझसे हिय का हाल ।।१०५।।
परम सयानी सखी लखि, ऊषा उठीं तुरन्त ।
वाम अङ्ग फरकन लगे, समझी दुख का अन्त ।।१०६।।
कहा हाल सब स्वप्न का, ऊषा ने समझाय ।
सुनत चित्र लेखा रही, बोली तब मुसकाय ।।१०७।।
अच्छा समझी मैं सभी, सुनो सखी मम बात ।
सबके खींचति चित्र मैं, जो हैं जग विख्यात ।।१०८।।
उनमें ही वह होएगा, तेरा भी चित चोर ।
खींच चित्र सुरराज का, कहा देख इस ओर ।।१०९।।
सुर किन्नर गन्धर्व सब, जिनके सुन्दर रूप ।
खींच खींच शुचि चित्र सब, और अनेकों भूप ।।११०।।
दिखलाती जाती रही, ऊषा को तत्काल ।
नहीं-नहीं ऊषा करै, हिला-हिला कर भाल ।।१११।।
फिर खींचा शुचि चित्र जब, नटवर मदन गोपाल ।
मन हर्षित ऊषा भई, लखकर श्री नन्दलाल ।।११२।।
सुन सखि बोली बात यह, ऊषा हिय धरि धीर ।
होती मुझे प्रतीति यह, इसी वंश का वीर ।।११३।।
इतना सुन प्रद्युम्न का, चित्र खींच तत्काल ।
बोली देखो हैं यही, कृष्णचन्द्र के लाल ।।११४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तुरत खींच अनिरुद्ध का, चित्र किया तैयार ।
लखते ही मूर्छित हुई, ऊषा अति सुकुमार ।।११५।।
शुचि गुलाब जल छिड़क कर, किया उसे चैतन्य ।
बोली ये चित चोर हैं, धन्य सखी तू धन्य ।।११६।।
वेगि मिला दे मुझे तू, कर कोई तदबीर ।
सहा न जाता दुसह दुख, मेंट हृदय दुख पीर ।।११७।।
तुरत चित्र लेखा कह्यो, मत हो सखी अधीर ।
लाऊँगी इनको अवशि, धारि हृदय तू धीर ।।११८।।
फेरि उड़ी वह चील बन, चली द्वारिका ओर ।
पर स्वारथ हित रत भई, बनी स्वयं थी चोर ।।११९।।
पहुँची जब द्वारावती, धारा मनुज शरीर ।
लगी लगाने टोह वह, कौन करूँ तदबीर ।।१२०।।
लगे पाहरू हर जगह, बड़ा कठिन है काम ।
चक्र सुदर्शन दे रहा, है पहरा जिस ठाम ।।१२१।।
हरण वहाँ कैसे करूँ, कौन करूँ तदबीर ।
चिन्ता में मन मग्न थी, छूट रहा था धीर ।।१२२।।
उसी समय आये वहाँ, ऋषि नारद द्विजराज ।
चरण परस उसने कहा, सिद्ध कराओ काज ।।१२३।।
नारद जी कहने लगे, धर कर साधू वेष ।
हरण करो अनिरुद्ध का, दिया यही उपदेश ।।१२४।।
साधू का जब वेष है, नहीं चक्र का त्रास ।
इन पर नहीं प्रहार हो, पूर्ण करो विश्वास ।।१२५।।
यह कह नारद चल दिये, वीणा मधुर बजाय ।
बनी चित्रलेखा तुरत, साधु रूप हुलसाय ।।१२६।।
फिरी द्वारिका पुरी में, निर्भय सबके धाम ।
देख समझ सब कुछ लिया, करूँ रात में काम ।।१२७।।
पहुँच महल अनिरुद्ध के, निशि अँधियारी बीच ।
मन में सोचत खड़ी थी, चोर कर्म है नीच ।।१२८।।
करूँ आज मैं काज वह, परस्वारथ के हेत ।
क्षमा करेंगे अवशि मोहिं, श्री हरि कृपा निकेत ।।१२९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिर मन कर दृढ़ तुरत ही, उठा पलँग के साथ ।
सोते ले अनिरुद्ध को, उड़ी मनहुँ खगनाथ ।।१३०।।
पलँग सहित अनिरुद्ध को, लायी शोणित पूर ।
रक्खा ऊषा के भवन, उसका जीवन-मूर ।।१३१।।
देख अचर्म्भित हो गई, ऊषा उसका काम ।
नहीं उऋण तुझसे सखी, तुझको करूँ प्रणाम ।।१३२।।
मत कहना तू किसी से, रक्खूँ इन्हें छिपाय ।
पिता जान जो जायँगे, बिगरि बात सब जाय ।।१३३।।
देख भूलकर भी कभी, खुलै न अब यह बात ।
जा-जा सो जा है थकीं, बहुंत गई है रात ।।१३४।।
गयी चित्रलेखा तुरत, हर्षित मन निज धाम ।
धन्य-धन्य वह नारि है, परहित कीन्हा काम ।।१३५।।
मधुर राग गाने लगी, सुन्दर लिये सितार ।
लखि प्रियतम छबि हो रही, मन ही मन बलिहार ।।१३६।।
तान छेड़ दी भैरवी, कोकिल भी थी मात ।
जगे तुरत अनिरुद्ध जी, बोल उठे यह बात ।।१३७।।
कौन-कौन तू कौन है, मैं आया किस ठाम ।
पलँग सहित आया यहाँ, है यह किसका काम ।।१३८।।
बता-बता प्रिय बता दे, जो हो सच्ची बात ?
इन्द्रजाल सा यह हुआ, तू बैठी मुसकात ? ।।१३९।।
कौन देव की तू सुता, सुन्दर अति सुकुमार ?
परम मोहिनी रूप तव, लख हो मन बलिहार ।।१४०।।
सुनते ही मृदु वचन ये, परी चरण धर माथ ।
ऊषा मेरा नाम है, सुनिये मेरे नाथ ।।१४१।।
पितु बाणासुर वीर मम, शोणितपुर यह देश ।
सपने में देखा तुम्हें, हे यदुकुल राकेश ।।१४२।।
सखी चित्रलेखा गयी, करने मेरा काम ।
दासी हूँ मैं आपकी, है यह मेरा धाम ।।१४३।।
उमा मातु ने वर दिया, पूर्ण भयी वह साध ।
चेरी करलो प्रभु मुझे, होगी कृपा अगाध ।।१४४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उठा लगा हिय से लिया, ऊषा को तत्काल ।
पूर्ण हुई अभिलाष लख, मन में भई निहाल ।।१४५।।
और व्याह गन्धर्व कर, सुन्दर ऊषा साथ ।
बसे वीर अनिरुद्ध जी, करके उसे सनाथ ।।१४६।।
इसी भाँति आनन्द से, ऊषा अरु अनिरुद्ध ।
राज भवन बसते रहे, दोनों प्रेम प्रबुद्ध ।।१४७।।
होता हास विलास था, बीतें दिन औ रात ।
आखिर को खुल ही गई, छिपी नहीं यह बात ।।१४८।।
बाणासुर ने जब सुना, आया ऊषा धाम ।
ललकारा अनिरुद्ध को, करने को संग्राम ।।१४९।।
ऊषा लख कर पिता को, व्याकुल हुई महान ।
समझाया अनिरुद्ध ने, डरो नहीं प्रिय प्रान ।।१५०।।
और मंत्र बल से तुरत, शिला प्रकट की एक ।
बाणासुर पर गरज कर दिया उसी को फेंक ।।१५१।।
मूर्च्छित बाणासुर हुआ, ऐसा हुआ प्रहार ।
गिरा भूमि पर उसी क्षण, करता हाहाकार ।।१५२।।
किन्तु उठा तत्काल ही, क्रोधित हुआ अपार ।
ब्रह्म फाँस में फाँस कर, बाँधा वीर कुमार ।।१५३।।
बंदी कर अंनिरुद्ध को, बंदी गृह में डाल ।
पहुँचा फिर दरबार में, बाणासुर भूपाल ।।१५४।।
बन्दी गृह अनिरुद्ध हैं, शोणितपुर के बीच ।
उधर द्वारिका नारि नर, रहे उसाँसें खींच ।।१५५।।
यदुवंशी व्याकुल सभी, बाल वृद्ध नर नारि ।
व्याकुल होकर ढूँढ़ते, लोचन भर-भर वारि ।।१५६।।
सभी समझते श्याम थे, अन्तर्यामी ईश ।
फिर भी कहते थे नहीं, यह रहस्य जगदीश ।।१५७।।
भेजे चहुँदिशि गुप्तचर, उग्रसेन महराज ।
खोज करो अनिरुद्ध की, शीघ्र करो यह काज ।।१५८।।
शोणितपुर आये उधर, नारद जी महराज ।
गाते गुण भगवान के, वीणा के स्वर साज ।।१५९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मिले शीघ्र अनिरुद्ध से, बंदी गृह में जाय ।
धीरज दे अनिरुद्ध को, पलटे फिर मुनिराय ।।१६०।।
पहुँचे जा दरबार में, बाणासुर के पास ।
उसने ऋषि पूजन किया, सहित प्रेम विश्वास ।।१६१।।
तब नारद ने कहा सुन, बाणासुर बलवान ।
छोड़ो नृप अनिरुद्ध को, कहाँ तुम्हारा ध्यान ।।१६२।।
सुनो पौत्र यह कृष्ण का, जिनके शक्ति अपार ।
वैर नहीं उनसे भला, पा न सकोगे पार ।।१६३।।
गर्वित हो उसने कहा, सुनिये है मुनिनाथ ।
कृष्ण भला क्या चीज है, लडूँ काल के साथ ।।१६४।।
होनी होकर ही रहे, चले नहीं तदबीर ।
मस्तक से मिटती नहीं, विधि की खिंची लकीर ।।१६५।।
जब नारद की नृपति ने, बात न मानी एक ।
कहता लड़ने को रहा, रखकर अपनी टेक ।।१६६।।
हरि इच्छा ऋषि ने समझ, शीघ्र किया प्रस्थान ।
चले द्वारिका ओर को, गाते हरि गुन गान ।।१६७।।
पहुँचे जा द्वारावती, उग्रसेन के पास ।
चिंतित यादव थे सभी, भूले हास विलास ।।१६८।।
नृप ने मुनि को देखकर, बढ़ कर किया प्रणाम ।
हाथ जोड़ विनती करी, गा-गा कर गुण ग्राम ।।१६९।।
और कहा मुनिराज से, हे देवर्षि सुजान ।
विपति पड़ी हम पर बड़ी, सुनिये कृपा निधान ।।१७०।।
निशि में सुत अनिरुद्ध का, हरण हुआ मुनिनाथ ।
पता नहीं अब तक चला, कहा जोड़ कर हाथ ।।१७१।।
अनहोनी होनी हुई, है आश्चर्य महान ।
बड़ी विपति गाढ़ी पड़ी, व्याकुल सबके प्रान ।।१७२।।
आप विचरते हर जगह, त्रिकालज्ञ हैं नाथ ।
करो आपदा दूर प्रभु, धरो कृपा का हाथ ।।१७३।।
नारद बोले सुनहु नृप, कैद वीर अनिरुद्ध ।
बाणासुर ने किया है, होकर उस पर क्रुद्ध ।।१७४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शोणितपुर में बन्द है, जावो सैन्य समेत ।
निश्चय लड़ना पड़ेगा, हाथ तुम्हारे खेत ।।१७५।।
बाणासुर की सुता है, ऊषा उसका नाम ।
हो विवाह अनिरुद्ध से, और पूर्ण हों काम ।।१७६।।
बता हाल नारद चले, गाते हरि गुन गान ।
क्रोधित यादव गण हुये, किया तुरत प्रस्थान ।।१७७।।
कृष्ण चले बलराम संग, लेकर भारी सैन ।
चले वीर प्रद्युम्न भी, नहीं चित्त में चैन ।।१७८।।
रथ घोड़े हाथी चले, जिनका वार न पार ।
शोणितपुर आये सभी, रखकर विजय विचार ।।१७९।।
मग में ठहरे थे नहीं, चलते थे दिन रात ।
वहाँ चरों ने बाण तक, पहुँचाई यह बात ।।१८०।।
यादव की सेना प्रबल, जिसका ओर न छोर ।
संग कृष्ण बलराम के, आती है इस ओर ।।१८१।।
बाणासुर सुन बात यह, बोल उठा तत्काल ।
सैन्य चले सब दुर्ग से, काटे अरि के भाल ।।१८२।।
सेनप ले सेना चला, पहुँचा सीमा पास ।
वीर बली निशिचर महा, लिये विजय की आस ।।१८३।।
बाणासुर ने धरा फिर, श्री शंकर का ध्यान ।
आये गिरिपति उसी क्षण, भोला दया निधान ।।१८४।।
चरणों में श्री शम्भु के, बाणासुर धर शीश ।
विनती करने लगा वह, जय-जय-जय गौरीश ।।१८५।।
दीनबन्धु भगवान जय, महाकाल के काल ।
सब देवों के ईश जय, जय जय जय शशिभाल ।।१८६।।
नीलकंठ कामारि जय, जन पालक भगवान ।
दिया कष्ट जिस हेतु है, सुनिये कृपा निधान ।।१८७।।
यादव सेना साथ ले, चढ़े श्याम बलराम ।
चलें संग रणभूमि में, करें आप संग्राम ।।१८८।।
विजय आपके हाथ में, मैं सेवक हूँ नाथ ।
नत मस्तक होकर कहा, रख चरणों पर माथ ।।१८९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एवमस्तु हर ने कहा, चले युद्ध को संग ।
नंदी पर बैठे हुए, लपटे अंग भुजंग ।।१९०।।
अक्षय तरकश कटि कसे, धनुष लिये इक हाथ ।
दूजे कर तिरशूल ले, चले कुपित गिरिनाथ ।।१९१।।
भूत प्रेत बैताल की, लिये भयंकर सैन ।
जिनका भीषण रूप लख, चित्त होय बेचैन ।।१९२।।
जा पहुँचे रण भूमि वे, बाणासुर के साथ ।
देख कृष्ण भगवान को, शम्भु झुकायो माथ ।।१९३।।
दोनों आदि अनादि हैं, एक ईश दो रूप ।
दोनों ही तारण-तरण, श्यामल गौर स्वरूप ।।१९४।।
वश में हो शिव भक्त के, लड़ें कृष्ण के साथ ।
धन्य-धन्य श्री शम्भु धनि, हर-हर भोलानाथ ।।१९५।।
बजे शंख भेरी सहित, छिड़ा घोर संग्राम ।
टूटे निशिचर सैन्य पर, कृष्ण और बलराम ।।१९६।।
बाणासुर बलराम का, युद्ध हुआ घनघोर ।
दोनों वीर महान हैं, जिनका ओर न छोर ।।१९७।।
कृष्ण लड़े श्री शम्भु संग, शारङ्ग धनु ले हाथ ।
शिव पिनाक लेकर लड़े, कृष्णचन्द्र के साथ ।।१९८।।
हाथी से हाथी लड़े, रथी-रथी के साथ ।
अश्वारोही लड़ रहे, भाला जिनके हाथ ।।१९९।।
पैदल-पैदल से लड़े, हुआ युद्ध घमसान ।
शिर भुज कट कट गिर रहे, थे सब लहू लुहान ।।२००।।
रक्तमयी पृथ्वी हुई, छिन में लालो लाल ।
सर सर चलते तीर हैं, काटें भुज अरु भाल ।।२०१।।
सुरगण चढ़े विमान पर, देख रहे थे युद्ध ।
कृष्णचन्द्र अरु शम्भु ही, हुए परस्पर क्रुद्ध ।।२०२।।
कृष्णचन्द्र अरु शम्भु का, हुआ युद्ध विकराल ।
दिव्य अस्त्र दोनों लिये, कृष्ण और शशिभाल ।।२०३।।
एक-एक पर छोड़ते, क्षण में अगणित तीर ।
एक-एक को कर रहे, विह्वल और अधीर ।।२०४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गरज-गरज यादव लड़े, काट रहे रिपु सैन ।
बाणासुर के वीरवर, थे व्याकुल बेचैन ।।२०५।।

हुआ युद्ध दिन रात था, क्षण को हुआ न बन्द ।
विजय लालसा उभय दिशि, पड़े न कोई मन्द ।।२०६।।

कृष्णाचन्द्र ने क्रुद्ध हो, छोड़े बाण कठोर ।
भागी रिपु सेना सभी, शोणितपुर की ओर ।।२०७।।

महा क्रुद्ध तब रुद्र हो, लेकर अस्त्र महान ।
विषमशर छोड़ा तुरत, जो था काल समान ।।२०८।।

चढ़ा ताप यदु सैन पर, व्याकुल यादव वीर ।
मूर्च्छित हो गिरने लगे, छोड़ धनुष अरुतीर ।।२०९।।

देख विकल निज सैन को, हँसे कृष्ण भगवांन ।
शीतलास्त्र ले शीघ्र ही, दिया धनुष पर तान ।।२१०।।

विषमज्वर पर छोड़ कर, क्षण में किया विनास ।
और सहस्त्रों अस्त्र भी, छोड़े रमा निवासं ।।२११।।

बाणासुर बलराम भी, युद्ध लड़े घनघोर ।
रिपुदल विचलित हो उठा, भगा दुर्ग की ओर ।।२१२।।

विषमज्वर शीतल हुआ, गई शक्ति सब खोय ।
पड़ा कृष्ण के चरण में, बोला फिर यों रोय ।।२१३।।

दीनबन्धु भगवान हरि, जग पालक जग ईश ।
करहु अनुग्रह दास पर, पड़ा चरण धर शीश ।।२१४।।

हो प्रसन्न श्री कृष्ण ने, धरा शीश पर हाथ ।
वैष्णवास्त्र से मुक्त कर, उसको किया सनाथ ।।२१५।।

बाणासुर यह देख कर, विषमज्वर का हाल ।
क्रोधवन्त आया तुरत, सम्मुख मदन गोपाल ।।२१६।।

सहस करों से असुर ने, छोड़े अगणित तीर ।
बाण वृष्टि से हो गये, यादव विकल अधीर ।।२१७।।

और गरज कर मेघ सम, कृष्णचन्द्र की ओर ।
छोड़े अगणित बाण फिर, जिनका ओर न छोर ।।२१८।।

देख असुर का कृत्य यह, हुए क्रुद्ध भगवान ।
शारङ्ग धनु धर हाथ में, छोड़े तीखे बान ।।२१९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और काटने लग गये, बाणासुर के हाथ ।
देख भक्त पर विपति अति, बोले गिरिजानाथ ।।२२०।।
जय जय जय जगदीश जय, जय-जय रमा निवास ।
जगत सहारे आपके, करे आपकी आस ।।२२१।।
दीनबन्धु भगवान हरि, जगनायक जगदीश ।
कर्त्ता हर्त्ता जगत के, सकल सृष्टि के ईश ।।२२२।।
देव दनुज नर नाग सब, करें आपकी आस ।
क्षण में रचते जगत प्रभु, क्षण में करें विनास ।।२२३।।
सत्य सच्चिदानन्द घन, परब्रह्म भगवान ।
करो कृपा मम भक्त पर, हे हरि कृपा निधान ।।२१४।।
बाणासुर मम भक्त है, सुनिये दीनानाथ ।
दीनबन्धु प्रभु दया कर, कीजै इसे सनाथ ।।२२५।।
सुन शिवशंकर के वचन, करुणा निधि घनश्याम ।
शान्त हुये तत्काल ही, दीनबन्धु सुख धाम ।।२२६।।
बाणासुर पर कर कृपा, उसको किया सनाथ ।
चार भुजाएँ छोड़ कर, काट दिये सब हाथ ।।२२७।।
चरण पड़ा भगवान के, बाणासुर बलवान ।
पाहिमाम् कहता हुआ, क्षमा करो भगवान ।।२२८।।
जान न पाया आपको, पड़ माया के फेर ।
नाथ मुझे अपनाइये, अब न कीजिए देर ।।२२९।।
उठा उसे तत्काल ही, उर से लिया लगाय ।
शरणागत तारण तरण, यही बान यदुराय ।।२३०।।
हरि-हर को निज साथ ले, बाणासुर मति धीर ।
शोणितपुर आया तुरत, महाप्रतापी वीर ।।२३१।।
आदर से अनिरुद्ध को, करके बन्धन मुक्त ।
परिणय ऊषा से किया, हर सम्मुख विधि युक्त ।।२३२।।
मणिमय भूषण वसन वर, हय गज दासी दास ।
विविध वस्तुएँ भेंट कीं, मन में भरे हुलास ।।२३३।।
परम दुलारी लाड़िली, ऊषा प्राण समान ।
नाथ हाथ में आपके, अब है कृपा निधान ।।२३४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करके स्वागत विविध विधि, विदा किये यदुराय ।
बार-बार विनती करी, पड़ा चरण शिर नाय ।।२३५।।
आशिष दे शंकर चले, हर्षित हो कैलास ।
कृष्ण द्वारका को चले, भरे हृदय उल्लास ।।२३६।।
पहुँचे आकर द्वारका, उग्रसेन के पास ।
देख नृपति हर्षित हुये, पूर्ण भई अभिलास ।।२३७।।
अमित दान नृप ने दिये, वैदिक विप्र बुलाय ।
हुये मंगलाचार बहु, गनपति गौरि मनाय ।।२३८।।
बँधे द्वारिकापुरी में, घर-घर बन्दनवार ।
कोकिल बैनी कर रहीं, घर-घर मंगलचार ।।२३९।।
घर-घर बँटता दान है, घर-घर में आनन्द ।
दर-दर बाजे बज रहे, किन्नर पढ़ते छन्द ।।२४०।।
सुर बरसाते पुष्प हैं, नभ से चढ़े विमान ।
प्रमुदित मन सुरलोक सब, करें अप्सरा गान ।।२४१।।
इसी भाँति होता रहा, उत्सव विविध प्रकार ।
हर्षित मन नर नारि सब, करते जय-जयकार ।।२४२।।
जय जय जय श्रीश्याम जय, जय जय जय गोपाल ।
जय मधुसूदन कृष्ण जय, जयजयजय यदुपाल ।।२४३।।
पढ़े सुने जो प्रेम से, कथा सहित विश्वास ।
ज्वर पीड़ा से मुक्त हो, मिटें सकल भव त्रास ।।२४४।।
बढ़े विभव आनन्द से, पूर्ण होय अभिलास ।
सुख संपति सन्तति लहै, पहुँचे हरि के पास ।।२४५।।
श्याम-श्याम कहता रहूँ, कृष्ण-कृष्ण भगवान ।
जन 'किशोर' पर कर कृपा, दीजै प्रभु बरदान ।।२४६।।

पौण्ड्रक बध

बसे द्वारका श्याम जी, नित होते आनन्द ।
सुखी सभी नर नारि हैं, संग में हैं ब्रजचन्द ।।१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्विजगण के संग बैठकर, उग्रसेन के साथ ।
कथा वेद सुनते सभी, होते हरि गुण गाथ ।।२।।
धर्म परायण लोग सब, करते सब सत्कर्म ।
पालें चारों वर्ण सब, अपने-अपने धर्म ।।३।।
नहीं द्वेष ईर्ष्या वहाँ, और नहीं छलछन्द ।
सबके मन में बसे थे, मन मोहन ब्रजचन्द ।।४।।
रत रहते निज धर्म में, सभी वर्ण के लोग ।
सुर-पुर सा आनन्द था, भोगें सब सुख भोग ।।५।।
नित देते थे दान सब, करते द्विज सम्मान ।
धन्य भाग्य हैं सबों के, बसे संग भगवान ।।६।।
उसी समय की बात है, पौण्ड्रक नृप था एक ।
अभिमानी उद्दंड अति, क्रोधी रहित विवेक ।।७।।
कुरुष देश का नृपति वह, कलुषित हृदय मलीन ।
ईश्वर बनता स्वयं था, अहंकार में लीन ।।८।।
भूला था भगवान को, होकर मद में चूर ।
जीते अगणित नृपति थे, जो थे रण में शूर ।।९।।
ईश्वर बनता स्वयं था, कहता निजको ईश ।
सब देवों का देव मैं, मैं ही हूँ जगदीश ।।१०।।
भुज दो सुन्दर काष्ठ की, उसने लीं बनवाय ।
चार भुजा धारी बना, उनको अंग लगाय ।।११।।
इसी तरह सुन्दर महा, गरुड़ बनाकर एक ।
उस पर चढ़ उड़ता फिरे, भूला बुद्धि विवेक ।।१२।।
वासुदेव बनता स्वयं, बना विष्णु का रूप ।
गरुड़ चढ़ा डोलत फिरे, महा घमंडी भूप ।।१३।।
बैर करे श्रीकृष्ण से, नहिं माने भगवान ।
मनुज बताता था उन्हें, भरे हृदय अभिमान ।।१४।।
इसी तरह भूला फिरे, फूला पौण्ड्रक आप ।
बैर करन हरि सो चला, सका न बल को माप ।।१५।।
बसा आय काशीपुरी, काशिराज के पास ।
मैत्री थी उनमें प्रबल, और अटल विश्वास ।।१६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होनी होती प्रबल है, निश्चय होनी होय ।
करके कोटि उपाय भी, टाल न सकता कोय ।।१७।।
होनीवश पौण्ड्रक पड़ा, भूला सारा ज्ञान ।
पत्र लिखा श्री कृष्ण को, भरे हृदय अभिमान ।।१८।।
चक्र सुदर्शन दो मुझे, और चिन्ह सब साथ ।
ये सब मेरी वस्तुएँ, समझो तुम ब्रजनाथ ।।१९।।
वासुदेव मैं ही सुनो, मेरा ही यह नाम ।
तुम तो सुत हो नन्द के, ग्वाल वंश घनश्याम ।।२०।।
झूठा मत रक्खो सुनो, वासुदेव निज नाम ।
देखो मेरी शक्ति को, कर मुझसे संग्राम ।।२१।।
प्रकट सत्य संसार में, हो जायेगी बात ।
ज्यों निशि मिटती है अवशि, होता सूर्य प्रभात ।।२२।।
त्यों ही जग सारा लखे, वासुदेव है कौन ।
प्रकट अवशि मैं करूँगा, ग्वाल वंश है जौन ।।२३।।
दूत बुलाकर यों कहा, पाती मम ले जाव ।
जाय द्वारका कृष्ण को, लेकर उत्तर आव ।।२४।।
और जबानी भी वहाँ, कहना तुम समझाय ।
वासुदेव माने मुझे, देना उसे बताय ।।२५।।
कर प्रणाम चर चल दिया, पुरी द्वारिका ओर ।
होनी होकर ही रहे, चले न एकौ जोर ।।२६।।
पौण्ड्रक ने निज मौत को, दिया निमंत्रण आप ।
पापों से घट भर रहा, भरा पाप ही पाप ।।२७।।
चर पहुँचा द्वारावती, कृष्णचन्द्र के पास ।
पत्र दिया उसने तभी, कहके रमा निवास ।।२८।।
और कहा भगवान से, मन में भर अभिमान ।
वासुदेव मानों उन्हें, इसमें ही कल्यान ।।२९।।
नहीं वीर पौंड्रक सदृश, जग में कोई और ।
देवों में है देव वह, वासुदेव शिर मौर ।।३०।।
वृथा वैर मत करो तुम, बिगड़ जायगी शान ।
भला इसी में समझ लो, वासुदेव लो मान ।।३१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बात दूत की सुन हँसे, कृष्णाचन्द्र भगवान ।
अभिमानी के दूत का, देख प्रबल अभिमान ।।३२।।

और कहा फिर दूत से, दो उसको बतलाय ।
युद्ध लड़ूँगा अवशि मैं, प्रकट सत्य हो जाय ।।३३।।

तुरत सारथी को बुला, बोले श्री भगवान ।
ले आओ रथ साज कर, करना है प्रस्थान ।।३४।।

आया रथ चढ़ चल दिये, क्रोधवन्त गोपाल ।
काशी पहुँचे शीघ्र ही, पौंड्रक के बन काल ।।३५।।

चर ने पौंड्रक से कहा, लड़ने आये श्याम ।
काष्ठ गरुड़ पर चढ़ चला, लड़ने वह संग्राम ।।३६।।

तीखे-तीखे तीर से, करने लगा प्रहार ।
गरज-गरज कहने लगा, करूँ अभी संहार ।।३७।।

अस्त्र अनेकों छोड़ कर, गरजा सिंह समान ।
क्षण में काटे अस्त्र सब, केशव कृपा निधान ।।३८।।

हो क्रोधित हरि ने तुरत, मारा ऐसा तीर ।
गरुड़ सहित पौंड्रक गिरा, व्याकुल हृदय अधीर ।।३९।।

मरा दुष्ट तत्काल ही, पहुँचा सुरपुर धाम ।
बैर करे सो भी तरे, धन्य-धन्य श्रीश्याम ।।४०।।

काशिराज ने जब सुना, पौंड्रक बध उस काल ।
क्रोधवन्त दौड़ा तुरत, आँखें करके लाल ।।४१।।

लड़ा युद्ध श्री श्याम से, अपने बल भरपूर ।
महावीर बलवान था, धनुधारी वह शूर ।।४२।।

चली न एकौ चाल पर, आया उसका काल ।
एक बाण से उसे भी, मार दिया गोपाल ।।४३।।

गया स्वर्ग तत्काल ही, मर कर हरि के हाथ ।
नाथ कौन है दूसरा, जैसे दीनानाथ ।।४४।।

आये हरि फिर द्वारका, दिया द्विजों को दान ।
और कहा सब कुछ हुआ, कृपा विप्र भगवान ।।४५।।

काशिराज का शिर गिरा, राज महल के बीच ।
लखा सुदक्षिण ने हुई, पूज्य पिता की मीच ।।४६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रिया कर्म पितु का किया, अरु श्रद्धा के संग ।
दान वसन भूषन किये, भर के हृदय उमंग ।।४७।।
और बुलाये विप्रवर, ऋषिगण महामहान ।
उनका पूजन विविध विधि, करके बहु सम्मान ।।४८।।
हाथ जोड़ विनती करी, है मेरी अभिलाष ।
पूर्ण होय जो कृपा हो, मुझे पूर्ण विश्वास ।।४९।।
पिता बैर लेना चहूँ, करिये ऐसा यज्ञ ।
सब कुछ सम्भव है प्रभो, आप परम मर्मज्ञ ।।५०।।
किया द्विजों ने यज्ञ फिर, विधि विधान के साथ ।
प्रकटी कृत्या अग्नि तब, मख में हाथों हाथ ।।५१।।
गई द्वारका अग्नि वह, हो प्रज्वलित अखण्ड ।
देख उसे व्याकुल हुआ, अखिल विश्व ब्रह्मण्ड ।।५२।।
हँसे श्याम लख अग्नि को, उठा चक्र निज हाथ ।
फेंका कृत्या पर उसे, श्री मोहन ब्रजनाथ ।।५३।।
शक्ति हीन कृत्या हुई, चला न कोई जोर ।
करत शोर घनघोर वह, पलटी काशी ओर ।।५४।।
भस्म सुदक्षिण को किया, लगी न क्षण की देर ।
होनी होकर ही रहे, बाँधो कितने फेर ।।५५।।
मुक्त सुदक्षिण भी हुआ, करके हरि से बैर ।
हरि चर्चा करता रहे, जाता भव नद तैर ।।५६।।
इस असार संसार में, हरि गुण गाना सार ।
है 'किशोर' समझा यही, और नहीं आधार ।।५७।।

नारद का द्वारकापुरी जाना

धन्य धन्य है द्वारका, धन्य वहाँ के लोग ।
सब सुख से रहते जहाँ, भोगें सुर पुर भोग ।।१।।
नारद अरु सनकादि ऋषि, पाराशर अरु व्यास ।
आते दर्शन के लिये, कृष्ण चन्द्र के पास ।।२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सबकी पूजा करें हरि, बड़े प्रेम के साथ ।
स्वयं ब्रह्म होते हुए, जोड़ें सबके हाथ ।।३।।
इसी तरह बीते दिवस, होय सदा सत्संग ।
पुण्यार्जन में प्रजा रत, रंगी प्रेम के रंग ।।४।।
एक दिवस की बात है, श्री नारद मुनिराज ।
आये द्वारावती में, हरि दर्शन के काज ।।५।।
कृष्ण भवन में गये फिर, नारद जी तत्काल ।
मणि भूषण मय भवन वह, चमकें हीरे लाल ।।६।।
बने भवन सोलह सहस, और मनोहर आठ ।
एक एक से दिव्य हैं, वरण न जायें ठाठ ।।७।।
हीरा माणिक चमकते, निशि में करें प्रकाश ।
हर्षित लखकर चित्त हो, उपजे हिये हुलास ।।८।।
प्रथम रुक्मिणी के भवन, पहुँचे श्री मुनिराज ।
मणियों का सुन्दर भवन, सजे हुए सब साज ।।९।।
घन सम दिखता धूम्र था, हर्षित लखकर मोर ।
नाच रहे थे भवन में, करते थे वे शोर ।।१०।।
रत्न जटित वे स्तम्भ थे, मन मोहक बेजोड़ ।
पुरी द्वारका कर रही, इन्द्र पुरी से होड़ ।।११।।
अगणित दासी दास थे, खड़े हुए चहुँ ओर ।
रुक्मणि भी थीं वहीं पर, बैठे नन्दकिशोर ।।१२।।
ऋषि को लखकर हरि उठे, प्रिय रुक्मणि के साथ ।
चरण परस कर जोड़ कर, बोले श्री यदुनाथ ।।१३।।
धन्य दिवस है आज का, आये श्री मुनिराज ।
दर्शन पाकर आपके, धन्य भाग्य मम आज ।।१४।।
रत्न जटित चौकी सुघर, रुक्मणि लाई आप ।
बैठाया मुनिराज को, जिनका प्रबल प्रताप ।।१५।।
सुन्दर कंचन थार अरु, मणिमय झारी लाय ।
दम्पति ने मुनि के चरण, धोये अति सुखपाय ।।१६।।
चरणोदक ले प्रेम से, हरि रुक्मणि के साथ ।
संस्तुति करते प्रेम से, जोड़ भक्ति से हाथ ।।१७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्या आज्ञा ऋषिराज है, बोले श्री भगवान ।
जो आज्ञा हो वह करूँ, मुनिवर परम सुजान ।।१८।।
नारद ने फिर यों कहा, सुनिये श्री घनश्याम ।
परमब्रह्म भगवान तुम, लीलामय छविधाम ।।१९।।
क्या बतलाऊँ आपको, अन्तर्यामी नाथ ।
दुष्ट दलन को, अवतरे, भक्तन करन सनाथ ।।२०।।
मेटन महि के भार को, प्रकटे लीलाधाम ।
सो पूरण हरि कीजिये, यही विनय श्रीश्याम ।।२१।।
एवमस्तु हरि ने कहा, सुन हर्षित मुनिराज ।
चले वहाँ से देव ऋषि, समझ सिद्ध निजकाज ।।२२।।
गये दूसरे भवन फिर, लखे वहाँ पर श्याम ।
उद्धव के संग खेलते, चौपड़ तज सब काम ।।२३।।
उद्धव के संग हरि उठे, करते हुए प्रणाम ।
क्या आज्ञा है आपकी करें, वही हम काम ।।२४।।
मुनि प्रसन्न मन चल दिये, बिना कहे कछु बात ।
चले तीसरे भवन फिर, मन्द मन्द मुसकात ।।२५।।
मिले वहाँ भी कृष्ण जी, सुनते बैठे वेद ।
देख अचम्भित ऋषि हुए, समझ न पाये भेद ।।२६।।
चौथे गृह को चल दिये, उसी समय मुनिराज ।
बैठे देखे वहाँ भी, श्री मोहन ब्रजराज ।।२७।।
बैठे सतभामा सहित, बाल वृन्द के साथ ।
नारद जी को देख कर, जोड़े सबने हाथ ।।२८।।
बिदा हुए ऋषिराज जी, नहीं रुके उस ठाम ।
गये पाँचवें गेह में, मिले वहाँ भी श्याम ।।२१९।।
इसी तरह मिलते रहे, सभी गेह में श्याम ।
वहाँ अचम्भित ऋषि हुये, देख श्याम हर धाम ।।३०।।
गये भवन सोलह सहस, नारद मुनि महराज ।
हाथ जोड़ मिलते रहे, हर घर में ब्रजराज ।।३१।।
मायापति की देखकर, माया महा महान ।
हिय कपाट ऋषि के खुले, उपजा उर में ज्ञान ।।३२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विनती करने लगे वे, जय जय जय भगवान ।
जगत पिता जगदीश हरि, जगनायक श्रीमान ।।३३।।
दीनबन्धु करुनायतन, मंगलमय जगदीश ।
परब्रह्म भगवान हरि, सकल सृष्टि के ईश ।।३४।।
कृपा करो मुझ पर प्रभो, सेवक अपना जान ।
अब माया व्यापै नहीं, दीजै यह वरदान ।।३५।।
गुण गाऊँ मैं आपके, सदा प्रेम के साथ ।
एवमस्तु हरि ने कहा, मुनिवर हुए सनाथ ।।३६।।
कृष्ण कृष्ण कहते हुए, वीणा मधुर बजाय ।
ब्रह्म लोक नारद गये, प्रमुदित मन हुलसाय ।।३७।।
धन्य श्याम मायापते, धन्य कृष्ण गोपाल ।
जय जय जय गोविन्द जय, जय नटवर नँदलाल ।।३८।।
है 'किशोर{ की कामना, सुनिये श्री गोविन्द ।
देहु दरश मोहिं जान जन, खिले हृदय अरविन्द ।।३९।।

श्रीकृष्ण का आदिक कर्म और सुधर्मा सभा में जाना (राजसूय यज्ञ)

इन्द्रपुरी सम ही रही, पुरी द्वारका धाम ।
तीन लोक के नाथ हरि, बसें जहाँ घनश्याम ।।१।।
धर्मराज का राज वह, धर्म निष्ठ सब लोग ।
सुरपुर का आनन्द थे, रहे सभी नर भोग ।।२।।
कञ्चन मणिमय धाम में, बसें सहित नर वाम ।
वर्णाश्रम में रत सभी, करें धर्म के काम ।।३।।
बनी सुधर्मा सभा जहँ, सुरपुर सा आनन्द ।
जीव जन्तु सब सुखी हैं, निरखैं हरि मुख चन्द ।।४।।
सत्य सनातन धर्म की, जो कि सनातन रीति ।
स्वयं पालते कृष्ण थे, जन-जन पर कर प्रीति ।।५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्राह्मी बेला में उठें, नित्य कृष्ण भगवान ।
नित्य कर्म करते तभी, और वेद का गान ।।६।।
सन्ध्या पूजन शास्त्र विधि, नित प्रति करते श्याम ।
हवन आदि शुभ कर्म जो, करते सब सुखधाम ।।७।।
विप्रों का सम्मान अति, करते थे भगवान ।
नित-प्रति का यह कार्य था, देते बहु विधि दान ।।८।।
फिर जाते थे स्वयं हरि, तात मात के पास ।
चरण वन्दना नित करें, मन में भरे हुलास ।।९।।
करें वन्दना नित्य ही, गुरुजन की श्रीश्याम ।
पालें धर्म गृहस्थ का, विधिवत् लीलाधाम ।।१०।।
फिर आते निज गेह में, श्रीपति सहित हुलास ।
परम सुन्दरी नारियाँ, बैठें उनके पास ।।११।।
व्यञ्जन विविध प्रकार के, सुन्दर कंचन थाल ।
सज कर लातीं रानियाँ, सम्मुख धरें गोपाल ।।१२।।
भोजनादि करके प्रभू, जाते थे दरबार ।
उग्रसेन की सभा में, नागर नन्द कुमार ।।१३।।
लगे सुधर्मा की सभा, ऋषि मुनि विप्र समाज ।
उग्रसेन का राज वह, धर्मराज का राज ।।१४।।
मणि भूषण से जटित था, सिंहासन छविधाम ।
उग्रसेन के निकट ही, बैठे श्री घनश्याम ।।१५।।
उसी समय की बात है, मगध देश नृपराज ।
जरासिन्धु बलवान भट, राजों का सरताज ।।१६।।
ठाने था नृप यज्ञ वह, महा कठिन विकराल ।
दस सहस्त्र नृप जीत कर, पूजै वह शशिभाल ।।१७।।
शीश काट उन नृपों के, निज कर से भूपाल ।
रक्त चढ़ाता शम्भु पर, कह जय जय शशिभाल ।।१८।।
पीड़ित करता जगत को, होता हाहाकार ।
इसी तरह के यज्ञ वह, करता बारम्बार ।।१९।।
बन्दी थे उस काल भी, दस सहस्त्र भूपाल ।
बन्दी गृह में बन्द थे, जपते थे नँदलाल ।।२०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुमिरन करते श्याम का, सत्य प्रेम के साथ ।
दीनबन्धु दुख टाल दो, हे हरि दीनानाथ ।।२१।।
दीन दुखी दुख टालना, रही सदा प्रभु बान ।
पड़े विपति में हम सभी, हे हरि कृपानिधान ।।२२।।
इसी तरह भजते सदा, दस सहस्त्र भूपाल ।
बन्दीगृह में पड़े वे, भजें सदा गोपाल ।।२३।।
विप्र बुला कर एक फिर, विनती कर कर जोर ।
भेजा उसको द्वारका, करके बहुत निहोर ।।२४।।
और कहा कहना वहाँ, श्री द्विजवर महराज ।
कृष्णचन्द्र से विनय कर, हरें विपति ब्रजराज. ।।२५।।
बिना कृपा उनकी किये, नहीं होय उद्धार ।
करें कृपा इस ओर हरि, मोहन नन्दकुमार ।।२६।।
धीरज दे द्विजराज तब, चले द्वारका धाम ।
धरो शान्ति नृपगण सभी, पूर्ण होयगा काम ।।२७।।
उसी काल की बात है, कौरव वंश भुवाल ।
रहे युधिष्ठिर पाण्डु सुत, द्विजगण के प्रतिपाल ।।२८।।
इन्द्रप्रस्थ में बसें वे, संग भ्रात बलवान ।
धर्मराज कहता जगत, उनको कर सम्मान ।।२९।
मय दानव ने रचा था, उनका वह दरबार ।
सुन्दर अति शोभा बड़ी, मणि से जटित अपार ।।३०।।
भरा सरोवर जल जहाँ, वहाँ दिखै चट्टान ।
अद्भुत थी कारीगरी, किस विधि करूँ बखान ।।३१।।
थल में जल दिखता वहाँ, भ्रमित होंय सब लोग ।
ऐसा दृश्य विचित्र वह, नहिं वर्णन के योग ।।३२।।
जहाँ भीत थी वहाँ पर, बना हुआ था द्वार ।
द्वार बना जिस जगह पर, वहाँ दिखै दीवार ।।३३।।
धर्मराज की सभा में, आते ऋषी अनेक ।
धर्मज्ञान चर्चा वहाँ, होती सहित विवेक ।।३४।।
ऋषि मुनि कहते यही सब, करो राजसू यज्ञ ।
तुम समरथ सम्पन्न हो, और धर्म मर्मज्ञ ।।३५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ऋषि नारद ने आ वहाँ, कही यही सब बात ।
करो राजसू यज्ञ तुम, धीर युधिष्ठिर तात ।।३६।।
नारद की पूजा करी, विधिवत् तब भूपाल ।
और कहा सब आपके, हाथों दीनदयाल ।।३७।।
करें कृपा ऋषिराज तो, बन जाये सब काम ।
जायँ द्वारका लायँ हरि, हो पवित्र यह धाम ।।३८।।
और कृपा गोपाल जो, करैं होय सब सिद्ध ।
कृपा कोर भगवान की, बसें सिद्धि औ ऋद्धि ।।३९।।
द्विजवर की जो दया हो, पूर्ण होंय सब काम ।
हाथ जोड़ कर कहा तब, धर्मराज सुख धाम ।।४०।।
श्री नारद ने फिर कहा, धर्म मूर्ति हो आप ।
सिद्ध होंयगे कार्य सब, और बढ़े परताप ।।४१।।
वीणा में गुण गायकर, चले द्वारिका ओर ।
लिये लालसा हृदय में, निरखूँ नन्दकिशोर ।।४२।।
पहुँचे जा दरबार में, उग्रसेन के पास ।
उठे सभासद देख ऋषि, संग में रमा निवास ।।४३।।
विधिवत् पूजन किया तब, उग्रसेन ने आप ।
धन्य भाग्य मम आज हैं, गये भाग सब पाप ।।४४।।
चरण परस ऋषिराज के, धन्य हुआ यह धाम ।
क्या आज्ञा है दास को, करूँ वही मैं काम ।।४५।।
नारद ने नृपराज से, कहा प्रबल तव भाग ।
स्वयं ब्रह्म बसता जहाँ, सुरपुर को भी त्याग ।।४६।।
लेने आया उन्हीं को, होय राजसू यज्ञ ।
कहा युधिष्ठिर ने यही, जानें हरि मर्मज्ञ ।।४७।।
पूर्ण कराओ कर कृपा, कृष्णचन्द्र भगवान ।
भक्त युधिष्ठिर आपका, सुनिये कृपानिधान ।।४८।।
उसी समय आया वहाँ, मगध देश द्विजराज ।
गाता गुन घनश्याम के, कहता जय ब्रजराज ।।४९।।
और सुनाई विपति सब, बन्दी जो भूपाल ।
शरण आपकी नाथ वे, सुनिये दीनदयाल ।।५०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कृपा कोर उन पर करो, कर दो उनकी मुक्ति ।
जरासिंधु की जेल से, हाथ नाथ के युक्ति ।।५१।।
हँसे कृष्ण सुन बात यह, मोहन दीनदयाल ।
किया विप्र को विदा करि, देकर बहु धन माल ।।५२।।
और कहा तुम जाय कर, धीरज उन्हें बँधाव ।
मुक्त वेगि वे होंयगे, ऐसा उन्हें बताव ।।५३।।
ऋषि नारद के साथ फिर, चले कृष्ण भगवान ।
सुन्दर रथ पर बैठ कर, मोहन कृपा निधान ।।५४।।
इन्द्रप्रस्थ में आय प्रभु, धर्मराज के पास ।
चरण परस सम्मान कर, पूजे सह विश्वास ।।५५।।
फेर कहा भगवान से, दोनों ही कर जोर ।
पूर्ण राजसू यज्ञ हो, करो कृपा की कोर ।।५६।।
ऋषि मुनि कहते हैं यही, करूँ यज्ञ मैं नाथ ।
सब संभव तव कृपा से, सभी आपके हाथ ।।५७।।
धर्मराज को हिय लगा, बोले श्री भगवान ।
धर्म मूर्ति हो भ्रात तुम, होगा तब कल्यान ।।५८।।
यज्ञ पूर्ण होगा अवशि, सिद्ध होयँगे काम ।
बली तुम्हारे भ्रात हैं, जीतेंगे संग्राम ।।५९।।
आकर अर्जुन भीम ने, हरि को किया प्रणाम ।
गले लगाया सभी को, नटनागर घनश्याम ।।६०।।
और नकुल सहदेव ने, कर हरि चरण स्पर्श ।
समझा निज को धन्य था, पाया अद्भुत हर्ष ।।६१।।
सभासदों ने कृष्ण का, अभिनन्दन कर साथ ।
हाथ जोड़ विनती करी, कह कर दीनानाथ ।।६२।।
द्विजगण ऋषि-मुनि ने दिया, सुन्दर आशीर्वाद ।
सबने चरणोदक लिया, वरण-वरण कर स्वाद ।।६३।।
फेर गये श्रीकृष्ण जी, माँ कुन्ती के पास ।
चरण परस घनश्याम ने, पाया परम हुलास ।।६४।।
और कहा निज बुआ से, पुरी द्वारिका हाल ।
सब आनन्दित हैं वहाँ, बोले श्री गोपाल ।।६५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खान-पान से निपट कर, बैठे जा दरबार ।
धर्मराज से यों कहा, नागर नन्दकुमार ।।६६।।
चार भ्रात बलवान तव, बली एक से एक ।
चारों दिशि जाते सभी, जीते भूप अनेक ।।६७।।
आज्ञा धरकर शीश पर, ले लेकर निज सैन ।
चारों दिशि चारों गये, चले दिवस अरु रैन ।।६८।।
जीता भूमण्डल सभी, लाये बहु धन-माल ।
धरा कृष्ण के सामने, कह जय दीनदयाल ।।६९।।
दशों दिशाओं में गये, हम चारों ही भ्रात ।
हाथ जोड़कर भीम ने, कही फेरि यह बात ।।७०।।
मगध देश बाकी रहा, जरासिंधु का राज ।
नहीं गया कोई वहाँ, सुनिये श्री ब्रजराज ।।७१।।
और सभी जीता गया, भूमण्डल महराज ।
जरासिन्धु का जीतना, बड़ा कठिन है काज ।।७२।।
स्वयं बली बलवान वह, जिसका वार न पार ।
जन्त्र लगा उसके यहाँ, देता नाम पुकार ।।७३।।
रिपु जाता जो वहाँ पर, करने को संग्राम ।
जन्त्र बता देता तुरत, उसका बल अरु नाम ।।७४।।
इससे उसका जीतना, बड़ा कठिन है काम ।
युक्ति बताओ अब तुम्हीं, मनमोहन घनश्याम ।।७५।।
मन्द मन्द हँसते हुए, बोले श्री गोपाल ।
अवशि सुभट बलवान है, जरासिन्धु भूपाल ।।७६।।
सैन्य सहित जाकर वहाँ, नहिं जीता वह जाय ।
भीम सहित अर्जुन चलें, द्विज का वेष बनाय ।।७७।।
मैं भी चलता साथ हूँ, धरकर द्विज का रूप ।
अवशि मरेगा दुष्ट वह, जरासिन्धु भट-भूप ।।७८।।
युक्ति सोच ली पूर्ण है, बोले कृष्ण मुरार ।
मगध देश को चल पड़े, सुमिर शम्भु त्रिपुरार ।।७९।।
विप्र रूप धर कर चले, तीनों पुरुष महान ।
भीम बली बलवान अति, अर्जुन श्री भगवान ।।८०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पहुँचे जा उस काल में, मगध देश के पास ।
जो देखे मोहे वही, ऐसा रूप प्रकास ।।८१।।
दिखते तीनों पुरुष ज्यों, ब्रह्मा विष्णु महेश ।।
अनुपम छवि दर्शात थी, विप्र रूप के वेष ।।८२।।
हरी ओम तत्सत् सभी, कहते बारम्बार ।
ठीक समय मध्यान्ह के, पहुँचे जा नृप द्वार ।।८३।।
द्वारपाल दौड़ा तुरत, नृप को दिया सँदेश ।
तीन विप्र आये प्रभो, जिनका अद्भुत वेश ।।८४।।
जरासिन्धु आया स्वयं, कीन्हा दण्ड प्रणाम ।
लखकर उनके रूप को, मुग्ध खड़ा उस ठाम ।।८५।।
हाथ जोड़ कहने लगा, धन्य भाग्य हैं आज ।
विप्र बतायें आप जो, करूँ वही मैं काज ।।८६।।
कहा कृष्ण ने सुनो नृप, बड़ा आपका नाम ।
दानी हो बलि के सदृश, छाया सुयश ललाम ।।८७।।
इच्छा लेकर दान की, आये हैं सब लोग ।
पूर्ण करो अभिलाष नृप, हो तुम सब विधि योग ।।८८।।
क्या चहिए कहिए प्रभो, राज पाट धन धाम ।
जो माँगो दूँगा वही, प्राण तलक निष्काम ।।८९।।
कहा कृष्ण ने तुरत फिर, धन्य धन्य भूपाल ।
दानी वीर महान तुम, जगती में इस काल ।।९०।।
परिचय अब सुन लीजिए, हम सब बली असीम ।
कृष्ण कहे मुझको जगत्, अर्जुन संग यह भीम ।।९१।।
युद्ध एक से करो तुम, चाहे जिसके साथ ।
यह भिक्षा हम माँगते, सुनो सुभट नर नाथ ।।९२।।
जरासिन्धु हँसने लगा, सुनकर हरि की बात ।
धर्म युद्ध मैं करूँगा, पक्षपात तज तात ।।९३।।
वचन बद्ध मैं हो गया, इसमें नहिं सन्देह ।
अर्जुन मम सम है नहीं, दुर्बल इसकी देह ।।९४।।
आप भगे रण भूमि से, तज करके संग्राम ।
पता नहीं क्या जाति है, कौन पिता का नाम ।।९५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इससे तुमसे क्या लडूँ, नहीं बराबर आप ।
जो भागे रण भूमि से, उससे लड़ना पाप ।९६।।
नहीं बराबर भीम भी, पर है कुछ बलवान ।
हृष्ट पुष्ट है बदन का, लम्बा चौड़ा ज्वान ।।९७।।
इससे ही बस लडूँगा, मानो वचन प्रमान ।
चलो चलो अब गेह में, करो सभी जलपान ।।९८।।
सुन्दर आसन बैठकर, चारों ने इक संग ।
प्रेम सहित भोजन किया, मन में भरी उमंग ।।९९।।
धर्म युद्ध करने लगे, जरासिन्धु अरु भीम ।
दोनों ही बलवान थे, बल में बली असीम ।।१००।।
गदा युद्ध करने लगे, दोनों वीर महान ।
गदा गदा पर पड़े जब, ध्वनि हो मेघ समान ।।१०१।।
हुई लड़ाई दिवस भर, लड़े वीर विकराल ।
युद्ध बन्द हो गया जब, आया सायंकाल ।।१०२।।
फिर भोजन इक साथ कर, सोये दोनों वीर ।
क्षात्र धर्म महिमा महा, किमि वरणै मति धीर ।।१०३।।
प्राणों की बाजी लगी, एक-एक का काल ।
दिन भर करते युद्ध हैं, विकट बीर विकराल ।।१०४।।
धर्म युद्ध दोनों करें, पालें क्षत्रिय धर्म ।
वैरी से भी प्रेम है, ऐसा सुन्दर कर्म ।।१०५।।
सत्य सनातन धर्म का, अद्‌भुत यही प्रमाण ।
आये लेने प्राण को, उसका भी सम्मान ।।१०६।।
नित उठते थे भोर में, दोनों बीर सुजान ।
नित्य कर्म से निवृत हो, करते युद्ध महान ।।१०७।।
नित ही सायंकाल को, खान पान हो साथ ।
दिन भर लड़ते काल सम, दिखा दिखा निज हाथ ।।१०८।।
चकित होय लख युद्ध को, सारा जन समुदाय ।
सुरगण चढ़े विमान पर, नित ही देखें आय ।।१०९।।
जरासिंधु अरु भीम का, गदा युद्ध घमसान ।
जिससे भू आकाश भी, शंकित थे भयमान ।।११०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गदा गदा पर पड़े जब, प्रकटे अग्नि प्रचण्ड ।
दिग्गज डोले महि हिले, थर-थर हो नव खण्ड ।।१११।।
इसी तरह लड़ते हुए, बीते दिन छब्बीस ।
बड़े वीर हैं भीर अरु, जरासिन्धु अवनीश ।।११२।
हार न मानी किसी ने, मन में भरी उमंग ।
कड़क रहे थे मेघ सम; फड़क रहे थे अंग ।।११३।।
मन में सोचा भीम ने, शत्रु बड़ा बलवान ।
गये कृष्ण के पास वे, बोले हे भगवान ।।११४।।
नाथ घटा मम बाहुबल, नहीं देह में जान ।
किस विधि जीतूँ शत्रु को, बतलाओ वह ज्ञान ।।११५।।
बड़ा निपुण रिपु युद्ध में, बल से है भर पूर ।
मैं अब लड़ सकता नहीं, अंग-अंग हैं चूर ।।११६।।
भीम वचन सुन कर तभी, बोले श्री भगवान ।
जीतोगे तुम शत्रु को, पावोगे सम्मान ।।११७।।
हँसते हँसते भीम पर, फेरा हरि ने हाथ ।
श्रम खोया क्षण मात्र में, जय जय दीनानाथ ।।११८।।
और कहा कल युद्ध में, बतलाऊँगा युक्ति ।
मर कर तेरे हाथ से, रिपु पावेगा मुक्ति ।।११९।।
मल्ल युद्ध उससे करो, डरो नहीं तुम भीम ।
महावीर के बन्धु तुम, बल में बली असीम ।।१२०।।
मल्ल युद्ध करते हुए, लखना मम संकेत ।
जीतोगे तुम अवशि ही, बोले कृपा निकेत ।।१२१।।
प्रातकाल उठ कर गये, लड़ने दोनों वीर ।
दर्शक अगणित थे वहाँ, शाह, अमीर, फकीर ।।१२२।।
बोले भीम पुकार के, मल्ल युद्ध हो आज ।
निर्णय होगा आज ही, देखे सकल समाज ।।१२३।।
जरासिंधु हँसने लगा, बोला है स्वीकार ।
ताल ठोंक दोनों खड़े, बल में बली अपार ।।१२४।।
चरण चरण से चाप कर, दृष्टि-दृष्टि से जोड़ ।
हाथ-हाथ से पकड़ कर, कस कर देय मरोड़ ।।१२५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दौड़-दौड़ कर लड़ैं वे, लपट झपट कर साथ ।
औ हुँकारें सिंह सम, पटक-पटक कर हाथ ।।१२६।।
लिये लालसा विजय की, मन में परम उछाह ।
गिरत-पड़त दौड़त-उठत, दोनों बली अथाह ।।१२७।।
थका भीम मन में जभी, हरि ने लीन्हा जान ।
अन्तर्यामी श्याम घन, भक्त बछल भगवान ।।१२८।।
उठा लिया भगवान ने, कर में तिनका एक ।
चीरा उसको बीच से, हरि ने सहित विवेक ।।१२९।।
दिखा दिया बस भीम को, समझा भीम सुजान ।
टूटा रिपु पर सिंह सम, पा संकेत महान ।।१३०।।
जरासिंधु को भीम ने, उठा लिया तत्काल ।
पटका भू पर जोर से, बन कर उसका काल ।।१३१।।
एक पाँव निज पाँव से, दाबा फिर तत्काल ।
पाँव दूसरा हाथ से, पकड़ा खूब सँभाल ।।१३२।।
महाकाल बन भीम ने, पल में डाला चीर ।
फेंक दिया फिर भूमि पर, जीव विहीन शरीर ।।१३३।।
कोलाहल सा मच गया, हुलसित जन समुदाय ।
दौड़ तुरत श्री कृष्ण ने, लीन्हा भीम उठाय ।।१३४।।
चहुँ दिशि गूँजा भीम का, सुन्दर जय जय नाद ।
मगध देश में छा गया, पल में यह सम्वाद ।।१३५।।
जरासिन्धु का पुत्र फिर, आया हरि के पास ।
हाथ जोड़ विनती करी, जय-जय रमानिवास ।।१३६।।
दीनबन्धु भगवान तुम, महिमा महामहान ।
दास चरण का नाथ मैं, हे केशव भगवान ।।१३७।।
राज पाट सब आपका, तुम स्वामी मैं दास ।
चरण-भक्ति देकर मुझे, पूर्ण करो अभिलाष ।।१३८।।
मन्द-मन्द हँसते हुए, बोले श्री घनश्याम ।
क्रिया कर्म पितु का करो, पहले यह तुम काम ।।१३९।।
बन्दीगृह के नृपतिगण, मुक्त करो तत्काल ।
राजपाट निज पिता का, रक्खो तुम्हीं सँभाल ।।१४०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धर्मशास्त्र उपदेश दे, समझाई नृप नीति ।
बैर द्वेष ईर्ष्या तजो, करो प्रजा से प्रीति ।।१४१।।
क्षात्र धर्म पालन करो, बोले श्याम ब्रजेश ।
सत्य मार्ग बतला दिया, देकर सत् उपदेश ।।१४२।।
बन्दीगृह से मुक्त कर, दस सहस्त्र भूपाल ।
लाया उनके सामने, जरासिन्धु का लाल ।।१४३।।
गिरे चरण नृपगण सभी, करते जय जय कार ।
श्याम सलोनी मूर्ति लख, तन मन से बलिहार ।।१४४।।
गाते गुण गोपाल के, कह-कह जय गोविन्द ।
अलि सम नृप निरखैं सभी, कृष्ण चरण अरविन्द ।।१४५।।
हाथ जोड़ विनती करैं, जय-जय दीनानाथ ।
कृपा कोर से आपकी, हम सब हुए सनाथ ।।१४६।।
बड़ा दुष्ट निर्दय हृदय, जरासिन्धु था भूप ।
हनता हम सबको अवशि, कलुषित हृदय कुरूप ।।१४७।।
मरा भीम के हाथ से, कृपा तुम्हारी नाथ ।
दिग्विजयी वह ही हुआ, जिस पर हरि का हाथ ।।१४८।।
लूला लँगड़ा गिरि चढ़ै, देखै नैन विहीन ।
हो कुबेर सम निमिष में, महा दरिद्री हीन ।।१४९।।
गूँगा हो जो जन्म का, वह होवे वाचाल ।
कृपा कोर जिस पर करो, तुम मोहन गोपाल ।।१५०।।
देव-दनुज नर-नाग सब, ध्याते तुमको ईश ।
ध्यान धरें श्री शम्भु भी, हे जगपति जगदीश ।।१५१।।
नेति-नेति कह वेद भी, कहते गुण गण गान ।
भेद न कोई पा सका, निराकार भगवान ।।१५२।।
जब-जब बढ़ते दुष्ट जन, करते हैं उत्पात ।
निराकार साकार हो, तब-तब आते तात ।।१५३।।
भीर हरो निज भक्त की, करो दुष्ट संहार ।
भूमि भार हरते प्रभो, ले ले कर अवतार ।।१५४।।
जो आज्ञा हो आपकी, वही करें हम काम ।
यह कह नृप चरणों पड़े, करके दण्ड प्रणाम ।।१५५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहा कृष्ण ने नृपों, से जाओ निज-निज गेह ।
पालो अपनी प्रजा को, पुत्र सरिस कर नेह ।।१५६।।
फिर आना तुम लोग सब, धर्मराज के धाम ।
इन्द्रप्रस्थ विख्यात है, जग में जिसका नाम ।।१५७।।
होय राजसू यज्ञ जब, तब आना तुम लोग ।
बड़े भाग्य से मिला है, यह सुन्दर संयोग ।।१५८।।
आज्ञा पा भगवान की, बिदा हुए सब भूप ।
मन मन्दिर में धरे वे, सुन्दर श्याम स्वरूप ।।१५९।।
जरासिंधु के पुत्र को, सिंहासन बैठाय ।
इन्द्रप्रस्थ को चल दिये, भीमार्जुन ब्रजराय ।।१६०।।
जरासिंधु का पुत्र था, वह सहदेव सुजान ।
मणि भूषण इत्यादि दे, बिदा किये भगवान ।।१६१।।
मिले युधिष्ठिर नृपति से, आकर के घनश्याम ।
कहा भीम ने किया है, राजन् ! अद्भुत काम ।।१६२।।
जरासिन्धु बलवान को, दिया भीम ने मार ।
महाबली तव भ्रात है, बोले कृष्ण मुरार ।।१६३।।
हुआ तुम्हारे पुण्य से, महा कठिन यह कार्य ।
भीम बली के हाथ से, मारा गया अनार्य ।।१६४।।
धर्मराज चरणों पड़े, कह जय जय गोपाल ।
तुम भक्तों का सतत ही, करते हो प्रतिपाल ।।१६५।।
पूजन कर घनश्याम का, पाया परमानन्द ।
कह कर हरि गोविन्द जय, जय-जय-जय ब्रजचन्द ।।१६६।।
फेरि कहा श्री कृष्ण ने, लख द्विजगण की ओर ।
होय राजसू यज्ञ अब, करो कृपा की कोर ।।१६७।।
जितने अनुचर थे वहाँ, दी आज्ञा नृपराज ।
ठीक करो सब काम अब, पूर्ण करो यह काज ।।१६८।।
दशों दिशाओं को गये, चढ़ तुरंग बहु दूत ।
लाये ऋषि मुनि बहुत से, औ लाये अवधूत ।।१६९।।
राजे महराजे सभी, आये सज कर साज ।
भेजा अर्जुन को गया, लावो तुम कुरुराज ।।१७०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भूमण्डल के सकल नृप, आये थे उस ठाम ।
आया था शिशुपाल भी, बली वीर छविधाम ।।१७१।।
द्रोण कर्ण कृप वीरवर, भीष्म पितामह धीर ।
दुर्योधन शत भ्रात सँग, आये अगणित वीर ।।१७२।।
धर्मराज सम्मान कर, सबको रहे बिठाय ।
स्वागत करते विविध विधि, मन में अति हरषाय ।।१७३।।
दशों दिशाओं में सभी, आये थे भूपाल ।
लाये हीरक रत्न बहु, सुवरण मुक्ता माल ।।१७४।।
सजा सजाकर भेंट नृप, धर्मराज को देयँ ।
होकर परम प्रसन्न मन, धीर युधिष्ठिर लेयँ ।।१७५।।
दुर्योधन यह देखकर, मन में करता डाह ।
सोना चाँदी रत्न कीं, यहाँ न लगती थाह ।।१७६।।
बड़ा युधिष्ठिर का हुआ, जग में है सम्मान ।
मुझ से बढ़कर हुआ यह, धन में धनी महान ।।१७७।।
राजभवन ऐसा बना, जैसा है सुरधाम ।
चम-चम चपला के सदृश, चमके रत्न ललाम ।।१७८।।
लखकर विभव अपार यह, मचा हृदय में द्वंद ।
मन ही मन जलने लगा, दुर्योधन मति मंद ।।१७९।।
लगा घूमने भीम सँग, दुर्योधन भूपाल ।
राजभवन की देखता, शोभा परम विशाल ।।१८०।।
लखकर थल बढ़ता गया, जल का हुआ न भान ।
भीग वस्त्र सारे गये, लगे भीम मुस्कान ।।१८१।।
समझ द्वार आगे बढ़ा, वहाँ रही दीवाल ।
टकरा कर दीवाल से, फूट गया था भाल ।।१८२।।
जहँ समझी दीवाल थी, वहाँ बना था द्वार ।
अद्भुत कारीगरी थी, जिसका वार न पार ।।१८३।।
मय दानव ने रचा था, पाण्डव भवन विशाल ।।
अगणित सुन्दर वाटिका, अगणित सुन्दर ताल ।।१८४।।
लखकर विस्मित हो गये, दुर्योधन भूपाल ।
चित चंचल बेचैन था, हृदय डाह विकराल ।।१८५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विहँसि द्रौपदी ने कहा, लख दुर्योधन हाल ।
अन्धे के अन्धे रहे, कुरुराज के लाल ।।१८६।।
दुर्योधन ने सुनी जब, द्रुपद सुता की बात ।
चुभी बाण सी हृदय में, लगा घोर आघात ।।१८७।।
लूँगा बदला अवशि मैं, ठान लई यह ठान ।
होनी होकर ही रहे, होनी महा महान ।।१८८।।
होनी ने ही भीम को, हँसा दिया उस काल ।
होनी वश ही द्रौपदी, बोली हो बाचाल ।।१८९।।
दुर्योधन आया तुरत, अपने वास स्थान ।
नींद न आयी रात भर, सुमिरि-सुमिरि अपमान ।।१९०।।
प्रातकाल सब नृपों का, लगा बड़ा दरबार ।
कौन करे किस काम को, होने लगा विचार ।।१९१।।
त्रिकालज्ञ श्री कृष्ण ने, बाँटा इस विधि काम ।
भोजन के सब कार्य को, करें भीम अभिराम ।।१९२।।
अतिथि कार्य मिलकर करैं, नकुल सहित सहदेव ।
सुवरण भूषण कोष सब, दुर्योधन को देव ।।१९३।।
अर्जुन रक्षक यज्ञ के, बने वीर बलवान ।
और सहस्त्रों नृपों को, सौंपे कार्य महान ।।१९४।।
चरण धुलाऊँ द्विजों के, बोले श्री भगवान ।
करो युधिष्ठिर यज्ञ अब, धर के शिव का ध्यान ।।१९५।।
कहा युधिष्ठिर ने तभी, सुनो कृष्ण ब्रजराज ।
कृपा आपकी नाथ है, पूर्ण होयँगे काज ।।१९६।।
होय राजसू यज्ञ अब, बनें आप अध्यक्ष ।
सब विधि इसके योग हरि, सब कार्यों में दक्ष ।।१९७।।
भीष्म पितामह ने किया, अनुमोदन तत्काल ।
करो तिलक श्री कृष्ण का, सब विधि योग्य गोपाल ।।१९८।।
सुन करके इस बात को, बिगड़ उठा शिशुपाल ।
बिना बिचारे भीष्म ने, कही बात इस काल ।।१९९।।
जहाँ हजारों भूप हैं, बली एक से एक ।
वहाँ चुना यह ग्वाल क्यों, तजकर बुद्धि विवेक ।।२००।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सूर्यवंश कुरुवंश अरु, चंद्रवंश समुदाय ।
एकत्रित इस जगह पर, वीर धीर नृपराय ।।२०१।।
उन सबका अपमान यह, सहा न मुझसे जाय ।
अति अनुचित यह कार्य तब, सुनो युधिष्ठिरराय ।।२०२।।
तिलक ग्वाल का करो तुम, ठीक नहीं यह बात ।
पता नहीं पितु मातु का, पता नहीं क्या जात ।।२०३।।
भीम सेन क्रोधित हुए, सह न सके कटु बैन ।
दाँत पीसते उठ खड़े, रक्त वर्ण थे नैन ।।२०४।।
कोलाहल सा मच गया, क्रुद्ध हुए नृपवृन्द ।
शांत रहो तुम लोग सब, बोले यों ब्रजचन्द ।।२०५।।
जो यह कहता सुनो सब, स्वयं देउँ मैं दण्ड ।
इसके शिर पर नाचता, काल कराल प्रचण्ड ।।२०६।।
और बिगड़ तब गया वह, क्रोधित हो शिशुपाल ।
लगा सुनाने दुर्वचन, मौन रहे नँदलाल ।।२०७।।
खींच लकीरें भूमि पर, गिनते जाते श्याम ।
दुर्मति बकता ही गया, नहिं सोचा परिणाम ।।२०८।।
हुए शताधिक दुर्वचन, तब बोले गोपाल ।
मत बोलो अब और तुम, मौन रहो शिशुपाल ।।२०९।।
वरना मारूँगा अभी, हर लूँगा तव प्रान ।
क्षमा किये अपराध सौ, अब न सहूँ अपमान ।।२१०।।
वचन बद्ध मैं था हुआ, तेरी माँ के साथ ।
किये क्षमा अपराध शत, बोले दीनानाथ ।।२११।।
वह बकता ही गया जब, कडुवे तीखे बैन ।
क्रोधवन्त हरि हो गये, हुए अरुण तब नैन ।।२१२।।
चक्र सुदर्शन चला कर, क्षण में काटा शीश ।
सुरगण सब हर्षित हुए, कह जय जय जगदीश ।।२१३।।
मरते ही शिशुपाल के, निकली ज्योति अनूप ।
और समाई श्याम में, चकित हुए सब भूप ।।२१४।।
ऋषि नारद ने उसी क्षण, बतलाया सब हाल ।
शाप मुक्त हो गया अब, द्वारपाल शिशुपाल ।।२१५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सनक सनन्दन ऋषि प्रवर, मुनिवर सनत्कुमार ।
एक समय वे गये थे, लक्ष्मीपति के द्वार ।।२१६।।
द्वारपाल जो जय विजय, रोके सनत्कुमार ।
हुए शाप वश दैत्य वे, बल में बली अपार ।।२१७।।
तीन बार हमने कहा, करो न पथ अवरुद्ध ।
तीन बार निशिचर बनो, बोले हो ऋषि क्रुद्धं ।।२१८।।
चरण पड़े तब जय विजय, बोले होकर दीन ।
क्षमा करो अपराध ऋषि, ज्ञानी परम प्रवीन ।।२१९।।
नहिं पहिचाना आपको, हुयी भूल है नाथ ।
आरत हो रोने लगे, जोड़-जोड़ कर हाथ ।।२२०।।
ऋषिवर ने करके दया, दिया उन्हें वरदान ।
हरि कर से मरकर मिले, तुमको मुक्ति महान ।।२२१।।
सतयुग में निशिचर हुये, बल में बली अपार ।
हरिणाकुश हरिणाक्ष का, रूप भयानक धार ।।२२२।।
धार स्वरूप बाराह का, ले नृसिंह अवतार ।
मारा फिर हरिणाक्ष को, हरिणाकुश उर फार ।।२२३।।
कुम्भकरण रावण हुये, त्रेता में बलवान ।
उसको हनने के लिए, प्रकटे राम सुजान ।।२२४।।
हुये तीसरी बार वे, दन्त वक्र शिशुपाल ।
मुक्त हुआ शिशुपाल अब, हरि कर से इस काल ।।२२५।।
सुनकर इस वृत्तान्त को, मुदित हुए महिपाल ।
जय-जय सब कहने लगे, जय-जय-जय गोपाल ।।२२६।।
सुर हरसे बरसे सुमन, नभ में चढ़े विमान ।
कह जय-जय गोपाल जय, कृष्णचन्द्र भगवान ।।२२७।।
कौन बोलता फिर वहाँ, होता कौन समक्ष ।
तिलक हुआ भगवान का, बने कृष्ण अध्यक्ष ।।२२८।।
हुआ राजसू यज्ञ फिर, बड़े ठाठ के साथ ।
जो याचक आया वहाँ, गया न खाली हाथ ।।२२९।।
दुर्योधन देता उन्हें, सौ की जगह हजार ।
जिससे खाली कोष हो, मन में यही विचार ।।२३०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिर भी बढ़ता कोष था, लख-लख वह हैरान ।
क्यों नहिं घटता कोष है, है आश्चर्य महान ।।२३१।।
लौट-लौट आता वहाँ, फिर-फिर याचक वृन्द ।
बार बार धन दे उन्हें, दुर्योधन सानन्द ।।२३२।।
घट जाये यह कोष जो, हो जाये अपमान ।
यही धारणा धार कर, कुरुपति देता दान ।।२३३।।
एक घटै तो सौ बढ़ै, कर में ऐसी रेख ।
दुर्योधन भूला रहा, सका न उसको देख ।।२३४।।
कितना द्रव्य महान है, कर न सका अनुमान ।
अपने करके चक्र का, हुआ न उसको भान ।।२३५।।
मन में समझा यही वह, सुवरण भरा अथाह ।
दुर्योधन के वहीं पर, उपजी उर में दाह ।।२३६।।
बीज महाभारत पड़ा, समझो सभी सुजान ।
होनी होकर ही रहे, होनी अति बलवान ।।२३७।।
जो इच्छा गोविन्द की, होती वह ही बात ।
समरथ सब कुछ कर सकै, कर दे दिन को रात ।।२३८।।
कृष्णचन्द्र भगवान के, मन में थी यह चाह ।
दुर्योधन दुर्बुद्ध के, उर में उपजे डाह ।।२३९।।
जिससे हो कुरुवंश का, रण में लड़ कर नाश ।
भार घटै भव भूमि का, चहते रमा निवास ।।२४०।।
वही हुआ इस काल था, हरि माया बलवान ।
सुर नर मुनि हारे सभी, सका न कोई जान ।।२४१।।
हुआ राजसू यज्ञ था, फिर विधिवत् सम्पन्न ।
पूर्णाहुति पा हो गये, सुर-मुनि मनुज प्रसन्न ।।२४२।।
धन्य युधिष्ठिर नृपति हैं, धन्य राजसू यज्ञ ।
धन्य धन्य ऋषि मुनि सभी, धर्मशास्त्र मर्मज्ञ ।।२४३।।
कहता जन समुदाय था, अद्‌भुत है यह कार्य ।
सुर समाज कहता सभी, धन्य धन्य हैं आर्य ।।२४४।।
पाण्डु पुत्र हरि चरण पर, रख रखकर निज माथ ।
कहते थे तब कृपा से, यज्ञ हुआ है नाथ ।।२४५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पलट गये भूपाल सब, अपने अपने धाम ।
ऋषि मुनि निज आश्रम गये, कहते जय घनश्याम ।।२४६।।
सुवरण मुक्ता वस्त्र का, विधिवत् करते दान ।
धर्मराज ने था किया, द्विजगण का सम्मान ।।२४७।।
रहे वहाँ पर कृष्ण जी, सँग में श्री बलराम ।
नित प्रति होता मोद था, धर्मराज के धाम ।।२४८।।
वाम नयन श्री कृष्ण का, फरके बारम्बार ।
समझ अशुभ लक्षण तुरत, बोले कृष्ण मुरार ।।२४९।।
धर्मराज भ्राता सुनो, चित चंचल बेचैन ।
तुरत जाउँ मैं द्वारका, बोले ऐसे बैन ।।२५०।।
गये कृष्ण फिर द्वारिका, संग में दोऊ भ्रात ।
मग में ठहरे थे नहीं, चलते थे दिन रात ।।२५१।।
धर्मराज की कामना, पूर्ण करी घनश्याम ।
जय मोहन घनश्याम जय, जय जय लीलाधाम ।।२५२।।
प्रेम सहित इस कथा को, पढ़ें सुनें जो लोग ।
मनोवाञ्छा पूर्ण हो, पावें सब सुख भोग ।।२५३।।
हरि सुमिरन ही सार है, है संसार असार ।
नित प्रति सुमिरे कृष्ण जो, होवे भव से पार ।।२५४।।
जय राधावर कृष्ण जय, जय जय जय छविधाम ।
निशिवासर कहते रहो, मनमोहन घनश्याम ।।२५५।।
जयति जयति गोविन्द जय, मधुसूदन भगवान ।
ऋद्धि-सिद्धि मिलती उसे, जो धरता हरि ध्यान ।।२५६।।
अन्धकार उर का हटे, प्रकटे परम प्रकाश ।
कवि 'किशोर' के हृदय में, करिये कृष्ण निवास ।।२५७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शाल्व-बध

शाल्व नाम का भूप था, दैत्य प्रकृति बलवान ।
अस्त्र-शस्त्र में निपुण वह, योधा महा महान ।।१।।
परम मित्र शिशुपाल का, थी बचपन की प्रीति ।
दोनों मिलकर लड़े जो, लें सुरेन्द्र को जीति ।।२।।
होनी अति बलवान है, सका न कोई जान ।
होनी से बचते नहीं, सुर मुनि जान अजान ।।३।।
गया ब्याहने रुक्मिणी, को जब नृप शिशुपाल ।
गया संग था शाल्व भी, योधा विकट विशाल ।।४।।
जीत लिया श्रीकृष्ण ने, इन सबको उस काल ।
हरण रुक्मिणी का किया, नटनागर गोपाल ।।५।।
करी प्रतिज्ञा शाल्व ने, मन में भरकर क्रोध ।
ध्वंस करूँ यदुवंश का, तब होगा प्रतिशोध ।।६।।
नहीं गया निज भवन को, शाल्व बली अधिराज ।
हुआ तपस्या में निरत, जंगल बीच विराज ।।७।।
खान पान सब त्याग कर, होकर बुद्धि कुशाग्र ।
भजने संकर को लगा, मन को कर एकाग्र ।।८।।
वह मुट्ठी भर राख का, करता था आहार ।
मन में थी यह लालसा, हों प्रसन्न त्रिपुरार ।।९।।
औघड़ दानी शम्भु हैं, आषु-तोष भगवान ।
विश्वनाथ शशिभाल शिव, दया-कोष भगवान ।।१०।।
लगी लगन थी शम्भु से, भूला सब कुछ और ।
जगत पिता जगदीश हर, देवों के शिर मौर ।।११।।
एक वर्ष भजता रहा, कठिन नेम के साथ ।
हो प्रसन्न प्रकटे तभी, शंकर भोलानाथ ।।१२।।
'वरंब्रूहि' शिव ने कहा, हो प्रमुदित उस काल ।
हाथ जोड़ कहने लगा, शाल्व बली भूपाल ।।१३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दो विमान ऐसा प्रभू ! सकै न कोई तोड़ ।
सकै न कोई सुर-असुर, अस्त्र-शस्त्र से फोड़ ।।१४।।
मेरी इच्छा मात्र से, उड़े विमान विशाल ।
मर्त्त्य भूमि आकाश में, औ जाये पाताल ।।१५।।
'एवमस्तु' शिव ने कहा, दिया तुझे वरदान ।
जैसा तू है चाहता, वैसा मिलै विमान ।।१६।।
मय दानव को फिर बुला, दी आज्ञा शशिभाल ।
सुन्दर रचो विमान तुम, करो वचन प्रतिपाल ।।१७।।
मय दानव ने रचा तब, सौम विमान अनूप ।
योजन भर विस्तृत बड़ा, उसका सुघर स्वरूप ।।१८।।
जिसमें बस जाये नगर, ऐसा रचा विमान ।
हर्ष सहित फिर शाल्व को, मय ने किया प्रदान ।।१९।।
ले विमान को शाल्व फिर, आया अपने देश ।
अस्त्र-शस्त्र सज्जित चला, धरे वीर का वेश ।।२०।।
लखकर अपनी शक्ति को, फूला नहीं समाय ।
सैन्य सहित फिर द्वारिका, क्षण में पहुँचा आय ।।२१।।
पता उसे पहले लगा, इन्द्रप्रस्थ गोपाल ।
और यज्ञ में वहाँ पर, मार दिया शिशुपाल ।।२२।।
बैर चुकाऊँ मित्र का, कर यदुवंशी नष्ट ।
क्रोध पाप का मूल है, हुई बुद्धि थी भ्रष्ट ।।२३।।
भूला था अभिमान में, मन में भरे गुमान ।
आयी उसकी मौत थी, नहिं चीन्हा भगवान ।।२४।।
पत्थर बरसाने लगा, उड़ता हुआ विमान ।
व्याकुल जन समुदाय था, बालक वृद्ध जवान ।।२५।।
यह कैसा उत्पात था, बरस रहे पाषाण ।
त्राहि-त्राहि चहुँ दिशि मची, ऊब रहे थे प्राण ।।२६।।
क्रोधित हो प्रद्युम्न ने, दी आज्ञा तत्काल ।
रथ लाओ हे सारथी, रक्खो शस्त्र सँभाल ।।२७।।
चले युद्ध को प्रद्युमन, रथ पर हो असवार ।
तीखे तीखे शरों से, करने लगे प्रहार ।।२८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगणित छोड़े बाण पर, टूटा नहीं बिमान ।
चकित हुए प्रद्युम्न तब, और हुए हैरान ।।२९।।
युद्ध हुआ दिन रात था, बीते दिन छब्बीस ।
जीत न पाया प्रद्युमन, शाल्व बली अवनीस ।।३०।।
सत्ताइसवें दिवस फिर, आये कृष्ण मुरार ।
और द्वारिका में लखा, भीषण हाहाकार ।।३१।।
भेजा श्री बलराम को, नगर जाव तुम भ्रात ।
पुरजन की रक्षा करो, रक्षक बनकर तात ।।३२।।
शाल्व दैत्य से स्वयं मैं, करूँ यहाँ संग्राम ।
शंखाधनु ले हाथ में, गरजे फिर घनश्याम ।।३३।।
अगणित तीखे शरों से, करने लगे प्रहार ।
पर विमान टूटा नहीं, हुये बाण बेकार ।।३४।।
शाल्व बली शर छोड़ता, मरती जाती सैन ।
देख दशा निज सैन की, हुये कृष्ण बेचैन ।।३५।।
देख विकल श्रीकृष्ण को, शाल्व बली बलवान ।
कह-कह कर कटु वचन वह, मार रहा था बाण ।।३६।।
फिर काटा श्रीकृष्ण का, शारँग धनु तत्काल ।
और कहा रण छोड़ कर, भाग जाव नँदलाल ।।३७।।
कटते ही धनु कृष्ण का, घबराया सुर वृन्द ।
चकित हुई सेना सभी, मुस्काये ब्रजचन्द ।।३८।।
उठा चक्र निज हाथ में, घुमा फिरा गोपाल ।
साध निशाना शाल्व पर, छोड़ दिया तत्काल ।।३९।।
कटा शीश था दुष्ट का, गिरा धरणि पर आय ।
हरि कर से मर कर तुरत, गया मुक्ति वह पाय ।।४०।।
हरि ने गदा प्रहार कर, गिरा दिया वह यान ।
सैन सहित गिर सिन्धु में, डूबा सौम विमान ।।४१।।
सुर हरसैं बरसैं सुमन, करैं अप्सरा गान ।
पाञ्चजन्य निज शंख को, बजा दिया भगवान ।।४२।।
अति प्रमुदित थे लोग सब, पुरी द्वारिका बीच ।
कहता जन समुदाय था, मरा शाल्व शठ नीच ।।४३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जय-जय-जय कहते सभी, जय मोहन घनश्याम ।
विपद हरी तुमने प्रभो, अद्‌भुत कर यह काम ।।४४।।
हर्षित यदुवंशी सभी, कह जय-जय गोपाल ।
विपति द्वारिका से टली, जय-जय-जय नँदलाल ।।४५।।
जयति जयति ब्रजचन्द जय, जय-जय नँदकिशोर ।
कहते सुरमुनि सभी यों, हो आनन्द विभोर ।।४६।।
सदा विपति तुम टालते, भक्तों की भगवान ।
दीनबन्धु कहता जगत, दीनों के तुम प्रान ।।४७।।
जो सुमिरै भव निधि तरे, शत्रु होय या मित्र ।
समदर्शी भगवान की, है यह बात विचित्र ।।४८।।
गुण-गण गाले श्याम के, करले जन्म पवित्र ।
मन मन्दिर में ले बसा, श्याम मनोहर चित्र ।।४९।।
जिह्वा से हरि नाम ले, और छोड़ सब काम ।
भज गोविन्दहिं मूढ़ मति, नित प्रति आठों याम ।।५०।।
भजन सार संसार में, है असार संसार ।
कवि 'किशोर' भजता तुम्हें, नागर नन्द कुमार ।।५१।।

दंतवक्र और विदूरथ-बध

धान्य श्याम मायापते, लीला अपरम्पार ।
हरने भू के भार को, आये कृष्ण मुरार ।।१।।
दंत वक्र ने जब सुना, मरा मित्र शिशुपाल ।
शाल्व गया है द्वारिका, करने युद्ध कराल ।।२।।
चला द्वारिका ओर वह, बिना सैन्य के वीर ।
कर में केवल ले गदा, निर्भय चला अधीर ।।३।।
महाबली बल में रहा, लम्बा चौड़ा डील ।
बड़ा भयानक रूप था, था स्वभाव दुःशील ।।४।।
डगमग होती भूमि थी, चलता था जब दुष्ट ।
सुर डरते कँपते असुर, लखकर उसको रुष्ट ।।५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्या जाने क्या करेगा, कहते सुर गन्धर्व ।
पहुँचा जा वह द्वारिका, भरे हृदय में गर्व ।।६।।
मरा शाल्व था उसी क्षण, डूबा सिन्धु विमान ।
देख दशा क्रोधित महा, दंत वक्र बलवान ।।७।।
शंखनाद हरि कर रहे, प्रमुदित थी सब सैन ।
दंत वक्र बकने लगा, कड़ुवे तीखे बैन ।।८।।
जरासिन्धु शिशुपाल को, मारा तूने श्याम ।
शाल्व हना है आज फिर, नहिं समझा परिणाम ।।९।।
बदला सबका लूँ चुका, तुमको डालूँ मार ।
बुला सहायक ले सभी, रे रे नन्दकुमार ।।१०।।
इसी तरह बकता रहा, मन में भर अभिमान ।
सुन-सुन हँसते कृष्ण थे, दीनबन्धु भगवान ।।११।।
समझ रहे थे कृष्ण जी, आया इसका काल ।
इसीलिए यह बक रहा, ,होकर के वाचाल ।।१२।।
वह कटु बकता ही रहा, मन में भरे गुमान ।
गदा घुमाकर दुष्ट ने, मारी हरि के तान ।।१३।।
वह समझा था हृदय में, निकल जायँगे प्रान ।
लगि हरि के तन पर गदा, टूटी पुष्प समान ।।१४।।
उठा गदा कौमोद निज, क्रोधित हुए महान ।
दौड़े रिपु की ओर तब, कृष्णचन्द्र भगवान ।।१५।।
दंतवक्र के वक्ष पर, कीन्हा गदा प्रहार ।
महाभयानक दुष्ट को, क्षण में डाला मार ।।१६।।
दंतवक्र भू पर गिरा, होकर के निष्प्रान ।
उसके तन से ज्योति फिर, निकली महामहान ।।१७।।
और समाई कृष्ण में, देख चकित सब लोग ।
मुक्त हुआ क्षण में असुर, बिन साधे तप-योग ।।१८।।
दंतवक्र का भ्रात था, बली विदूरथ वीर ।
देख मरण निज भ्रात का, मन में हुआ अधीर ।।१९।।
दौड़ा हरि की ओर वह, ले नंगी तलवार ।
लिये लालसा हृदय में, डालूँ हरिको मार ।।२०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किया युद्ध कुछ देर तक, उसने हरि के साथ ।
चला चक्र फिर कृष्ण ने, काटा उसका माथ ।।२१।।

हरि कर से मर कर गया, बली विदूरथ स्वर्ग ।
जय ध्वनि मिल करते सभी, सुर किन्नर के वर्ग ।।२२।।

सुमन वृष्टि नभ से करें, सुर किन्नर गन्धर्व ।
जय-जय-जय श्री कृष्ण जय, करते थे सुर सर्व ।।२३।।

यदुवंशी हर्षित सभी, करते जय जयकार ।
बजा विजय की दुन्दुभी, प्रमुदित हुए अपार ।।२४।।

पुरी द्वारिका में हुआ, उत्सव परमानन्द ।
कहता जन समुदाय था, धन्य-धन्य ब्रजचन्द ।।२५।।

विप्रों का सम्मान कर, दिया विविध विधि दान ।
उग्रसेन हर्षित हुए, मन में मुदित महान ।।२६।।

भजन कृष्ण का करे जो, होवे भव से पार ।
मन चाहा फल प्राप्त हो, भज ले नन्दकुमार ।।२७।।

मोहन कहु गोपाल कहु, नटनागर घनश्याम ।
मधुसूदन ब्रजचन्द कहु, मुरलीधर छविधाम ।।२८।।

श्री बल्लभ गोविन्द कहु, राधावर नँदलाल ।
यशुदानन्दन श्याम कहु, गिरिधर मदन गोपाल ।।२९।।

मनमोहन केशव कहो, श्रीपति आठों याम ।
सुमिरन से हरि नाम के, सिद्धि होंय सब काम ।।३०।।

कर मुरली सुन्दर लिये, मोर मुकुट धर शीश ।
कवि 'किशोर' को दर्शदो, जग पालक जगदीश ।।३१।।

सुदामा-चरित्र

एक सुदामा विप्र थे, त्यागी तपसी धीर ।
कृष्ण भक्ति में लीन थे, ज्ञानवान गम्भीर ।।१।।

भजन भाव में रत सदा, गाते हरि-गुण-गान ।
श्याम सलोनी मूर्ति का, धरते उर में ध्यान ।।२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्याम-श्याम रटते रहें, आठ पहर दिन रात ।
सिवा श्याम-गुन-गान के, और न भाती बात ।।३।।
मगन रहें स्वाध्याय में, सिद्धासन आसीन ।
ब्रह्मज्ञानी संयमी, पंडित परम प्रवीन ।।४।।
वेद शास्त्र मर्मज्ञ वे, शुद्ध चित्त निष्काम ।
करते कुछ उद्यम न थे, भजते थे नित श्याम ।।५।।
थी न लालसा कुछ उन्हें, कृष्ण भक्ति में चूर ।
जगती के झंझट सभी, रहते उनसे दूर ।।६।।
नहीं काम से काम था, नहीं क्रोध से काम ।
लोभ मोह से रहित था, द्विजवर का हृद्धाम ।।७।।
मिला उन्हें सन्तोष धन, रही न धन की चाह ।
यथा लाभ संतुष्ट नित, हरि के हाथ निबाह ।।८।।
पत्नी भी उनको मिली, रूप-राशि सुकुमार ।
पतिव्रता पति चरण पर, तन मन से बलिहार ।।९।।
मिलता था जो भाग्य से, रूखा सूखा अन्न ।
उसमें ही संतुष्ट वह, रहती सदा प्रसन्न ।।१०।।
दुख-सुख कुछ गिनती नहीं, पति सेवा रत वाम ।
सुमन सरिस प्रफुलित सदा, करती घरके काम ।।११।।
दुख को भी उसने किया, सुख समान स्वीकार ।
रहती थी आनन्द से, पाकर पति का प्यार ।।१२।।
फटे पुराने वस्त्र ही, थे उसके श्रृङ्गार ।
भूषण विविध प्रकार थे, शील स्वभाव उदार ।।१३।।
पास सुदामा के न था, धरा-धान्य-धन-धाम ।
चलते उनके काम सब, लेकर हरि का नाम ।।१४।।
छप्पर था एक फूस का, टूटी सी दीवार ।
पति पत्नी का था यही, बस सारा संसार ।।१५।।
स्वर्ण रजत की बात क्या, न थे धातु के पात्र ।
घर में टूटा सा तवा, और कठैली मात्र ।।१६।।
कुश आसन पर्याप्त थे, बिस्तर का क्या काम ?
शाक अशन वल्कल-वसन, प्रमुदित आठों याम ।।१७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्राह्मी वेला में उठें, धरें ब्रह्म का ध्यान ।
पाते थे हरि भक्ति में, वे आनन्द महान ।।१८।।
कृषक काट कर खेत को, ले जाता निज धाम ।
बचा खुचा गायें चरें, द्विज जाते उस ठाम ।।१९।।
गिरा पड़ा दाना चुनें, जब जितना मिल जाय ।
नित प्रति का यह नेम था, लावैं उसे उठाय ।।२०।।
मिलता जो कुछ भाग्य से, चलता उससे काम ।
नहीं मिले जिस दिवस तो, भजें राम का नाम ।।२१।।
केवल जल पीकर रहें, कर दें दिवस व्यतीत ।
उनके सुख संतोष की, महिमा परम पुनीत ।।२२।।
कोई कवि कैसे लिखे, द्विज का चारु चरित्र ।
तरुण तपस्वी विप्र थे, कृष्णचन्द्र के मित्र ।।२३।।
पढ़े कृष्ण के संग थे, सान्दीपन के पास ।
उनकी पत्नी जानती, संगी रमानिवास ।।२४।।
ऐसा बना सँयोग कुछ, हुए कई उपवास ।
तब पत्नी ने यों कहा, जाव कृष्ण के पास ।।२५।।
दीन बन्धु भगवान हरि, पूर्ण ब्रह्म भर पूर ।
अपने कृपा कटाक्ष से, कर देंगे दुख दूर ।।२६।।
सखा तुम्हारे नाथ वे, फिर कैसा संकोच ।
चले जाव तुम द्वारिका, करो न मन में सोच ।।२७।।
जाने से ही बस वहाँ, होयँ सिद्ध सब काम ।
लक्ष्मीपति दानी महा, कृष्णचन्द्र घनश्याम ।।२८।।
देंगे इतना द्रव्य वे, देंगे सब सुख भोग ।
आजीवन आनन्द से, रहें सदा हम लोग ।।२९।।
त्रिभुवनपति भगवान वे, दाता दीनदयाल ।
सब उनके आश्रित रहें, करते जन प्रतिपाल ।।३०।।
जिनसे सब जग माँगता, जिनके सब कुछ हाथ ।
उनसे माँगो जाय तुम, नहीं लाज कुछ नाथ ।।३१।।
सोने चाँदी का वहाँ, भरा अमित भण्डार ।
नित करते हैं दान वे, सुबरन रतन अपार ।।३२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दानी उनसा जगत में, और नहीं है आज ।
जाता जो ले लालसा, पूर्ण करें ब्रजराज ।।३३।।
इससे जायें आप भी, कृष्णचन्द्र के पास ।
कष्ट तभी सब दूर हों, पूर्ण होय अभिलास ।।३४।।
अब तक मैं बोली नहीं, सदा रही खामोश ।
हद होती हर बात की कब तक हो संतोष ।।३५।।
साड़ी चोली भी कभी, मिली न मुझको नाथ ।
जीर्ण शीर्ण ही वस्त्र ये, सदा रहे हैं साथ ।।३६।।
रूखे सूखे बाल ये, शिर पर भार स्वरूप ।
सुन्दर होते हुए भी, मैं दिखती अपरूप ।।३७।।
कंघी करती जो कभी, नुचते सारे बाल ।
आरी सी सिर में चले, होता हाल विहाल ।।३८।।
जीवन में मेंहदी कभी, लगी न मेरे हाथ ।
कभी नहीं सिन्दूर से, सजा सकी मैं माथ ।।३९।।
मैंने जो अब तक सहा, सह सकता है कौन ।
किन्तु न कुछ मैंने कहा, रही सदा ही मौन ।।४०।।
सहन न होता दुःख अब, सही विपत्ति अनेक ।
धैर्य नहीं चित में रहा, भूला सभी विवेक ।।४१।।
पति के रहते नारि का, जो न बना श्रृंगार ।
तो सूना संसार है, औ जीवन निःसार ।।४२।।
कृष्ण आपके मित्र हैं, दीनानाथ उदार ।
जाओ उनके द्वार तो, होगा बेड़ा पार ।।४३।।
क्षण भंगुर संसार है, रह जाता है नाम ।
वह है सच्चा मित्र जो, दुख में आवे काम ।।४४।।
जाव तुरत तुम द्वारिका, करो न पल की देर ।
शरण गये फिर जायँगे, नाथ दिनों के फेर ।।४५।।
विप्र सुदामा ने कहा, सुन पत्नी के बैन ।
तू पगली धन के लिये, क्यों होती बेचैन ।।४६।।
धन से प्रज्ञा भ्रष्ट हो, रुष्ट रहें भगवान ।
तज दे धन की लालसा, कहना मेरा मान ।।४७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मृग-तृष्णा में तू फँसी, क्यों करती है भूल ।
धन का संग्रह सर्वदा, विप्रों के प्रतिकूल ।।४८।।
धन दौलत चहिए नहीं, नहिं रत्नों का कोष ।
ब्राह्मण का धन एक है, बस केवल संतोष ।।४९।।
विप्रों को चहिए नहीं, राज पाट का ठाठ ।
उनका तो सर्वस्व है, सदा वेद का पाठ ।।५०।।
ध्यान राम का करें हम, तज लक्ष्मी का ध्यान ।
कन्द मूल खाकर रहें, मन में मुदित महान ।।५१।।
हीरा मुक्ता लाल की, हमको क्या दरकार ।
अपने धन नँदलाल हैं, जिन्हें भजे संसार ।।५२।।
मेरे तो घनश्याम हैं, सब विधि प्राणाधार ।
मुझको उनसे काम है, तृणवत है संसार ।।५३।।
माया में फँसता न मैं, नहीं मुझे कुछ लोभ ।
क्या रक्खा है द्रव्य में, व्यर्थ न कर तू क्षोभ ।।५४।।
मिलता सब कुछ भाग्य से, कहते ऋषि मुनि सिद्ध ।
बिना भाग्य मिलता न कुछ, है यह बात प्रसिद्ध ।।५५।।
जो होना होगा अवशि, सकै न कोई रोक ।
समझ भाग्य को प्रबल तू, व्यर्थ करे क्यों शोक ।।५६।।
बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख ।
है लोकोक्ति प्रसिद्ध यह, यही बड़ों की सीख ।।५७।।
माँगे से घटती सदा, आन-बान औ शान ।
माँगे से मिलता कहाँ, जगती में सम्मान ।।५८।।
जो कि किसी के सामने, माँगे हाथ पसार ।
उसका घटता मान है, ले यह बात विचार ।।५९।।
बलि सा दानी जगत में, हुआ न कोई अन्य ।
कहता अब तक विश्व है, बलि राजा था धन्य ।।६०।।
जिससे माँगन हरि गये, ले वामन औतार ।
आखिर वे छोटे बने, जो जग के करतार ।।६१।।
मुझको छोटा मत बना, छोड़ व्यर्थ बकवाद ।
समझ इसी में है भला, कर ईश्वर को याद ।।६२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुन प्रीतम की बात को, बोली नारि सुजान ।
धन्य आपकी बुद्धि है, धन्य आपका ज्ञान ।।६३।।
माँगे से सब कुछ मिले, बिन माँगे दे कौन ।
बलि के द्वारे विष्णु भी, रहे न आखिर मौन ।।६४।।
माँग मोतियों से भरी, जाती सुनो प्रवीन ।
आप माँग की क्यों वृथा, करते हैं तौहीन ।।६५।।
जब माँगा भगवान ने, बलि से कहते आप ।
जो तुम माँगो श्याम से, तो इसमें क्या पाप ।।६६।।
जिनसे माँगे देवता, औ सारा संसार ।
वे सबके क़रतार हैं, वे सबके भरतार ।।६७।।
जो जाता उनकी शरण, लेकर चित में चाह ।
दीन दरिद्री जन्म का, बन जाता है शाह ।।६८।।
दुःख दलन घनश्याम हैं, करें न पल की देर ।
उनकी कृपा कटाक्ष से, कँगले बनें कुबेर ।।६९।।
जाओ प्रिय तुम द्वारिका, मानों मेरी बात ।
भाग्य जगें सब दुख भगें, टले रात हो प्रात ।।७०।।
श्याम आपके मित्र हैं, जाव मित्र के पास ।
प्यासा जाता कूप पर, तब बुझती है प्यास ।।७१।।
समझ नारि का हठ प्रबल, विप्र हुए लाचार ।
मौन रहे बोले नहीं, करने लगे विचार ।।७२।।
जाना ही होगा अवशि, मुझे मित्र के द्वार ।
लेकिन प्यारे मित्र को, क्या दूँगा उपहार ।।७३।।
पास न पाई एक है, और न कुछ सामान ।
बिना दिये जो कुछ मिलूँ, तो घटता है मान ।।७४।।
बोले जाऊँ द्वारिका, कहना तेरा मान ।
तो कुछ चहिए भेंट को, उनको प्रिया सुजान ।।७५।।
बिगड़ जायगी बात यदि, जाऊँ खाली हाथ ।
जाकर दूँ उपहार तो, हों प्रसन्न ब्रजनाथ ।।७६।।
गई पड़ोसी के यहाँ, चतुर विप्र की नार ।
लाई तन्दुल माँग कर, उससे तुरत उधार ।।७७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बाँध दुपटिया में दिये, तन्दुल द्विज के हाथ ।
चले द्वारिका विप्रवर, भजते थे ब्रजनाथ ।।७८।।
मग में जावें भक्तवर, करते सोच विचार ।
विवश किया जाना पड़ा, बड़ी हठीली नार ।।७९।।
वे राजा हैं, धनी हैं, पूर्ण पुरुष भगवान ।
कैसे उनसे मिलूँगा है संकोच महान ।।८०।।
बाल्यकाल के मित्र को, क्या लेंगे पहिचान ।
भूल गये होंगे मुझे, ऐसा है अनुमान ।।८१।।
यदि वे पहिचानें नहीं, तो होगा अपमान ।
सोच-सोच कर हो रहा, चंचल चित्त महान ।।८२।।
चले सुदामा दिवस भर, लख कर सायंकाल ।
एक वाटिका में दिया, अपना डेरा डाल ।।८३।।
शीतल मंद सुगन्धिमय, बहता सुखद समीर ।
झरने से गिर रहा था, झर-झर-झर मृदुनीर ।।८४।।
कल कल छल छल जल करे, हो जैसे संगीत ।
पक्षी कलरव कर रहे, मानों गाते गीत ।।८५।।
लाल-लाल आकाश था, होते थे रवि अस्त ।
दिव्य दृश्य यह देख कर, हुए सुदामा मस्त ।।८६।।
सन्ध्या सन्ध्या काल की, करके द्विज सानन्द ।
लेटे-लेटे भूमि पर, भजते थे ब्रजचन्द ।।८७।।
थके हुए थे मार्ग के द्विजवर परम प्रवीन ।
भजते भजते श्याम को, हुए नींद में लीन ।।८८।।
चले जभी द्विजराज थे, पुरी द्वारका धाम ।
जान गये सब थे तभी, अन्तर्यामी श्याम ।।८९।।
मित्र सुदामा आ रहे, मिलने मेरे पास ।
जल्दी पहुँचें यहाँ वे, सोचें रमानिवास ।।९०।।
माया को आदेश दे, बोले श्री गोपाल ।
मित्र सुदामा के लिए, जाओ तुम तत्काल ।।९१।।
पथ में हैं वे सो रहे, नींद न खुलने पाय ।
सोते ही सोते उन्हें, लाओ यहाँ उठाय ।।९२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तत्क्षण ही माया गई, तत्क्षण किया उपाय ।
पुरी द्वारिका के निकट, उनको दिया लिटाय ।।९३।।
उठे सुदामा प्रात जब, चकित हुए चित बीच ।
लाया है मुझको यहाँ, कौन किस तरह खींच ।।९४।।
सोते-सोते आ गया, पुरी द्वारिका धाम ।
धनि-धनि माया श्याम की, धनि-धनि छवि अभिराम ।।९५।।
कैसा अद्भुत खेल यह, है आश्चर्य महान ।
कैसे मैं आया यहाँ, सका न इसको जान ।।९६।।
मग में सोया रात को, कर भू पर विश्राम ।
प्रात हुए जागा यहाँ, कौन पुरी क्या धाम ।।९७।।
मलते आँखें विप्रवर, करते यही विचार ।
जागृत है या स्वप्न है, हे मेरे करतार ।।९८।।
कभी देखते भूमि को, कभी लखें आकाश ।
सोने जगने का नहीं, होता मन विश्वास ।।९९।।
खड़े सुदामा हो गये, चले फिरे कुछ दूर ।
इतने ही में गगन में, लगा चमकने सूर ।।१००।।
तब समझे सब सत्य है, नहीं स्वप्न की बात ।
हरि माया से आ गया, आनँद उर न समात ।।१०१।।
तब फिर भजने लगे वे, कृष्ण-कृष्ण घनश्याम ।
नँद नँदन गोपाल जय, जय-जय लीलाधाम ।।१०२।।
कृष्ण भजन से मिट गई, उनके मन की भ्रांति ।
नित्य कर्म करने लगे, पाकर मन सुख शान्ति ।।१०३।।
चले द्वारिका ओर फिर, धर कर हरि का ध्यान ।
जगमग-जगमग चमकते, सुवरण जटित मकान ।।१०४।।
चम-चम-चम-चम चमकते, माणिक मुक्ता लाल ।
हीरा पन्ना की छटा, अद्भुत परम विशाल ।।१०५।।
फीरोजे के संग में, नीलम झिलमिल होत ।
लहसुनियाँ पुखराज की, जगमग ज्योति उदोत ।।१०६।।
नग चमकें नक्षत्र से, छाई छटा अनूप ।
मुग्ध सुदामा हो गये, देख द्वारिका रूप ।।१०७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुन्दर बाग तड़ाग थे, सुन्दर-सुन्दर कूप ।
पनिहारी जल भर रहीं, सुन्दर सुघर स्वरूप ।।१०८।।
हृष्ट-पुष्ट पशु पक्षि थे, हरे भरे थे खेत ।
मृग केहरि इक संग में, विचरें प्रीति समेत ।।१०९।।
सुन्दर सब नर नारि थे, वृद्ध युवा शिशु वृन्द ।
पुरी द्वारिका में दिखे, चारों दिशि आनन्द ।।११०।।
नगर द्वार अति उच्च था, सुन्दर बड़े कपाट ।
कोट घिरा चहुँ ओर था, अनुपम दुर्ग विराट ।।१११।।
खाई में जल सिंधु था, भरा असीम अनन्त ।
मणिमय कंचन भीत थी, शोभा अति द्युतिवन्त ।।११२।।
नगर द्वारिका पुल बना, विस्तृत परम विशाल ।
विज्ञ विश्वकर्मा रचित, जिसकी नहीं मिसाल ।।११३।।
पुल को करके पार द्विज, पहुँचे नगर मझार ।
भौचक से वे रह गये, सुवरण भवन निहार ।।११४।।
हाट बाट सुन्दर सजे, अनुपम मन हर ठाठ ।
विप्र मण्डली कर रही, जगह-जगह पर पाठ ।।११५।।
चले सुदामा मन्द गति, पहुँचे राजद्वार ।
दीन दशा लखि विप्र की, विस्मित पहरेदार ।।११६।।
द्वारपाल ने तुरत ही, द्विज को किया प्रणाम ।
आये हो किस धाम से, कहो और क्या काम ।।११७।।
किससे मिलना चाहते, दीजै द्विज आदेश ।
बिना खबर भीतर किये, गृह में नहीं प्रवेश ।।११८।।
सखा श्याम मेरे सुनो, बाल्यकाल के मित्र ।
द्वारपाल विस्मित हुआ, सुन यह बात विचित्र ।११९।।
कहा सुदामा ने तुरत, दो हरि को सन्देश ।
मित्र सुदामा आपका, आया सुनो ब्रजेश ।।१२०।।
द्वारपाल घर में गया, बोला वचन विनीत ।
एक विप्र आया प्रभो, होता दीन प्रतीत ।।१२१।।
बाँधे कटि कौपीन है, तन पर वस्त्र न एक ।
दुर्बल जर्जर देह है, खड़ा लकुटिया टेक ।।१२२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दीन हीन कृश तन महा, फिर भी मुदित महान ।
मित्र बताता आपको, सुनिये कृपा निधान ।।१२३।।

पढ़े सँग हमं श्याम के, सखा हमारे श्याम ।
बतलाता है नाथ वह, स्वीय सुदामा नाम ।।१२४।।

सुना सुदामा नाम जब, हुये कृष्ण बेचैन ।
कब आये वे हैं कहाँ, बोले अटपट बैन ।।१२५।।

मित्र सुदामा नाम सुन, भूले निज को श्याम ।
कहाँ खड़ा हूँ मैं स्वयं, कहाँ सकल धन-धाम ।।१२६।।

भूल रुक्मिणी को गये, भूल गये सब कार ।
उठ धाये कहते हुए, कहाँ सुदामा यार ।।१२७।।

आ दरवाजे पर मिले, नागर नन्द किशोर ।
लिपट गले से वे गये, होकर आत्म विभोर ।।१२८।।

बार-बार मिलने लगे, गले लगाकर मित्र ।
राव रंक का मिलन यह, पावन परम विचित्र ।।१२९।।

धूलि धूसरित विप्रवर, निर्बल सकल शरीर ।।
लख बोले प्रिय मित्र से, होकर श्याम अधीर ।।१३०।।

कहाँ रहे आये न क्यों, अब तक मेरे पास ।
बाल्यकाल से अब मिले, बोले रमा निवास ।।१३१।।

पकड़ हाथ फिर मित्र का, चले भवन की ओर ।
डगमग पग मग में पड़ें, द्विजवर प्रेम विभोर ।।१३२।।

गये प्रेमवश मूकवत्, महलों में द्विजराज ।
अन्तःपुर में पहुँचकर, बोले श्री ब्रजराज ।।१३३।।

सखा सुदामा आ गये, धन्य हुआ यह धाम ।
इनके चरण पखार लूँ, सुन्दर ललित ललाम ।।१३४।।

चन्दन चौकी बिछाकर, अरु पूजा की थाल ।
पूजा का सामान सब, लाओ प्रिय तत्काल ।।१३५।।

दौड़ीं पटरानी सभी, सुनकर हरि की बात ।
झारी लाई एक थी, लाई एक परात ।।१३६।।

कोई लाई पुष्प औ, चन्दन चौकी धूप ।
खड़ीं अचम्भित रानियाँ, निरखें द्विज का रूप ।।१३७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रत्न जटित चौकी बिछा, पूजे द्विज पद श्याम ।
सुवरण झारी कर लिये, खड़ी रुक्मिणी बाम ।।१३८।।
डाल रहीं जल रुक्मिणी, पाँव पखारें श्याम ।
प्रेम मग्न घनश्याम थे, शोभा मय छविधाम ।।१३९।।
उत झारी से जल गिरे, इत नैनन से नीर ।
कौन सुकवि इस दृश्य की, खींच सके तस्वीर ।।१४०।।
तीन लोक चौदह भुवन, हैं जिसके आधीन ।
वे हरि रोये प्रेम वश, देख मित्र को दीन ।।१४१।।
पूजन श्रद्धा सहित कर, मुदित हुए ब्रजचन्द ।
पहनाई माला गले, पाया परमानन्द ।।१४२।।
करी आरती प्रेम से, मन मोहन गोपाल ।
चरणोदक सबने लिया, सब हो गये निहाल ।।१४३।।
चमर डुलातीं रानियां, पंखा झलते श्याम ।
धन्य विप्र के भाग्य हैं, धन्य श्याम छविधाम ।।१४४।।
हँसकर कहा ब्रजेश ने, सुनों सुदामा यार ।
भाभी ने मेरे लिए, क्या भेजा उपहार ।।१४५।।
शर्माते हो आप क्यों, दो वह मुझको मित्र ।
मुझे उसी की भूख है, वह उपहार पवित्र ।।१४६।।
लख वैभव घनश्याम का, द्विज के मन संकोच ।
कैसे भेंट स्वरूप दूँ, इनको तन्दुल पोच ।।१४७।।
जिनके घर में है भरा, विविध भाँति सामान ।
षड्रस व्यंजन दूध-दधि, मेवा औ मिष्ठान ।।१४८।।
उनको दूँ चावल भला, क्या सो भी सौगात ।
बड़ी शर्म की बात है, मन ही मन पछतात ।।१४९।।
चिथड़े में कनकी बँधी, विप्र दबाये काँख ।
लगे छिपाने झट उसे, बचा श्याम की आँख ।।१५०।।
अन्तर्यामी श्याम ने, तुरत लिया सब जान ।
हँसकर यों कहने लगे, कृष्णचन्द्र भगवान ।।१५१।।
चोरी की आदत तुम्हें, पड़ी पुरानी यार ।
मैं भी तो इस कला में, किन्तु बड़ा हुशियार ।।१५२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यह कहकर झट श्याम ने, लई पोटली छीन ।
तकते ही मुख रह गये, विप्र सुदामा दीनं ।।१५३।।
खोली हरि ने पोटली, जगे विप्र के भाग ।
मुट्ठी भर तन्दुल तुरत, खाये सह अनुराग ।।१५४।।
एक लोक की सम्पदा, गई सुदामा धाम ।
खाकर मुट्ठी दूसरी, नटनागर घनश्याम ।।१५५।।
सम्पति दूजे लोक की, अर्पित की तत्काल ।
देख रही थीं रुक्मिणी, हरि का सारा हाल ।।१५६।।
मुट्ठी ज्यों ही श्याम ने, भरी तीसरी बार ।
बोलीं उठकर रुक्मिणी, सुनिये प्राणाधार ।।१५७।।
आप अकेले ही भला, लेते हैं क्यों स्वाद ।
सबको मिलना चाहिए, द्विज का दिव्य प्रसाद ।।१५८।।
यह कह हरि के हाथ से, चावल लीन्हें छीन ।
प्यारी के संकेत को, समझे श्याम प्रवीन ।।१५९।।
सभी रानियों को दिया, बाँट तुरन्त प्रसाद ।
सबने पाया प्रेम से, वर्णन कर-कर स्वाद ।।१६०।।
विप्र सुदामा देख कर, अनुपम उनकी प्रीति ।
मन ही मन गाने लगे, माधव के गुण गीत ।।१६१।।
फिर बैठे द्विज संग में, नागर नन्दकुमार ।
भोजन लाईं रानियाँ, व्यंजन विविध प्रकार ।।१६२।।
नाना विधि मिष्ठान्न औ, नाना विधि पकवान ।
पाते द्विज के साथ में, कृष्णचन्द्र भगवान ।।१६३।।
परस रहीं पटरानियाँ, खाते द्विज औ श्याम ।
धन्य सुदामा भाग्य हैं, कहते सुर सुरधाम ।।१६४।।
कहाँ कृष्ण का भवन वह, कहाँ सुदामा रंक ।
सोने को द्विजराज के, सजा सुभग पर्यंक ।।१६५।।
जो अंकित है भाग्य में, वह अवश्य ही होय ।
शय्या पर श्रीकृष्ण की, रहे सुदामा सोय ।।१६६।।
चरण चाँपते स्वयं हरि, पंखा झलतीं नार ।
तन-मन-धन से श्यामघन, करें अतिथि सत्कार ।।१६७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

थके हुए द्विज सो गये, तब सोये ब्रजचन्द ।
सेवा कर द्विज मित्र की, पाया परमानन्द ।।१६८।।
नित्य कर्मद्विज ने किया, उठ कर प्रातःकाल ।
फिर सेवा में रत हुए, मोहन मदन गोपाल ।।१६९।।
तीन दिवस ठहरे वहाँ, फिर बोले द्विजराज ।
जाऊँगा प्रभु आज मैं, आज्ञा दो ब्रजराज ।।१७०।।
कहा श्याम ने मित्रवर, रहो अभी कुछ रोज ।
क्या भाभी की याद कर, उठता दिल में सोज ।।१७१।।
यार संग मेरे रहो, और छोड़ सब जिक्र ।
तुम तो बेपरवाह हो, पड़ी तुम्हें क्या फिक्र ।।१७२।।
कहा सुदामा ने सुनो, मेरे प्यारे श्याम ।
तव दर्शन से काम है, और नहीं कुछ काम ।।१७३।।
इसी तरह सुख से रहे, और दिवस दो चार ।
हर्षित चित द्विजवर हुए, लख हरि का व्यवहार ।।१७४।।
मन ही मन कहते सदा, धन्य मित्र का प्रेम ।
क्या उत्तम व्यवहार है, क्या उत्तम है नेम ।।१७५।।
रहे वहाँ जितने दिवस, नित्य नया था चाव ।
खातिरदारी में जरा, आया नहीं अभाव ।।१७६।।
रहते थे मन में मगन, देख-देख सुखसाज ।
कहते थे मुख से सदा, जय-जय-जय ब्रजराज ।।१७७।।
मन ही मन सोचा करें, देख कृष्ण का प्रेम ।
इनसे क्या माँगूँ भला, रत्न रजत औ हेम ।।१७८।।
भेजा मुझको नारि ने, मन में कर अभिलास ।
वह चहती धन धाम को, मुझे न उसकी प्यास ।।१७९।।
मुझको तो दर्शन मिला, हुए सिद्ध सब काम ।
मेरे मन में तो बसा, हीरा हरि का नाम ।।१८०।।
अब हीरा हरि नाम पा, क्या माँगूँ कुछ चीज ।
डाली पत्ते फूल क्या, मिला मुझे जब बीज ।।१८१।।
अवशि लड़ेगी नारि वह, मुझे नहीं परवाह ।
पूर्ण चाह मेरी हुई, मिले साँवरिया शाह ।।१८२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसी तरह सोचा करें, मन ही मन द्विजराज ।
नयनन निरखें श्याम छवि, और नहीं कुछ काज ।।१८३।।
रहे बहुत दिन द्वारिका, यों बोले मृदु बैन ।
प्रात होत जाऊँ सखा, रहूँ आज की रैन ।।१८४।।
कहा कृष्ण ने विप्र से, रहो अभी कुछ और ।
मेरे प्यारे मित्रवर, विप्रों के शिरमौर ।।१८५।।
हाथ जोड़ कर विप्र ने, करके विनय अपार ।
अब जाऊँगा मैं कहा, मानो नन्दकुमार ।।१८६।।
आग्रह लखकर मित्र का, बोले श्री ब्रजचन्द ।
अच्छा प्रातःकाल ही, जाना तुम सानन्द ।।१८७।।
खान पान से निवृत हो, सोये हरि के साथ ।
नित्य कर्म कर प्रात ही, जोड़े द्विज ने हाथ ।।१८८।।
हृदय लगा ब्रजनाथ से, माँगी विदा सप्रेम ।
कहा कृष्ण ने मित्रवर, देना कुशल क्षेम ।।१८९।।
कभी कभी आकर यहाँ, दर्शन देना मित्र ।
दास समझ अपना मुझे, करना धाम पवित्र ।।१९०।।
आईं पटरानी सभी, जोड़े सबने हाथ ।
सबको आशिष दे चले, प्रमुदित मन द्विजनाथ ।।१९१।।
वही लकुटिया हाथ में, वही फटी कौपीन ।
वही सुदामा विप्रवर, वही दीन के दीन ।।१९२।।
आते खाली हाथ थे, जाते खाली हाथ ।
ना लाये कुछ साथ थे, ना ले जायें साथ ।।१९३।।
देखें जग के लोग सब, उर की आँखे खोल ।
क्या द्विज कुल का त्याग है, क्या संतोष अतोल ।।१९४।।
बैठ रानियों के निकट, बोले रमानिवास ।
धन्य-धन्य संतोष यह, धन्य-धन्य विश्वास ।।१९५।।
आये माँगन हेतु पर, माँगी नहीं छदाम ।
धन्य सुदामा विप्रवर, धन्य भक्त निष्काम ।।१९६।।
करें प्रशंसा कृष्ण जी, मुक्त कंठ से आप ।
फिर कवि क्या वर्णन करे, द्विज का पुण्य प्रताप ।।१९७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मायापति भगवान ने, मन में किया विचार ।
पहुँच न पावे द्विज भवन, हो तब तक तैयार ।।१९८।।
बुला विश्वकर्मा तुरत, दिया उसे आदेश ।
रचो भवन सुन्दर रुचिर, जाओ द्विज के देश ।।१९९।।
चला विश्वकर्मा तुरत, आज्ञा धर कर शीश ।
पुरी द्वारिका पुरी सम, रचो कहा जगदीश ।।२००।।
सुरपुर सम सुषमा सुखद, शोभा अमित अपार ।
नगर एक निर्मित किया, किया बहुत विस्तार ।।२०१।।
मणिमय कंचन के भवन, अद्भुत परम विशाल ।
मंजुलता नवखंड की, सृजित हुई तत्काल ।।२०२।।
सुन्दर बाग तड़ाग बहु, रुचिर बावली कूप ।
हाट बाट सुन्दर सजे, सुन्दर मणिमय स्तूप ।।२०३।।
सुन्दर गौशाला बनी, औ सुन्दर घुड़साल ।
ठौर-ठौर पर थे जड़े, जिनमें मुक्ता माल ।।२०४।।
सुन्दर गाय अनेक हैं, गजरथ और तुरंग ।
सुन्दर दासी दास बहु, सुन्दर जिनके रंग ।।२०५।।
जहाँ पड़ी थी झोपड़ी, वहाँ महल तैयार ।
क्षण भर में ही भर गये, द्विजवर के भण्डार ।।२०६।।
द्विज पत्नी ने निमिष में, सजे अनेकों साज ।
कहा धन्य पतिदेव तुम, धन्य-धन्य ब्रजराज ।।२०७।।
रंक विप्र क्षण मात्र में, बने कुबेर समान ।
भाग्य जगा द्विज देव का, की करुणा भगवान ।।२०८।।
भाग्य बड़ा बलवान है, भाग्य भले सर्वत्र ।
दीन हीन तन क्षीन के, भाग्य धरे शिर क्षत्र ।।२०९।।
भूपति होते भाग्य वश, दीन दरिद्री रंक ।
हुआ कलंकित भाग्य से, सुन्दर सौम्य मयंक ।।२१०।।
देव दनुज ऋषि मुनि सभी, पशु पक्षी इन्सान ।
जड़-चेतन औ चर अचर, मूर्ख और विद्वान ।।२११।।
जगते सबके भाग्य हैं, पाकर शुभ संयोग ।
गिरते हैं दुर्भाग्य से, पाकर फिर दुर्योग ।।२१२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यह कौतुक भगवान का, समझें वही सुजान ।
कृपा कोर जिन पर करें, कृष्णचन्द्र भगवान ।।२१३।।
समझ न पाये हैं इसे, ऋषि मुनि जान अजान ।
सुर किन्नर समझे नहीं, भाग्य बड़ा बलवान ।।२१४।।
हरि गुण गाते प्रेम से, मग चलते द्विजराज ।
जब पहुँचे अपनी पुरी, देखे अद्भुत साज ।।२१५।।
नहीं कहीं वह झोपड़ी, नहीं पड़ोसी गेह ।
स्वर्ण भवन मणि जटित लख, होता मन सन्देह ।।२१६।।
कोट खिंचा फाटक लगा, बैठा पहरेदार ।
इस नौखण्डे महल में, जगती ज्योति अपार ।।२१७।।
नारि नवेली शशिमुखी, वय किशोर सुकुमार ।
इधर उधर दौड़ी फिरे, सजे सभी श्रृङ्गार ।।२१८।।
झाँकि झरोखे से रही, रानी सी यह वाम ।
विप्र ठगे से रह गये, देख दृश्य उस ठाम ।।२१९।।
सोचें मन में स्वप्न है, अथवा है यह साँच ।
ज्ञान शून्य से हो गये, सके न कुछ भी जाँच ।।२२०।।
पतिव्रता द्विज वाम ने, पति देखा भर नैन ।
चंचल चित दौड़ी तुरत, रहा न मन में चैन ।।२२१।।
चलीं संग में दासियाँ, सजा आरती थाल ।
पति चरणों में रख दिया, पत्नी ने निज भाल ।।२२२।।
कहा नाथ यह आपका, है सारा धन धान ।
माया से निर्मित हुआ, कृपा करी भगवान ।।२२३।।
नाथ हाथ गहि हाथ में, चली भवन मुस्काय ।
कठपुतली से द्विज चले, मर्म न समझा जाय ।।२२४।।
जब पहुँचे द्विज महल में, दौड़े दासी दास ।
सेवा में तत्पर हुए, मन में भरे हुलास ।।२२५।।
सिंहासन पर स्वर्ण के, द्विजवर दिये बिठाय ।
शुचि सुगंधिमय नीर से, दिया उन्हें नहलाय ।।२२६।।
पहनाये सुन्दर वसन, भूषण दिये सजाय ।
पुष्पों की माला सुभग, गल में दी पहनाय ।।२२७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करी आरती प्रेम से, पत्नी ने निज हाथ ।
श्रद्धा पूर्वक रख दिया, पति चरणों में माथ ।।२२८।।
हृदय लगाया नारि को, बोले द्विज मृदु बैन ।
भाग्य भानु चमका प्रिये, मिटी अँधेरी रैन ।।२२९।।
जो थी तेरी कामना, पूर्ण करी गोपाल ।
हरि ने तुझको कर दिया, अब लो मालामाल ।।२३०।।
इसी तरह आनन्द में, करते-करते बात ।
गुण गाते गोविन्द के, बीती सारी रात ।।२३१।।
सुखमय सुख दिन आ गये, मिटे सकल दुख द्वन्द्व ।
पाया सुरपुर सा विभव, दम्पति हैं सानन्द ।।२३२।।
धन्य मित्र घनश्याम हैं, धन्य सुदामा मित्र ।
धन्य उभय का त्याग है, पावन परम पवित्र ।।२३३।।
और कहीं मिलता नहीं, ऐसा चारु चरित्र ।
दोनों की महिमा महा, अद्‌भुत अगम विचित्र ।।२३४।।
कृष्ण सुदामा ने रखा, मैत्री का आदर्श ।
जो पा ले आदर्श यह, वह पाये उत्कर्ष ।।२३५।।
उदाहरण मिलता नहीं, ऐसा कोई और ।
वर्णन कर सकता कहो, कोई कवि किस तौर ।।२३६।।
धन्य श्याम की मित्रता, धन्य श्याम के काम ।
धन्य सुदामा मित्रवर, लीला ललित ललाम ।।२३७।।
धन्य श्याम मायापते, धन्य सुहृद द्विजराज ।
पाया फल संतोष का, सिद्ध हुए सब काज ।।२३८।।
सब कुछ देकर भी रहे, कृष्णचन्द्र खामोश ।
बारम्बार सराहते, द्विजवर का सन्तोष ।।२३९।।
कृष्ण सुदामा मित्र का, परम पुनीत चरित्र ।
वह पुनीत जिस पुरुष के, हृदय बसा यह चित्र ।।२४०।।
है इतिहास पवित्र यह, कह कर हिय हुलसात ।
जय जय जय द्विजराज जय, जय-जय श्यामल गात ।।२४१।।
प्रेम सहित जो यह कथा, पढ़ें सुनेंगे लोग ।
रहें मुदित संसार में, भोगेंगे सुख भोग ।।२४२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुण गावें जो श्याम के, भर उर में अनुराग ।
सकल सम्पदा फिर मिले, जागें उसके भाग ।।२४३।।
जय नटनागर श्याम जय, मायापति गोपाल ।
जय-जय-जय ब्रजचन्द जय, जय-ज़य यशुदा लाल ।।२४४।।
कंस निकंदन कृष्ण जय, जय हरि कृपा निधान ।
दीनबन्धु गोविन्द जय, भक्त बछल भगवान ।।२४५।।
दुःख हरण मंगल करन, चरण शरण मैं नाथ ।
जन 'किशोर' निज जन समझ, धरो शीश पर हाथ ।।२४६।।

सर्वग्रास सूर्यग्रहण

पुरी द्वारिका में सदा, सब विधि सुख आनन्द ।
श्याम सच्चिदानन्द घन, जहाँ बसें ब्रजचन्द ।।१।।
वर्णाश्रम के लोग सब, बसते सुख के साथ ।
पालें निज-निज धर्म सब, लघु-गुरु नाथ-अनाथ ।।२।।
बारह मास बसन्त था, बहती सुखद बयार ।
गर्मी जाड़ा एक सा, चारों तरफ बहार ।।३।।
उत्तम मध्यम औ अधम, सभी धर्म आरूढ़ ।
सबको सब कुछ प्राप्त था, क्या ज्ञानी क्या मूढ़ ।।४।।
निराकार साकार हो, रहता है जिस ठाम ।
धन्य धाम वह धन्य हरि, पूर्ण ब्रह्म निष्काम ।।५।।
बिन ऋतु उपजत हैं सदा, सुन्दर फल औ फूल ।
अन्न विविध उत्पन्न हों, कन्दमूल सुखमूल ।।६।।
सुखद जड़ी बूटी उपज, औषध विविध प्रकार ।
लोहा सोना रजत मणि, उपजें अपरम्पार ।।७।।
हृष्ट-पुष्ट सुन्दर परम, चार वर्ण के लोग ।
गृह सोने के सभी के, भोगें सब सुख भोग ।।८।।
कौन द्वारिका की कहे, शोभा परम अनन्त ।
सर्वव्यापी सर्व पति, जहाँ बसें भगवन्त ।।९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दिन सुख के यों बीतते, लगते निमिष समान ।
सुरपुर सा आनन्द है, महिमा महा महान ।।१०।।
उग्रसेन का राज वह, सँग में श्री ब्रजराज ।
घर-घर मंगल मोद था, घर-घर था सुखसाज ।।११।।
आदि काल से आज तक, होता रहा सदैव ।
दुख-सुख सब पर ही पड़ा, जैसा चाहा दैव ।।१२।।
होनी ने सब कुछ किया, बचा न इससे एक ।
होनी होकर ही रहे, रहता नहीं विवेक ।।१३।।
यही लिखा है शास्त्र में, यह ही कहते वेद ।
होनी हरि ऐसी रची, जिसका भेद न भेद ।।१४।।
ऋषियों ने गुनकर कहा, ज्योतिष शास्त्र महान ।
ग्रहण पड़े पूरे घिरें, मारतण्ड भगवान ।।१५।।
प्रलय काल सा लख पड़े, महा भयंकर दृश्य ।
अन्धकारमय जगत हो, होवें सूर्य अदृश्य ।।१६।।
पावनपुर कुरुक्षेत्र में, निकट तीर्थ सुस्थान ।
शुभ सम्वत् पंचक सुखद, छविमय महा महान ।।१७।।
परशुराम भगवान ने, किया वहाँ पर यज्ञ ।
जो अवतारी पुरुष थे, वेद शास्त्र मर्मज्ञ ।।१८।।
कुण्ड बनाये पाँच फिर, दी यह शक्ति महान ।
महा भयंकर ग्रहण में, यहाँ करे जो स्नान ।।१९।।
लगे न उसको दोष कुछ, है यह बात यथार्थ ।
परशुराम ऋषिराज ने, किया कार्य निःस्वार्थ ।।२०।।
जगत भलाई हेतु ही, रचे कुण्ड उस ठाम ।
परशुराम ऋषिराज का, अमर आज तक नाम ।।२१।।
सर्व-ग्रास रवि ग्रहण में, करे कुण्ड में स्नान ।
पाप ग्रह टलते सभी, मिलता पुण्य महान ।।२२।।
उग्रसेन ने सुना जब, सूर्य ग्रहण का हाल ।
होम आदि होने लगे, जो दुख देते टाल ।।२३।।
ऋषि-मुनि आश्रम में भजें, सत्य सच्चिदानन्द ।
घर में नर-नारी भजें, जय-जय-जय ब्रजचन्द ।।२४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भरतखण्ड में हर जगह, होयँ यज्ञ औ दान ।
सबकी थी यह कामना, होय विश्व कल्यान ।।२५।।
स्वार्थ रहित सब कर रहे, अनुष्ठान शुचि कार्य ।
आर्य जाति के लोग सब, सँग ऋषि-मुनि आचार्य ।।२६।।
भारत के उस काल में, जहाँ कृष्ण भगवान ।
बढ़ा तेज यदुवंश का, पुण्य प्रताप महान ।।२७।
वंश बड़ा भगवान का, बल में सब बलवान ।
अस्त्र-शस्त्र में सब निपुण, विद्या बुद्धि निधान ।।२८।।
यदुवंशी बैठे सभी, सबने किया विचार ।
चलें ग्रहण पर तीर्थ को, पावें पुण्य अपार ।।२९।।
चलें वंश के लोग सब, पुरजन भी हो साथ ।
कुरुक्षेत्र शुचि धाम है, सबको करे सनाथ ।।३०।।
पुर प्रबन्ध हरि ने किया, होकर परम प्रबुद्ध ।
कृतवर्मा के साथ में, छोड़े श्री अनिरुद्ध ।।३१।।
पुरी द्वारिका भार को, सौंप उन्हें घनश्याम ।
सह कुटुम्ब पुरजन सहित, चले तीर्थ के धाम ।।३२।।
चित में था यह चाव भी, वहाँ मिलें सब लोग ।
नृप संबंधी ऋषि मुनी, का हो शुचि संयोग ।।३३।।
इधर द्वारिका पुरी से, यादव चले सुधीर ।
इसी तरह सब ओर से, चले प्रतापी वीर ।।३४।।
राजे महराजे चले, ऋषि मुनि गुणी सुजान ।
चारों दिशि से चल पड़े, बालक वृद्ध जवान ।।३५।।
जन समूह उमड़ा वहाँ, जिसका वार न पार ।
धर्म समझ आये सभी, बाल-वृद्ध नर-नार ।।३६।।
नर असंख्य आये वहाँ, करने को सुस्नान ।
वर्णाश्रम आरूढ़ सब, हृदय धर्म का ध्यान ।।३७।।
पाराशर आये वहाँ, आये वेदव्यास ।
बाल्मीकि जमदाग्नि ऋषि, जिनका परम प्रकाश ।।३८।।
ऋषि वशिष्ठ मुनि च्यवन औ, कपिल रूप भगवान ।
भरद्वाज सप्तर्षि सब, ऋषि अनेक धीमान ।।३९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आये तीरथ में सभी, साधु सन्त विद्वान ।
आत्मज्ञानी विप्रवर, जो भजते भगवान ।।४०।।
कुरुवंशी आये यहाँ, पाण्डु वंश था साथ ।
मत्स्य उशीनर वीर वर, कोशल भट नर नाथ ।।४१।।
नृप विदर्भ काम्बोज नृप, सञ्जय कैकय मद्र ।
कुन्तिभोज आनर्त नृप, एक-एक से भद्र ।।४२।।
केरल द्रुपद विराट नृप, और अनेकों भूप ।
हृष्ट पुष्ट बलवान सब, जिनके सुन्दर रूप ।।४३।।
ग्वाल बाल आये सभी, यशुदा सँग में नन्द ।
उपनँद सँग वृषभानु के, गोप गोपिका वृन्द ।।४४।।
कुन्ती माँ ले साथ में, धर्मराज महराज ।
भ्रात बली सब साथ में, जिनके अद्‌भुत काज ।।४५।।
भीष्म पितामह द्रोण गुरु, अश्वत्थामा वीर ।
कृपाचार्य औ विदुर जी, नृप धृतराष्ट्र सुधीर ।।४६।।
दुर्योधन संग भ्रात सौ, और कर्ण बलवान ।
गान्धारी शुचि पतिव्रता, भीष्मक वीर महान ।।४७।।
पुरजित नृपवर नग्नजित, धृष्टकेतु भूपाल ।
शल्य भूप दमघोष नृप, शोभा परम विशाल ।।४८।।
विशालाक्ष काशी नृपति, मिथिला भद्र नरेश ।
युधामन्यु कैकय नृपति, जिनसे डरें सुरेश ।।४९।।
नृपति सुशर्मा आदि नृप, ले ले निज परिवार ।
आये थे सब द्वीप से, सज सज राजकुमार ।।५०।।
जन समूह दिखता वहाँ, जैसे नखत अकाश ।
धर्म प्रेम में मग्न सब, सबके मन उल्लास ।।५१।।
सब भजते हैं ईश को, सब धरते हरि ध्यान ।
शत भोजन में हो रहा, यज्ञ पुण्य औ दान ।।५२।।
एक मास पहिले सभी, हुए एकत्रित लोग ।
लिये लालसा मिलन की, पाकर शुभ संयोग ।।५३।।
कुन्ती से जब मिले थे, श्री वसुदेव सुजान ।
आनन्दित पुलकित हुए, मन में मोद महान ।।५४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहुत दिनों में बहिन के, दर्शन पाये आज ।
करी कृपा शशिभाल शिव, गिरिजापति गिरिराज ।।५५।।
भीमार्जुन सहदेव अरु, नकुल श्रेष्ठ छविधाम ।
धर्मराज संग सभी ने, कीन्हा दण्ड प्रणाम ।।५६।।
गले लगा शिर सूँघकर, दीन्हा आशीर्वाद ।
एक एक से पूछता, समाचार सम्वाद ।।५७।।
कृष्ण संग दाऊ मिले, पाण्डव से सप्रेम ।
लगे परस्पर पूछने, गृह जन कुशल क्षेम ।।५८।।
कुन्ती ने वसुदेव का, पकड़ हाथ से हाथ ।
भैया तुम भूले मुझे, कहा उलहने साथ ।।५९।।
भाई पर है बहिन का, पूर्ण रूप अधिकार ।
इससे कहती हूँ सुनो, मेरे भ्रात उदार ।।६०।।
ये लड़के सब आपके, इनके तुम्हीं अधार ।
इनकी जीवन नाव के, तुमही खेवन हार ।।६१।।
गद्‌गद हो वसुदेव ने, कहे प्रेम मय बैन ।
सुख भोगेंगे ये सभी, क्यों होती बेचैन ।।६२।।
मिली द्रौपदी रुक्मिणी, सब पटरानी संग ।
आभूषण तन पर सजे, कपड़े रंग विरंग ।।६३।।
एक एक से मिलीं सब, प्रेम प्रफुल्लित गात ।
प्रेम मग्न ऐसी हुईं, कह न सकी मुख बात ।।६४।।
पहुनाई श्री कृष्ण की, करते अर्जुन भीम ।
व्यञ्जन परसे द्रौपदी, रहे श्यामघन जीम ।।६५।।
यदुवंशी भोजन करें, संग में श्रीबलराम ।
मुदित अतिथि, सत्कारकर, धर्मराज अभिराम ।।६६।।
जहाँ तहाँ मिलने लगे, सब सम्बन्धी मित्र ।
विविध भाँति रँग रूपके, दिखते चित्र विचित्र ।।६७।।
जब यशुदा-नँद ने सुना, आये लाल गुपाल ।
दौड़े दर्शन हेतु वे, सँग ग्वाल औ बाल ।।६८।।
लपक यशोदा ने तुरत, हृदय लगाया श्याम ।
आनन्दित ऐसी भई, भूली तन-धन-धाम ।।६९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मग्न यशोदानन्द थे, लखकर श्याम स्वरूप ।
सुघर सलोनी मूर्ति वह, सुन्दर दिव्य अनूप ।।७०।।
इकटक देखें श्याम छवि, वारत तन मन प्रान ।
बार बार मुख चूमते, मन में मोद महान ।।७१।।
गले लगा बलराम को, लहे नन्द आनन्द ।
श्याम राम की छवि लखें, समझ सच्चिदानन्द ।।७२।।
जो सुख दुर्लभ विश्व में, जप तप करके दान ।
वह सुख यशुदानन्द लें, निकट निरख भगवान ।।७३।।
गोद बिठा कर मातु ने, बड़े मोद के साथ ।
बार बार शिर सूँघकर, फेरा शिर पर हाथ ।।७४।।
लगीं पूछने मातु फिर, बड़े प्यार के साथ ।
याद कभी मेरी तुम्हें, आती थी ब्रजनाथ ।।७५।।
माखन मिसरी दूध दधि, क्या खाओगे लाल ।
शीघ्र बता दो मात को, मेरे लाल गुपाल ।।७६।।
भोली लखकर मातु को, कृष्ण चन्द्र भगवान ।
भूख लगी ला जल्द ला, माखन दधि मिष्ठान ।।७७।।
बड़े प्रेम से मात ने, रक्खा भर कर थाल ।
दाऊ जी के साथ में, खाते मदन गुपाल ।।७८।।
धन्य यशोदा नन्द हैं, धन्य धन्य हैं भाग ।
सत्य सच्चिदानन्द से, सुत सम है अनुराग ।।७९।।
नहीं हुआ संसार में, इनसा कोई और ।
जिनके सुत गोविन्द हैं, देवों के शिर मौर ।।८०।।
जयति यशोदानन्द जय, जय जय जय बलराम ।
जयति जयति घनश्याम जय, पूर्ण ब्रह्म निष्काम ।।८१।।
सब वियोग के दुःख को, भूलीं यशुदा मात ।
ज्यों चकोर चन्दा मिले, खिली चाँदनी रात ।।८२।।
जो सुख गिरिजा को मिला, तप करने के बाद ।
पाया सुत गणराज था, जगत विदित सम्वाद ।।८३।।
या कौशल्या को मिले, बन से आकर राम ।
वह सुख यशुदा को मिला, पाकर श्री घनश्याम ।।८४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रेम पगी आनन्द से, निरखें मुख श्री श्याम ।
भूली सब संसार को, नहीं किसी से काम ।।८५।।
मिलीं गोपियाँ कृष्ण से, मिलकर हुई निहाल ।
पावें जैसे मछलियाँ, नीर भरा शुचिताल ।।८६।।
तड़पन सारी मिट गई, पाकर नन्द किशोर ।
हृदय सिन्धु में हर्ष की, उठती अगम हिलोर ।।८७।।
ज्यों चकवा निशि में सदा, रहे नदी के पार ।
सहती सदा वियोग दुख, हो चकवी लाचार ।।८८।।
उस प्रकार ही विरह दुख, सहती थीं ब्रजवाम ।
होते पुण्य प्रभात ही, पाये श्री घनश्याम ।।८९।।
ऐसा सुख उनको मिला, पाकर हरि संयोग ।
जिस सुख को शंकर चहैं, साध साध कर योग ।।९०।।
प्रेम मग्न हो गोपियाँ, निरखैं छवि घनश्याम ।
ज्यों चकोर चन्दा लखै, प्रिय अपलक अविराम ।।९१।।
चन्द मन्द जिससे पड़े, ऐसा सुन्दर रूप ।
सुषमा सुख की खान सम, अद्‌भुत दिव्य अनूप ।।९२।।
मीठे मधु मय प्रेम मय, बोली हरि से बैन ।
बड़े निठुर हो श्याम तुम, दया हृदय में है न ।।९३।।
भूले हम सबको रहे, किस कारण छविधाम ।
क्या कसूर हमसे हुआ, बतलाओ घनश्याम ।।९४।।
भजतीं हम तुमको रहीं, पूर्ण ब्रह्म घनश्याम ।
ध्यान तुम्हारा ही धरा, निशि दिन आठों याम ।।९५।।
ब्रज में फिर आये न क्यों, कहो निठुर गोपाल ।
क्या पाया तुमने भला, हमें सता नँदलाल ।।९६।।
ली न खबर अब तक भला, गये हमें क्यों भूल ।
हमने तो समझा सदा, हैं चरणों की धूल ।।९७।।
'लीला' ने हरि से कहा, कहती थीं ब्रजवाम ।
तन को कारो श्याम है, मन को कारो श्याम ।।९८।।
मैंने यह माना नहीं, कहा झूठ यह बात ।
सत्य सच्चिदानन्द घन, सुन्दर श्यामल गात ।।९९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परब्रह्म जगदीश हरि, महिमा अगम अखण्ड ।
दृग से चमके ज्योति यों, जैसे सूर्य प्रचण्ड ।।१००।।
हमने तो समझा तुम्हें, प्राणों का भी प्राण ।
जग पालक जगनाथ हरि, विश्वम्भर भगवान ।।१०१।।
मृग सम तीखे नैन हैं, सुन्दर गोल कपोल ।
मनहर 'शीला' रूप है, बोली मधुमय बोल ।।१०२।।
ब्रज बनिताओं ने तुम्हें, किया प्रेम निष्काम ।
उनको भूले आप क्यों, पूर्ण ब्रह्म घनश्याम ।।१०३।।
हम सबने समझा सदा, तुमको ही आधार ।
भूलीं सारे विश्व को, तुम पर हो बलिहार ।।१०४।।
कभी न ली सुधि आपने, ऐसे दिया विसार ।
कौन किया अपराध है, बोलो नन्द कुमार ।।१०५।।
कोमल पुष्प गुलाब सम, सुन्दर अति सुकुमार ।
'ललिता' ने फिर यों कहा, कर गह नन्द कुमार ।।१०६।।
दीनबन्धु कहता जगत, निठुर हुए क्यों श्याम ।
भोली भाली हम सभी, बिसराईं ब्रजवाम ।।१०७।।
इसी तरह सब गोपियाँ, कहतीं हरि से बैन ।
सब चितवत हैं श्याम छवि, गड़े श्याम पर नैन ।।१०८।।
ज्यों तारों में चन्द्रमा, शोभा परम विशाल ।
त्यों सखियन में राधिका, अनुपम सुन्दर बाल ।।१०९।।
निराकार जिस रूप पर, मोहे ऐसा रूप ।
ब्रजेश्वरी छवि धाम प्रिय, सुन्दर दिव्य अनूप ।।११०।।
आदि शक्ति जग जननि ने, लिया स्वयं अवतार ।
प्रकटी राधा रूप में, महिमा अपरम्पार ।।१११।।
अनुपम छवि जग मातु की, वर्णि सकै कवि कौन ।
जिनके गुण गण गानकर, स्वयं शारदा मौन ।।११२।।
जो माया भगवान की, कहता सकल जहान ।
वह प्रकटी ब्रज में स्वयं, गुण महिमा की खान ।।११३।।
धन्य भाग्य वृषभानु के, कहते सुरनर नाग ।
धन्य पुण्य माँ कीर्ति के, धन्य तपस्या त्याग ।।११४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अम्बा ने जिसके भवन, लेकर के अवतार ।
अपने रूप अनूप से, मोहे नन्द-कुमार ।।११५।।
वह बोली घनश्याम से, ब्रजेश्वरी छविधाम ।
किसविधि जीवन सफल हो, युक्ति बताओ श्याम ।।११६।।
हमने था समझा यही, सदा रहोगे साथ ।
नित प्रति दर्शन होयँगे, सुनिये दीनानाथ ।।११७।।
भूलीं सब संसार थीं, तुम्हें बना आधार ।
जीवन नैया को अवशि, कर दोगे तुम पार ।।११८।।
सब देवों के देव तुम, जगत्पिता करतार ।
प्रेम किया था आपसे, निर्गुण जगदाधार ।।११९।।
विश्व विमोहन रूप हरि, श्याम मनोहर गात ।
ब्रज में अब कब आवोगे, कहो सत्य यह बात ।।१२०।।
या बतलाओ मार्ग वह, जीवन होय व्यतीत ।
या बतलाओ अब तुम्हीं, हमें प्रेम की रीति ।।१२१।।
हो पुनीत जीवन सफल, मोह दूर हो नाथ ।
ऐसा सत् उपदेश दो, लो उबार गहि हाथ ।।१२२।।
मन्द मन्द हँसते हुए, बोले मदन गुपाल ।
झूठा सब संसार यह, झूठा माया जाल ।।१२३।।
ना कोई अपना यहाँ, सपना सब संसार ।
जो समझै इस बात को, वह होवे भव-पार ।।१२४।।
तृणवत् समझे जगत् जो, दे सब नाते तोड़ ।
निराकार की ओर दे, मन मतंग को मोड़ ।।१२५।।
सच्चा योगी है वही, सच्चा उसका प्रेम ।
यह ही सच्ची भक्ति है, यह ही सच्चा नेम ।।१२६।।
तुमने उसको प्राप्त कर, समझी सच्ची बात ।
मैं ही निर्गुण ब्रह्म हूँ, मैं ही दिन औ रात ।।१२७।।
मैं ही जग पालन करूँ, मैं ही करूँ विनाश ।
अन्धकार मैं ही करुँ, मैं ही करूँ प्रकाश ।।१२८।।
मैं ही जल आकाश हूँ, मैं ही अग्नि समीर ।
मैं ही पृथ्वी बना हूँ, अगम अथाह गँभीर ।।१२९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मैं ही श्रुति, षट्शास्त्र मैं, मैं ही चारों वेद ।
निराकार साकार मैं, मेरा भेद अभेद ।।१३०।।
तुमने मुझसे नित्य ही, किया प्रेम निःस्वार्थ ।
अब क्या बाकी रहा जब, पाया पद परमार्थ ।।१३१।।
तुम सब मिल कर हो गईं, मुझ में एकाकार ।
ज्यों सब नदियाँ सिंधु से, मिल हों पारावार ।।१३२।।
तुममें मुझमें तनिक भी, नहीं परस्पर भेद ।
योगावस्था में कभी, नहीं हर्ष औ खेद ।।१३३।।
सिद्ध योग तुम सभी का, पूर्ण रूप निष्काम ।
अलग न मैं तुमसे कभी, समझो सब ब्रजवाम ।।१३४।।
सदा तुम्हारे साथ मैं, सदा तुम्हारे पास ।
ऐसा ही तुम समझ लो, करके दृढ़ विश्वास ।।१३५।।
फिर तुमसे कब दूर मैं, इतनी सी है बात ।
समझो इसको तुम सभी, बोले श्यामल गात ।।१३६।।
सत्य ज्ञान उपदेश दे, सखियों को भगवान ।
मोह दूर क्षण में किया, जय-जय कृपानिधान ।।१३७।।
ज्ञान प्राप्त कर सखी सब, पाईं परमानन्द ।
आत्म बोध उनको हुआ, छूटे सब दुख द्वन्द ।।१३८।।
सगे सनेही मित्र जो, आये थे उस ठाम ।
एक-एक से मिले फिर, पूर्ण हुए मन काम ।।१३९।।
ऋषियों के दर्शन हुए, मुनियों का सत्संग ।
कुरुक्षेत्र शुचि तीर्थ में, रँगे सभी हरि रंग ।।१४०।।
भजन भाव करते सभी, सब करते हैं दान ।
होता है सर्वत्र ही, कथा कीर्तन गान ।।१४१।।
इसी तरह बीतें दिवस, गा-गा कर हरि नाम ।
कोई भजता राम को, कोई भजता श्याम ।।१४२।।
आया दिन फिर ग्रहण का, सूर्य हुए फिर ग्रस्त ।
उदय काल में ही हुए, अति प्रचण्ड रवि अस्त ।।१४३।।
अन्धकार संसार में, फैल गया सर्वत्र ।
पशु-पक्षी भय भीत सब, देव मनुष्य कलत्र ।।१४४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यक्ष, रक्ष, गन्धर्व तक, हुए महा भय भीत ।
गाते हरि गुण गान सब, गुणातीत गुण गीत ।।१४५।।
शुचि स्यमन्त पञ्चक सुखद, भरे जहाँ जल कुण्ड ।
करें स्नान उसमें सभी, नारि नरों के झुण्ड ।।१४६।।
राम राम कहते सभी, करते सुख से स्नान ।
राजे महराजे वहाँ, करते बहु विधि दान ।।१४७।।
जो पाते थे दान को, वे भी करते दान ।
सूर्य मोक्ष की कामना, करता हर इन्सान ।।१४८।।
संग-संग राजा प्रजा, नाथ अनाथ सनाथ ।
ऋषि मुनि आये जो वहाँ, सभी नहाये साथ ।।१४९।।
समय बीतता है अवशि, सब दुख होते दूर ।
ग्रहण कटा संकट कटा, प्रकट हुए फिर सूर ।।१५०।।
विश्व उजाला हो गया, हर्षित सकल समाज ।
लौटे तीरथ से सभी, ऋषि मुनि नृप अधिराज ।।१५१।।
अपने-अपने धाम को, गये सभी नर वाम ।
पुरी द्वारिका को चले, श्याम और बलराम ।।१५२।।
जहाँ स्यमन्तक तीर्थ में, अगणित थे नर वाम ।
वह खाली सब हो गया, तीर्थ राज शुचि धाम ।।१५३।।
दिन जाते लगते नहीं, जैसे कुछ भी देर ।
रोज सुबह औ शाम हो, है माया का फेर ।।१५४।।
वैसे दुख सुख भी सभी, आते जाते नित्य ।
यहाँ न कोई वस्तु थिर, है संसार अनित्य ।।१५५।।
सार कृष्ण गुन गान है, और सभी निःसार ।
धर्म कर्म में जो लगा, उसका बेड़ा पार ।।१५६।।
सत्य सनातन धर्म की, बड़ी पुरानी रीति ।
परमारथ करते रहो, और सभी से प्रीति ।।१५७।।
पहुँच द्वारिका कृष्ण ने, किया वहाँ फिर दान ।
असन बसन भूषन दिये, कर द्विजगण सम्मान ।।१५८।।
इसी तरह सब नृपों ने, पहुँच पहुँच निज धाम ।
विप्रों का सम्मान कर, किये धर्म के काम ।।१५९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निज-निज आश्रम में पहुँच, ऋषि मुनि कीन्हा होम ।
वेद मन्त्र के गान से, किया गुञ्जरित व्योम ।।१६०।।
सूर्य ग्रहण के दोष से, हुए सभी नर मुक्त ।
यजन भजन औ दान कर, हुए पुण्य संयुक्त ।।१६१।।
पढ़े सुने जो यह कथा, उसे पुण्य हो प्राप्त ।
मनोकामना पूर्ण हो, जग में हो यश व्याप्त ।।१६२।।
श्री स्यमन्त पञ्चक महा, तीर्थराज सुख धाम ।
न्हाने का फल प्राप्त हो, होंय पूर्ण मन काम ।।१६३।।
परशुराम ऋषि धन्य हैं, धन्य स्यमन्तक धाम ।
अमर रहेगा जगत में, परशुराम का नाम ।।१६४।।
परशुराम ऋषिराज जय, विप्रों के शिरताज ।
जय स्यमन्तकपञ्चक जयति, जयतिजयति ब्रजराज ।।१६५।।
हरि गुण गाता रहूँ मैं, बरसाता हरि प्रेम ।
जो 'किशोर{ हरि कृपा हो, तभी निभे निज नेम ।।१६६।।

राजा युधिष्ठिर का द्यूत युद्ध और बनवास

सब में व्यापक हैं वही, सबसे रहते दूर ।
जो इच्छा घनश्याम की, होता वही ज़रूर ।।१।।
गया सुयोधन लौट कर, पुरी हस्तिना पूर ।
मन में परसन्ताप था, डाह भरा मग़रूर ।।२।।
पांण्डु सुतों का विभव लख, मन में था सन्ताप ।
यह तो मुझसे बढ़ गये, इनका प्रबल प्रताप ।।३।।
बल में भी बलवान हैं, धन में धनी महान ।
किस विधि हरलूँ द्रव्य मैं, और करूँ अपमान ।।४।।
वचन द्रोपदी के चुभे, लगा हृदय आघात ।
हँसा भीम क्या समझकर, लूँ बदला तब बात ।।५।।
इस चिन्ता में मग्न वह, रहता था हर काल ।
बदन कमल कुम्हला गया, रहता हाल विहाल ।।६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शकुनी ने अनुभव किया, दुर्योधन बेचैन ।
क्या चिन्ता है सुत कहो, बोला मीठे बैन ।।७।।
दुर्योधन ने तब कहा, सुन लो मामा बात ।
बदला जब तक लूँ न मैं, चैन नहीं दिन रात ।।८।।
गया युधिष्ठिर के यहाँ, हुआ बड़ा अपमान ।
लगे द्रोपदी के बचन, उर में बाण समान ।।९।।
भीम हँसा अति व्यंग्य से, मन में उर अभिमान ।
मामा क्या बतलाऊँ मैं, मुझको दुःख महान ।।१०।।
मुझसे भी बढ़ वह गये, उनके द्रव्य अथाह ।
युक्ति निकालो अब तुम्ही, पूर्ण करो चित चाह ।।११।।
हँस कर शकुनी ने कहा, चिन्ता छोड़ो तात ।
बदला लूँगा मैं चुका, कौन बड़ी यह बात ।।१२।।
सब धन उनका छीन लूँ, लगे न क्षण की देर ।
दम में कौड़ी के बने, जो हैं आज कुबेर ।।१३।।
पाँसे रचना जानता, रच कर करूँ तयार ।
सदा जीत तेरी रहे, कभी न होवे हार ।।१४।।
अड़चन इसमें एक है, महा कठिन दुःसाध्य ।
आज्ञा दें वे द्यूत को, करो पिता को बाध्य ।।१५।।
राजी जो धृतराष्ट्र हों, तो बन जाये काम ।
दूत भेज कर लें बुला, पाण्डु पुत्र इस ठाम ।।१६।।
जुआ खेलने के लिए, हों पाण्डव तैयार ।
बस इतनी सी बात है, बेड़ा अपना पार ।।१७।।
कर्ण दुशासन को बुला, करी मन्त्रणा साथ ।
गये पास धृतराष्ट्र के, जोड़े सबने हाथ ।।१८।।
फिर शकुनी ने यों कहा, कुरुपति को समझाय ।
हम सब आये हैं यहाँ, सुनिये चित्त लगाय ।।१९।।
दिन-दिन दुबला हो रहा, दुर्योधन बलवान् ।
पीला मुख है पड़ गया, है आश्चर्य महान् ।।२०।।
खान पान छूटा सभी, चिन्तित है दिन रात ।
हम सबने सोंचा यही, कहें आप से बात ।।२१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहा तभी धृतराष्ट्र ने, सुन शकुनी के बैन ।
क्या कारण है तुम कहो, क्यों है वह बेचैन ।।२२।।
राज पाट इतना बड़ा, सभी उसी के साथ ।
आज्ञाकारी भ्रात सब, कर्ण वीर हैं साथ ।।२३।।
फिर क्या चिन्ता है उसे, समझ न पड़ती बात ।
दुर्योधन से तब कहा, बता हाल सब तात ।।२४।।
कैसी चिन्ता है तुझे, कैसा तुमको शोक ।
मेरे प्यारे पुत्र कहु, बिना रोक औ टोक ।।२५।।
तब दुर्योधन ने कहा, सुनो हाल सब तात ।
गया राजसू यज्ञ में, छिपी न तुम से बात ।।२६।।
द्रुपद सुता ने तब वहाँ, किया घोर अपमान ।
अन्धे के अन्धा कहा, हँसा भीम नादान ।।२७।।
जब तक बदला लूँ न मैं, नहीं मुझे है चैन ।
कहे उन्होंने हैं मुझे, कड़वे तीखे बैन ।।२८।।
और आप का भी किया, उन सबने अपमान ।
अपने को समझा यही, बड़े धनी धनवान ।।२९।।
राजपाट उनका हरूँ, करूँ उन्हें बर्बाद ।
बँधा किसी से बैर था, रक्खेंगे वह याद ।।३०।।
जुआ खेल सब छीन लूँ, यह ठानी है ठान ।
बुलवा दो जो तुम उन्हें, हो यह कार्य महान ।।३१।।
भेज विदुर कहलाय दें, द्यूत युद्ध की बात ।
अवसि युधिष्ठिर आयँगे, मेरे प्यारे तात ।।३२।।
वह इसके शौकीन हैं, उनको जुआ पसन्द ।
निश्चित उनको जीत लूँ, करके हर छल छन्द ।।३३।।
होनी सब कुछ कर सके, होनी महा महान ।
पण्डित ज्ञानी भूलते, भूले सकल जहान ।।३४।।
जो चाहे होनी करे, लगे न पल की देर ।
जो इच्छा भगवान की, पड़े न उसमें फेर ।।३५।।
भेज विदुर धृतराष्ट्र ने, पाण्डव लिये बुलाय ।
होनी ने सब कुछ किया, गये युधिष्ठिर आय ।।३६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खेल जुआ हारे सभी, धर्मराज महराज ।
पाँसे उल्टे ही पड़े, गया तख्त औ ताज ।।३७।।
तब दुर्योधन ने कहा, सुनो युधिष्ठिर बात ।
क्या रक्खोगे दाँव पर, बाकी नहीं बिसात् ।।३८।।
अगर दाँव पर द्रोपदी, रख दो तुम इस बार ।
जो जीता वापस करूँ, लो यह बात विचार ।।३९।।
एक तरफ है द्रोपदी, एक तरफ सब राज ।
सोच समझ लो हृदय में, धर्मराज महराज ।।४०।।
लगा द्रोपदी दाँव पर, गये युधिष्ठिर हार ।
होनी ने उल्टा किया, होनी अपरम्पार ।।४१।।
बुला दुशासन को कहा, अन्तःपुर में जाव ।
सभा मध्य ही द्रोपदी, तुम लेकर के आव ।।४२।।
द्रुपद-सुता आई तभी, सभा बीच तत्काल ।
दुष्ट दुशासन मन्दमति, पकड़े केश सँभाल ।।४३।।
कहा द्रोपदी ने तभी, आर्त्तनाद के साथ ।
पूज्य पितामह द्रोण गुरु, मान्य पिता कुरुनाथ ।।४४।।
आप सभी के सामने, मेरा यह अपमान ।
हुआ विधाता वाम है, रूठा है भगवान ।।४५।।
पाँचो पति बलवान सब, बैठे क्यों चुपचाप ।
कहो भला क्या बात है, क्या है मेरा पाप ।।४६।।
तब दुर्योधन ने कहा, भूल गई वह बात ।
किया घोर अपमान था, पहुँचाया आघात ।।४७।।
आ जंघा पर बैठ तू, तब होवे मन शान्त ।
जीत लिया मैंने तुझे, अब मैं तेरा कान्त ।।४८।।
ऐसे कड़वे बैन भी, सुन-सुनकर सब मौन ।
भीष्म द्रोण तक चुप रहें, फिर बोलेगा कौन ।।४९।।
होनी की महिमा प्रबल, खो जाता है ज्ञान ।
दुर्योधन के सिर चढ़ी, हरने उसके प्रान ।।५०।।
सदा मानता वह रहा, द्रुपद सुता को मात ।
होनी ने कहलाय दी, उल्टी सीधी बात ।।५१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भीमसेन पर फिर हुई, होनी तुरत सवार ।
पटक हाथ फिर भूमि पर, गरजा भीम अपार ।।५२।।
सिंह सदृश हुँकार थी, दहल गया दरबार ।
कौरव से कहने लगा, भीम बली ललकार ।।५३।।
अटल प्रतिज्ञा कर रहा, नहिं सकते शिव टाल ।
ध्वंस करूँ कुरु वंश का, कहूँ ठोक कर ताल ।।५४।।
पकड़े है निज करों से, द्रुपद सुता के बाल ।
दुःशासन के हाथ वे, तोड़ूँ बन कर काल ।।५५।।
तन से लेउँ उखाड़ मैं, पियूँ बक्ष का रक्त ।
पूर्ण प्रतिज्ञा मैं करूँ, आयेगा वह वक्त ।।५६।।
दुर्योधन की जाँघ को, देउँ गदा से तोड़ ।
नहीं बचेगा दुष्ट वह, रक्षक होंय करोड़ ।।५७।।
चहे काल रक्षक बने, सारे सुर दें साथ ।
हनूँ पुत्र धृतराष्ट्र के, सौ के सौ निज हाथ ।।५८।।
धर्मराज ने तुरत फिर, किया भीम को शान्त ।
धर्म इसी में चुप रहो, क्यों होते हो भ्रान्त ।।५९।।
होनी अति बलवान है, भूले सभी विचार ।
दुर्योधन ने यों कहा, सभा मध्य ललकार ।।६०।।
खींच दुशासन चीर तू, क्यों करता है बार ।
कर दे नंगी अब इसे, ले सब वस्त्र उतार ।।६१।।
लगा खींचने चीर वह, दुष्ट दुशासन वीर ।
विकल द्रोपदी हो गई, चंचल चित्त अधीर ।।६२।।
सुमिरा उसने फिर वहाँ, गिरधर मदन गोपाल ।
नट नागर आओ अभी, हे हरि यशुदा लाल ।।६३।।
दीन बन्धु कहता जगत, दीनों के आधार ।
मैं अबला हूँ नारि हूँ, निर्बल दीन अपार ।।६४।।
लज्जा मेरी आपके, हाथों दीन दयाल ।
आओ-आओ नाथ अब, करो भक्त प्रतिपाल ।।६५।।
आर्त्तनाद कर द्रोपदी, हिय से रही पुकार ।
लाज बचाओ आयकर, मोहन नन्दकुमार ।।६६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गज ने टेरा आपको, समझ विपत्ति महान ।
प्यादे आये आप थे, हे हरि कृपा निधान ।।६७।।
आओ मेरी बार अब, करो न क्षण की देर ।
तुम सुनते हो हरि सदा, दीन दुखी की टेर ।।६८।।
लगा चीर बढ़ने तुरत, हरि माया बलवान ।
क्षण में चाहे जो करें, केशव कृपा निधान ।।६९।।
दस सहस्त्र गज बल थका, खींच खींच कर चीर ।
स्वयं अचम्भित हो रहा, दुःशासन वे पीर ।।७०।।
साड़ी का अम्बार था, लगा सभा के बीच ।
हार दुशासन था गया, सका न फिर वह खींच ।।७१।।
लाज द्रोपदी की रखी, क्षण में संकट टाल ।
धन्य श्याम मायापते, धन्य धन्य गोपाल ।।७२।।
कहा भीष्म ने तब वहाँ, किया घोर यह पाप ।
पतिव्रता है द्रोपदी, देखा प्रबल प्रताप ।।७३।।
छोड़ दुशासन छोड़ दे, किया बहुत अपमान ।
भला इसी में समझ ले, कहना मेरा मान ।।७४।।
छोड़ दुशासन ने दिया, अपने कर से चीर ।
पहले ही था वह थका, मन में हुआ अधीर ।।७५।।
चकित सभासद थे सभी, लख कर पतिव्रत धर्म ।
दुर्योधन लज्जित हुआ, समझ नीच निज कर्म ।।७६।।
फिर बोला निर्लज्ज वह, सुनो युधिष्ठर धीर ।
जाओ वन में तुम रहो, सहो वहाँ की पीर ।।७७।।
बारह वर्षों तक वहाँ, करना तुम्हें निवास ।
एक वर्ष फिर गुप्त रह, नहिं होवे आभास ।।७८।।
अगर पता पा जाऊँ मैं, गुप्त वास दरम्यान ।
फिर रहना बन बीच हो, तेरह वर्ष सुजान ।।७९।।
इसी शर्त पर अब तुम्हें, देता हूँ बनवास ।
गुप्त वास यदि पूर्ण हो, तो रक्खो विश्वास ।।८०।।
तो जीता सब माल मैं, तुमको देउँ सहर्ष ।
बीत निमिष में जायेंगे, बन के तेरह वर्ष ।।८१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

साथ द्रोपदी के गये, धर्मराज महराज ।
भ्राता चारों साथ थे, छोड़ राज औ ताज ।।८२।।
होनी ने सब कुछ किया, लगी न क्षण की देर ।
रंक किया नृपराज को, धन्य दिनों के फेर ।।८३।।
दुख सुख कुछ माना नहीं, धन्य युधिष्ठर धन्य ।
धर्म परायण पाण्डु सुत, धर्म धुरीण अनन्य ।।८४।।
गये विपिन में फिर सभी, गुरु धौम्य के पास ।
कन्द मूल खाकर रहें, भजें सदा ब्रजनाथ ।।८५।।
यों ही दिन थे बीतते, ऋषि मुनि का था संग ।
त्याग तपस्या रत हुए, मन में भरे उमंग ।।८६।।
ऋषि मुनि आते बहुत से, धर्मराज के पास ।
सेवा सबकी वह करें, मन में भरे हुलास ।।८७।।
मन्त्र जपा पूजन किया, हुए प्रसन्न दिनेश ।
एक पात्र रवि ने दिया, दिव्य अमूल्य विशेष ।।८८।
और कहा इस पात्र से, जो मांगोगे आप ।
वही मिले इस पात्र से, टले विघ्न सन्ताप ।।८९।।
चाहे जितने हों पुरुष, खा सकते हैं नित्य ।
कभी न खाली पात्र हो, बोले यों आदित्य ।।९०।।
जब खा लेगी द्रौपदी, तब हो खाली पात्र ।
शर्त यही इसमें नृपति, समझो केवल मात्र ।।९१।।
यह कह देकर पात्र को, गये सूर्य भगवान ।
पाण्डव हर्षित हो गये, पाकर यह वरदान ।।९२।।
खाते अगणित साधु जन, व्यञ्जन विविध प्रकार ।
आखिर में खाती सदा, द्रुपद-सुता-सुकुमार ।।९३।।
ऋषि दुर्वासा थे बड़े, त्यागी तपसी सन्त ।
शिष्य प्रवर रहते सदा, उनके साथ अनन्त ।।९४।।
गये हस्तिनापूर वह, दुर्योधन के पास ।
बसे उसी के पास वह, बीता चातुर्मास ।।९५।।
हो प्रसन्न ऋषिराज ने, कहा सुनो कुरुराज ।
जो इच्छा हो माँग लो, दे सकता हूँ आज ।।९६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो सेवा तूने करी, कर सकता है कौन ।
पूर्ण करूँ अभिलाष मैं, कह कर ऋषि भे मौन ।।९७।।

तब दुर्योधन ने कही, ऋषि से मन की बात ।
इक ही दुख मुझको सदा, रहता है दिन रात ।।९८।।

पाण्डु सुतों को है दिया, यद्यपि मैं बनवास ।
पूर्ण हुई तो भी नहीं, मेरे मन की आस ।।९९।।

दिया सूर्य ने है उन्हें, एक अनोखा पात्र ।
सब कुछ उससे प्राप्त हो, वह साधन है मात्र ।।१००।।

खा लेगी जब द्रौपदी, तब पहुँचे तहँ आप ।
भोजन माँगे दें न वे, तब देना तुम श्राप ।।१०१।।

सिद्ध काम हो जाँय सब, मेरे ऋषिवर नाथ ।
पूर्ण करो अभिलाष मम, कहा जोड़कर हाथ ।।१०२।।

सुनकर कम्पित ऋषि हुये, कार्य महा दुःसाध्य ।
देकर वर मैं हूँ हुआ, निज बचनों से बाध्य ।।१०३।।

भक्तों की रक्षा करें, सदा स्वयं भगवान ।
भक्त युधिष्ठिर कृष्ण का, ये है सत्य महान ।।१०४।।

तो भी जाता हूँ वहाँ, तेरा करने काम ।
जंगल को ऋषिवर चले, तज कुरुपति का धाम ।।१०५।।

पहुँचे जाकर विपिन में, धर्मराज के पास ।
खाय चुकी है द्रोपदी, ऋषि को था विश्वास ।।१०६।।

चौरासी हज़ार थे, चेले मुनि के साथ ।
ऋषि के चरणों में धरा, धर्मराज ने माथ ।।१०७।।

पूजा की सम्मान कर, पत्र पुष्प के साथ ।
हो विनम्र फिर यों कहा, क्या आज्ञा ऋषिनाथ ।।१०८।।

एकादशि व्रत कल किया, किया न कुछ आहार ।
भोजन हित आये यहाँ, सुन लो पाण्डु कुमार ।।१०९।।

हम जाते हैं स्नान को, लौट यहाँ पर आय ।
भोजन करो तैयार तुम, आकर फिर हम खाय ।।११०।।

यह कह ऋषिवर चल दिये, चेले गण के साथ ।
गये नदी के तीर सब, मन प्रसन्न मुनि नाथ ।।१११।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गये युधिष्ठिर फिर तुरत, द्रुपद सुता के पास ।
दुर्वासा आये यहाँ, जिनका दिव्य प्रकाश ।।११२।।
भोजन पायेंगे प्रिये, शिष्य वर्ग के साथ ।
व्यंजन करो तयार तुम, बोले यों नर नाथ ।।११३।।
सुनकर चिंतित द्रौपदी, घबराई मन बीच ।
दुर्वासा क्रोधी महा, जिनके बस में मीच ।।११४।।
भोजन मैंने कर लिया, नहिं देगा अब पात्र ।
अपना तो बस पात्र था, दाता केवल मात्र ।।११५।।
अवशि शाप दें ऋषि प्रवर, भोजन जब नहिं पायँ ।
बने काम अपना तभी, कृष्ण यहाँ जब आयँ ।।११६।।
लगी सुमिरने द्रौपदी, गिरधर को उस काल ।
आई विपति महान है, टालो मदन गोपाल ।।११७।।
भक्तों की रक्षा करो, यही तुम्हारी आन ।
दया सिन्धु करुणा अयन, दीन बन्धु भगवान ।।११८।।
सिवा आपके इस समय, नहीं सहारा नाथ ।
आरत होकर द्रोपदी, टेर रही ब्रजनाथ ।।११९।।
आये तत्क्षण हरि वहीं, लगी न क्षण की देर ।
भक्तों के दुख हरि हरें, सुनें भक्त की टेर ।।१२०।।
आते ही कहने लगे, सुनो द्रोपदी बात ।
भूख लगी है जोर की, बोले श्यामल गात ।।१२१।।
नहीं यहाँ कुछ इस समय, रिक्त पात्र है शेष ।
हरि बोले लाओ यहाँ, अपना पात्र विशेष ।।१२२।।
उठा पात्र लाई तुरत, द्रुपद सुता उस ठाम ।
लिया कृष्ण ने शीघ्र फिर, अपने कर में थाम ।।१२३।।
एक शाक का पत्र था, लगा पात्र के बीच ।
तुरत उसे घनश्याम ने, लिया हाथ से खींच ।।१२४।।
खाकर हरि ने शाक वह, किया तृप्त संसार ।
धन लीला घनश्याम की, धन-धन नन्दकुमार ।।१२५।।
तीन लोक के लोग सब, तृप्त हुए इस तौर ।
जैसे खाय विशेष हों, खाय सके नहि और ।।१२६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्त बछल भगवान के, अनुपम मनहर ठाठ ।
संकट अपने भक्त के, देते हैं हरि काट ।।१२७।।
भक्त बछल हरि सा नहीं, जगती में है और ।
दीनबन्धु कहता जगत, देवों के सिर मौर ।।१२८।।
दुर्वासा थे कर रहे, नदी मध्य सुस्नान ।
लगा अफरने पेट था, हुए बहुत हैरान ।।१२९।।
चेले जितने संग थे, अफरे सबके पेट ।
अफरन से व्याकुल हुए, गए भूमि पर लेट ।।१३०।।
खट्टी-खट्टी आ रही, सबको विकट डकार ।
अपच हुआ गुरुवर सुनो, कहते सभी पुकार ।।१३१।।
दुर्वासा ज्ञानी महा, तपसी धीर महान ।
भागे सब चेलों सहित, समझा निज कल्यान ।।१३२।।
शिष्यों से कहने लगे, खाया अब नहिं जाय ।
ठहरेंगे अब जो यहाँ, भीम बुलाने आय ।।१३३।।
पाण्डु सुवन हरि भक्त हैं, भक्त बछल घनश्याम ।
भक्तों की रक्षा करें, सदा श्याम सुखधाम ।।१३४।।
यह कह भागे ऋषि तुरत, चेलों को ले साथ ।
भीमसेन बलवान से, बोले श्री ब्रजनाथ ।।१३५।।
भोजन यहाँ तयार है, ऋषि को लाव बुलाय ।
गये नदी पर भीम जब, सूना वहाँ दिखाय ।।१३६।।
ना दुर्वासा थे वहाँ, ना चेला था एक ।
हक्का बक्का भीम था, भूला बुद्धि विवेक ।।१३७।।
फिर लौटा वह वहाँ से, आया हरि के पास ।
नदी किनारे ऋषि नहीं, सुनिये रमा निवास ।।१३८।।
भाग गये शिष्यों सहित, ऐसा है अनुमान ।
कहा भीम ने फिर यही, सुनिये दया निधान ।।१३९।।
धर्मराज चरणों पड़े, भ्राता गण के साथ ।
बचा लिये हैं हम सभी, कृपा सिन्धु यदुनाथ ।।१४०।।
सिवा आपके इस समय, रक्षा करता कौन ।
जयति कृष्ण भगवान जय, चरण परसि भे मौन ।।१४१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कृष्ण गये फिर द्वारिका, होकर अन्तर्धान ।
भीर हरी निज भक्त की, हे हरि कृपा निधान ।।१४२।।
इसी तरह रहते रहे, वन में पाण्डु कुमार ।
ऋषिगण का सत्संग हो, हरि गुन सुन बलिहार ।।१४३।।
एक दिवस की बात है, गिरि पर थे आसीन ।
कथा पुरातन कह रहे, ऋषिवर परम प्रवीन ।।१४४।।
बैठी सँग में द्रोपदी, सुनते पाण्डु कुमार ।
उसी समय चलने लगी, अतिशय तीक्ष्ण बयार ।।१४५।।
नन्दन बन का पुष्प इक, गिरा शैल पर आय ।
उसे द्रौपदी ने तुरत, उठकर लिया उठाय ।।१४६।।
परम मनोहर रम्य वह, सुखद सुगन्धित फूल ।
रंग विरंगी पखुड़ियाँ, थीं सुगन्ध की मूल ।।१४७।।
योजन भर में व्याप्त थी, गन्ध पवित्र विचित्र ।
अजब तरह की महक थी, मात सैकड़ों इत्र ।।१४८।।
कुम्हलाता था वह नहीं, कभी किसी भी काल ।
श्री हरि पर चढ़ती सदा, इन पुष्पों की माल ।।१४९।।
मुग्ध हुई तब द्रोपदी, देख फूल अनमोल ।
देख भीम की ओर वह, बोली तब यों बोल ।।१५०।।
दो माला के पुष्प ये, मुझको लादो नाथ ।
ला सकते हैं आप ही, कहा जोड़ कर हाथ ।।१५१।।
भेंट करूँ मैं मात को, एक पुष्प की माल ।
दूजी माला देउँ मैं, हरि के गल में डाल ।।१५२।।
यही भावना है उठी, पूर्ण करो अभिलाष ।
जैसे भी हो लाय दो, करके प्रभो प्रयास ।।१५३।।
आया था जिस ओर से, उड़कर पुष्प विशाल ।
चले भीम उस ओर ही, कर में गदा विशाल ।।१५४।।
पवन सदृश चलने लगे, पवन पुत्र भट भीम ।
लाँघ पहाड़ों को गये, नद अरु नदी असीम ।।१५५।।
द्रुतगामी योधा चले, नन्दन बन की ओर ।
पार किया अति शीघ्र ही, विकट विपिन घनघोर ।।१५६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पहुँचे नन्दन बन निकट, लखा वृद्ध कपि एक ।
पूँछ बड़ी फैलाय कर, बैठा मग में छेंक ।।१५७।।
कहा भीम ने तुरत फिर, सुनो वृद्ध कपिराज ।
पूँछ उठा लो राह दो, सिद्ध होय मम काज ।।१५८।।
कपिवर थे हनुमान जी, पवन पुत्र बलवान ।
भीमसेन आता लखा, भ्राता निज पहिचान ।।१५९।।
पुष्प लेन आया वहाँ, जान गये सब बात ।
वन के रक्षक यक्ष हैं, दें न इसे आघात ।।१६०।।
लेउँ परीक्षा मैं प्रथम, कितना यह बलवान ।
पूँछ बढ़ा मग घेर कर, बैठे वीर सुजान ।।१६१।।
भीम वचन सुन यों कहा, मैं बूढ़ा अति दीन ।
शक्ति हीन हूँ हो गया, सुन लो बली प्रवीन ।।१६२।।
स्वयं उठाकर पूँछ मम, नीचे से लो राह ।
या जाओ बस छोर से, और नहीं निर्वाह ।।१६३।।
भीमसेन पहले चले, मिल जाये यदि छोर ।
कौन उठाये पूँछ को, चले छोर की ओर ।।१६४।।
योजन दश तक वे गये, मिला न उनको छोर ।
लौटे वापस हो विवश, फिर पीछे की ओर ।।१६५।।
तमक हुमक कर पूँछ को, बायें कर से थाम ।
लगे उठावन भीम फिर, समझ सरल हिय काम ।।१६६।।
उठी न तिल भर पूँछ थी, लस्त पस्त थे भीम ।
बल करके जब थक गये, योधा महा असीम ।।१६७।।
तब सोचा था भीम ने, कपिवर हैं हनुमान ।
विनय सहित फिर यों कहा, सुनिये कपि श्रीमान् ।।१६८।।
लंका में डंका बजा, जिनका वह कपि आप ।
अवशि आप हनुमान हैं, गया सही मैं भाँप ।।१६९।।
महावीर जो आप हैं, तो मैं करूँ प्रणाम ।
भ्राता हूँ मैं आप का, भीमसेन है नाम ।।१७०।।
या कपिवर बतलायें फिर, महापुरुष हैं कौन ।
यह कहकर कपिराज से, हुआ भीम था मौन ।।१७१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वृद्ध कपीश्वर उठ पड़े, सुन करके मृदु बात ।
हिये लगाया भीम को, पुलकित हिय हुलसात ।।१७२।।
भीमसेन से यों कहा, मैं हूँ तेरा भ्रात ।
तू आया जिस हेतु है, पूर्ण होय सब बात ।।१७३।।
भ्रात भ्रात से वे मिले, होकर प्रेम विभोर ।
गद् गद् दोनों वीर थे, उठती हर्ष हिलोर ।।१७४।।
भीमसेन ने फिर कहा, सुनो भ्रात मम बात ।
नन्दन बन के पुष्प मैं, लेने आया तात ।।१७५।।
बन के रक्षक यक्ष हैं, बली भयंकर वीर ।
बड़ा कठिन यह कार्य है, बोले हनुमत धीर ।।१७६।।
कहा भीम ने कपि सुनो, मैं निर्भीक अजेय ।
कृपा आपकी चाहिए, पूरा होगा ध्येय ।।१७७।।
विनती मेरी एक है, सुनो वीर बलवीर ।
कौरों से जब युद्ध हो, आना तब तुम धीर ।।१७८।।
प्रमुदित हो हनुमान ने, दिया उसे बरदान ।
पूर्ण होयँगे कार्य सब, रक्षक हों भगवान ।।१७९।।
नन्दन बन में तब गये, भीमसेन बलवान ।
यक्ष लड़े हारे सभी, खाली था उद्यान ।।१८०।।
फूल तोड़ वापिस हुए, आये अपने धाम ।
द्रुपद सुता को दे दिये, अगणित पुष्प ललाम ।।१८१।।
फूल पाय हर्षित हुई, हँसी मन्द मुसकान ।
और कहा तुम धन्य हो, मेरे पिया सुजान ।।१८२।।
यों ही बसते विपिन में, पाण्डु सुवन सानन्द ।
सत्य भक्ति में लीन थे, भजते श्री ब्रजचन्द ।।१८३।।
कभी द्वारिका विपिन में, बसते पाण्डु कुमार ।
हरिद्वार बन में कभी, पाते हर्ष अपार ।।१८४।।
जंगल में मंगल बने, जहाँ जाँय ये लोग ।
ऋषि मुनि के दर्शन करें, साधें नित प्रति योग ।।१८५।।
यों ही बीते निशि दिवस, गये बीत दस साल ।
काल चक्र चलता सदा, तीव्र विलक्षण चाल ।।१८६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घोर विपिन में थे गये, इक दिन पाँचों भ्रात ।
प्यास लगी सबको वहाँ, जल बिन थे बिलखात ।।१८७।।
रहे ढूँढ़ते नीर सब, बन में चारों ओर ।
तृषित हुए घनघोर थे, दिखता ओर न छोर ।।१८८।।
चढ़े भीम इक पेड़ पर, डाली दृष्टि सुदूर ।
पक्षी उड़ते दिख पड़े, एक तरफ कुछ दूर ।।१८९।।
हुआ भीम के हृदय में, आशा का संचार ।
अवशि मिलेगा जल वहाँ, मन में किया विचार ।।१९०।।
उतर भीम ने पेड़ से, कहा सुनो हे तात ।
पक्षी उड़ते इस तरफ, देखे मैंने भ्रात ।।१९१।।
जल होगा निश्चिति वहाँ, ऐसा है विश्वास ।
शीतल जल लाता अभी, बुझे सभी की प्यास ।।१९२।।
भीम गया कुछ दूर जब, दिखा एक शुचि ताल ।
निर्मल जल से है भरा, लखकर हुआ निहाल ।।१९३।।
ज्यों ही पीने को हुआ, अंजलि भर कर नीर ।
ठहर-ठहर पीना नहीं, हुई गिरा गम्भीर ।।१९४।।
कम्पित सुनकर भीम था, गिरा करों से नीर ।
इधर उधर वह देखता, होकर विकल अधीर ।।१९५।।
खड़ा सामने यक्ष था, महा विकट विकराल ।
डील पर्वताकार सा, लोचन लाल कराल ।।१९६।।
बोला फिर वह गरज कर, सुनो भीम बलवीर ।
उत्तर दो मम बात का, तब पीना तुम नीर ।।१९७।।
भीम बली से यक्ष ने, प्रश्न किये फिर चार ।
इनका उत्तर देव तुम, कुन्ती पुत्र उदार ।।१९८।।
बिन उत्तर मेरा दिये, अगर किया जलपान ।
अवशि मरोगे तुम यहाँ, निकल जाँयगे प्रान ।।१९९।।
व्याकुल थे वे प्यास से, भीम बली बलवान ।
बिना प्रश्न के ही सुने, जल पी खोये प्रान ।।२००।।
धर्मराज व्याकुल हुए, लगी भीम को देर ।
अर्जुन को भेजा तुरत, सुधि लेने को फेर ।।२०१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्जुन ने जाकर वहाँ, लखा भीम का हाल ।
बढ़े ताल की ओर वे, पीने जल तत्काल ।।२०२।।
कहा यक्ष ने फिर वही, सुनी न अर्जुन बात ।
पीकर जल मूर्छित हुए, योधा जग विख्यात ।।२०३।।
इसी तरह आये नकुल, औ सहदेव सुजान ।
वे भी मूर्छित हो पड़े, भू पर मृतक समान ।।२०४।।
तब आये तत्क्षण वहाँ, स्वयं युधिष्ठिर धीर ।
भूमि पड़े भ्राता लखे, मन में हुए अधीर ।।२०५।।
व्याकुल हो कहने लगे, धर्मराज महराज ।
कौन यहाँ पर प्रकट हो, किसका है यह काज ।।२०६।।
प्रकट हुआ फिर यक्ष वह, बोला तुरत पुकार ।
प्रश्नोत्तर तुम दो मुझे, पहले पाण्डु कुमार ।।२०७।।
तब जीवित ये होयँगे, अटल सत्य यह बात ।
बिन उत्तर मेरा दिये, कुशल नहीं है तात ।।२०८।।
कौन बात अच्छी भला, कौन पन्थ निर्भीक ।
क्या आश्चर्य जहान में, क्या सुख सबसे ठीक ।।२०९।।
कहा युधिष्ठिर ने सुनो, यक्षराज महराज ।
चारों प्रश्नों का सही, उत्तर सुनिये आज ।।२१०।।
मोह रूप संसार ये, सम कड़ाह लो जान ।
ईंधन दिन औ रात हैं, दिनकर अग्नि समान ।।२११।।
करछुल सम सब मास हैं, इतनी सी है बात ।
जिसमें जीवों का समय, पकता है दिन रात ।।२१२।।
जो करते आये सदा, पुरुष महान अनेक ।
पन्थ वही सब ठीक है, सीधा सच्चा नेक ।।२१३।।
साग खाय गृह में रहे, जावे नहीं विदेश ।
ऋण जिस पर होवे नहीं, समझो वही नरेश ।।२१४।।
नित मरते देखे सदा, मरता सकल जहान ।
फिर भी भूला है मनुज, है आश्चर्य महान ।।२१५।।
उत्तर चारों बात का, सुना सहित सौजन्य ।
यक्षराज कहने लगा, धन्य युधिष्ठिर धन्य ।।२१६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जीवित अर्जुन भीम अरु, किये नकुल सहदेव ।
धर्मराज के सभी ने, चरण छुए स्वयमेव ।।२१७।।
फिर सबने मिलकर पिया, सुन्दर निर्मल नीर ।
प्यास मिटी चिन्ता हटी, पुलकित हुआ शरीर !।२१८।।
सतवादी ज्ञानी महा, भक्त युधिष्ठिर धीर ।
आश्रम को पलटे सभी, पीकर पावन नीर ।।२१९।।
द्रुपद सुता से आय कर, कही सभी यह बात ।
हरि गुण गाते प्रेम से, सुबह शाम दिन रात ।।२२०।।
इसी तरह बन में रहे, बीते बारह साल ।
दिन जाते देरी नहीं, चले चाक सा काल ।।२२१।।
गुप्तवास फिर आ गया, मिलकर किया विचार ।
कहाँ रहें कैसे रहें, छिपना है दुश्वार ।।२२२।।
धौम्य ऋषी ने राय दी, सुन लो! पाण्डुकुमार ।
नृप विराट से जा मिलो, रूप भृत्य का धार ।।२२३।।
कर प्रणाम ऋषिराज को, चले सभी सानन्द ।
मग चलते भजते रहे, मन मोहन ब्रजचन्द ।।२२४।।
पहुँच नगर के निकट में, देखा एक स्थान ।
टाँग दिये इक पेड़ पर, अस्त्र शस्त्र धनु बाण ।।२२५।।
धर्मराज ने तब किया, धारण द्विज का रूप ।
चौसर पाँसे संग ले, चले युधिष्ठिर भूप ।।२२६।।
नृप विराट की सभा में, जा पहुँचे तत्काल ।
सुन्दर सौम्य स्वरूप लख, तब बोला भूपाल ।।२२७।।
क्यों आये क्या कार्य है, कहो विप्र महराज ।
दर्शन पाय कृतार्थ हूँ, धन्य भाग्य हैं आज ।।२२८।।
कहा विप्र ने नृप सुनो, कनक विप्र मम नाम ।
अनुचर रख लो जो मुझे, बन जाये सब काम ।।२२९।।
नृपति युधिष्ठिर के यहाँ, अनुचर था मैं वीर ।
पाँसे उनके संग में, रहा खेलता धीर ।।२३०।।
यही काम था वहाँ पर, और न था कुछ काम ।
पाँसे के शौकीन तुम, सुन कर आया नाम ।।२३१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहा नृपति ने ठीक है, रहो विप्र महराज ।
यही काम करना यहाँ, और न लूँगा काज ।।२३२।।
बने रसोइया भीम थे, कर में करछुल थाम ।
फिर पहुँचे वे भी वहीं, नृप विराट के धाम ।।२३३।।
कहा नृपति से उन्होंने, वल्लू अपना नाम ।
भोजन विविध प्रकार के, रचना मेरा काम ।।२३४।।
धर्मराज के यहाँ मैं, अनुचर था महराज ।
चले गये वे विपिन में, तज कर अपना राज ।।२३५।।
दुखी हुआ मैं इस समय, मुझको है सन्ताप ।
विनय आप से है यही, नौकर रक्खें आप ।।२३६।।
उनको किया नियुक्त था, दे भोजन भण्डार ।
भीमसेन नौकर बने, होनी अपरम्पार ।।२३७।।
रूप जनाना धार कर, आये अर्जुन वीर ।
गान कला में मैं निपुण, सुनिये नृपति सुधीर ।।२३८।।
सुता उत्तरा आपकी, उसे सिखाऊँ गान ।
करूँ नौकरी आपकी, सुनिये नृप श्रीमान् ।।२३९।
नकुल और सहदेव भी, आये नृप के पास ।
अश्व वैद्य गौ वैद्य बन, हुए नृपति के दास ।।२४०।।
गई महल में द्रोपदी, दासी का धार वेष ।
रानी को प्रमुदित किया, दिखला कला विशेष ।।२४१।।
और कहा अब तक रही, द्रुपद सुता के धाम ।
बाल गूँथने का सदा, करती थी मैं काम ।।२४२।।
सैरन्ध्री है नाम मम, करूँ धर्म प्रतिपाल ।
नीच कर्म करती नहीं, केवल गूँथूँ बाल ।।२४३।।
रानी से था कह दिया, मेरे पति हैं पाँच ।
पाचों वे गन्धर्व हैं, पतिव्रता मैं साँच ।।२४४।।
केश सवाँरूँगी सदा, मगर शर्त है एक ।
पालन पतिव्रत धर्म हो, यह है मेरी टेक ।।२४५।।
रानी ने उससे कहा, रक्खो तुम विश्वास ।
रक्खूँगी तुम को सदा, मैं अपने ही पास ।।२४६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और काम करना नहीं, सदा सजाना केश ।
निर्भय़ रहना तुम यहाँ, होगा तुम्हें न क्लेश ।।२४७।।
पाण्डव अनुचर बन गये, होनी महा महान ।
जो चाहे होनी करे, हरि माया बलवान ।।२४८।।
नृप विराट धर्मज्ञ थे, ज्ञानी ध्यानी धीर ।
सब विधि वे सम्पन्न थे, शूर शिरोमणि वीर ।।२४९।।
सौ साले थे सब बली, रहते इनके साथ ।
कीचक था सबसे बड़ा, विकट वीर नर नाथ ।।२५०।।
दश सहस्त्र गज बल भरा, उसके तन के बीच ।
कलुषित हृदय कुबुद्धि था, था स्वभाव का नीच ।।२५१।।
इसके बल पर ही रहे, नृप विराट निर्भीक ।
कीचक के बल ही रही, गड़ी जगत में लीक ।।२५२।।
नौ करोड़ गायें रहीं, नृप विराट के पास ।
गौशाला में वे सभी, सुख से करें निवास ।।२५३।।
रहा सुशर्मा एक नृप, योधा महा महान ।
गौशाला लूँ छीन मैं, मन में ठानी ठान ।।२५४।।
एक समय था वह चढ़ा, लेकर भारी सैन ।
कीचक से रण हार कर, भागा हो बेचैन ।।२५५।।
गौधन हरने के लिये, जो आये भूपाल ।
कीचक से हारे सभी, चली न कोई चाल ।।२५६।।
सुख से बीतें निशि दिवस, हर्षित चित्त विराट ।
जग में अविचल ठाठ था, कहता जग सम्राट ।।२५७।।
कनक विप्र के साथ में, पाँसे का हों खेल ।
मुदित सदा नृपराज थे, पाकर उनका मेल ।।२५८।।
एक दिवस कीचक गया, गृह में भगिनी पास ।
सैरन्ध्री को देख कर, खींची ठण्डी साँस ।।२५९।।
मोहित उस पर हो गया, देख अलौकिक रूप ।
दासी यह कैसे बनी, उसका दिव्य स्वरूप ।।२६०।।
यह राजी हो जाय यदि, रक्खूँ अपने पास ।
सुख से बीतें निशि दिवस, होवे हास विलास ।।२६१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कही बहिन ने निष्कपट, अपने मन की बात ।
रानी ने उससे कहा, सुनो वीर मम भ्रात ।।२६२।।
पतिव्रता यह नारि है, इसके पति गन्धर्व ।
एक नहीं वे पाँच हैं, महा बली हैं सर्व ।।२६३।।
इसने मुझसे कह दिया, अपना सारा हाल ।
जो कुदृष्टि देखे मुझे, उसका आया काल ।।२६४।।
मेरी मानो भ्रात तुम, बदलो बुरे विचार ।
क्षात्र धर्म से मत गिरो, छोड़ो पापाचार ।।२६५।।
कीचक ने उससे कहा, सुनो बहिन मम बात ।
मेरे घर पर भेज दो, इसे आज ही रात ।।२६६।।
मैं राजी कर लूँ इसे, वह राजी हो जाय ।
धर्म न इसमें जायगा, है बस यही उपाय ।।२६७।।
अगर न राजी होय तो, वापिस दूँगा भेज ।
सत्य बहिन तुमसे कहूँ, सोऊँ सूनी सेज ।।२६८।।
होनी अति बलवान है, करे बुद्धि को भ्रष्ट ।
ज्ञानी औ धर्मज्ञ का, भी विवेक हो नष्ट ।।२६९।।
रानी ने यह मान ली, पड़ होनी के फेर ।
जो चाहे होनी करे, लगे न उसको देर ।।२७०।।
सैरन्ध्री से यों कहा, रानी ने समझाय ।
कीचक के घर जाय के, मदिरा तुम दो लाय ।।२७१।।
उसने रानी से कहा, उसकी बुरी निगाह ।
और किसी को भेज दो, मेरा नहीं निबाह ।।२७२।।
हठ कर रानी ने कहा, तुम्हीं करो यह काम ।
जाकर उसके पास में, लेना मेरा नाम ।।२७३।।
फिर वह कुछ बोले नहीं, रक्खो दृढ़ विश्वास ।
आखिर जाना ही पड़ा, उसको उसके पास ।।२७४।।
मिली प्रथम वह भीम से, और कहा सब हाल ।
कहा भीम ने जाव तुम, देना इस विधि टाल ।।२७५।।
नृत्य भवन में मैं मिलूँ, आठ दिवस उपरान्त ।
दिन बतला देना उसे, हो जाये वह शान्त ।।२७६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वह आयेगा जब यहाँ, कर दूँ उसको ठीक ।
भीम वचन सुन द्रोपदी, हुई तुरत निर्भीक ।।२७७।।
कीचक के फिर भवन वह, गई प्रफुल्लित गात ।
कीचक को राजी किया, समझा कर निज बात ।।२७८।।
होनी चाहे जो करे, सब कुछ उसके हाथ ।
भूपति को भिक्षुक करे, भिक्षुक को नरनाथ ।।२७९।।
महाबली बलवान को, क्षण में डाले पीस ।
बुद्धि भ्रष्ट होती अवशि, चढ़ती जिसके शीश ।।२८०।।
कीचक के शिर पर चढ़ी, आया उसका काल ।
निश्चित तिथि पर वह गया, नृत्य भवन तत्काल ।।२८१।।
भीमसेन थे वहाँ पर, लेटे चादर तान ।
कीचक ने जाकर वहाँ, द्रुपद सुता ली जान ।।२८२।।
कहा प्रिये ! तुम सो गई, मैं आया उठ जाव ।
भूषण लाया लो इन्हें, आव गले लग जाव ।।२८३।।
यह कह चादर खींच कर, चाहा लेउँ उठाय ।
उसमें निकला और कुछ, देख गया घबराय ।।२८४।।
मुक्का मुख पर भीम ने, मारा कस कर तान ।
कीचक भौंचक हो गया, मानो निकसे प्रान ।।२८५।।
मल्ल युद्ध होने लगा, दोनों बली महान ।
मारा क्षण में भीम ने, कीचक अति बलवान ।।२८६।।
कीचक के प्रति अंग को, दिया तोड़ औ फोड़ ।
डाले उसकी गुदा में, दोनों कर शिर तोड़ ।।२८७।।
बुला द्रोपदी को तुरत, दिखलाया सब दृश्य ।
कीचक का शव तज वहीं, दोनों हुए अदृश्य ।।२८८।।
होत भोर सबने लखा, कीचक का यह हाल ।
सब भाई रोने लगे, होकर हाल विहाल ।।२८९।।
बाँध द्रोपदी को लिया, तब अर्थी के साथ ।
विलख रही थी द्रोपदी, अबला दीन अनाथ ।।२९०।।
लेकर शत भाई चले, अर्थी को शमशान ।
आई सब की मौत है, होनी प्रबल महान ।।२९१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भीमसेन पीछे गये, फिर मशान की ओर ।
वृक्ष एक बस तोड़ कर, किया शोर घनघोर ।।२९२।।
घुमा फिरा चहुँ ओर फिर, विकट वृक्ष सुविशाल ।
क्षण में मारे दुष्ट सब, बन कर उनका काल ।।२९३।।
सौ के सौ मारे गये, कीचक के वे भ्रात ।
होनी जो चाहे करे, दिन को करती रात ।।२९४।।
भेज द्रौपदी को दिया, महलों में तुम जाव ।
निर्भय हो अब भय नहीं, जाओ हरि गुण गाव ।।२९५।।
गई द्रोपदी महल में, जब रानी के पास ।
हाथ जोड़ उसने कहा, छोड़ो यह रनवास ।।२९६।।
नष्ट किया पितुवंश हैं, तज दो अब यह धाम ।
और कहीं अब जाव तुम, नहीं यहाँ कुछ काम ।।२९७।।
कहा द्रोपदी ने तभी, होकर के अति दीन ।
नहीं खता मेरी सुनो, रानी परम प्रवीन ।।२९८।।
पहले ही था कह दिया, मैंने सारा हाल ।
होनी होकर ही रहे, सके न कोई टाल ।।२९९।।
थोड़े दिन बस आपके, घर पर करूँ निवास ।
लेने पति मम आँयगे, मुझे पूर्ण विश्वास ।।३००।।
जाऊँ उनके साथ में, लो रानी तुम मान ।
रहने की बस मास भर, आज्ञा करो प्रदान ।।३०१।।
रानी राजी हो गई, सुन दासी के बैन ।
एक मास अच्छा रहो, फिर तजना मम ऐन ।।३०२।।
कीचक बध का हाल फिर, फैल गया चहुँ ओर ।
नृप विराट के शत्रुगण, भे सब हर्ष विभोर ।।३०३।।
गया सुशर्मा फिर तुरत, दुर्योधन के पास ।
कुरुपति का वह मित्र था, बोला सहित हुलास ।।३०४
नृप विराट की धेनु सब, लें हम तुम अब छीन ।
कीचक मारा गया है, है विराट अब दीन ।।३०५।।
एक तरफ से हम चढ़ें, करें घोर संग्राम ।
चढ़ों दूसरी ओर तुम, बन जायें सब काम ।।३०६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोधन महा महान वह, आये अपने हाथ ।
जीतेंगे उसको अवशि, सुनो मित्र कुरुनाथ ।।३०७।।
भीष्म द्रोण ने था कहा, उचित नहीं संग्राम ।
अगर पड़ोगे लोभ में, ठीक न हो परिणाम ।।३०८।।
बलशाली कीचक मरण, है रहस्य यह एक ।
गुप्तचरों से क्या सुनो, सोचो सहित विवेक ।।३०९।।
हमें जान ऐसा पड़े, पाण्डव का यह काम ।
झूठ मूठ प्रचलित हुआ, गन्धर्वों का नाम ।।३१०।।
गुप्तवास पूरा किया, रह विराट के पास ।
भीमसेन ने ही किया, है कीचक का नास ।।३११।।
वहाँ जाय कर जो लड़ो, अवशि होयगी हार ।
हमें पूर्ण विश्वास है, मानो राजकुमार ।।३१२।।
दुर्योधन ने तब कहा, मन में भर अभिमान ।
पाण्डव भी यदि हों वहाँ, हर लूँ उनके प्रान ।।३१३।।
पूज्य पितामह द्रोण गुरु, कृपाचार्य हैं साथ ।
कर्ण दुशासन वीरवर, काटें रिपु के माथ ।।३१४।।
यह कह सेनप से कहा, करो सैन्य तैयार ।
शस्त्र सुसज्जित हों सभी, पैदल और सवार ।।३१५।।
उधर सुशर्मा ने सजा, भारी अपनी सैन ।
घेरा नगर विराट का, चलकर दिन अरु रैन ।।३१६।।
गौशाला से हाँक ली, नौ करोड़ जब गाय ।
रण को चले विराट तब, अपनी सैन्य सजाय ।।३१७।।
हुआ युद्ध घमसान फिर, भिड़े एक से एक ।
रक्तमयी धरती हुई, योधा मरे अनेक ।।३१८।।
नृप विराट ने युद्ध में, धरा रूप विकराल ।
सर-सर शर छोड़े प्रबल, रिपु के बन कर काल ।।३१९।।
भागी रिपु सेना सभी, मरा सुशर्मा वीर ।
जय ध्वनि से गूँजी धरा, गूँजा गगन गंभीर ।।३२०।।
गायें गौशाला गईं, बजे दुन्दुभी ढोल ।
प्रमुदित सेना सब हुई, जय विराट की बोल ।।३२१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नृप विराट ने फिर कहा सुनो वीर गण बात ।
हो प्रबन्ध विश्राम का, यहीं बितायें रात ।।३२२।।
बसे सभी रण भूमि में, सैनिक मन आनन्द ।
खिली चाँदनी रात थी, नभ पर चमके चंद ।।३२३।।
उसी समय की बात है, कौरव दल ने आय ।
घेरा नगर विराट का, भारी सेना लाय ।।३२४।।
रहा नगर में नृप सुवन, उत्तर राजकुमार ।
गौरक्षक ने आ कहा, हे युवराज उदार ।।३२५।।
गायें कौरव ले गये, नहीं यहाँ नृपराज ।
वीर पुत्र बलवान हो, करो युद्ध तुम आज ।।३२६।।
गायें अपनी रोक लो, करो घोर संग्राम ।
रक्षक हो रक्षा करो, उज्वल करलो नाम ।।३२७।।
बिना सारथी युद्ध में, कैसे करूँ प्रयाण ।
चतुर सारथी जो मिले, हरूँ शत्रु के प्राण ।।३२८।।
कौरव दल का नाश कर, निज गायें लूँ छीन ।
मैं योधा हूँ वीर हूँ, रण में परम प्रवीन ।।३२९।।
सैरन्ध्री ने तब कहा, सुनलो राज कुमार ।
कार्य सारथी का करें, वृहन्नला सुकुमार ।।३३०।।
हाँका अर्जुन वीर का, इसने रथ इक बार ।
रथ संचालन की कला, जाने भली प्रकार ।।३३१।।
सँग इसको ले जाव तुम, रिपु होवें भयभीत ।
अटल अचल यह सत्य है, होय तुम्हारी जीत ।।३३२।।
भेष जनाना त्याग कर, रूप सारथी धार ।
रण को अर्जुन चल पड़े, रथ पर हो असवार ।।३३३।।
गये विपिन में वे प्रथम, जहँ रखे हथियार ।
तरु पर चढ़कर शस्त्र सब, अपने लिये उतार ।।३३४।।
शस्त्र उठाकर चल दिये, युद्ध स्थल की ओर ।
देवदत्त निज शंख से, किया शब्द घनघोर ।।३३५।।
उत्तर राजकुमार ने, देखी कौरव सैन ।
घबड़ा कर कहने लगा, होकर के बेचैन ।।३३६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वृहन्नला रथ ले चलो, वापस घर की ओर ।
इनसे लड़ सकता नहीं, मैं निर्बल कमजोर ।।३३७।।

महारथी योधा सभी, जगती में बेजोड़ ।
जीत सकें ये काल को, कौन करेगा होड़ ।।३३८।।

जो माँगो दूँगा तुम्हें, चलो यहाँ से भाग ।
जान बूझकर क्यों जलूँ, कठिन समर की आग ।।३३९।।

कहा सारथी ने सुनो, राज पुत्र हैं आप ।
रण से भागोगे अगर, लगे तुम्हें फिर पाप ।।४३०।।

मत घबराओ प्रिय कुँवर, स्वयं करूँ संग्राम ।
तुम बन जाओ सारथी, लो लगाम को थाम ।।३४१।।

वह बोला मुझसे नहीं, हो सकता यह काम ।
तुम वापस घर को चलो, दूँगा तुम्हें इनाम ।।३४२।।

अर्जुन ने मानी नहीं, उसकी कोई बात ।
लगा भागने तब कुँवर, होकर कम्पित गात ।।३४३।।

बाँध दिया रथ से उसे, देकर कर में रास ।
कठपुतला सा वह कुँवर, बैठा रोके साँस ।।३४४।।

धनुष उठा गाण्डीव फिर, गरजे अर्जुन वीर ।
तरकस से खींचा तुरत, एक अलौकिक तीर ।।३४५।।

चढ़ा धनुष पर मंत्र पढ़, छोड़ा फिर तत्काल ।
चरण परस गुरु द्रोण के, लौटा बाण विशाल ।।३४६।।

कहा द्रोण ने फिर तभी, सुनो सुयोधन वीर ।
चरण परस कर है गया, अर्जुन का यह तीर ।।३४७।।

अर्जुन से लड़ना कठिन, वह है वीर महान ।
वह झपटेगा इस समय, घायल सिंह समान ।।३४८।।

बदला लेगा वह चुका, है निश्चय यह बात ।
भाग जाव तुम यहाँ से, कुशल इसी में तात ।।३४९।।

हम सब लड़के रहेंगे, तुम गायें ले जाव ।
खैर इसी में समझ लो, अपनी जान बचाव ।।३५०।।

गायें लेकर चल दिया, दुर्योधन तत्काल ।
भीष्म द्रोण ने ब्यूह रच, किया युद्ध विकराल ।।३५१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नभ में उड़ती धूल लख, गये धनञ्जय जान ।
भागा लेकर गाय सब, दुर्योधन नादान ।।३५२।।
रिपु के सारे भेद को, समझ लिया तत्काल ।
बाणों का क्षण मात्र में, बिछा दिया फिर जाल ।।३५३।।
राह बन्द करती सभी, बाणों की रच भीत ।
गायें पलटीं भवन को, समझीं अपनी जीत ।।३५४।।
रुकीं नहीं भागीं सभी, गौशाला की ओर ।
रहा सुयोधन ताकता, चला न कोई जोर ।।३५५।।
राजकुँवर से फिर कहा, अर्जुन ने समझाय ।
हाँक चलो रथ को वहाँ, जहाँ शत्रु समुदाय ।।३५६।।
भीष्म पितामह से हुआ, प्रथम घोर संग्राम ।
अस्त्र शस्त्र में थे निपुण, दोनों ही बलधाम ।।३५७।।
तीक्ष्ण तीर छोड़े बहुत, अर्जुन ने उस काल ।
हुए मूर्छित भीष्म थे, लग कर बाण कराल ।।३५८।।
इसी तरह गुरु द्रोण भी, लड़े युद्ध घमसान ।
मूर्छित उनको कर दिया, मार मार कर बाण ।।३५९।।
कृपाचार्य औ कर्ण का, किया यही था हाल ।
अश्वत्थामा वीर वर, हुए हाल बेहाल ।।३६०।।
दुर्योधन के भ्रात सौ, योधा महा महान ।
अर्जुन ने मूर्छित किये, तोड़ा मान गुमान ।।३६१।।
कौरव की सब सैन्य को, क्षण में डाला काट ।
लाशों के अम्बार से, दिया भूमि को पाट ।।३६२।।
हक्का बक्का सा रहा, खड़ा सुयोधन देख ।
क्या होना था क्या हुआ, धनि विधिना की रेख ।।३६३।।
बची खुची सेना भगी, पुरी हस्तिना ओर ।
घायल रो रो कर रहे, हाय हाय का शोर ।।३६४।।
मूर्छित सबको छोड़कर, लेकर अपने प्राण ।
दुर्योधन भागा तुरत, चूर हुआ अभिमान ।।३६५।।
देवदत्त निज शंख से, किया विजय का नाद ।
नृप विराट के नगर में, पहुँचा जय संवाद ।।३६६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्जुन बोले थे तभी, सुन लो राजकुमार ।।
मूर्छित वीरों के तुरत, कपड़े लाव उतार ।।३६७।।
राजकुमारी ने कहा, था रण आती बार ।
गुड्डा गुड़ियों के लिए, लाना वस्त्र उतार ।।३६८।।
रंग बिरंगे वस्त्र बहु, लाया कुँवर उतार ।
अर्जुन सँग रणभूमि से, लौटा राजकुमार ।।३६९।।
अर्जुन ने फिर पेड़ पर, लटकाये धनुबाण ।
वृहन्नला का रूप रख, बना पुनः रथवान ।।३७०।।
और कहा था कुँवर से, मत कहना यह हाल ।
सबसे कहना मैं स्वयं, जीता युद्ध विशाल ।।३७१।।
जीत सुशर्मा को उधर, आये नृपति विराट ।
बजी दुन्दुभी नगर में, सजे अनोखे ठाठ ।।२७२।।
उधर कुँवर भी आ गया, कौरव दल को जीत ।
प्रजा प्रफुल्लित मुदित हो, गाती मंगल गीत ।।३७३।।
नृप विराट ने था दिया, विविध भाँति का दान ।
विप्रों का पूजन किया, किया उचित सम्मान ।।३७४।।
राजकुँवर ने तब कहा, युद्ध स्थल का हाल ।
वीर वृहन्ना ने सुनो, जीता युद्ध विशाल ।।३७५।।
अवशि धनञ्जय है यही, यह मेरा अनुमान ।
कनक नाम के विप्र ये, धर्म राज लो जान ।।३७६।।
बल्लू नहिं यह भीम है, इसमें नहिं कछु भेव ।
अश्व वैद्य गो वैद्य यह, नकुल और सहदेव ।।३७७।।
सैरन्ध्री दासी नहीं, द्रुपदसुता लो जान ।
पिता अवशि यह सत्य है, जो मेरा अनुमान ।।३७८।।
कनक विप्र के चरण पर, धरा नृपति ने माथ ।
और कहा सच-सच कहो, सतवादी नर नाथ ।।३७९।।
कहा भीम ने फिर तुरत, सुनिये नृपति विराट ।
सत्य कुँवर ने है कहा, ये पाण्डव सम्राट ।।३८०।।
गुप्तवास हम सभी ने, किया आपके पास ।
अच्छे दिन काटे यहाँ, सुख से किया निवास ।।३८१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धर्मराज को फिर तुरत, सिंहासन बैठाय ।
पूजन किया विराट ने, चरनन शीश नवाय ।।३८२।।
और कहा अनजान में, बहुत किये अपराध ।
दया सिंधु तुम दया मय, कृपा समुद्र अगाध ।।३८३।।
क्षमा करो अपराध सब, पूर्ण करो अभिलाष ।
राज काज सब आपका, मैं चरणों का दास ।।३८४।।
हृदय लगाया नृपति को, धर्मराज सस्नेह ।
और कहा आनन्द से, रहे आपके गेह ।।३८५।।
क्षण में व्यापा नगर में, यह सुन्दर सम्वाद ।
जन-जन के मन छा गया, था अपार आह्लाद ।।३८६।।
नृप विराट के पास ही, रहे युधिष्ठिर धीर ।
जग में फैली खबर यह, प्रकटे पाण्डव वीर ।।३८७।।
पुरी द्वारिका में गई, खबर कृष्ण के पास ।
पाण्डव पुरी विराट में, करते रहे निवास ।।३८८।।
गुप्तवास पूरा हुआ, जान गये गोपाल ।
चले द्वारिका से तुरत, मिलने यशुदा लाल ।।३८९।।
रथ पर हो असवार फिर, चले तुरत घनश्याम ।
निशिदिन चल कर आ गये, नृप विराट के धाम ।।३९१।।
मिले युधिष्ठिर से वहाँ, गले लगा गोपाल ।
कृष्ण दर्श पा पाण्डु सुत, मन में हुए निहाल ।।३९२।।
नृप विराट ने कृष्ण की, पूजा की सानन्द ।
दर्शन पा गोपाल के, पाया परमानन्द ।।३९३।।
और कहा नृपराज ने, सुनिये श्री भगवान ।
राज पाट मेरा सभी, अपना ही लो जान ।।३९४।।
सुता उत्तरा लाड़िली, मेरी परम सुजान ।
अभिमन्यू से व्याह लो, हे हरि कृपा निधान ।।३९५।।
वीर धनञ्जय ने इसे, सिखलाया है ज्ञान ।
पुत्री सम समझा इसे, दिया विविध विधि ज्ञान ।।३९६।।
है इच्छा मेरी यही, सुनिये नन्द कुमार ।
अभिमन्यू के संग करूँ, शुभ विवाह संस्कार ।।३९७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूर्ण कराओ आस मम, कृपा सिन्धु भगवान ।
'एवमस्तु{ हरि ने कहा, सुन विराट बलवान ।।३९८।।
व्याह उत्तरा का हुआ, अभिमन्यू के संग ।
नगर सजा, बाजे बजे, घर घर भरी उमंग ।।३९९।।
उत्सव था आनन्द था, हर्षित थे सब लोग ।
द्रव्य बँटा भोजन बँटा, सुखमय सुखद सँयोग ।।४००।।
अगणित दासी दास औ, हय, गज, रथ, असवार ।
अस्त्र वस्त्र भूषण बसन, सुवरण मणि अम्बार ।।४०१।।
दी दहेज नृपराज ने, हर्षित चित्त महान ।
उधर युधिष्ठिर ने किया, विप्रों को सब दान ।।४०२।।
इसी तरह आनन्द से, हुआ पूर्ण सब काज ।
कहता जन समुदाय था, जय जय जय ब्रजराज ।।४०३।।
दुख के बीते थे दिवस, सुख के साजे साज ।
जन मन में थे बस गये, धर्मराज महराज ।।४०४।।
दिन बहुरे सबके सदा, बिगड़े सुधरें काम ।
भक्तों के कारज करें, भक्त बछल घनश्याम ।।४०५।।
यह माया भगवान की, जाने अगर 'किशोर' ।
तो उसको निश्चय दिखें, चित में ही चितचोर ।।४०६।।

भगवान् श्री कृष्ण का दूत बनकर हस्तिनापुर जाना

जगत पिता जगदीश हरि, जग नायक भगवान ।
निराकार साकार हो, रचते जगत महान ।।१।।
पालन कर्त्ता विश्व के, विश्वम्भर जगदीश ।
क्षण में चाहे जो करें, सब देवों के ईश ।।२।।
एक मास उत्सव हुए, नृप विराट के धाम ।
अन्न बँटा बाजे बजे, हुए धर्म के काम ।।३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिर बोले भगवान यों, सुनो युधिष्ठिर बात ।
पुरी हस्तिनापूर को, मैं जाऊँगा तात ।।४।।
जाऊँ बन कर दूत मैं, दुर्योधन के पास ।
समझाऊँगा मैं उसे, जिससे हो न विनाश ।।५।।
पाण्डव सहित विराट के, सबने मानी बात ।
जो चाहो सो ही करो, हे हरि श्यामल गात ।।६।।
हम चरणों के दास सब, हमें पूर्ण विश्वास ।
विजय हमारी हो अवशि, सँग में रमा निवास ।।७।।
गणपति गौरि मनाय के, पूजे देव महेश ।
रथ पर हो असवार फिर, चले तुरन्त ब्रजेश ।।८।।
गुप्त चरों ने पहुँच कर, शीघ्र हस्तिनापूर ।
पहले ही बतला दिया, सुनिये नृपति हुजूर ।।९।।
दूत बने आते यहाँ, पाण्डव का ले पक्ष ।
स्वयं कृष्ण भगवान हरि, सब कार्यों में दक्ष ।।१०।।
सुन दूतों की बात को, सोचन लगे उपाय ।
सबने करके मंत्रणा, निश्चित की यह राय ।।११।।
वशीभूत हरि को करें, कर स्वागत पर्याप्त ।
वश में कर श्रीकृष्ण को, करें सिद्धि को प्राप्त १२।।
वशीभूत हों श्याम जो, तो बढ़िया है बात ।
वरना बन्दी लें बना, तभी मिटे उत्पात ।।१३।।
पाण्डव के बल श्याम हैं, करें श्याम को कैद ।
रोगी आपै मरेगा, मिले न उसको वैद ।।१४।।
करण, दुशासन, शकुनि अरु, दुर्योधन भूपाल ।
मिलकर सबने तय किया, विकट चार चाण्डाल ।।१५।।
भूले वे अभिमान में, भरे दम्भ पाखण्ड ।
होनी होकर ही रहे, होनी बड़ी प्रचण्ड ।।१६।।
अनुचर भेजे उन्होंने, देकर यह आदेश ।
आते हैं जिस राह से, इधर चले गोपेश ।।१७।।
तुम सब पहिले पहुँच कर, करो कार्य इस तौर ।
डेरे तम्बू दो लगा, जगह जगह हर ठौर ।।१८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सभी वस्तु आराम की, रक्खो खूब सजाय ।
पूर्ण करो आनन्द से, हरि को लाव लिवाय ।।१९।।
दुर्योधन ने कार्य हित, संग में भेजे भ्रात ।
समझाया सबको यही, करना मीठी बात ।।२०।।
आज्ञा पा कुरुराज की, गये भ्रात सानन्द ।
मन में थी यह लालसा, [illegible]स लाँय ब्रजचन्द ।।२१।।
अन्तर्यामी श्याम ने, जान लिया सब हाल ।
घट घट वासी कृष्ण हैं, मोहन दीन दयाल ।।२२।।
मग में जो डेरे पड़े, उनमें टिके न श्याम ।
निशिवासर चलते रहे, किया नहीं विश्राम ।।२३।।
शीघ्र हस्तिनापूर से, दुर्योधन कुरुराज ।
अगवानी को खुद गये, जा भेंटे ब्रजराज ।।२४।।
बड़े प्रेम से कृष्ण का, किया अतिथि सत्कार ।
लाया साथ लिवाय वह, मोहन नन्द कुमार ।।२५।।
पूजा की सम्मान कर, राज सभा में लाय ।
भीष्म द्रोण नृप से मिले, श्रीमोहन ब्रजराय ।।२६।।
आदर कर धृतराष्ट्र ने, किया बड़ा सम्मान ।
सभासदों ने कृष्ण के, गाये गुण गण गान ।।२७।।
जब बैठे सब शान्त हो, तब बोले घनश्याम ।
भ्रात भ्रात में प्रेम हो, ठीक यही है काम ।।२८।।
पाण्डु सुवन बन में रहे, पूरे तेरह साल ।
अब उनको वापस करो, उनका सारा माल ।।२९।।
शर्त तुम्हारी थी यही, करो वचन प्रतिपाल ।
आया हूँ इस हेतु ही, बोले श्री नँदलाल ।।३०।।
तब दुर्योधन ने कहा, पूरी हुई न बात ।
रहें विपिन में पाण्डु सुत, सुनिये श्यामल गात ।।३१।।
गुप्तवास में ही हुए, प्रकट पाण्डु के लाल ।
वापस कैसे पायँ वह, अपना सारा माल ।।३२।।
पूरी कर दें शर्त वह, वापिस पायें राज ।
बिना शर्त पूरी किये, नहीं पूर्ण हों काज ।।३३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रहें विपिन में वे अभी, फिर से तेरह साल ।
धर्म भ्रष्ट होकर कहीं, कोई पाता माल ।।३४।।
बुद्धिमान हरि तुम स्वयं, दो उनको समझाय ।
चलें धर्म पर पाण्डु सुत, बसें विपिन में जाय ।।३५।।
धर्म भ्रष्ट होकर अगर, वह चहते हैं राज ।
दे सकता हर्गिज नहीं, सुनो कृष्ण ब्रजराज ।।३६।।
किया समर्थन कर्ण औ, शकुनी ने तत्काल ।
कुरुपति कहते ठीक हैं, सुन लो मदन गुपाल ।।३७।।
मौन द्रोण औ भीष्म थे, कृपाचार्य बलवान ।
चुप्पी साधे थे सभी, तब बोले भगवान ।।३८।।
भीष्म पितामह द्रोण हैं, पूजनीय विद्वान ।
परामर्श इनसे करो, ये हैं ज्ञान निधान ।।३९।।
रहे विपिन में पाण्डु सुत, पूरे बारह साल ।
छिपे रहे प्रकटे नहीं, गुप्तवास के काल ।।४०।।
उल्टी सीधी बात तुम, क्यों करते कुरुराज ।
बुरा भला सोचो ज़रा, क्या है काज अकाज ।।४१।।
बुद्धिमान हो धीर हो, तुम धृतराष्ट्र कुमार ।।
श्रेष्ठ वंश कुरु वंश है, धर्म धुरीण अपार ।।४२।।
मिथ्या भाषण में भला, क्या रक्खा है तात ।
गुप्तवास पूरा हुआ, मानो मेरी बात ।।४३।।
गणना करके देख लो, जोड़ो सहित विवेक ।
मैं कहता पूरे हुए, बाकी दिवस न एक ।।४४।।
वृथा बैर अच्छा नहीं, छोड़ो मान गुमान ।
दम्भ, द्वेष ईर्ष्या तजो, इसमें ही कल्यान ।।४५।।
भले बुरे के ज्ञान को, लो काँटे पर तोल ।
अपना भला विचार लो, तब बोलो तुम बोल ।।४६।।
बैर बाँधना भ्रात से, है निकृष्ट यह बात ।
कुल की रक्षा जो करे, पूजनीय वह तात ।।४७।।
राम भरत सा प्रेम कर, होता जग में नाम ।
बालि बली सुग्रीव का, बुरा हुआ अंजाम ।।४८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रावण ने भी बैर कर, निज भ्राता के साथ ।
लंका खोई मर मिटा, जो था सुर नर नाथ ।।४९।।
ऐक्य सूत्र में ही बँधे, पाण्डव कौरव वीर ।
मार्ग यही सुन्दर सही, बोले कृष्ण सुधीर ।।५०।।
ग्रहण सत्य पथ ही करो, दुर्योधन भूपाल ।
भला इसी में जान लो, छोड़ो चाल कुचाल ।।५१।।
इसी तरह हर तौर से, समझाई नृप नीति ।
होनी वश मानी नहीं, हरि की बात पुनीत ।।५२।।
अभिमानी हठ का प्रबल, दुर्योधन मति मन्द ।
अपनी ही करता रहा, छल की सब छलछन्द ।।५३।।
गुप्तवास में ही हुए, प्रकट पाण्डु के लाल ।
उनको बन जाकर पड़े, रहना तेरह साल ।।५४।।
व्यर्थ बात में क्या धरा, कौन लेयगा मान ।
गुप्तवास बीता नहीं, मेरे पास प्रमाण ।।५५।।
कीचक मारा भीम ने, लिया विश्व ने जान ।
गुप्तवास तब खुल गया, लेव' कृष्ण तुम मान ।।५६।।
कह दो उनसे जाय तुम, बसें विपिन में जाय ।
भला इसी में समझ लें, क्रोध न मुझको आय ।।५७।।
संगी उनके जो बनें, सौ विराट भूपाल ।
तो भी क्षण में मैं करूँ, उनका हाल विहाल ।।५८।।
हैं अजेय कृप द्रोण गुरु, सँग में भीष्म अजीत ।
सुरपति भी जो साथ दें, तो भी लूँ रिपु जीत ।।५९।।
सगे सनेही आप हैं, अपने रिश्तेदार ।
आप रहे मम साथ में, करलें यही विचार ।।६०।।
पाण्डों से भी अधिक है, हक मेरा लो जान ।
आप साथ मेरे रहें, मेरे कृपा निधान ।।६१।।
हँसे कृष्ण भगवान सुन, औ बोले गोपाल ।
उल्टी सीधी बात क्यों, करते हो भूपाल ।।६२।।
पाण्डु सुवन का दूत बन, मैं आया इस ठाम ।
तुम मुझसे कहते मिलो, महापतित यह काम ।।६३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रिश्तेदारी आपसे, उनके एकी बात ।
इसीलिए समझा रहा, समझो मेरे तात ।।६४।।
हठ छोड़ो हठ है बुरी, बुरा वृथा अभिमान ।
नहिं मानोगे तुम अगर, भोगो विपद महान ।।६५।।
लड़कर पाण्डव जीत लो, नहीं सहज यह काम ।
वृथा बैर अच्छा नहीं, भला नहीं परिणाम ।।६६।।
एक धनञ्जय ने किया, अभी युद्ध था वीर ।
जीत न पाये तुम सभी, सोचो जरा सुधीर ।।६७।।
फिर पाँचों का जीतना, सहज समझते काम ।
बुद्धि गई है सोय या, हुआ विधाता वाम ।।६८।।
नभ पर फेंके धूल जो, गिरे शीश पर धूल ।
है होनी शिर पर चढ़ी, रहे इसी से भूल ।।६९।।
वीर युधिष्ठिर चाहते, सदा प्रीति औ शान्ति ।
मान सुयोधन मान लो, तजकर मन की भ्रान्ति ।।७०।।
मैं भी चहता हूँ यही, छिड़े न तुमसे जंग ।
भाई भाई मेल से, रहो एक ही संग ।।७१।।
अच्छा दे दो तुम उन्हें, सिर्फ नगर ही पाँच ।
मैं उनको राजी करूँ, समझ लेव यह साँच ।।७२।।
छोड़ देव हठ टेक अब, लो कहना मम मान ।
भला इसी में जान लो, बोले कृष्ण सुजान ।।७३।।
होनी ने मति फेर दी, होनी प्रबल महान ।
होनी होकर ही रहे, भूले जान अजान ।।७४।।
पाँच ग्राम दे दे अगर, दुर्योधन उसकाल ।
युद्ध महाभारत नहीं, होता विकट कराल ।।७५।।
कहा सुयोधन ने तभी, अपने मद में झूमि ।
बिना युद्ध दूँगा नहीं, मैं तिल भर भी भूमि ।।७६।।
या तो जायें विपिन को, पाण्डव पालें कौल ।
या लड़कर संग्राम में, अपना बल लें तौल ।।७७।।
बस ये ही दो मार्ग हैं, सुन लो तुम घनश्याम ।
चाहे बन में वे बसें, या कर लें संग्राम ।।७८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सभी सभासद मौन थे, भूला बुद्धि विवेक ।
होनी चाहे जो करे, है होनी भी एक ।।७९।।
जो इच्छा श्री श्याम की, हुई वही फिर बात ।
जो चाहे वह हरि करें, दिन को करदें रात ।।८०।।
मन्द मन्द हँसते हुए, बोले कृष्ण मुरारि ।
मैं समझा होगा वही, जो चहते त्रिपुरारि ।।८१।।
अच्छा लो मैं जा रहा, नृप विराट के धाम ।
शान्त हृदय से सोचना, कौन भला है काम ।।८२।।
जाने को ज्यों ही हुए, कृष्णचन्द तैयार ।
दुर्योधन लपका स्वयं, पकड़ूँ नन्दकुमार ।।८३।।
कर्ण दुशासन शकुनि भी, चले पकड़ने श्याम ।
किन्तु कृष्ण थे जानते, पहले से ये काम ।।८४।।
बन्दी करना चाहते, मुझको ये मतिमन्द ।
क्षण में निज माया करी, श्री मोहन ब्रजचन्द ।।८५।।
जितने बैठे सभासद, ठाढ़े अनुचर वृन्द ।
सब में व्यापे स्वयं हरि, सब दिखते ब्रजचन्द ।।८६।।
कर्ण दुशासन को दिखे, कृष्णचन्द का रूप ।
चहुँदिशि दिखते कृष्णही, चकित सुयोधन भूप ।।८७।।
किसको पकड़ूँ कौन हरि, गई बुद्धि बौराय ।
किंकर्तव्य विमूढ़ थे, सूझा नहीं उपाय ।।८८।।
चकित थकित सब लोग थे, जित देखें तित श्याम ।
सभा छोड़ हरि चल दिये, भक्त विदुर के धाम ।।८९।।
मायापति को चाहता, था करना वह बन्द ।
पकड़ न पाया पर उन्हें, दुर्योधन मति मन्द ।।९०।।
हिय की फूटी आँख थी, नयन रहे थे अन्ध ।
मन ही मन में रह गई, रक्खे रहे प्रबन्ध ।।९१।।
चहता पकड़ू बाँध लूँ, उनको जो भगवान ।
होनी चाहे जो करे, खो जाता है ज्ञान ।।९२।।
भीष्म पितामह द्रोण थे, धर्म धुरंधर वीर ।
कृपाचार्य धृतराष्ट्र नृप, धर्म परायण वीर ।।९३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन सब की मति फेर दी, होनी प्रबल महान ।
धनि माया भगवान की, कवि किमि करे बखान ।।९४।।
विधिना ने अंकित किया, लिख कर नर के भाल ।
होता वही अवश्य है, सका न कोई टाल ।।९५।।
इच्छा थी घनश्याम की, होय घोर संग्राम ।
भूमि भार हल्का पड़े, चहते थे श्री श्याम ।।९६।।
इसीलिए होनी चढ़ी, दुर्योधन के शीश ।
होना था वह ही हुआ, जो चहते जगदीश ।।९७।।
विदुर भक्त था श्याम का, ज्ञानी परम सुधीर ।
निशिवासर भजता रहा, श्री मोहन बलवीर ।।९८।।
भक्त वछल भगवान की, यही पुरातन रीति ।
भक्तों के वश में रहें, करें भक्त से प्रीति ।।९९।।
विदुर धाम पहुँचे जभी, मनमोहन गोपाल ।
देख विदुर भगवान को, मन में हुआ निहाल ।।१००।।
चरण पड़ा भगवान के, गद्गद् हृदय अधीर ।
कंठ रुँधा बोला नहीं, नयनन बरसे नीर ।।१०१।।
लिपटा हरि के चरण से, भूला सब संसार ।
चिपटा था वह जोंक सा, पाकर हर्ष अपार ।।१०२।।
भूल गया धनधाम था, मन में परमानन्द ।
करूँ अतिथि सत्कार मैं, आये हैं ब्रजचन्द ।।१०३।।
सुधि बुधि था भूला विदुर, गहि पावन हरिपाँव ।
जिमि डूबतको हो मिली, नद में सुन्दर नाव ।।१०४।।
वह सुख था उसको मिला, नहिं वर्णन के योग ।
प्राप्त न होता जोकि सुख, साध साध कर जोग ।।१०५।।
भक्त विदुर को श्याम ने, लिया तुरन्त उठाय ।
गले लगाकर प्रेम से, मन मोहन ब्रजराय ।।१०६।।
लग कर हरिके अङ्ग से, विदुर हुआ चैतन्य ।
भक्तवछल हरि धन्य तुम, भक्त विदुर तुम धन्य ।।१०७।।
हरिकर निज करमें गहे, चला सदन की ओर ।
भक्त और भगवान थे, दोनों प्रेम विभोर ।।१०८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुन्दर आसन पर बिठा, मन मोहन ब्रजचन्द ।
पत्नी के संग विदुर ने, पूजा की सानन्द ।।१०९।।
भक्त विदुर थे श्याम के, भक्त विदुर की नार ।
दोनों को जो सुख मिला, उसका वार न पार ।।११०।।
चन्दन अच्छत पुष्प फल, धूप दीप के साथ ।
हर्षित चित पूजन किया, निज को समझ सनाथ ।।१११।।
दुर्योधन था चाहता, वश में हों भगवान ।
खायें मेरे यहाँ ये, मेवा औ मिष्ठान ।।११२।।
प्रेम भक्ति से रहित था, उसका तब सत्कार ।
इससे त्यागे श्याम ने, व्यंजन विविध प्रकार ।।११३।।
कहा विदुर से श्याम ने, भूख लगी है तात ।
मेरे मन भाता सदा, मधुर साग औ पात ।।११४।।
साग, पात, फल आदि ला, प्रेम भक्ति के साथ ।
हाथ जोड़ बोला बिदुर, जीमें श्री ब्रजनाथ ।।११५।।
वर्णन कर कर स्वाद का, खाया मदन गुपाल ।
अमिय सरस यह मधुर हैं, बोले श्री नंदलाल ।।११६।।
मेवा तज कुरुराज की, साग विदुर घर खाय ।
प्रेम भक्ति में बंधे हरि, मन मोहन ब्रजराय ।।११७।।
कहा श्याम ने आज मैं, तृप्त हुआ हूँ तात ।
मीठे मधुमय प्रेम के, खाके फल औ पात ।।११८।।
कहा विदुर ने प्रेम से, हे हरि कृपा निधान ।
धन्य भाग्य मम आज हैं, दीनबन्धु भगवान ।।११९।।
जग पालक जगदीश हरि, महिमा अगम अनन्त ।
सुर नर मुनि ध्यावें तुम्हें, गुन गावें सिध सन्त ।।१२०।।
पार न पाया किसी ने, लीला अपरम्पार ।
ध्यान तुम्हारा शम्भु भी, धरते हैं करतार ।।१२१।।
सहस्र जीभ से शेष भी, तुम्हें भजें जगदीश ।
निराकार साकार तुम, सब देवों के ईश ।।१२२।।
क्षण में रचते विश्व हो, विश्वनाथ भगवान ।
क्षण में करते नाश हो, महिमा महा महान ।।१२३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धन्य भाग्य मम आज है, धन्य धाम मम आज ।
कृपा करी आये यहाँ, श्री मोहन ब्रजराज ।।१२४।।
किस विधि गाऊँ गुण प्रभो, नहीं शक्ति मम पास ।
जय-जय-जय गोपाल जय, जय-जय रमा निवास ।।१२५।।
यही चाहता दास अब, कृपा करो भगवान ।
देव भक्ति अनपायनी, केशव कृपा निधान ।।१२६।।
और नहीं कुछ चाहता, धरा धाम, धन, नाथ ।
यह कह करके विदुर ने, धरा चरण पर माथ ।।१२७।।
उठा विदुर को हिय लगा, दिया शुभाशीर्वाद ।
भक्ति-भाव में रत रहा, छोड़ जगत सम्वाद ।।१२८।।
और कहा अब जा रहा, नृप विराट के धाम ।
दुर्योधन माना नहीं, अवशि छिड़े संग्राम ।।१२९।।
पाण्डव कौरव साथ रह, करें परस्पर प्रीति ।
मैं आया इस हेतु था, यह था ध्येय पुनीत ।।१३०।।
दुर्योधन ने नहिं सुनी, मेरी एकौ बात ।
भोगेगा फल वह अवशि, बोले श्यामल गात ।।१३१।।
हाथ जोड़ कर विदुर ने, कहा सुनो हे श्याम ।
दुर्योधन दुर्बुद्धि पर, हुआ विधाता वाम ।।१३२।।
दुख भोगे कुल नाश हो, पूर्ण न हो चित चाह ।
नहिं मानी जो आपकी, उसने नेक सलाह ।।१३३।।
जो इच्छा है आपकी, सुनिये लीला धाम ।।
होगी पूरी बात वह, होंगे पूरे काम ।।१३४।।
मन्द-मन्द हँसते हुए, चले वहाँ से श्याम ।
रथ पर हो असवार फिर, नृप विराट के धाम ।।१३५।।
अश्व चले फिर वेग से, रथ दौड़ा उस ओर ।
पहुँचे पुरी विराट में, नागर नन्द किशोर ।।१३६।।
मिले युधिष्ठिर भीम अरु, अर्जुन सखा सुजान ।
नकुल और सहदेव ने, किया बड़ा सम्मान ।।१३७।।
दुर्योधन का हाल सब, दिया उन्हें बतलाय ।
वह माना मेरी नहीं, बोले श्री ब्रजराय ।।१३८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवशि युद्ध करना पड़े, छिड़े विकट संग्राम ।
वापिस पाओ राज्य तुम, पूरे हों मन काम ।।१३९।।
जीत तुम्हारी होयगी, निश्चित है यह बात ।
रहकर पुरी विराट में, सुनो युधिष्ठिर तात ।।१४०।।
सैन्य करो इक ठौर तुम, अस्त्र शस्त्र के साथ ।
सगे सनेही मित्र नृप, बुलवाओ नर नाथ ।।१४१।।
सब मिलकर फिर यहाँ से, चढ़ो हस्तिनापूर ।
भूमि राज्य भोगे वही, जो योधा जो शूर ।।१४२।।
नृप विराट की राय से, करो सभी यह काम ।
अवशि साथ मैं भी रहूँ, बोले श्री घनश्याम ।।१४३।।
कुछ दिन रह कर यहाँ पर, करो नृपति इक ठौर ।
करो काम तुम बस यही, करो न कुछ भी और ।।१४४।।
मैं जाऊँ अब द्वारिका, तुम रह कर इस ठाम ।
जितनी जल्दी हो सके, पूर्ण करो यह काम ।।१४५।।
पाण्डव सहित विराट ने, मानी हरि की बात ।
गये द्वारिका धाम तब, श्यामल कोमल गात ।।१४६।।
करें काज निज भक्त के, भक्त बछल भगवान ।
भक्तों के वश में रहें, हरि भक्तों के प्राण ।।१४७।।
जय मोहन घनश्याम जय, जय जय मदन गुपाल ।
जय गिरिधर जयकृष्ण जय, नँद नन्दन नँदलाल ।।१४८।।
पाञ्चजन्य कर शंख है, सारँग धनु निज हाथ ।
जय मुरलीधर चक्रधर, जय जय जय ब्रजनाथ ।।१४९।।

मनमोहन मन में बसो,
रूप मनोहर श्याम ।
कवि किशोर को देव वर,
भजे श्याम निष्काम ।।१५०।।

युद्ध के लिए राजाओं को आमन्त्रित करना

जय मोहन गोपाल जय, जय जय जय ब्रजचन्द ।
जिनके सुमिरन मात्र से, छूटैं भव के फन्द ।।१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जब जब बढ़ते पाप हैं, तब तब आते आप ।
भूमि भार हरते प्रभो, भक्तों के संताप ।।२।।
निराकार साकार बन, करते जन के काम ।
धन्य धन्य मायापते, धन्य धन्य घनश्याम ।।३।।
जो इच्छा थी आपकी, होनी थी वह बात ।
चाहे निशि को दिन करो, चाहे दिन को रात ।।४।।
दुर्योधन माना नहीं, हरि इच्छा बलवान ।
महायुद्ध होकर रहे, होनी महा महान ।।५।।
गये श्याम जब द्वारिका, देकर यह उपदेश ।
धर्मराज ! बुलवाइये, अपने हितू नरेश ।।६।।
नृप विराट के साथ में, धर्मराज महराज ।
करी मँत्रणा बैठकर, किस विधि करिये काज ।।७।।
भीम नकुल सहदेव संग, बीर धनञ्जय शूर ।
परामर्श करने लगे, किस विधि रिपु हो चूर ।।८।।
नृप विराट ने कहा तब, सुनो युधिष्ठिर तात ।
चारों दिशि भेजो तुरत, चारों अपने भ्रात ।।९।।
मिलें नृपों से जायके, करलें अपने संग ।
कृष्ण हमारे साथ जब, जीतेंगे हम जंग ।।१०।।
चारों दिशि चारों गये, बली युधिष्ठिर भ्रात ।
मित्र नृपों से मिले वे, कहें युद्ध की बात ।।११।।
देंय निमंत्रण युद्ध हित, आओ सब सज सैन ।
नृप विराट की पुरी में, कहें यही सब बैन ।।१२।।
दशों दिशाओं में गये, चारों वीर महान ।
सात द्वीप नौ खण्ड में, नृप जो बसें सुजान ।।१३।।
सब राजाओं से मिले, पाण्डु सुवन बलवान ।
क्षात्र धर्म गुणगान का, करते रहे बखान ।।१४।।
रण में लड़कर प्राण दें, उसे मोक्ष हो प्राप्त ।
भव बंधन से मुक्त हो, आवागमन समाप्त ।।१५।।
है अनीति पर डटा वह, दुर्योधन मति मन्द ।
तिरस्कार हरि का किया, जो कि सच्चिदानन्द ।।१६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उसका फल वह पायगा, देंगे हम अरु आप ।
मार डालना उचित है, कैसा भी हो साँप ।।१७।।
है अनार्य को मारना, आर्य वीर का धर्म ।
सब धर्मों में श्रेष्ठ है, क्षात्र धर्म का कर्म ।।१८।।
आयें रण हित आप सब, बदला लेंय चुकाय ।
कृष्ण कहा माना नहीं, उसको देंय बताय ।।१९।।
इसी तरह कहते फिरें, राजाओं से बात ।
भीम नकुल सहदेव अरु, अर्जुन जग विख्यात ।।२०।।
पूरब पश्चिम भूमि पर, गये जहाँ तक अन्त ।
उत्तर दक्षिण में भ्रमें, पाण्डु पुत्र बलवन्त ।।२१।।
इसी तरह घूमे फिरे, पाण्डु सुवन सानंद ।
उधर मँत्रणा करी यों, दुर्योधन मति मँद ।।२२।।
पकड़ न पाया कृष्ण को, चली न कोई चाल ।
पुर विराट में जब गये, मोहन दीन दयाल ।।२३।।
गुरु द्रोण अरु भीष्म ने, कही नृपों की नीति ।
दुर्योधन माना नहीं, उनकी बात पुनीत ।।२४।।
कर्ण दुशासन शकुनि की, मानी उसने बात ।
होनी चाहे जो करे, दिन को कर दे रात ।।२५।।
सौ भ्राता कुरुराज ने, भेजे चारों ओर ।
लाव नृपों को युद्ध हित, होय युद्ध घनघोर ।।२६।।
सभी दिशाओं को गये, दुर्योधन के भ्रात ।
मिले नृपों से कहें सब, युद्ध छिड़ेगा तात ।।२७।।
आकर रण में लड़ें सब, करें घोर संग्राम ।
क्षत्रिय कारण तीर्थ है, अमर करे जो नाम ।।२८।।
इसी तरह दोनों फिरे, कौरव पाण्डव वीर ।
देश देश के नृप जुड़े, समय समझ गम्भीर ।।२९।।
कुरु क्षेत्र में जुड़े सब, लेकर निज निज सैन ।
सभी एक से एक भट, लड़ने को बेचैन ।।३०।।
गया द्वारिका स्वयं था, दुर्योधन बलवान ।
लाऊँ अपने साथ में, कृष्ण चन्द्र भगवान ।।३१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पाण्डव के अर्जुन गये, पुरी द्वारिका धाम ।
लाऊँ साथ लिवाय कर, मन मोहन घनश्याम ।।३२।।
पहुँचे कुछ क्षण पूर्व ही, दुर्योधन महराज ।
हरि थे शयनागार में, श्री मोहन ब्रजराज ।।३३।।
सोते हरि को देखकर, दुर्योधन उस काल ।
सिरहाने बैठा स्वयं, लखकर मञ्च विशाल ।।३४।।
अभिमानी दम्भी बड़ा, दुर्योधन मतिमँद ।
छोटा समझा कृष्ण को, जो कि सच्चिदानँद ।।३५।।
सिरहाने बैठा अभय, मन में भरे गुमान ।
बड़ा समझकर आपको, छोटा श्री भगवान ।।३६।।
अर्जुन भी आया तभी, कुछ ही क्षण पश्चात ।
बैठा हरि के चरण ढिग, प्रेम प्रफुल्लित गात ।।३७।।
दोनों बैठे थे वहाँ, दोनों ही थे मौन ।
किसके सँग हरि जायेंगे, कह सकता है कौन ।।३८।।
उठे श्याम तो सामने, देखा अर्जुन वीर ।
कृष्ण चरण अर्जुन गहे, गद्‌गद हृदय अधीर ।।३९।।
कैसे आये पाण्डुसुत ? बोले श्री घनश्याम ।
लेने आया आपको, है समीप संग्राम ।।४०।।
दुर्योधन ने कहा मैं, पहले आया श्याम ।
इससे सँग मेरे चलो, पूर्ण करो मम काम ।।४१।।
आये पहले आप हैं ! कहते हो यह बात ।
देखा मैंने है प्रथम, वीर धनञ्जय तात ।।४२।।
दोनों सम्बन्धी सगे, दोनों मेरे मित्र ।
आये दोनों ही यहाँ, यह है बात विचित्र ।।४३।।
अच्छा दुर्योधन ! सुनो, शक्ति तुम्हीं लो छाँट ।
दो भागों में रहा हूँ, मैं अपने को बाँट ।।४४।।
एक ओर मैं रहूँगा, बिना किये संग्राम ।
एक ओर नारायणी, सेना सबल तमाम ।।४५।।
अस्त्र-शस्त्र सज्जित प्रबल, इक अक्षौहिणि सैन ।
चाहे जिसको लेव तुम, बोले हरि इमि बैन ।।४६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुर्योधन ने सोचकर, सेना करी पसन्द ।
अर्जुन के बाँटे पड़े, अस्त्र रहित ब्रजचन्द ।।४७।।
दोनों के मन की हुई, मन मानी यह बात ।
मन्द-मन्द हँसने लगे, सुन्दर श्यामल गात ।।४८।।
ले सेना नारायणी, मन हर्षित हुलसात ।
गया सुयोधन लौट कर, कर मनमानी बात ।।४९।।
लेकर अर्जुन कृष्ण को, लौटा अपने साथ ।
कुरुक्षेत्र आये जभी, मन मोहन ब्रजनाथ ।।५०।।
पाण्डु सुवन हर्षित हुए, धर्मराज महराज ।
पूजा की सम्मान कर, धन्य भाग्य हैं आज ।।५१।।
भू मण्डल के नृपति सब, आये दोनों ओर ।
हाथी घोड़े रथ सहित, हुई सैन इक ठौर ।।५२।।
थी ग्यारह अक्षौहिणी, दुर्योधन की सैन ।
नभ में उड़ती धूल है, दिन में दिखती रैन ।।५३।।
प्रबल सात अक्षौहिणी, सेना विकट महान ।
संग युधिष्ठिर राज के, जुड़े वीर बलवान ।।५४।।
दोनों दल के वीरवर, महारथी रणधीर ।
जीतें रण में काल को, बाँधे तरकस तीर ।।५५।।
खड़े हुए रण भूमि में, गरजे सिंह समान ।
महारथी बलवान हैं, दिखते काल समान ।।५६।।
दुर्योधन ने उस समय, देख बली इक ठौर ।
भीष्म पितामह को किया, सेनापति शिरमौर ।।५७।।
अँग रक्षक कृप, द्रोण, गुरु, अश्वत्थामा वीर ।
शकुनि, दुशासन, शल्य भट, किये नियुक्त सुधीर ।।५८।।
कृष्णाचन्द्र की राय से, धर्मराज महराज ।
बना दिया सेनापती, धृष्टद्युम्न बलराज ।।५९।।
सैन्य खड़ी दोनों वहाँ, सुन्दर व्यूह रचाय ।
लिये लालसा विजय की, गरजैं तरजैं धाय ।।६०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीतोपदेश

प्रथम अध्याय

श्री धृतराष्ट्र बोले -

पूछा श्री धृतराष्ट्र ने, संजय से सब हाल ।
विवरण प्रिय ! रणभूमि का, समझाओ इस काल ।।१।।
धार्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में, एकत्रित रणधीर ।
लिये लालसा विजय की, बाँधे तरकश-तीर ।।२।।
समझाकर मुझसे कहो, संजय तुम सब हाल ।
वे फिर क्या करने लगे, मम-सुत, पांडव लाल ।।३।।

श्री संजय बोले -

संजय ने फिर यों कहा, सुनिये श्री कुरुराज ।
कुरुक्षेत्र का हाल मैं, कहता हूँ सब आज ।।४।।
दुर्योधन पाण्डवों का, देख व्यूह का साज ।
बोला द्रोणाचार्य से, सुनिये हे गुरुराज ।।५।।
पाण्डु पुत्र के व्यूह को, देखें गुरुवर आप ।
धृष्टद्युम्न निज शिष्य का, लखिये प्रबल प्रताप ।।६।।
वीर धनुर्धर पार्थ सम, भीम तुल्य बलवान ।
सात्यकि द्रुपद विराट सब, जिनकी शक्ति महान ।।७।।
धृष्टकेतु, पुरुजित तथा, काशिराज बलवान ।
कुन्ति, भोज सँग शैव्य के, चेकितान मतिमान ।।८।।
युधामन्यु योधा प्रबल, महाप्रतापी वीर ।
कीर्तिमान अभिमन्यु भी, वीर- - धीर- - गम्भीर ।।९।।
पुत्र द्रौपदी के सभी, महारथी बलवान ।
युद्ध - -विशारद वीरवर, विजयी इन्द्र समान ।।१०।।
अब सुनिये मम सैन्य के, जो हैं वीर महान ।
बतलाता हूँ नाम मैं, उनके कृपानिधान ।।११।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वयं प्रतापी आप हैं, और भीष्म बलवान ।
कृपाचार्य औ कर्ण भी, रखते शक्ति महान ।।१२।।
अश्वत्थामा वीरवर, है विकर्ण रणधीर ।
सोमदत्त का पुत्र वह, भूरिश्रवा बलवीर ।।१३।।
और अनेकों वीरवर, मम हित तज दें प्रान ।
एकत्रित रणभूमि में, योधा काल समान ।।१४।।
रक्षा को श्री भीष्म हैं, है अजेय मम सैन ।
जेय भीम की सैन है, बोला वह यह बैन ।।१५।।
अस्तु आप अरु बीर सब, मिलकर के एक साथ ।
रक्षा में श्री भीष्म की, सभी बटायें हाथ ।।१६।।
दुर्योधन के वचन सुन, भीष्म पितामह वीर ।
शंख बजाकर सिंह सम, गरजे नाद गँभीर ।।१७।।
तुरत बजे शंखादि फिर, सहित नगाड़ा ढोल ।
और नृसिंह, मृदंग का, घन-गर्जन सा बोल ।।१८।।
अगणित बाजे बजे सब, नाद हुआ गम्भीर ।
गरज उठे सब बीर भी, लेकर तरकश तीर ।।१९।।
श्वेत अश्व रथ पर उधर, अर्जुन सँग भगवान ।
दिव्य शँख ले हाथ में, गरजे सिंह समान ।।२०।।
पाञ्चजन्य निज शँख को, बजा रहे थे श्याम ।
विकट गर्जना सुन हुए, कम्पित सुर नर वाम ।।२१।।
देवदत्त निज शँख को, अर्जुन रहे बजाय ।
पौण्ड्र शँख को भीम ने, मुख से लिया लगाय ।।२२।।
विजय अनन्त सुघोषमणि, पुष्पक शँख महान ।
अति पुनीत सब शँख ये, थी ध्वनि मेघ समान ।।२३।।
सँग नकुल सहदेव के, धर्मराज महराज ।
अपने-अपने शँख की, करते विकट अवाज ।।२४।।
धृष्टद्युम्न विराट अरु, सात्यकि वीर महान ।
काशिराज अभिमन्यु भी, संग शिखण्डी ज्वान ।।२५।।
बजा रहे थे शंख सब, हुआ शब्द घनघोर ।
कम्पित कौरव दल हुआ, ऐसा था वह शोर ।।२६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री अर्जुन बोले -

लखकर कौरव सैन को, उठा धंनुष निज हाथ ।
अर्जुन बोले कृष्ण से, हे अच्युत हे नाथ ।।२७।।
केशव रथ अब हाँकिये, बागडोर को खींच ।
खड़ा कीजिये शीघ्र ही, दोनों दल के बीच ।।२८।।
लड़ना है जिनसे मुझे, कौन कौन हैं लोग ।
देखूँ मैं उन सबों को, कौन युद्ध के योग ।।२९।।
कुमति सुयोधन पक्ष ले, आये हैं जो वीर ।
उन सब को देखूँ स्वयं, कैसे वे रणधीर ।।३०।।

श्री संजय बोले -

सुन कर अर्जुन के वचन, कृष्णचन्द्र भगवान ।
दोनों दल के बीच में, खड़ा किया रथ आन ।।३१।।
देखो ! देखो !! पार्थ यह, है कौरव की सैन ।
लड़ना जिससे है तुम्हें, बोले हरि यों बैन ।।३२।।
देखा अर्जुन ने वहाँ, चाचा, बाबा, भ्रात ।
ससुर, मित्र, साले, खड़े, समधी, गुरुवर, तात ।।३३।।
बन्धु वर्ग को देखकर, मोहे अर्जुन वीर ।
शोकाकुल मन हो गया, बोले वचन अधीर ।।३४।।

श्री अर्जुन बोले -

सुनो कृष्ण ! व्याकुल हुआ, स्वजन देखकर चित्त ।
राजपाट बध कर इन्हें, दुष्कर लेना वित्त ।।३५।।
देख स्वजन कम्पित हुआ, उठी हृदय में पीर ।
रोमांचित मुख सूखता, चंचल चित्त अधीर ।।३६।।
धनु गिरता है हाथ से, जलता सकल शरीर ।
चक्कर खाता शीश है, होता चित्त अधीर ।।३७।।
लक्षण सब विपरीत हैं, हे केशव ! हे नाथ !!
बध करके इन सबों का, क्यां आयेगा हाथ ।।३८।।
नहीं लालसा विजय की, नहीं चाहता भोग ।
सगे सनेही मित्र ये, सब हैं अपने लोग ।।३९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिनके हित ही चाहिये, सुख सम्पति औ राज ।
वही मरण को हैं खड़े, देख रहा हूँ आज ।।४०।।
गुरुजन, ताऊ, भ्रात हैं, दादा, मामा साथ ।
नाती, साले, ससुर भी, खड़े हुए हैं नाथ ।।४१।।
मैं ही मर जाऊँ भले, इन्हें न सकता मार ।
तीन लोक का राज भी, इन्हें मार बेकार ।।४२।।
हे केशव ! समझो तुम्हीं, है निकृष्ट यह कार्य ।
घोर पाप कैसे करूं, नहीं धर्म यह आर्य ।।४३।।
दुर्योधन इत्यादि को, जो मैं डालूँ मार ।
लगे पाप ही पाप बस, सुनिए नंदकुमार ।।४४।।
निज कुटुम्ब को मारकर, क्या पाऊँ सुख सार ।
कैसे होऊँगा सुखी, उपजै दुःख अपार ।।४५।।
यदपि न देखैं लोग यह, लोभी चित्त अबुद्ध ।
नाश हेतु कुलमित्र के, नहीं बुद्धि है शुद्ध ।।४६।।
लालच में पड़कर सभी, भूले सारा ज्ञान ।
महापाप दिखता नहीं, इनको श्री भगवान ।।४७।।
मैं समझूँ इस पाप को, मन करता संताप ।
दोष समझता हुआ भी, करूँ घृणित यह पाप ।।४८।।
होवे कुल का नाश जो, मिटैं सभी सद्धर्म ।
सत्य सनातन धर्म के, होवें लुप्त सुकर्म ।।४९।।
जब बढ़ता है पाप तब, नारी होती भ्रष्ट ।
फिर संकर-सन्तान हो, धर्महीन मति-नष्ट ।।५०।।
जब निकृष्ट संतान हो, हो मर्यादा नाश ।
लुप्तपिण्ड-सत्कर्म हो, समझ हृदय को त्रास ।।५१।।
जल-तर्पण नित कर्म सब, लोग जायँगे भूल ।
गिरें स्वर्ग से पितरगण, होय बात प्रतिकूल ।।५२।।
वर्ण-भेद मिट जायँ जब, होयँ अधर्मी लोग ।
कुल मर्यादा लुप्त हो, मिटे जाति का योग ।।५३।।
धर्मनाश से करेंगे, मनुज नरक में वास ।
सुना यही है शास्त्र में, मन करता विश्वास ।।५४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बड़े शोक का विषय है, तुच्छ भोग हित आज ।
पड़ें लोभ में लड़ें हम, है अनर्थ का काज ।।५५।।
कौरव यदि मारें मुझे, हर लें मेरे प्राण ।
तो भी हरि ! समझूँ यही, होगा मम कल्याण ।।५६।।

श्री संजय बोले -

इतना कह चुप हुआ फिर, धन्वी पार्थ महान ।
बैठा रथ में पृष्ठ पर, त्याग धनुष अरु बान ।।५७।।

द्वितीय अध्याय

खिन्नचित्त, चंचल हृदय, अश्रुपूर्ण मुखदीन ।
अर्जुन को इस भाँति लख, बोले कृष्ण प्रवीन ।।१।।
सुन अर्जुन इस भाँति तू, कैसी करता बात ।
नष्ट हुआ क्यों बुद्धि बल, मेरे प्यारे तात ।।२।।
ऐसे अवसर पर भला, क्यों उपजा अज्ञान ।
वीरोचित यह है नहीं, बोले श्री भगवान ।।३।।
नहीं स्वर्ग यह देयगा, कीर्ति होयगी नास ।
कायरता तू त्याग दे, मान वचन विश्वास ।।४।।
दुर्बलता तज युद्ध कर, ऐ अर्जुन बलवान ।
सत्य मार्ग बस यही है, समझो इसे महान ।।५।।

श्री अर्जुन बोले -

तब अर्जुन ने यों कहा, सुनिये श्री भगवान ।
भीष्मपितामह द्रोण हैं, पूजनीय विद्वान ।।६।।
इन पर करूँ प्रहार मैं, कैसी उल्टी बात ।
ये पूजा के योग्य हैं, गुरू पितामह तात ।।७।।
गुरु पितामह मारकर, व्यर्थ कमाऊँ पाप ।
भीख माँगना है भला, सुनिये केशव ! आप ।।८।।
रुधिर सने इस राज्य को, लेकर क्या सुख भोग ।
कैसे हूँगा सुखी मैं, कर कुकर्म का योग ।।९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जीत हार का क्या पता, जाने क्या है भोग्य ।
नहीं पता क्या ठीक है, क्या करना है योग्य ।।१०।।
जिन्हें मारकर मैं स्वयं, जीवन समझूँ व्यर्थ ।
वही खड़े रणभूमि में, देखो कृष्ण अनर्थ ।।११।।
इन्हें देख कायर हुआ, नहीं धर्म का ज्ञान ।
वशीभूत मैं मोह के, भूला ज्ञान अजान ।।१२।।
शिष्य आपका नाथ मैं, कृपा करो भगवान ।
शिक्षा दो कर्तव्य की, जिससे हो कल्यान ।।१३।।
यदि मिल जाये भूमि का, निष्कंटक सब राज ।
सुरगण का स्वामी बनूँ, और डरें सुरराज ।।१४।।
नहीं शाँति जब हृदय में, तो यह सब बेकार ।
सत्य मार्ग बतलाइये, केशव ! जगदाधार !! ।।१५।।

श्री संजय बोले -

संजय ने धृतराष्ट्र से, पुनः कही यों बात ।
कहकर हरि से पार्थ यों, मौन हुआ तब तात ।।१६।।
फिर राजन् ! श्री कृष्ण ने, शोकाकुल लख पार्थ ।
हँसकर अर्जुन से कहा, सुन लो वचन यथार्थ ।।१७।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

शोक ग्रस्त जिनके लिये, तू होता है आज ।
ज्ञानवान करते नहीं, ऐसा कोई काज ।।१८।।
पण्डित सम बातें करे, फिर भी जाता भूल ।
पड़ा मोह में आज जो, यह न उचित अनूकूल ।।१९।।
मरे जिये का सोच कब, करते हैं मतिमान ।
मरना-जीना नित्य है, सुन ले पार्थ सुजान ।।२०।।
अमर आत्मा नित्य है, कभी न होता नाश ।
फिर क्यों करता सोच तू, पड़ा मोह के पाश ।।२१।।
सदा रहे थे हम यहाँ, तुम भी थे हर काल ।
ये राजे भी थे सदा, बोले श्रीगोपाल ।।२२।।
होंगे आगे भी अवशि, ये राजे सब लोग ।
हम तुम भी होंगे सभी, है अवश्य यह योग ।।२३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जैसे इस नर देह में, बालक बने जवान ।
वृद्धावस्था होय फिर, घटती शक्ति महान ।।२४।।
वैसे ही मिलती अवशि, सुन्दर नूतन देह ।
मोह न ज्ञानी जन करें, और न करते नेह ।।२५।।
सत्य-आत्मा देह में, सूक्ष्म रूप में जान ।
वश में हो अज्ञान के, दुख सुख लेते मान ।।२६।।
मोहित होते हैं नहीं, वीर पुरुष बलवान ।
मत यह ही सत् शास्त्र का, बोले श्री भगवान ।।२७।।
हे कुन्ती के पुत्र ! सुन, क्षणिक शीत औ ताप ।
पड़ा भूल में पार्थ तू, समझ रहा है आप ।।२८।।
सुख-दुख, इन्द्रिय भोग सब, नाशवान तू जान ।
नाशवान संसार सब, बोले श्री भगवान ।।२९।।
है अनित्य जग बीच सब, मन सुस्थिर जो देख ।
लिखी शास्त्र में है यही, विधि विधान की रेख ।।३०।।
सुख-दुख को सम मानते, वे हैं परम सुजान ।
विषयों में पड़ते नहीं, जिनको है कुछ ज्ञान ।।३१।।
यही राह है मोक्ष की, सुन अर्जुन बलवीर ।
नित अनित्य समझे जभी, होवे नहीं अधीर ।।३२।।
उसका क्या अस्तित्व है, जो असत्य है चीज ।
सत्य वस्तु मिटती नहीं, ना होती निरबीज ।।३३।।
सद्सद्-वस्तु विवेक जब, कर लेते हैं लोग ।
वे ही ज्ञानी पुरुष हैं, समझें भोग अभोग ।।३४।।
जिसका होता नाश नहिं, वह है सबका ईश ।
सत्य सच्चिदानंद वह, जगत-पिता जगदीश ।।३५।।
अव्यय उस जगदीश को, नष्ट करेगा कौन ।
ना समर्थ ऐसे हुए, उपजे हैं जग जौन ।।३६।।
जो उपजे हैं जीव सब, उन सब का हो नाश ।
समझ पार्थ इस तत्व को, थिर चित कर विश्वास ।।३७।।
करो युद्ध अब शीघ्र तुम, हे अर्जुन बलवान ।
जीवात्मा की देह सब, नाशवान ही जान ।।३८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं आत्मा मारता, और न मरता तात ।
भ्रमवश नर समझे नहीं, सत्य तत्व की बात ।।३९।।
नहिं उपजै नहि मरै वह, कभी किसी भी काल ।
होकर फिर होता नहीं, सुन कुन्ती के लाल ।।४०।।
नित्य अजन्मा आत्मा, सत्य सनातन रूप ।
होता नष्ट शरीर पर, इसका अमर स्वरूप ।।४१।।
रहे आत्मा उसी विधि, जैसे जल पाताल ।
दिखे नहीं पर है अवशि, सदा सत्य त्रयकाल ।।४२।।
अजर, अजन्मा, आत्मा, जो लेता है जान ।
मरवाता वह कब किसे, और हरे कब प्रान ।।४३।।
होता नाश शरीर है, नहीं आत्मा नाश ।
बोले श्री भगवान यों, मान वचन विश्वास ।।४४।।
हे अर्जुन तुम समझ लो, सत्य तत्व का ज्ञान ।
नाश रहित है आत्मा, नित्य अजन्मा जान।।४५।।
वस्त्र पुराने त्याग कर, धारे मनुज नवीन ।
वैसे ही इस देह को, देही तजे प्रवीन ।।४६।।
तजता देह अनित्य को, देही उसी प्रकार ।
समझ पार्थ इस तत्व को, उठो गहो हथियार ।।४७।।
नहीं शस्त्र काटे इसे, अग्नि न सकै जलाय ।
जल में भी भीगै नहीं, पवन न सकै सुखाय ।।४८।।
कटने वाली है नहीं, नहीं जलायी जाय ।
कभी भीगती भी नहीं, और न सकै सुखाय ।।४९।।
विलग इन्द्रियों से रहे, चिन्ता से है दूर ।
रहित विकारों से सदा, सुन तू अर्जुन शूर ।।५०।।
सर्वव्यापी समझ ले, अचल नित्य सत्‌रूप ।
सत्य सनातन आत्मा, सुन्दर दिव्य स्वरूप ।।५१।।
आत्मज्ञान यह समझकर, कर चिंता तू दूर ।
शोक छोड़कर पार्थ तुम, करो युद्ध भर पूर ।।५२।।
सदा जन्मता समझ ले, मरता माने नित्य ।
तो भी तुम सोचो नहीं, है न उचित यह कृत्य ।।५३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो जन्मा वह मरेगा, मरण हेतु उत्पन्न ।
बिन उपाय की बात यह, क्यों होता उत्सन्न ।।५४।।
भीष्म आदि की देखता, माया रूपी देह ।
बिलग आत्मा जान ले, तन है उसका गेह ।।५५।।
शोक देह का करे जो, व्यर्थ बात है पार्थ ।
पहले भी मौजूद था, देही नित्य यथार्थ ।।५६।।
मरने के पश्चात् भी, रहे आत्मा जान ।
मरना जीना कल्पना, लेव बात यह मान ।।५७।।
प्रथम देह के भी रहा, सत्य आत्मा आप ।
रहा बाद इस देह के, सका न कोई नाप ।।५८।।
बनी देह यह बीच में, माया रूपी रूप ।
और आत्मा नित्य है, वह है सत्य स्वरूप ।।५९।।
मर कर भी रहता सदा, निश्चित है यह बात ।
चिन्ता छोड़ो मोह की, वीर धनञ्जय तात ।।६०।।
आत्मतत्व अति गहन है, है आश्चर्य महान ।
अपनी-अपनी बुद्धि से, समझें सभी सुजान ।।६१।।
समझ-समझ समझें नहीं, भूलें सब विद्वान ।
सुनकर भी जाना नहीं, गूढ़ तत्व का ज्ञान ।।६२।।
है अबध्य हर देह में, नित्य आत्मा जान ।
व्यर्थ शोक मत करो तुम, हे अर्जुन बलवान ।।६३।।
और समझ निज धर्म भी, शोक व्यर्थ है पार्थ ।
क्षत्रिय के हित युद्ध ही, है कर्तव्य यथार्थ ।।६४।।
और न कोई मार्ग है, जिससे तव कल्यान ।
धर्म युक्त है युद्ध ही, सबसे धर्म महान ।।६५।।
स्वयं प्राप्त हो आप ही, मनो स्वर्ग का द्वार ।
भाग्यवान् क्षत्रिय वही, जूझै युद्ध मँझार ।।६६।।
सत्य युक्त संग्राम यह, जो न करो बलवान ।
तो स्वधर्म की हानि हो, हो अपकीर्ति महान ।।६७।।
और पाप को प्राप्त हो, समझ पार्थ यह बात ।
करो युद्ध इससे अवशि, कहा कृष्ण सुन तात ।।६८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहुत काल तक कहेंगे, अपकीरति सब लोग ।
निन्दा मरने से बुरी, नहिं तुमको यह योग ।।६९।।
जौन समझते वीर हैं, माननीय बलवान ।
तुच्छ समझ वे ही तुम्हें, कायर लेंगे मान। ७०।।
समझ भगोड़ा युद्ध से, तुझको लेंगे जान ।
इससे बढ़कर वीरबर, और नहीं अपमान ।।७१।।
बैरी तेरे कहेंगे, निन्दनीय फिर बैन ।
सुनकर तू होगा दुखी, नहीं पड़ेगी चैन ।।७२।।
इससे अब तेरे लिए, सब प्रकार है ठीक ।
जीते भोगें राज्य को, मरे स्वर्ग निर्भीक ।।७३।।
करो युद्ध अब पार्थ तुम, मिले स्वर्ग या राज ।
दोनों कर मोदक मधुर, बोले श्री ब्रजराज ।।७४।।
यदि इच्छा नहिं स्वर्ग की, नहीं राज्य का लोभ ।
तो सुख-दुःख सम समझकर, भूल हृदय का क्षोभ ।।७५।।
जीत हार सम जान कर, करो युद्ध बलवान ।
पाप नहीं इसमें तनिक, बोले श्री भगवान ।।७६।।
साँख्य योग तुमसे कहा, सुन अर्जुन बलवीर ।
हैं पुरुषों में श्रेष्ठ तू, ज्ञानवान गम्भीर ।।७७।।
कर्म योग अब कहूँ मैं, समझो ध्यान लगाय ।
कर्मों के बन्धन छुटें, तत्त्व ज्ञान को पाय ।।७८।।
कर्मयोग निष्काम में, नहीं बीज का नाश ।
जन्म-मरण से मुक्त हो, भव के कटते पाश ।।७९।।
इस मंगलमय मार्ग में, शुद्ध बुद्धि है एक ।
अज्ञानी कामी पुरुष, रखते बुद्धि अनेक ।।८०।।
श्रुतिवादी, कामी पुरुष, श्रेष्ठ समझते स्वर्ग ।
और मानते इसी को, सुखदायी अपवर्ग ।।८१।।
वे अविवेकी नर करें, भोग प्राप्ति की बात ।
मिथ्या ही यह बात है, और दिखाऊँ तात ।।८२।।
भोग और ऐश्वर्य में, पड़े पुरुष हैं जौन ।
ज्ञान रहित वे पुरुष हैं, माने ज्ञानी कौन ।।८३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वेद जानने से सुनो, होता सत्य-प्रकाश ।
होता आत्म-प्रबोध अरु, तीनों गुण आभास ।।८४।।
इससे निष्कामी बनो, सुख-दुख से रह दूर ।
आत्म-तत्व का ज्ञान कर, अर्जुन तू बन शूर ।।८५।।
आत्मपरायण बनो तुम, नित्य वस्तु में लीन ।
योग क्षेम को त्याग दो, बोले कृष्ण प्रवीन ।।८६।।
क्षीरसिंधु को प्राप्त कर, नीर नदी का व्यर्थ ।
आत्मतत्व को समझ कर, व्यर्थ वेद का अर्थ ।।८७।।
कर्म मात्र में ही समझ, अपना तू अधिकार ।
फल में तेरा है नहीं, बोले नन्दकुमार ।।८८।।
फल की इच्छा त्याग कर, करो वासना दूर ।
कर्म त्यागना है बुरा करो, कर्म भर पूर ।।८९।।
त्यागो तुम आसक्ति को, सिद्धि असिद्धि समान ।
योगस्थित तू जान ले, कर कर्मों का ज्ञान ।।९०।।
समझो सब समभाव ही, कहते हैं विद्वान ।
ज्ञान प्राप्त कर कर्म का, हे अर्जुन बलवान ।।९१।।
स्वार्थ भावमय कर्म को, तुच्छ समझते वीर ।
बुद्धियोग से काम कर, सुदृढ़ हृदय धर धीर ।।९२।।
आश्रय ले सम बुद्धि का, ग्रहण करो तुम ज्ञान ।
फल चाहें वे दीन हैं, सुन अर्जुन बलवान ।।९३।।
समज्ञानी योगी पुरुष, थिरचित धीर महान ।
इसी लोक में त्यागते, पाप-पुण्य मतिमान ।।९४।।
कर उपाय इस बात का, हो तब बुद्धि समत्व ।
जिससे छूटे शीघ्र ही, बन्धन-कर्म ममत्व ।।९५।।
ज्ञानीजन जो पुरुष हैं, बुद्धियोग से युक्त ।
कर्मों का फल त्याग कर, होते बन्धन मुक्त ।।९६।।
होकर नर निर्दोष से, पाते पद निर्वान ।
इसको समझो पार्थ तुम, बोले श्री भगवान ।।९७।।
दल-दल है जो मोह का, उसे पार कर वीर ।
सुनी अनसुनी बात सब, भूलोगे मति-धीर ।।९८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होय प्राप्त वैराग्य तब, आत्मतत्त्व का ज्ञान ।
निराकार भगवान की, होगी तब पहचान ।।९९।।
अर्जुन तेरी बुद्धि जब, त्याग सकल सिद्धांत ।
परब्रह्म के रूप में, सुस्थिर होगी शांत ।।१००।।
तभी करोगे प्राप्त तुम, सुस्थिर योग-ममत्त्व ।
माया मोह ममत्व तज, जान सकोगे तत्त्व ।।१०१।।

श्री अर्जुन बोले -

लगे पूछने पार्थ तब, हे केशव भगवान ।
लक्षण सुस्थिर-प्रज्ञ का, कहिये कृपानिधान ।।१०२।।
चलता कैसे पुरुष वह, बैठे कौन प्रकार ।
और बोलता किस तरह, कहिए नन्दकुमार ।।१०३।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

हे अर्जुन जिस काल में, नर हो थिर-धी शुद्ध ।
इच्छाओं से मुक्त हो, होवे ज्ञान प्रबुद्ध ।।१०४।।
आत्मतुष्ट हो आप ही, हो प्रसन्न मन आप ।
वही पुरुष थिर चित्त है, जो न करे संताप ।।१०५।।
दुख में घबराये नहीं, सुख में नहिं उत्साह ।
नहीं किसी से द्वेष हो, नहीं किसी की चाह ।।१०६।।
दूर क्रोध भय से रहे, समझ आत्म का ज्ञान ।
नर वह सुस्थिर बुद्धि है, सुन अर्जुन बलवान ।।१०७।।
जो नर करता है नहीं, कभी किसी से नेह ।
मस्त रहे जो हर जगह, क्या जंगल क्या गेह ।।१०८।।
पा करके शुभ वस्तु को, होता नहीं प्रसन्न ।
और अशुभ को प्राप्त कर, हो न कभी उत्सन्न ।।१०९।।
कछुआ अपने अंग को, जैसे लेत समेट ।
हाथ, पैर मुँह सभी को, छिपा लेत निज पेट ।।११०।।
इसी तरह जो पुरुष भी, निज इन्द्रिय ले जीत ।
वह है सुस्थिर-बुद्धि नर, सुन अर्जुन मम मीत ।।१११।।
इन्द्रिय से तज विषय को, होता विषय-विनाश ।
राग बना रहता अवशि, रहे हृदय में आश ।।११२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पर सुस्थिर-धी-पुरुष वह, होय राग से दूर ।
परब्रह्म में लीन हो, आनन्दित भरपूर ।।११३।।
हे अर्जुन तू समझ ले, इन्द्रिय अति बलवान ।
बुद्धिमान नर यत्न कर, हो थिर-चित्त सुजान ।।११४।।
फिर भी इन्द्रिय प्रबल अति, मन को देती फेर ।
खिंच जाते विद्वान भी, लगे न क्षण भर देर ।।११५।।
इससे नर को चाहिये, करके विमल विचार ।
इन्द्रिय को वश में करे, होगा बेड़ा पार ।।११६।।
शान्त-चित्त होकर तभी, होवे मुझमें लीन ।
सुस्थिर मन वाला वही, ज्ञानी परम प्रवीन ।।११७।।
इन्द्रिय जिनके वश नहीं, विचलित-मन वे लोग ।
विषयों का चिन्तन करें, और चाहते भोग ।।११८।।
नहिं अप्राप्ति पर क्रोध हो, क्रोध पाप का मूल ।
क्रोध भये पर मोह फिर, सुस्मृति जाती भूल ।।११९।।
सुस्मृति जाती खोय जब, होता बुद्धि-विनाश ।
और बुद्धि के नाश से, हो मानव का नाश ।।१२०।।
मन जिसके आधीन है, राग-द्वेष नहिं पास ।
इन्द्रिय को वश में किये, करता विविध विलास ।।१२१।।
तब होता है स्वच्छ मन, मिलता अति आनन्द ।
बात तत्व की समझ यह, बोले श्री ब्रजचन्द ।।१२२।।
होता मन निर्मल तभी, होते सब दुख दूर ।
सुस्थिर होती बुद्धि है, मिलता सुख भरपूर ।।१२३।।
बुद्धि न होती शुद्ध जब, हो नहिं आस्तिक भाव ।
होता मन उद्विग्न तब, जैसे डगमग नाव ।।१२४।।
बिना शान्ति के सुख कहाँ, सुन अर्जुन बलवान ।
सत्य-ज्ञान यह जान लो, बोले श्री भगवान ।।१२५।।
वायु जिस तरह नाव को, खींचे अपनी ओर ।
नाविक करे प्रत्यन पर, चले न कोई जोर ।।१२६।।
इसी तरह से पुरुष जब, इन्द्रिय में हो लीन ।
बुद्धि-हरण होता सुनो, होता दुर्बल दीन ।।१२७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिसकी वश में इन्द्रियाँ, विषयों से हों दूर ।
वह है सुस्थिर बुद्धि नर, ज्ञानवान भर पूर ।।१२८।।
सभी प्राणियों के लिये, मोह रूप जो रात ।
आत्म-तत्व ज्ञानी पुरुष, जागे उसमें तात ।।१२९।।
क्षण-भंगुर संसार में लिप्त हुए जो लोग ।
सच समझें अज्ञानवश, मिथ्या सुख औ भोग ।।१३०।।
नित्य शुद्ध मुनि के लिए, संसारी दुख व्यर्थ ।
आत्मज्ञान का सुख उसे, समझो उसे समर्थ ।।१३१।।
ज्यों गम्भीर समुद्र में सरिता नीर समाय ।
अचल जलधि रहता बना, बढ़े न जल को पाय ।।१३२।।
इसी भाँति जिस पुरुष की, बिना किये कुछ क्षोभ ।
इच्छायें सब लीन हों, और न व्यापे लोभ ।।१३३।।
वह नर पाता शान्ति है, कभी न होता क्षुब्ध ।
उसे शांति कब मिल सकी, जो नर लोलुप, लुब्ध ।।१३४।।
इच्छाएँ सम्पूर्ण जो, नर देता है त्याग ।
ममता, ईर्ष्या, मोह सब, जाते जिससे भाग ।।१३५।।
पाता नर वह शान्ति है, और ब्रह्म का ज्ञान ।
सत्य रूप आभास हो, सुन अर्जुन बलवान ।।१३६।।
प्राप्त ब्रह्म को जो पुरुष, यह लक्षण हो जान ।
इसे प्राप्त कर मोहवश, होते नहीं सुजान ।।१३७।।
इसमें जो सुस्थित हुआ, अन्तकाल में पार्थ ।
पाता है निर्वाण पद, ब्रह्मानन्द यथार्थ ।।१३८।।

तृतीय अध्याय

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन बोले कृष्ण से, सुनिए श्री भगवान ।
ज्ञान कर्म से श्रेष्ठ जब, कहते कृपा निधान ।।१।।
घोर कर्म में मुझे फिर, लगा रहे क्यों आप ।
सत्य मार्ग को छोड़ मैं, व्यर्थ करूँ क्यों पाप ।।२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मोहित करते आप क्यों, मिश्रित कहकर बात ।
आत्मज्ञान औ कर्म में, श्रेष्ठ कौन है तात ।।३।।
कहो एक ही बात अब, निश्चय कर भगवान ।
जिसमें मम कल्याण हो, और मिले सम्मान ।।४।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

सुनकर अर्जुन के वचन, बोले श्री भगवान ।
दो प्रकार निष्ठा कही, मैंने पार्थ सुजान ।।५।।
ज्ञानी जन के हित कहा, ज्ञान योग सुखधाम ।
और योगियों के लिये, कर्मयोग निष्काम ।।६।।
ज्ञानयोग कहते किसे, सुन अर्जुन मम तात ।
और समझ ले मित्रवर, कर्मयोग की बात ।।७।।
माया से उत्पन्न गुण, बरतैं गुण के साथ ।
समझ तत्व की बात यह, होता पुरुष सनाथ ।।८।।
सब कर्मों में त्याग कर, कर्त्ता का अभिमान ।
परब्रह्म में लीन हो, सांख्य योग लो जान ।।९।।
फल इच्छा को त्याग कर, ईश्वर को ही मान ।
कर्म करे सम बुद्धि से, जो नर पार्थ सुजान ।।१०।।
कहते हैं अर्जुन उसे, कर्मयोग निष्काम ।
बुद्धियोग समयोग भी, और अनेकों नाम ।।११।।
पर दोनों ही मार्ग में, नहीं कर्म का त्याग ।
कर्म किये हरि प्राप्त हों, कर्म जगाता भाग ।।१२।।
कर्म त्याग निष्कर्मता, प्राप्त न होती पार्थ ।
और देख सकता नहीं, भगवत् रूप यथार्थ ।।१३।।
और सर्वथा कर्म का, कभी न होता त्याग ।
समझो इसको इस तरह, जैसे जल में आग ।।१४।।
क्षण भर भी कोई पुरुष, रह न सके निष्कर्म ।
वश में होकर प्रकृति के, करते हैं सब कर्म ।।१५।।
अतः पार्थ जो मूर्ख जन, कर्मेन्द्रिय को रोक ।
मन में इन्द्रिय-भोग की, चिन्ता करते शोक ।।१६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मिथ्याचारी पुरुष वह, दम्भी धूर्त महान ।
समझो अर्जुन बात यह, बोले श्री भगवान ।।१७।।
शास्त्रयुक्त सत्कर्म को, इससे तू कर पार्थ ।
कर्म त्यागना है बुरा, करना श्रेष्ठ यथार्थ ।।१८।।
कर्म त्यागने से सुनो, अर्जुन वीर सुजान ।
हो शरीर निर्वाह नहिं, बात सत्य यह मान ।।१९।।
बन्धन-भय से भी सुनो, कर्म त्यागना भूल ।
यज्ञ आदि सत्कर्म जो, हैं शुभ गति के मूल ।।२०।।
यज्ञ आदि को त्याग कर, करे दूसरे काम ।
बन्धन में बँधता वही, करता कर्म सकाम ।।२१।।
पार्थ त्याग आसक्ति को, हो ईश्वर में लीन ।
हरि निमित्त ही कर्म कर, बोले कृष्ण प्रवीन ।।२२।।
कर्म त्यागने से सुनो, होगा पाप महान ।
ब्रह्मा ने कल्पादि में, रचकर सकल जहान ।।२३।।
कहा यही था पार्थ सुन, सत्य कर्म है यज्ञ ।
ज्ञानी जन समझें इसे, धीर, वीर, मर्मज्ञ ।।२४।।
इसी यज्ञ के साथ सब, लहो बुद्धि सानन्द ।
इच्छित फल दे यज्ञ ही, बोले आनँद-कन्द ।।२५।।
यज्ञ आदि करते रहो, हों प्रसन्न सुर लोग ।
वे प्रसन्न होकर तुम्हें, देंगे सब सुख भोग ।।२६।।
इस प्रकार कर्त्तव्य कर, दोनों होंय सनाथ ।
सत्य-तत्व की बात यह, बोले श्री ब्रजनाथ ।।२७।।
सुर गण बढ़ते यज्ञ से, वे देते प्रिय-भोग ।
दिये हुए उस भोग को, भोगें उत्तम लोग ।।२८।।
बिना किये शुभ यज्ञ को, जो नर भोगें भोग ।
श्रेष्ठ पुरुष वे हैं नहीं, चोर सदा वे लोग ।।२९।।
करके सुन्दर यज्ञ को, बचता है जो अन्न ।
खाते उसको श्रेष्ठ नर, रहते सदा प्रसन्न ।।३०।।
जो पकाय खाते स्वयं, भरते अपना पेट ।
वे नर करते पाप ही, रखते पाप समेट ।।३१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जीव मात्र सब अन्न से, होते हैं उत्पन्न ।
वर्षा करते इन्द्र तब, पैदा होता अन्न ।।३२।।
और यज्ञ से वृष्टि हो, यज्ञ कर्म से जान ।
कर्म वेद से प्रकट हो, समझो पार्थ सुजान ।।३३।।
वेद स्वयं भगवान की, वाणी तुम लो मान ।
इससे समझो पार्थ तुम, यज्ञ-रूप भगवान ।।३४।।
सृष्टि-चक्र-अनुसार जो, नहीं करे व्यवहार ।
करता है जो नर नहीं, कर्म-शास्त्र-अनुसार ।।३५।।
वे इन्द्रिय-सुख भोग को, पापी-सम लें भोग ।
उनका जीवन व्यर्थ है, भार-भूत वे लोग ।।३६।।
जिसने जाना आत्म को, करता उससे प्रीत ।
और लीन उसमें रहे, वह है परम पुनीत ।।३७।।
उसके हित कर्तव्य सब, पीछे रहते जान ।
अर्जुन समझो बात यह, बोले श्री भगवान ।।३८।।
कर्तव्याकर्तव्य से, रहते वे निःस्वार्थ ।
फिर भी करते कर्म वे, केवल लोक-हितार्थ ।।३९।।
अनासक्त हो कर्म को, करो निरंतर पार्थ ।
श्रेष्ठ पुरुष करते सदा, भले कर्म निःस्वार्थ ।।४०।।
परब्रह्म को प्राप्त कर, पाते पद निर्वान ।
श्रेष्ठ कर्म करना भला, बोले श्री भगवान ।।४१।।
ज्ञानी जन जनकादि ने, कर्म किये निःस्वार्थ ।
आत्म-तत्व ही प्राप्त कर, समझे मर्म यथार्थ ।।४२।।
है लौकिक व्यवहार की, यही दृष्टि लो जान ।
करो कर्म इस हेतु तुम, हे अर्जुन बलवान ।।४३।।
श्रेष्ठ पुरुष जैसा करें, वैसा करते और ।
नियम बनाते वही हैं, जो होते शिरमौर ।।४४।।
इसीलिये अर्जुन सुनो, कहता अपनी बात ।
यद्यपि तीनों लोक में, नहि करना कुछ तात ।।४५।।
और न कोई वस्तु है, जो न मुझे हो प्राप्त ।
समझ धर्म कर्तव्य मैं, रहूँ कर्म में व्याप्त ।।४६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर्म त्याग दूँ मैं अगर, बनें लोग निष्कर्म ।
इससे करता कर्म मैं, समझ धर्म का मर्म ।।४७।।
कर्म करूँ यदि मैं नहीं, सभी लोक हों भ्रष्ट ।
पाप स्वयं मुझको लगे, उपजें सब नर नष्ट ।।४८।।
और प्रजा नाशक बनूँ, मैं ही सुनिये पार्थ ।
है अनर्थ की बात यह, मानो वचन यथार्थ ।।४९।।
अज्ञानी आसक्त हो, करते हैं सब कर्म ।
ज्ञानी शिक्षा-लोक हित, करें कर्म सह-धर्म ।।५०।।
ज्ञानी जन को चाहिये, करना ऐसा काम ।
जिससे अज्ञानी करें, कर्म सदा निष्काम ।।५१।।
स्वयं लीन भगवान में, करें कर्म शुभ पार्थ ।
अज्ञानी करते रहें, जिससे कर्म यथार्थ ।।५२।।
वास्तव में गुण ही करें, प्रकृति कराती काम ।
अभिमानी समझें नहीं, बोले श्री घनश्याम ।।५३।।
गुरु अरु कर्म विभाग के, गूढ़ तत्व को जान ।
गुण ही गुण में वर्तते, कर लेता यह ज्ञान ।।५४।।
ज्ञानवान फिर वह पुरुष, हो नहिं कर्मासक्त ।
सब कुछ करते हुए भी, रहता विलग, विरक्त ।।५५।।
क्योंकि पराये धर्म से, विगुण स्वधर्म महान् ।
मरना श्रेष्ठ स्वधर्म में, अन्य धर्म भयखान ।।६६।।

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन ने फिर यों कहा, सुनिये श्री भगवान ।
फिर करता क्यों पाप नर, प्रेरक किसको मान ।।६७।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

कहा कृष्ण ने सुनो तुम, ऐ अर्जुन बलवान ।
रज गुण से उत्पन्न यह, काम-क्रोध की खान ।।६८।।
यही अग्नि के सदृश हैं, जो न भोग से तुष्ट ।
बैरी इसको समझ तू, पापी है यह दुष्ट ।।६९।।
ढकी धुएँ से अग्नि ज्यों, मल से दर्पण-अन्ध ।
झिल्ली भीतर गर्भ सम, ज्ञान कर्म से बन्ध ।।७०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अग्नि न होती तृप्त ज्यों, वैसे ही है काम ।
शत्रु ज्ञानियों का प्रबल, ज्ञान ढकै यह काम ।।७१।।
इन्द्रिय मन अरु बुद्धि पर, किये रहे अधिकार ।
आत्मा को मोहित करै, रोक ज्ञान संचार ।।७२।।
इसीलिये अर्जुन प्रथम, इन्द्रिय को लो जीत ।
नाशक है यह ज्ञान की, पापी अति विपरीत ।।७३।।
नाश करो अज्ञान का, करो जला कर क्षार ।
इसमें ही कल्याण है, बोले नन्दकुमार ।।७४।।
शक्ति न समझे अगर तू, है यह तेरी भूल ।
परे इन्द्रियाँ देह से, समझ बात अनुकूल ।।७५।।
इन्द्रिय से है मन परे, मेरे प्यारे तात ।
बुद्धि परे मन से समझ, जान तत्व की बात ।।७६।।
और बुद्धि से भी परे, दिव्य आत्मा जान ।
इसीलिए यह आत्मा, परब्रह्म भगवान ।।७७।।
परे बुद्धि से आत्मा, समझ श्रेष्ठ बलवान ।
मन वश में कर बुद्धि से, ऐ अर्जुन मतिमान ।।७८।।
समझ शक्ति निज वीरवर, मारो पापी काम ।
सत्य कर्म यह श्रेष्ठ है, बोले श्री घनश्याम ।।७९।।

चतुर्थ अध्याय

श्री कृष्ण चन्द्र बोले -

बोले श्री भगवान फिर, सुन अर्जुन बलवीर ।
प्रथम कल्प की बात यह, समझो प्रिय मतिधीर ।।१।।

कहा कल्प के आदि में, मैंने सुन यह ज्ञान ।
समझाया था सूर्य को, सुन अर्जुन बलवान ।।२।।

रवि ने फिर मनु से कहा, प्रिय सुत सुन यह ज्ञान ।
आत्मतत्व को जानकर, पाई गति निर्वान ।।३।।

मनु ने सुत इक्ष्वाकु को, समझाया यह ज्ञान ।
परम्परा से राज-ऋषि, करते आये भान ।।४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहुत काल से लुप्त था, धरा मध्य यह ज्ञान ।
अब तुझसे मैंने कहा, भक्त-सखा निज जान ।।५।।

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन ने हरि से कहा, सुनकर उनकी बात ।
जन्म आधुनिक आपका, सूर्य पुरातन तात ।।६।।
दिया कल्प के आदि में, सूर्य-देव को ज्ञान ।
कृष्ण विलक्षण बात यह, कैसे लूँ मैं मान ।।७।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

यह सुन बोले कृष्ण जी, सुन अर्जुन रणधीर ।
जन्म अनेकों हो चुके, मेरे तेरे वीर ।।८।।
इन सब को मैं जानता, तू न जानता पार्थ ।
अर्जुन ! मैं इस सृष्टि का, रखता ज्ञान यथार्थ ।।९।।
सभी मनुष्यों की तरह, जन्म न मेरा जान ।
अज अविनाशी मैं सदा, मुझमें शक्ति महान ।।१०।।
वश में करके प्रकृति निज, माया से मैं तात ।
जग में लेता जन्म हूँ, समझ मित्र यह बात ।।११।।
धर्म नष्ट होता जभी, बढ़े अधर्म महान ।
तब-तब लेता जन्म मैं, सुनो पार्थ बलवान ।।१२।।
रक्षा करता साधु की, दुष्टों का संहार ।
युग-युग में मैं जन्म ले, करता धर्म प्रचार ।।१३।।
जन्म और मम कर्म यह, समझ अलौकिक तात ।
इस प्रकार के तत्व की, जोकि समझते बात ।।१४।।
वे शरीर को त्याग कर, जन्म न लेते पार्थ ।
मुझ में होते लीन हैं, समझो बात यथार्थ ।।१५।।
पहले भी नर बहुत से, राग, क्रोध, भय त्याग ।
कर्मयोग को समझ कर, कर मुझसे अनुराग ।।१६।।
ज्ञान रूप तप से हुए, वे नर परम पवित्र ।
मम स्वरूप को प्राप्त कर, मुक्त हुए हैं मित्र १७।।
जो जैसे भजते मुझे, रखते जैसा भाव ।
वैसे मैं भजता उन्हें, मेरा यही स्वभाव ।।१८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस रहस्य को जान कर, बुद्धिमान मतिधीर ।
मेरे ही अनुसार वे, कर्म करें सुन वीर ।।१९।।
जो मेरे इस रूप का, तत्व न जाने पार्थ ।
सुरगण को हैं पूजते, रखकर अपना स्वार्थ ।।२०।।
सिद्धि प्राप्त कर शीघ्र वे, करते सुख का भोग ।
प्राप्त न मुझको कर सकें, ऐसे कामी लोग ।।२१।।
इससे प्यारे मित्रवर, इच्छाओं को त्याग ।
सब प्रकार से करो तुम, मुझ से ही अनुराग ।।२२।
गुण औ कर्म विभाग से, रचे वर्ण हैं चार ।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अरु, शूद्र कर्म अनुसार ।।२३।।
उनके कर्ता को मुझे, जान अकर्ता पार्थ ।
अज अविनाशी समझ लो, मानो वचन यथार्थ ।।२४।।
मैं न कर्म फल चाहता, लिप्त न होता मित्र ।
समझ आत्मा ईश यों, ज्यों दर्पण में चित्र ।।२५।।
मुझे इस तरह तत्व से, जो लेता है जान ।
कर्मों में बँधता नहीं, बोले श्री भगवान ।।२६।।
इसी तत्व को जान कर, पूर्वज सभी प्रवीन ।
शुभ कर्मों को कर हुए, मुझ में ही फिर लीन ।।२७।।
कर्म पूर्वजों की तरह, तू भी कर ऐ पार्थ ।
कर्मयोग ही मोक्ष प्रद, समझो बात यथार्थ ।।२८।।
क्या है कर्म, अकर्म क्या, मोहे ज्ञानी लोग ।
मैं समझाता अब तुम्हें, कर्म-तत्व का योग ।।२९।।
सुनकर उसको पार्थ तुम, पावोगे शुभ ज्ञान ।
होगे बन्धन-मुक्त फिर, बोले श्री भगवान ।।३०।।
कर्म समझना चाहिए, अरु अकर्म भी तात ।
समझो कर्म निषिद्ध भी, जटिल कर्म की बात ।।३१।।
किये हुए सत्कर्म को, समझे सदा अकर्म ।
अरु अकर्म को कर्ममय, जो नर समझे मर्म ।।३२।।
वही पुरुष विद्वान है, योगी उसको जान ।
करने वाला कर्म का, है वह व्यक्ति महान ।।३३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सभी कर्म जिस पुरुष के, हों संकल्प विहीन ।
और कामना-रहित जो, है वह पुरुष प्रवीन ।।३४।।
ज्ञान-अग्नि को प्राप्त कर, भस्म हुए हैं कर्म ।
उनको पण्डित मानते, समझा जिसने मर्म ।।३५।।
जो असार संसार से, विलग ब्रह्म में लीन ।
कर्तापन अभिमान को, त्यागे परम प्रवीन ।।३६।।
कर्मफलों से परे रह, कर्म करे सानन्द ।
विलग रहे फिर भी सदा, पाता परमानन्द ।।३७।।
जाना जिसने तत्व को, वश में किया शरीर ।
भोग वस्तुएँ त्यागकर, बना सुदृढ़ मतिधीर ।।३८।।
स्वयं प्राप्त जो वस्तु हो, उसमें हो संतुष्ट ।
सुख-दुख में बिचले नहीं, रहे हर समय तुष्ट ।।३९।।
दूर ईर्ष्या से रहें, रहें सदा समभाव ।
फल-इच्छा को त्यागकर, करते कर्म सचाव ।।४०।।
बन्धन में बँधते नहीं, फिर भी ऐसे लोग ।
कर्मयोग के ज्ञान से, भोगें सब सुख-भोग ।।४१।।
ज्ञानस्थित आसक्ति बिन, करता जो परमार्थ ।
यों करता यथार्थ जो, नष्ट कर्म हों पार्थ ।।४२।।
स्रुवा आदि भी ब्रह्म हैं, हवि भी समझो ब्रह्म ।
ब्रह्मरूप ही अग्नि है, कर्त्ता भी है ब्रह्म ।।४३।।
किया गया जो हवन है, ब्रह्म उसे भी मान ।
ब्रह्मरूप उस कर्म में, समाधिस्थ धीमान ।।४४।।
उसके द्वारा प्राप्य जो, वह भी केवल ब्रह्म ।
ऐ अर्जुन ! तू समझ यह, सभी चराचर ब्रह्म ।।४५।।
कोई योगी-जन करैं, देवाराधन यज्ञ ।
ब्रह्मानल में यज्ञ हैं, करते कुछ मर्मज्ञ ।।४६।।
संयम रूपी अग्नि में, कोई ज्ञानी लोग ।
हवन इन्द्रियों का करें, त्याग सभी सुख-भोग ।।४७।।
इन्द्रिय रूपी अग्नि में, कोई योगी लोग ।
शब्दादिक-आहुति करें, समझ कर्म का योग ।।४८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोई इन्द्रिय कर्म को, और प्राण व्यापार ।
योगाग्नि में हवन कर, होते भव से पार ।।४९।।
चिन्तन केवल ब्रह्म का, करते हैं वे धीर ।
यही हवन उनका समझ, ऐ अर्जुन ! बलवीर ।।५०।।
जन सेवा में द्रव्य को, अर्पण करते लोग ।
ईश्वर हित समझें उसे, परम-धर्म शुभ-भोग ।।५१।।
कई लोग तप-यज्ञ कर, होते भव से पार ।
कई योग अष्टांग कर, त्यागें यह संसार ।।५२।।
ज्ञान यज्ञ कोई करें, करते हैं जप-ध्यान ।
और अहिंसा व्रत करें, पालें धर्म महान ।।५३।।
कोई वायु अपान में, करें प्राण को लीन ।
प्राण-वायु में अन्य जन, करें अपान विलीन ।।५४।।
दोनों को ही रोक कर, करके प्राणायाम ।
कोई करते प्राप्त यों, परब्रह्म सुखधाम ।।५५।।
कोई योगीजन सुनो, कर नियमित आहार ।
प्राण-प्राण में हवन कर, होते भव से पार ।।५६।।
इन सब यज्ञों से हुए, पाप-मुक्त जो लोग ।
वे ज्ञाता सब यज्ञ के, समझ कर्म का योग ।।५७।।
यज्ञों का फल प्राप्त कर, ज्ञानामृत कर पान ।
योगी करते प्राप्त हैं, परब्रह्म भगवान ।।५८।।
यज्ञ-रहित जो पुरुष हैं, सुन अर्जुन बलवान ।
उनके हित इस लोक में, दुख ही दुख तू जान ।।५९।।
इसी लोक में सुख न जब, मिल न सके परलोक ।
उभय लोक से भ्रष्ट वे, उन्हें शोक ही शोक ।।६०।।
इस प्रकार के यज्ञ बहु, कहे वेद में पार्थ ।
मन इन्द्रिय की क्रिया से, वे उत्पन्न यथार्थ ।।६१।।
जान तत्व की बात यह, कर्म-योग का ज्ञान ।
होगा बन्धन मुक्त तू, ऐ अर्जुन ! बलवान ।।६२।।
सांसारिक वस्तुओं से, होते हैं जो यज्ञ ।
उत्तम उनसे ज्ञान लो, ज्ञान-यज्ञ मर्मज्ञ ।।६३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पराकाष्ठा कर्म की, है अर्जुन सद्ज्ञान ।
ज्ञान यज्ञ ही श्रेष्ठ है, बोले श्री भगवान ।।६४।।
इससे अर्जुन करो तुम, ज्ञानीजन सत्संग ।
भक्ति-भाव उनसे करो, समझो ज्ञान प्रसंग ।।६५।।
कर्मयोग-मर्मज्ञ वे, ज्ञानी परम सुजान ।
श्रद्धा तेरी देख कर, देंगे उत्तम ज्ञान ।।६६।।
ज्ञान प्राप्त कर पार्थ फिर, व्याप्त न होगा मोह ।
आत्मतत्व को प्राप्त हो, छूटे भव से छोह ।।६७।।
देखेगा तू आत्म में, हे अर्जुन ! बलवान ।
सत्य सच्चिदानन्द प्रभु, परब्रह्म भगवान ।।६८।।
परब्रह्ममय-आत्म में, देख पड़ें सब लोग ।
है विचित्र विज्ञानमय, आत्म-ज्ञान का योग ।।६९।।
चाहे जितने पाप हों, सब होंगे फिर नष्ट ।
परब्रह्म का ज्ञान कर, नहीं मिलेगा कष्ट ।।७०।।
बैठ ज्ञान की नाव पर, पापों से हो पार ।
बिन प्रयास भव-सिंधु तर, हो आनन्द अपार ।।७१।।
अग्नि जिस तरह काष्ठ को, क्षण में करती भस्म ।
ज्ञान अग्नि त्यों कर्म को, पल में कर दे भस्म ।।७२।।
अस्तु पार्थ संसार में, सर्वश्रेष्ठ है ज्ञान ।
करता शुद्ध पवित्र है, महिमा महा महान ।।७३।।
परम शुद्ध उस ज्ञान को, बहुत समय से लोग ।
अन्तःकरण पवित्र कर, साधन कर समयोग ।।७४।।
अनुभव करते हैं रहे, श्रेष्ठ पुरुष मतिधीर ।
उसी तरह कर आचरण, तू भी अर्जुन वीर ।।७५।।
श्रद्धामय अरु संयमी, प्राप्त करे सद्ज्ञान ।
होकर तन्मय ब्रह्म में, पावे शान्ति महान ।।७६।।
आत्मज्ञान से विमुख नर, श्रद्धा भक्ति-विहीन ।
संशय में पड़ भ्रष्ट हो, होते हैं वे दीन ।।७७।।
संशय जिसके हृदय में, हो न कभी उद्धार ।
भ्रष्ट लोक परलोक से, पड़ा रहे मँझधार ।।७८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हरि के अर्पण हैं किये, जिसने सब निज कर्म ।
ज्ञान पाय संशय रहित, किया सदा ही धर्म ।।७९।।
ऐसे ज्ञानी पुरुष हों, कर्म-पाश से दूर ।
परब्रह्म में लीन हों, सुख पाते भरपूर ।।८०।।
अतः पार्थ ! थिर बुद्धि हो, दूर करो अज्ञान ।
आत्म-ज्ञान को समझकर, बनो वीर बलवान ।।८१।।
ज्ञानरूप तलवार से, संशय को कर चूर ।
उठो ! खड़े हो युद्ध को !!, ऐ अर्जुन ! रणशूर ।।८२।।

पाँचवाँ अध्याय

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन बोले कृष्ण से, सुनिये श्री भगवान ।
कर्मों के संन्यास की, महिमा अमित महान ।।१।।
श्रेष्ठ बताई आपने, हे केशव घनश्याम ।
और कहा फिर श्रेष्ठ है, कर्म योग निष्काम ।।२।।
इन दोनों में श्रेष्ठ क्या, कीजै यह उपदेश ।
एक मार्ग बतलाइये, मुझको है गोपेश ।।३।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

अर्जुन की यह बात सुन, बोले श्री घनश्याम ।
कर्मों का संन्यास अरु, कर्मयोग निष्काम ।।४।।
दोनों ही कल्याणप्रद, समझो पार्थ सुजान ।
सुखप्रद दोनों मार्ग हैं, दोनों एक समान ।।५।।
किन्तु कर्म संन्यास से, सुगम योग निष्काम ।
अतः श्रेष्ठ समझो इसे, बोले श्री घनश्याम ।।६।।
इससे अर्जुन समझ तू, गूढ़ तत्व की बात ।
जो नर त्यागे द्वेष को, करे न इच्छा तात ।।७।।
ऐसा निष्कामी पुरुष, त्यागी धीर महान ।
संन्यासी ही तुम उसे, समझो पार्थ सुजान ।।८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग-द्वेष से रहित वह, स्वार्थ-रहित समदृष्टि ।
मेघ जिस तरह हर जगह, करता जल की वृष्टि ।।९।।
ऐसा नर सुख-शान्ति से, भव-बन्धन को त्याग ।
सदा सच्चिदानन्द में, करता है अनुराग ।।१०।।
कर्मयोग निष्काम का, और कर्म संन्यास ।
मूर्ख पृथक् फल मानते, पृथक्-पृथक् विश्वास ।।११।।
पर दोनों का एक फल, मिलें सच्चिदानन्द ।
पण्डित जन समझें इसे, बोले श्री ब्रजचन्द ।।१२।।
ज्ञान योग से प्राप्त हो, जैसा परमानन्द ।
कर्मयोग निष्काम से, मिले वही आनन्द ।।१३।।
इन दोनों का एक फल, जो समझे मतिमान ।
वह यथार्थ दृष्टा पुरुष वही, श्रेष्ठ विद्वान ।।१४।।
किन्तु पार्थ समझो इसे, करो पूर्ण विश्वास ।
कर्मयोग निष्काम बिन, प्राप्त न हो संन्यास ।।१५।।
भगवत को ही मनन कर, कर्मयोग के साथ ।
पाता परमानन्द है, होता वही सनाथ ।।१६।।
और जितेन्द्रिय पुरुष वह, शुद्ध हृदय मतिमान ।
देखे सब में आत्मा, परब्रह्म भगवान ।।१७।।
ऐसा निष्कामी पुरुष, कर के भी सब काम ।
लिप्त न होता कर्म में, बोले श्री घनश्याम ।।१८।।
खाता, छूता, देखता, सुनता, चलता चाल ।
गन्ध सूँघता, बोलता, और त्यागता माल ।।१९।।
मैं करता कुछ भी नहीं, समझे निज को दूर ।
श्रेष्ठ पुरुष ज्ञानी वही, ऐ अर्जुन ! रण-शूर ।।२०।।
लेता, सोता, खोलता, और मीचाता नैन ।
स्वयं इन्द्रियाँ कार्यरत, माने यह दिन-रैन ।।२१।।
लिखता, पढ़ता, खेलता, करता सब व्यापार ।
इन्द्रिय करती काम है, करा रहा कर्तार ।।२२।।
पर है साधन कठिन यह, सुन अर्जुन बलवान ।
और कर्म निष्काम को, सुगम सरल तू जान ।।२३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्पण करता ईश को, जो नर अपने काम ।
और त्याग आसक्ति को, लेता हरि का नाम ।।२४।।
लिप्त न होता कर्म में, वह निष्कामी धीर ।
जैसे पंकज-पत्र पर, ठहर न सकता नीर ।।२५।।
योगी जन करते सदा, मोह-रहित सब काम ।
इन्द्रिय, मन अरुबुद्धि से, करें कर्म निष्काम ।।२६।।
निष्कामी-योगी पुरुष, करके सारे कर्म ।
फल अर्पण कर ईश को, पाता शान्ति सधर्म ।।२७।।
और सकामी पुरुष जो, फल में हो आसक्त ।
बँधता बन्धन में वही, हो न सके हरि-भक्त ।।२८।।
उत्तम समझो पार्थ तुम, कर्मयोग निष्काम ।
कर्मयोग निष्काम ही, है सुन्दर सुखधाम ।।२९।।
वश में कर अन्तःकरण, साँख्य योग में लीन ।
ऐसा ज्ञानी पुरुष जो, पावन, परम, प्रवीन ।।३०।।
करता-करवाता न कुछ, करता आठों याम ।
नव द्वार-मय देह में, त्यागे सब कुछ काम ।।३१।।
काम करें सब इन्द्रियाँ, स्वयं आप ही आप ।
यही मान हर्षित रहे, हो न कभी संताप ।।३२।।
रहता सुस्थित सदा वह, परब्रह्म में पार्थ ।
सत्य सच्चिदानन्द घन, भजे सदा निःस्वार्थ ।।३३।।
कर्तापन अरु कर्म को, और कर्म-फल भोग ।
ईश्वर भी रचता नहीं, समझ न पाते लोग ।।३४।।
किन्तु ईश संयोग से, प्रकृति कराती काम ।
गुण ही गुण में वर्तते, निशिदिन आठों याम ।।३५।।
ग्रहण न करता किसी के, पाप पुण्य को ईश ।
जगज्जाल से सर्वथा, विलग रहे जगदीश ।।३६।।
ढके हुये हैं ज्ञान को, माया रूपी जाल ।
अस्तु विमोहित जीव सब, युवक वृद्ध अरु बाल ।।३७।।
पर जिनका अज्ञान वह, हुआ ज्ञान से दूर ।
सूर्य सदृश फिर ज्ञान वह, चमके ये रण-शूर ।।३८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करे प्रकाशित ब्रह्म को, दिखलाता हरि रूप ।
जैसे प्यासे को मिले, शीतल जलमय कूप ।।३९।।
अर्जुन जिनकी बुद्धि है, श्रीमद्भगवद् रूप ।
परब्रह्म में लीन हैं, मन भी है तद्रूप ।।४०।।
ऐसे जो तल्लीन हैं, पाप-रहित जन पार्थ ।
ईश्वर-मय होते वही, पाते मोक्ष यथार्थ ।।४१।।
ऐसे सद्ज्ञानी पुरुष गौ ब्राह्मण अरु श्वान ।
गज, घोड़ा, चाण्डाल को, देखें एक समान ।।४२।।
अस्तु पार्थ जो पुरुष हैं, रखते बुद्धि समत्व ।
जीवित ही वह मुक्त हैं, त्यागें मोह-ममत्व ।।४३।।
क्योंकि ईश निर्दोष है, रखता है समभाव ।
ज्ञानी भी रखता नहीं, वैसे ही दुर्भाव ।।४४।।
प्रिय से प्रिय की प्राप्ति में, होता नहीं प्रसन्न ।
औ अप्रिय को प्राप्त कर, होता कभी न खिन्न ।।४५।।
ऐसा सुस्थिर बुद्धि नर, संशय-रहित सुजान ।
परब्रह्म को प्राप्त कर, पाता गति निर्वान ।।४६।।
भव-भोगों से दूर हो, शुद्ध हृदय मति धीर ।
पाता ब्रह्मानन्द है, छूटें भव की पीर ।।४७।।
परब्रह्म के योग का, लेता है आनन्द ।
सफल जन्म समझो उसे, बोले आनँद कन्द ।।४८।।
इन्द्रिय के सुख भोग सब, और विषय आनन्द ।
सुखमय इसको मानते, विषयी नर मतिमन्द ।।४९।।
किन्तु दुःख के हेतु ये, नश्वर सब सुख भोग ।
उनमें फँसते हैं नहीं, ज्ञानी ध्यानी लोग ।।५०।।
जीता जिसने काम को, किया क्रोध का त्याग ।
वही सुखी इस लोक में, जागे उसके भाग ।।५१।।
आत्मा में ही सुखी जो, रहता आठों याम ।
आत्मा में ही ज्ञानमय, और वही आराम ।।५२।।
सांख्य योगमय पुरुष वह, पाता परमानन्द ।
परम शान्ति को प्राप्तकर, विचरे वह स्वच्छन्द ।।५३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पाप नष्ट जिनके हुए, संशय हुए निवृत्त ।
हित में रत संसार के, आत्म-ज्ञान-प्रवृत्त ।।५४।।
काम क्रोध को जीतकर, पाकर दर्शन ईश ।
मुक्त होय संसार से, प्राप्त करे जगदीश ।।५५।।
विषय भोग जो बाहरी, चिन्तन करें न धीर ।
दूर वासना से रहें, ज्ञानी जन गम्भीर ।।५६।।
और दृष्टि को योग से, भृकुटि मध्य ले जाय ।
वायु प्राण अपान को, समझे सम मन लाय ।।५७।।
इन्द्रिय मन को जीतकर, मोक्ष परायण लोग ।
दूर क्रोध भय से सदा, मुक्त कर रहे योग ।।५८।।
हे अर्जुन मम भक्त जो, सब कुछ मुझ को जान ।
भोक्ता फल तप यज्ञ का, लेते मुझको मान ।।५९।।
सब लोकों के ईश का, समझें मुझको ईश ।
सुहृद सभी का मानते, जगत् पिता जगदीश ।।६०।।
इसे जानकर तत्व से, मिलती शान्ति महान ।
होता आत्म प्रबोध अरु, मिलता पद निर्वान ।।६१।।
सत्य सच्चिदानन्द घन, परब्रह्म भगवान ।
रहते हरदम दृष्टि में, सुन अर्जुन मतिमान ।।६२।।
वह न देखता और कुछ, मुझसे ही अनुराग ।
विश्व कृष्णमय देखता, और सभी कुछ त्याग ।।६३।।

छटा अध्याय

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

फिर बोले श्रीकृष्ण जी, सुन अर्जुन बलवान ।
फल की इच्छा त्यागकर, कर्म करे धीमान ।।१।।
संन्यासी योगी वही, महापुरुष मतिमान ।
अग्नि मात्र के त्याग से, योगी नहीं सुजान ।।२।।
कर्म मात्र के त्याग से, योगी होय न कोय ।
गोपनीय सिद्धान्त यह, तुझसे रखा न गोय ।।३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अस्तु पार्थ संन्यास जो, उसे समझ तू योग ।
बिना त्याग संकल्प के, योगी होयँ न लोग ।।४।।
इच्छा बुद्धि समत्व की, करते हैं जो लोग ।
करें कर्म निष्काम वे, करके योग-प्रयोग ।।५।।
होकर योगारूढ़ फिर, हो संकल्प विहीन ।
यही मार्ग कल्याणप्रद, समझो पार्थ प्रवीन ।।६।।
और जिस समय त्याग कर, इन्द्रिय के सुख भोग ।
अनासक्त हो कर्म में, जो हैं ऐसे लोग ।।७।।
त्याग सर्व संकल्प फिर, वे नर परम सुजान ।
होते योगारूढ़ हैं, सुन अर्जुन बलवान ।।८।।
अतः चाहिए पुरुष को, करे स्वयं उद्धार ।
प्राप्त सच्चिदानन्द कर, होवे भव से पार ।।९।।
दूर अधोगति से रहे, करके आत्म-प्रबोध ।
शत्रु, मित्र निज-आत्मा, लेय तत्व यह शोध ।।१०।।
मन इन्द्रिय को जीत ले, वह नर परम पवित्र ।
ऐसे परम प्रवीण का, बने आत्मा मित्र ।।११।।
जिसके वश इन्द्रिय नहीं, चञ्चल चित्त महान ।
शत्रु उसी की आत्मा, सुन अर्जुन बलवान ।।१२।।
सर्दी-गर्मी, दुःख-सुख, और मान-अपमान ।
इन सब में मति धीर जो, रहता एक समान ।।१३।।
इस प्रकार जो श्रेष्ठ हैं, आत्म ज्ञानी लोग ।
रहता उनके ज्ञान में, परब्रह्म-संयोग ।।१४।।
सत्य सच्चिदानन्दमय, देखे सब संसार ।
परब्रह्म में लीन वे, बोले नन्दकुमार ।।१५।।
तृप्त ज्ञान विज्ञान से, जिसका हृदय सुजान ।
सुस्थिर रहित विकार है, समझे सभी समान ।।१६।।
वश में जिसके इन्द्रियाँ, शान्त चित्त मतिमान ।
मिट्टी, पत्थर, स्वर्ण को, देखे एक समान ।।१७।।
ऐसे योगी पुरुष को, प्राप्त होंय जगदीश ।
सम समझे सब वस्तु को, देखे सब में ईश ।।१८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मित्र शत्रु अरु बन्धुवर, दोषी, पापी, नीच ।
सबको समझें एक सम, भेद भाव नहिं बीच ।।१९।।
ऐसे योगी पुरुष को, श्रेष्ठ समझ तू पार्थ ।
कण-कण में हरि को लखे, रहे सदा निःस्वार्थ ।।२०।।
अस्तु जीतकर इन्द्रियाँ, वश में करे शरीर ।
रहित वासना से हुआ, निर्मल मन मतिधीर ।।२१।।
संग्रह तज योगी पुरुष, बैठे एक स्थान ।
प्रेरित करके आत्मा, धारै ध्यान भगवान ।।२२।।
शुद्ध भूमि पर कुशों का, आसन लेय बिछाय ।
उस पर मृगछाला बिछा, तिस पर वस्त्र लगाय ।।२३।।
ऊँचा-नीचा हो नहीं, आसन हो एकान्त ।
उस आसन पर बैठ कर, मन को करके शान्त ।।२४।।
मन पावनता हेतु तब, करे योग अभ्यास ।
परब्रह्म में मग्न हो, हो ईश्वर आभास ।।२५।।
काया, ग्रीवा और शिर, सम अरु अचल बनाय ।
दृढ़ होकर नासाग्र को, देखे ध्यान लगाय ।।२६।।
इधर उधर देखे नहीं, ब्रह्मचर्य में लीन ।
शान्त चित्त भय रहित हो, ऐसा परम प्रवीन ।।२७।।
मन को निज वश में किये, मुझमें ध्यान लगाय ।
भव बन्धन से मुक्त हो, मुझमें ही मिल जाय ।।२८।।
इस प्रकार निज आत्मा, मुझ में रत कर पार्थ ।
परब्रह्म आनन्द वह, पाता शान्ति यथार्थ ।।२९।।
जोकि जागते हैं अधिक, करें न जो आहार ।
या खाते जो अधिक हैं, करते नहीं विचार ।।३०।।
सोते ज्यादा लोग जो, करते अतिशय भोग ।
अर्जुन ऐसे मूर्खजन, कर न सकें यह योग ।।३१।।
दुखनाशक इस योग को, सिद्ध करें वे वीर ।
युक्ताहार विहार जो, करते हैं नर धीर ।।३२।।
युक्त शयन अरु जागरण, करते हैं जो लोग ।
और कर्म में निरत जन, सिद्ध करें यह योग ।।३३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस प्रकार अभ्यास से, मन होकर आधीन ।
होता सुस्थित ब्रह्म में, बोले कृष्ण प्रवीन ।।३४।।
योग-युक्त कहलाय तब, सब इच्छाएँ त्याग ।
परब्रह्ममय जग लखें, रहे अटल अनुराग ।।३५।।
वायु रहित सुस्थान में, दीपक जले समान ।
ऐसे ध्यानी ब्रह्म का, सुस्थिर चित्त सुजान ।।३६।।
पार्थ शांत हो चित्त जब, करके योगाभ्यास ।
परमेश्वर का ध्यान कर, करके दृढ़ विश्वास ।।३७।।
शुद्ध, सूक्ष्म, निज बुद्धि से, लखे ब्रह्म उर बीच ।
जगज्जाल से चित्त को, लेता है जो खींच ।।३८।।
परब्रह्म आनन्द में, होता जब मन मग्न ।
प्राप्त सच्चिदानन्द हों, होते हैं दुख भग्न ।।३९।।
और इन्द्रियों से परे, जो अनन्त आनन्द ।
सूक्ष्म बुद्धि से ग्राह्य जो, अद्‌भुत परमानन्द ।।४०।।
पाकर सुस्थिर चित्त हो, देखे भगवद्-रूप ।
लखे जगत को ब्रह्ममय, सबको आत्मस्वरूप ।।४१।।
प्राप्त सच्चिदानन्द से, श्रेष्ठ लाभ नहिं और ।
और लाभ सब तुच्छ हैं, ईश लाभ शिरमौर ।।४२।।
योगीजन पाकर इसे, सब सुख जाते भूल ।
परम शान्ति को प्राप्त हों, ईश-लाभ सुख मूल ।।४३।।
दुःख रूप संसार से, रहित शुद्ध जो योग ।
उसे करे तल्लीन हो, तजकर मिथ्या भोग ।।४४।।
अतः चाहिए पुरुष को, सभी कामना त्याग ।
वश में करके इन्द्रियाँ, मुझसे कर अनुराग ।।४५।।
शनैः शनैः अभ्यास कर, करे शान्ति को प्राप्त ।
ईश्वर का चिन्तन करे, करके मोह समाप्त ।।४६।।
धैर्य युक्त, शुचि बुद्धि से, करे ब्रह्म का ध्यान ।
उसमें ही मन मग्न हो, धीर पुरुष मतिमान ।।४७।।
किन्तु न मन वश में हुआ, ऐसे हैं जो लोग ।
चंचल चित वश में करें, सिद्ध होंय तब योग ।।४८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिस कारण से हो पड़ा, यह मन भव के जाल ।
उसे त्याग कर ब्रह्म में, मन थिर करे सँभाल ।।४९।।
जिनका मन अच्छी तरह, करे शान्ति को प्राप्त ।
पाप-रहित जो पुरुष हैं, हो न रजोगुण व्याप्त ।।५०।।
हुआ सच्चिदानन्द से, जिनका एकीभाव ।
पाता परमानन्द वह, रहता शांत स्वभाव ।।५१।।
इस प्रकार योगी पुरुष, पापों से हो मुक्त ।
लगा आत्मा ब्रह्म में, होता आनँद युक्त ।।५२।।
युक्त ब्रह्म में पुरुष वह, समद्रष्टा मतिधीर ।
लखे ब्रह्ममय जगत को, ऐ अर्जुन ! बलवीर ।।५३।।
अपने में सब जीव को, सभी जीव में आप ।
है वह योगी देखता, शुद्ध हृदय निष्पाप ।।५४।।
जो मुझको है देखता, सभी जगह ऐ पार्थ ।
मुझ में देखे जगत को, समझे मर्म यथार्थ ।।५५।।
मैं अदृश्य उससे नहीं, वह मुझ से नहिं दूर ।
पाता ब्रह्मानन्द वह, सुन अर्जुन रणशूर ।।५६।।
इस प्रकार एकाग्र चित्त, सब में लख कर ईश ।
भजता वह हरदम रहे, परब्रह्म जगदीश ।।५७।।
रहता वह योगी सदा, मुझसे ही सम्बद्ध ।
और जगत के जाल से, होता कभी न बद्ध ।।५८।।
अर्जुन जो योगी पुरुष, ऐसा बने महान ।
निज-सम देखे जगत को, सबको एक समान ।।५९।।
सुख-दुख सब में सम लखे, कुछ न मानता भेद ।
सर्व श्रेष्ठ योगी वही, समझे उसने वेद ।।६०।।

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन बोले कृष्ण से, सुन उनका उपदेश ।
कारण चंचल चित्त का, कहिए श्री गोपेश ।।६१।।
ध्यान योग जो आपने, कहा मुझे समझाय ।
थिर स्थिति उसकी प्रभो, कैसे होने पाय ।।६२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्योंकि कृष्ण चंचल महा, यह मन प्रमथनशील ।
यह उड़ता इस भाँति है, जैसे नभ में चील ।।६३।।
इसको वश करना कठिन, यह चञ्चल बलवान ।
वायु न वश में होय ज्यों, ऐसा कठिन महान ।।६४।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

केशव ने फिर यों कहा, महाबाहु हे पार्थ !
मन वश में करना कठिन, है यह बात यथार्थ ।।६५।।
फिर भी कुन्ती-पुत्र सुन, नित करके अभ्यास ।
हो करके वैराग्य युत, करके दृढ़ विश्वास ।।६६।।
वश में करना चाहिए, चंचल-चित, बलवान ।
सम्भव सब संसार में, बोले श्री भगवान ।।६७।।
मन वश में जिनका नहीं, वे न कर सकें योग ।
जिनका मन वश में हुआ, ऐसे ज्ञानी लोग ।।६८।।
साधन कर यह सहज है, यह मत मेरा जान ।
मन वश में अर्जुन करो, समझ गूढ़ यह ज्ञान ।।६९।।

श्री अर्जुन बोले -

इस पर अर्जुन ने कहा, सुनिये कृपानिधान ।
हुआ योग से दूर मन, जिसका श्रीभगवान ।।७०।।
शिथिल-यत्न वह भक्त नर, प्राप्त न करके ईश ।
पाता है गति कौन सी, कहिये श्रीजगदीश ।।७१।।
महाबाहु समझाइये, ऐसे नर का हाल ।
मोहित भगवत प्राप्ति में, पड़ के मायाजाल ।।७२।।
छिन्न-भिन्न बादल सदृश, दोनों पथ से भ्रष्ट ।
दूर इश अरु भोग से, होता क्या वह नष्ट ।।७३।।
संशय करिये दूर यह, हैं हरि आप समर्थ ।
संशय-छेदन में प्रभो, और लोग असमर्थ ।।७४।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

अर्जुन का यह प्रश्न सुन, बोले श्री भगवान ।
सुनो पार्थ वह भक्त नर, योगी परम-महान ।।७५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लोक और परलोक में, उसका कभी न नाश ।
कर उत्तम शुभ कर्म को, होता नहीं विनाश ।।७६।।
किन्तु योग से भ्रष्ट हो, पाकर उत्तम लोक ।
बहुत काल तक वास कर, रहता सदा अशोक ।।७७।।
फिर लेता है जन्म वह, पुण्यवान के धाम ।
ऋद्धि-सिद्धि-सम्पत्ति-युत, रहता आठों याम ।।७८।।
अथवा लेता जन्म वह, योगी होके गेह ।
होता है रत योग में, करता हरि से नेह ।।७९।।
किन्तु जन्म इस तरह का, है अति-दुर्लभ पार्थ ।
इसमें कुछ संशय नहीं, समझो बात यथार्थ ।।८०।।
और वहाँ फिर पुरुष वह, पूर्व जन्म के धर्म ।
संचित उसके जिस तरह, करे उस तरह कर्म ।।८१।।
अनायास ही प्राप्त हो, उसे बुद्धि-संयोग ।
उसके प्रबल-प्रभाव से, साधन करता योग ।।८२।।
पैदा जो श्रीमान-गृह, हुए कर्मवश लोग ।
पूर्व जन्म के पुण्य से, प्राप्त करें सुख भोग ।।८३।।
किन्तु पूर्व अभ्यास से, खिंचे ईश की ओर ।
पार्थ योग-जिज्ञासु वह, पाता है फिर छोर ।।८४।।
शब्द ब्रह्म को पारकर, पाता परमानन्द ।
समझो अर्जुन मर्म यह, बोले श्री ब्रजचन्द ।।८५।।
मन्द-यत्न से भी मिले, जब उत्तम गति तात ।
जन्म-जन्म सत्कर्म की, तब क्या कहनी बात ।।८६।।
कर करके अभ्यास वह, सद्गति करता प्राप्त ।
प्राप्त सच्चिदानन्द हों, होते पाप समाप्त ।।८७।।
योगी तपसी से भला, ज्ञानी से भी श्रेष्ठ ।
करते कर्म समाप्त जो, उनसे तो अति ज्येष्ठ ।।८८।।
इससे सद्योगी बनो, तुम भी अर्जुन वीर ।
श्रेष्ठ मार्ग समझो इसे, छूटे भव की भीर ।।८९।।
उनमें भी वह श्रेष्ठ जो, भजे मुझे दिन रात ।
वह योगी प्यारा मुझे, सर्व श्रेष्ठ है तात ।।९०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तम अध्याय

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

फिर बोले श्री कृष्ण जी, सुन अर्जुन बलवान ।
जिस प्रकार होगा तुझे, मेरा पूरा ज्ञान ।।१।।
मुझसे सच्चा प्रेम कर, मुझ में ही धर ध्यान ।
मुझको पूर्ण विभूतिमय, लेगा तू पहिचान ।।२।।
वह कहता हूँ बात मैं, समझ पार्थ ! चितलाय ।
तत्व-ज्ञान विधि के सहित, कहता हूँ समझाय ।।३।।
जिसे जानकर जगत में, नहीं जानना और ।
है रहस्यमय ज्ञान यह, सर्वश्रेष्ठ शिरमौर ।।४।।
किन्तु सहस्रों नरों में, कोई कोई धीर ।
करें यत्न मम प्राप्ति हित, सुन अर्जुन बलवीर ।।५।।
योगी भी विरले मुझे, पाते हैं पहचान ।
गूढ़ तत्व की बात यह, समझो पार्थ ! सुजान ।।६।।
हे अर्जुन ! मेरी प्रकृति, आठ तरह की जान ।
अग्नि, वायु, आकाश, जल, पृथ्वी तत्व महान ।।७।।
अहंकार, मन, बुद्धि हैं, अष्ट प्रकृति के भाग ।
यह है मेरी जड़ प्रकृति, इसका अनुपम राग ।।८।।
महाबाहु इससे पृथक्, चेतन प्रकृति सुजान ।
जिससे धारूँ जगत यह, बोले श्री भगवान ।।९।।
अर्जुन दोनों प्रकृतियाँ, समझ सृष्टि की नींव ।
इन दोनों ही से अखिल, उपजें जग के जीव ।।१०।।
रचता मैं ही जगत को, करता स्वयं विनाश ।
सब कुछ समझो मुझे ही, करो पूर्ण विश्वास ।।११।।
मुझसे अलग न और कुछ, समझो पार्थ सुजान ।
धागे में मणियों सदृश, मुझमें गुँथा जहान ।।१२।।
मैं ही रस हूँ, नीर मैं, और शब्द आकाश ।
सूर्य चन्द्र की ज्योति है, मेरा पार्थ प्रकाश ।।१३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वेदों में ओंकार हूँ, पृथ्वी मध्य सुवास ।
तथा अग्नि में तेज मैं, सब में मेरा वास ।।१४।।
तप तपसी का पार्थ मैं, जग का कारण मूल ।
बुद्धिमान की बुद्धि मैं, नन्दन वन का फूल ।।१५।।
तेजस्वी का तेज मैं, सुन अर्जुन मतिधीर ।
बल बलवानों का समझ, मुझको ही ऐ वीर ।।१६।।
सब भूतों में धर्ममय, इच्छा मुझको जान ।
बात धर्म की समझ तू, ऐ अर्जुन बलवान ।।१७।।
सत रज तम गुन से प्रकट, होते हैं जो भाव ।
मुझ से ही उत्पन्न वे, मेरा पूर्ण प्रभाव ।।१८।।
किन्तु सखे ! मैं सर्वदा, उनसे रहता दूर ।
वे मुझ में रहते नहीं, ऐ अर्जुन रणशूर ।।१९।।
तीनों गुण के भाव से, मोहित हैं सब लोग ।
राग-द्वेष में हैं फँसे, भोग रहे हैं भोग ।।२०।।
अस्तु गुणों से परे जो, परब्रह्म भगवान ।
मोहित नर गुण से हुए, सके न उसको जान ।।२१।।
मेरी माया त्रिगुणमय, है अति दुस्तर पार्थ ।
करते मेरा भजन जो, समझें ब्रह्म यथार्थ ।।२२।।
होते भव से पार वे, माया से रह दूर ।
पाते ब्रह्मानन्द वे, अक्षय सुख भरपूर ।।२३।।
माया में हैं जो फँसे, हरती माया ज्ञान ।
वे आसुरी स्वभाव नर, दूषित नीच निदान ।।२४।।
मुझको हैं भजते नहीं, करते दूषित काम ।
भव बन्धन में पड़े वे, बोले श्री घनश्याम ।।२५।।
चार तरह के भक्तजन, भजते मुझको तात ।
धन इच्छुक अरु दुखी नर, गुण गाते दिन रात ।।२६।।
जिज्ञासू ज्ञानी पुरुष धरते मेरा ध्यान ।
यों चारों भजते मुझे, हे अर्जुन बलवान ।।२७।।
इन सब में ज्ञानी पुरुष, सर्वश्रेष्ठ मम भक्त ।
समझे मेरा तत्त्व वह, रहे सदा अनुरक्त ।।२८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुझको भी है प्रिय वही, ज्ञानी परम सुजान ।
भक्त श्रेष्ठ ज्ञानी सदा, ऐ अर्जुन मतिमान ।।२९।।
यद्यपि सबही भक्त हैं, श्रद्धायुक्त उदार ।
भजते हैं सब प्रेम से, निज मति के अनुसार ।।३०।।
ज्ञानी तो मम रूप है, समझो मेरा तत्त्व ।
संस्थित मुझमें हो सदा, रखता बुद्धि समत्व ।।३१।।
बहुत जन्म के बाद में, पाकर तत्वज्ञान ।
अखिल विश्व को देखता, वासुदेव भगवान ।।३२।।
वासुदेव तज और कुछ, लखे न वह धीमान ।
दुर्लभ ऐसा भक्त है, ऐ अर्जुन बलवान ।।३३।।
विषय वासना में फँसे, जो हैं ऐसे लोग ।
इच्छा से प्रेरित हुए, वे चाहें सुख भोग ।।३४।।
इच्छा से ही भोग की, होती बुद्धि मलीन ।
सिद्धि हेतु सुर गण भजें, पूजन करें नवीन ।।३५।।
भजता जिस-जिस देव को, सिद्धि हेतु निज काम ।
श्रद्धा उसकी उसी में, करता मैं निष्काम ।।३६।।
श्रद्धायुत निज देव को, पूजे वह दिन रात ।
इच्छा पूरी मैं करूँ, नाम देव का तात ।।३७।।
पर इन लोगों का सुनो, मिथ्या है सुख भोग ।
पूज-पूज कर देवता, साध-साध कर योग ।।३८।।
प्राप्त करें निज देव को, करें न मुझको प्राप्त ।
मुझको भजते पुरुष जो, मुझमें होते व्याप्त ।।३९।।
समझे नर अवतार ही, नहीं तत्व का ज्ञान ।
सत्य सच्चिदानन्दमय, कर न सकें पहिचान ।।४०।।
निज माया से छिपा मैं, रहता सब से दूर ।
अस्तु मूर्खजन तत्व से, विलग रहें मद चूर ।।४१।।
भूत काल में जो हुए, वर्तमान जो पार्थ ।
जो नर आगे होयँगे, मुझको ज्ञान यथार्थ ।।४२।।
मैं उन सबको जानता, वे न जानते तात ।
श्रद्धा-भक्ति विहीन नर, समझ न पाते बात ।।४३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुख दुःखादिक द्वन्द्व में, पड़े मोह के जाल ।
भूले रहते मुझे वे, ऐ कुन्ती के लाल ।।४४।।
श्रेष्ठ आचरण निरत जो, ज्ञानी नर निष्काम ।
राग द्वेष से दूर हो, लेते मेरा नाम ।।४५।।
लेकर मेरी शरण जो, भजते हैं दिन रात ।
जरा मरण से मुक्ति हित, गुण गाते मम तात ।।४६।।
वे नर जानें ब्रह्म को, कर आध्यात्मिक ज्ञान ।
कर्मों को जानें वही, पूर्ण रूप विद्वान ।।४७।।
जो ज्ञानी अधिभूत युत, अरु अधिदैव समेत ।
तथा सहित अधियज्ञ के, समझें रमा निकेत ।।४८।।
सब कुछ समझे मुझी को, पूर्ण रूप कर ज्ञान ।
अखिल विश्व में देखते, विश्वम्भर भगवान ।।४९।।
युक्त चित्त ऐसे पुरुष मुझ में होते लीन ।
बात सत्य यह तत्व की, बोले कृष्ण प्रवीन ।।५०।।

अष्टम् अध्याय

श्री अर्जुन बोले -

कृष्णचन्द्र के वचन सुन, फिर बोले यों पार्थ ।
पुरुषोत्तम समझाइये, मुझको बात यथार्थ ।।१।।
ब्रह्म और अध्यात्म क्या, कर्म कहो समझाय ।
कहो कृष्ण अधिभूत क्या, पूर्णरूप ब्रजराय ।।२।।
और कहो अधिदैव भी, और कौन अधियज्ञ ।
वह शरीर में किस तरह, समझाओ मर्मज्ञ ।।३।।
मुक्तचित्त जो बुद्धि नर, अन्त समय ले जान ।
किस प्रकार से आपको, कहिये श्री भगवान ।।४।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

सुनकर अर्जुन के वचन, बोले श्रीघनश्याम ।
जिसका होता नाश नहि, ब्रह्मा वही सुखधाम ।।५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जीवात्मा अध्यात्म है, समझो पार्थ सुजान ।
यज्ञ आदि शुभ कर्म हित, करना धन का दान ।।६।।
कहते इसको कर्म हैं, हे अर्जुन मतिमान ।
है हिरण्यमय पुरुष जो, ब्रह्म ले तू जान ।।७।।
उसको ही अधिदैव भी, कहते हैं धीमान ।
वासुदेव मैं देह में, हूँ अधियज्ञ सुजान ।।८।।
अन्तकाल में पुरुष जो, करता मेरा ध्यान ।
वह शरीर को त्यागकर, पाता गति निर्वान ।।९।।
होता मुझमें लीन है, निश्चय ही वह पार्थ ।
इसमें कुछ संशय नहीं, है यह बात यथार्थ ।।१०।।
रखता जिस-जिस भावको, अन्त समय नर पार्थ ।
और उसी को प्राप्त हो, है यह बात यथार्थ ।।११।।
जिसका चिन्तन करे, नर, निशिदिन आठों याम ।
अन्तकाल में हो स्मरण, आता उसका नाम ।।१२।।
अस्तु पार्थ सब काल में, कर तू मेरा ध्यान ।
और युद्ध कर वीरवर, है यह धर्म महान ।।१३।।
इस प्रकार मन बुद्धि को, मुझमें रत कर पार्थ ।
पावोगे मुझको अवशि, सिद्ध होय परमार्थ ।।१४।।
ध्यान रूप शुभ यज्ञ कर, कर-कर के अभ्यास ।
सुस्थिर करके चित्त को, करके दृढ़ विश्वास ।।१५।।
जो भी करता ध्यान है, क्या भिक्षुक क्या भूप ।
पाता है नर ईश को, दिव्य प्रकाश स्वरूप ।।१६।।
जो नर करता है स्मरण, जगपालक जगदीश ।
आदि रहित सर्वज्ञ जो, सूर्य सदृश है ईश ।।१७।।
चेतन, नित्य प्रकाशमय, विद्या का भण्डार ।
सत्य सच्चिदानन्द घन, जगनायक कर्तार ।।१८।।
भक्ति युक्त नर श्रेष्ठ वह, अन्तकाल में पार्थ ।
भृकुटि मध्यकर प्राण को, करके योग यथार्थ ।।१९।।
परम पुरुष परमेश को, कर लेता फिर प्राप्त ।
पाता गति निर्वान है, होते दुःख समाप्त ।।२०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ज्ञानी दाता वेद के, जो नर परम सुजान ।
ओंकार कहते जिसे, मानो महा महान ।।२१।।
राग-रहित योगी पुरुष, जिसमें करें प्रवेश ।
ब्रह्मचर्य व्रत रत रहें, पालें नियम विशेष ।।२२।।
ऐसा है जो परम पद, ऐ अर्जुन बलवान !
उसे कहूँ संक्षेप से, तेरे हित मतिमान ।।२३।।
वश में करके इन्द्रियाँ, सुस्थिर मन जो लोग ।
प्राण राशि में खींचकर, साधन करके योग ।।२४।।
ओंकारमय ब्रह्म को, भजकर आठों याम ।
चिन्तन मेरा ही करें, अन्त समय ले नाम ।।२५।।
वे शरीर को त्यागकर, करें परम पद प्राप्त ।
जो समझें इस ज्ञान को, भव को करें समाप्त ।।२६।।
जो मुझमें तल्लीन हो, भजता मुझको पार्थ ।
उस योगी को सुलभ मैं, मानो वचन यथार्थ ।।२७।।
मुझको करके प्राप्त नर, होते दुख से दूर ।
जन्म-मरण से मुक्त हों, ऐ अर्जुन रणशूर ।।२८।।
स्वर्गलोक शुभ धाम को, जाते हैं जो लोग ।
फल शुभ कर्मों का वहाँ, जब लेते हैं भोग ।।२९।।
फिर आते संसार में, पड़ते भव के जाल ।
किन्तु प्राप्त मुझको करें, जो कुन्ती के लाल ।।३०।।
पुनर्जन्म से मुक्त वे, मुझमें होते लीन ।
मैं हूँ कालातीत सुन, बोले कृष्ण प्रवीन ।।३१।।
ब्रह्मा का दिन एक जो, ऐ अर्जुन बलवान ।
सहस चौकड़ी युग अवधि, उसकी ले जो जान ।।३२।।
ब्रह्मा का दिन उदय जब, उपजैं तब सब लोग ।
विधि निशि में ही नाश हों, भोग-भोग का भोग ।।३३।।
विधि के सूक्ष्म शरीर से, उपजे सब संसार ।
विधि में ही फिर लीन हो, यह संसार असार ।।३४।।
वही भूत समुदाय फिर, उपजे जग में आय ।
बस में होकर प्रकृति के, इसमें लय हो जाय ।।३५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रह्मा के सौ वर्ष तक, हो उत्पत्ति विनाश ।
फिर ब्रह्मायुत सृष्टि का, हो जाता है नाश ।।३६।।
किन्तु सनातन ब्रह्म जो, सत्य सच्चिदानन्द ।
परे जौन अव्यक्त से, जो है आनँदकन्द ।।३७।।
सकल सृष्टि के नाश पर, रहे वही बस शेष ।
ज्ञान पार्थ तू समझ यह, बोले श्री गोपेश ।।३८।।
कहते हैं अव्यक्त अरु, अक्षर जिसको पार्थ ।
उसको कहते परम गति, समझो मर्म यथार्थ ।।३९।।
जिसको पाकर पुरुष फिर, पाता परमानन्द ।
पीछे फिर आता नहीं, पड़े न भव के फन्द ।।४०।।
परम धाम मेरा वही, समझो प्यारे तात ।
परम तत्व से युक्त यह, गूढ़ ज्ञान की बात ।।४१।।
जिस ईश्वर में जगत यह, सबमें जिसका वास ।
कण-कण में व्यापक रहे, होय न जिसका नाश ।।४२।।
प्रेम भक्ति से प्राप्त हो, सत्य सच्चिदानन्द ।
और मार्ग कोई नहीं, बोले श्री ब्रजचन्द ।।४३।।
तजकर इस संसार को, जाते योगी लोग ।
पीछे वे आते नहीं, सिद्ध किया जिन योग ।।४४।।
आते भी योगी यहाँ, ये दोनों गति तात ।
समझाऊँगा पार्थ मैं, उभय तत्व की बात ।।४५।।
शुक्ल पक्ष दिन मध्य में, करता जो तन त्याग ।
उत्तर दिशि के भानु हों, जागें उसके भाग ।।४६।।
जाता जो इस मार्ग से, पाता गति निर्वान ।
प्राप्त करे वह ब्रह्म को, समझो पार्थ सुजान ।।४७।।
कृष्ण पक्ष निशि बीच जो, करते हैं तन त्याग ।
दक्षिण दिशि के सूर्य में, ही करके अनुराग ।।४८।।
देह त्याग योगी पुरुष, चन्द्र ज्योति को पाय ।
भोगें सुरपुर भोग वे, आनन्दित हुलसाय ।।४९।।
क्षीण पुण्य होते जभी, आते फिर भूलोक ।
माया ममता में पड़ें, पावें दुख अरु शोक ।।५०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुक्ल कृष्ण दो मार्ग ये, कहे सनातन पार्थ ।
शुक्ल मार्ग से जाय जो, पाये मुक्ति यथार्थ ।।५१।।
कृष्ण मार्ग से नये नर, भोग स्वर्ग के भोग ।
आते फिर इस लोक में, क्षीण पुण्य वे लोग ।।५२।।
समझे दोनों मार्ग जो, ज्ञानी परम सुजान ।
मोहित वह होता नहीं, ऐ अर्जुन बलवान ।।५३।।
विषयों में फँसते नहीं, कर्म करें निष्काम ।।
अस्तु पार्थ समबुद्धि बन, बोले श्री घनश्याम ।।५४।।
इस रहस्य को जानकर, योगी परम सुजान ।
वेद यज्ञ तप दान का, जो फल होय महान ।।५५।।
उससे भी आगे बढ़ें, करें परम पद प्राप्त ।
आवागमन विमुक्त हो, होयँ ब्रह्म में व्याप्त ।।५६।।

नवम् अध्याय

फिर बोले श्री कृष्ण जी, ऐ अर्जुन मतिमान ।
दोष-रहित तू भक्त है, सुन ले परम सुजान ।।१।।
गोपनीय यह ज्ञान मैं, विधिवत करूँ बखान ।
मुक्त दुःख संसार से, होगा इसको जान ।।२।।
विद्याओं में श्रेष्ठ यह, उत्तम अनुपम ज्ञान ।
साधन करने को सुगम, अविनाशी गुणखान ।।३।।
तत्व-ज्ञान में है नहीं, श्रद्धा जिनकी पार्थ ।
भव बन्धन में पड़े वे, मुक्त न होय यथार्थ ।।४।।
मुझको वे पाते नहीं, रह माया के बीच ।
तत्व-ज्ञान से विमुख नर, बुद्धिहीन है नीच ।।५।।
सत्य सच्चिदानन्द घन, मुझसे यह जग व्याप्त ।
मेरे अन्तर्गत जगत, मुझमें होय समाप्त ।।६।।
वास्तव में सुस्थित नहीं, मैं उनमें हूँ पार्थ ।
सब में रहकर अलग हूँ, है यह बात यथार्थ ।।७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुझमें भी संस्थित नहीं, प्राणी सारे जान ।
मेरी प्रभुता देख तू, ऐ अर्जुन बलवान ।।८।।
पालन-पोषण विश्व का, कर्ता मुझको मान ।
फिर भी रहता अलग मैं, बोले श्री भगवान ।।९।।
ज्यों नभ से उत्पन्न हो, नभ ही वासस्थान ।
और बिचरता सब जगह, मारुत महा महान ।।१०।।
वैसे मम संकल्प से, उपजा सकल जहान ।
मुझमें वायु समान ही, सुस्थित इसको जान ।।११।।
होते सब कल्पांत में, मुझमें ही फिर लीन ।
लय होते हैं प्रकृति में, बोले कृष्ण प्रवीन ।।१२।।
और कल्प के आदि में, सृष्टि रचूँ मैं पार्थ ।
गूढ़-तत्त्व विज्ञान मय, है यह बात यथार्थ ।।१३।।
त्रिगुणमयी माया प्रबल, करके अङ्गीकार ।
रचता मैं सब जीव को, किये कर्म अनुसार ।।१४।।
पर मैं कर्मों में नहीं, बँधता अर्जुन वीर ।
कर्मों में आसक्त हो, होता नहीं अधीर ।।१५।।
मेरे ही स्वामित्व में, माया मेरी वीर ।
रचता सारा जगत हूँ, होता नहीं अधीर ।।१६।।
ऊपर समझाया तुझे, मैंने है जो ज्ञान ।
जन्म-मरण के चक्र में, घूमे सकल जहान ।।१७।।
ऐसा होते हुए भी, मूरख जाते भूल ।
तुच्छ समझते हैं मुझे, भोगें भव के शूल ।।१८।।
जो मिथ्या आशा किये, करें व्यर्थ ही कर्म ।
वृथा ज्ञान में हैं पड़े, समझ न सकते मर्म ।।१९।।
राक्षस से तामस प्रकृति, आसुर रहे स्वभाव ।
मूर्ख उन्हें ही समझते, जिन्हें न मेरा चाव ।।२०।।
देव-प्रकृति के लोग जो, सुन कुन्ती के लाल ।
परम ईश समझें मुझे, भजें सदा त्रयकाल ।।२१।।
दृढ़ निश्चय कर भक्त जो, मेरा ही कर ध्यान ।
मुझको भजते हैं सदा, गुण-गण करते गान ।।२२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेरी करें उपासना, प्रतिक्षण आठों याम ।
रत मुझमें ही रहें वे, कर्म करें निष्काम ।।२३।।
दृढ़-निश्चय कर भक्त जन, गुण-गाते दिन-रात ।
मेरी ही चर्चा करें, और न करते बात ।।२४।।
वे मेरी ही प्राप्ति में, सदा रहें तल्लीन ।
मुझमें भक्ति अनन्य रख, ध्याते मुझे प्रवीन ।।२५।।
ज्ञान-यज्ञ द्वारा भजें, करते मेरा ध्यान ।
एक ब्रह्म ही मानते, कोई भक्त सुजान ।।२६।।
स्वामी सेवक भाव से, कोई बनकर दास ।
भजते निशि-वासर रहें, करके दृढ़ विश्वास ।।२७।।
कोई विविध प्रकार से, भजते चित्त लगाय ।
समझो अर्जुन तत्त्व यह, बोले श्री ब्रजराय ।।२८।।
मैं ही ऋतु अरु यज्ञ मैं, मैं ही औषधि मन्त्र ।
सुधा, अग्नि, घृत, हवन हूँ, फिर भी परम स्वतंत्र ।।२९।।
जगत-पिता जग-मातु मैं, मैं ही धाता धीर ।
ओंकार ऋग्वेद हूँ, यजुः साम सुन वीर ।।३०।।
मुझको गति सबकी समझ, भर्ता जग का जान ।
स्वामी जग का पार्थ मैं, सबका वासस्थान ।।३१।।
साक्षी मैं हूँ जगत का, करूँ विश्व उपकार ।
उत्पादक मैं जगत का, करूँ स्वयं संहार ।।३२।।
सकल जगत आधार मैं, सकल जगत का बीज ।
मुझसे ही उत्पन्न हैं, सकल विश्व की चीज ।।३३।।
मैं ही तपता सूर्य बन, घन बन करता वृष्टि ।
उपजाता मैं विविधि विधि, जड़-चेतन-मय सृष्टि ।।३४।।
मैं ही जीवन जगत का, मृत्यु मुझे ही मान ।
अर्जुन मैं ही सद् असद्, परब्रह्म भगवान ।।३५।।
वेद त्रय में लिखे जो, करके कर्म सकाम ।
पीकर उत्तम सोमरस, पाप रहित सुखधाम ।।३६।।
यज्ञ आदि शुभ कर्मकर, चाहें वे सुरलोक ।
वे नर पुण्य प्रताप से, हरि भज होंय अशोक ।।३७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्रलोक को प्राप्त कर, भोगें उत्तम भोग ।
रहते हैं सुरधाम में, जब तक हो संयोग ।।३८।।
भोग-भोग सुर भोग को, पुण्य क्षीण जब होय ।
आते हैं भू-लोक में, सुर सुख जाते खोय ।।३९।।
इस प्रकार से पुरुष वे, आते बारम्बार ।
सुरपुर भोगें पुण्य से, क्षीण-पुण्य संसार ।।४०।।
मुझमें सुस्थित भक्त जो, भजें सदा निःस्वार्थ ।
उनके योग-क्षेम को, प्राप्त करूँ मैं पार्थ ।।४१।।
जो नर श्रद्धा युक्त हो, करके भक्ति सकाम ।
पूजें देवी-देवता, नित-प्रति आठों याम ।।४२।।
वे भी पूजें मुझी को, ऐ अर्जुन बलवान ।
लेकिन पूजन अविधि वह, ज्ञान-रहित लो जान ।।४३।।
सब यज्ञों को भोगता, सकल विश्व का ईश ।
सब कुछ मैं ही पार्थ हूँ, जगत पिता जगदीश ।।४४।।
लेकिन समझें तत्त्व नहिं, अज्ञानी वे लोग ।
पुनर्जन्म मिलता उन्हें, भोगें भव के भोग ।।४५।।
नियम चला आता यही, सुन अर्जुन बलवान ।
जो नर पूजें देव को, होते देव समान ।।४६।।
जो नर पूजें पितर को, पितृलोक हो प्राप्त ।
पंचभूत को पूजकर, उनमें होंय समाप्त ।।४७।।
मेरी पूजा करे जो, मुझमें ही हो लीन ।
पुनर्जन्म मम-भक्त का, होता नहीं प्रवीन ।।४८।।
पत्र, पुष्प, फल, जल चढ़ा, पूजे भक्ति समेत ।
ग्रहण करूँ उस भक्त का, प्रेम सहित जो देत ।।४९।।
यज्ञ, पुण्य अरु दान जो, करो पार्थ तुम तात ।
मुझको ही अर्पण करो, है पुनीत यह बात ।।५०।।
खाते, पीते, बैठते, उठते, चलते तात ।
सोते, जगते हर समय, धरो ध्यान दिन रात ।।५१।।
इस प्रकार सब कर्म को, अर्पण कर तू पार्थ ।
योग-युक्त संन्यास से, बन करके निःस्वार्थ ।।५२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर्म शुभाशुभ फलों से, होगे मुक्त सुजान ।
मुझको होगे प्राप्त फिर, प्रिय अर्जुन बलवान ।।५३।।
यद्यपि प्राणी मात्र में, रखता मैं सम भाव ।
नहीं किसी से बैर है, नहीं किसी का चाव ।।५४।।
पर भजते जो प्रेम से, मुझको भक्त सुजान ।
वे मुझमें रहते सदा, उनमें मैं लो जान ।।५५।।
भक्तजनों को प्रकट मैं, सदा रहूँ सुन पार्थ ।
छिपा नहीं मैं भक्त से, समझो बचन यथार्थ ।।५६।।
अगर दुराचारी पुरुष, कर मुझ पर विश्वास ।
भजे निरंतर प्रेम से, छोड़ और की आस ।।५७।।
साधू-सम समझो उसे, दृढ़ निश्चय वह धीर ।
मुझको करता प्राप्त वह, सुन अर्जुन बलवीर ।।५८।।
ऐसे भी वे भक्त जन, भजकर मुझको तात ।
शीघ्र बनें धर्मात्मा, करें धर्म की बात ।।५९।।
परम शान्ति को प्राप्त हों, सत्य समझ तू पार्थ ।
नष्ट न होता भक्त मम, मानों वचन यथार्थ ।।६०।।
अर्जुन स्त्री, वैश्य औ, शूद्र आदि जो लोग ।
तथा अन्य पापी पुरुष करके मेरा योग ।।६१।।
भव-बन्धन से मुक्त हो, पायें परमानन्द ।
निश्चय ईश्वर भजन से, छूटें भव के फन्द ।।६२।।
पापी भी भजकर मुझे, जब तरते हैं तात ।
ब्राह्मण क्षत्रिय श्रेष्ठ जो, उनकी फिर क्या बात ।।६३।।
इससे नश्वर देह पा, भजो तात दिन रात ।
श्रेष्ठ मार्ग बस यही है, यही तत्व की बात ।।६४।।
मेरे में ही मन लगा, करो भक्ति मम पार्थ ।
अमल हृदय श्रद्धा सहित, करके प्रेम यथार्थ ।।६५।।
मन-वाणी औ देह से, होकर मुझमें लीन ।
पूजन मेरा ही करो, प्यारे पार्थ प्रवीन ।।६६।।
नमस्कार मुझको करो, सदा प्रेम के साथ ।
यों पाओगे मुझे तब, बोले श्री ब्रजनाथ ।।६७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दशम् अध्याय

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

फिर बोले श्रीकृष्ण जी, सुन अर्जुन मम बैन ।
प्रेमी तू मेरा बड़ा, भजे मुझे दिन रैन ।।१।।
इससे तेरे हित कहूं, सत्य तत्त्व की बात ।
जिससे भव-बन्धन छुटें, होवे ज्ञान प्रभात ।।२।।
मेरे पूर्ण प्रभाव को, सका न कोई जान ।
सुर-मुनि-गण आदिक सभी, नहीं सके पहिचान ।।३।।
मैं हूँ आदि अनादि सुन, निर्गुण रहति-विकार ।
मैं ही जग सारा रचूँ, सबका सिरजनहार ।।४।।
जो अज अविनाशी मुझे, समझें सबका ईश ।
सब पापों से मुक्त हों, हों सहाय जगदीश ।।५।।
बुद्धि-ज्ञान को प्राप्त हो, होय मोह का नाश ।
क्षमा-सत्य-दम-शम तथा, सुख-दुख का आभास ।।६।।
नाश और उत्पत्ति का, कर लेता है ज्ञान ।
छूटे डर होता निडर, निश्चय तू यह जान ।।७।।
तुष्टि-अहिंसा-साम्य-तप, और सात्त्विकी दान ।
यश-अपयश इन सबों का, कारण मुझको जान ।।८।।
आदि भूत सप्तर्षि जो, अरु मन भी जो चार ।
मानस-सुत मेरे समझ, जिससे यह संसार ।।९।।
जो विभूति जाने पुरुष तत्त्व समझ ले पार्थ ।
योग-युक्त होते वही, संशय-रहित यथार्थ ।।१०।।
उत्पादक जग का तथा, मैं ही कारण मूल ।
ज्ञानी जन समझें यही, मेटें भव के शूल ।।११।।
मुझमें ही संलग्न हो, करते मेरी बात ।
चर्चा मेरी ही करें, तृप्त होंय सुन तात ।।१२।।
इस प्रकार जो प्रीति से, भजें मुझे निःस्वार्थ ।
मुझे प्राप्त करते वही, भक्त शिरोमणि पार्थ ।।१३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उनके मन में मैं बसूं, नासूँ, तम-अज्ञान ।
ज्ञान-दीप-दीपित करूँ, बोले श्री भगवान ।।१४।।

श्री अर्जुन बोले -
परमब्रह्म, परमात्मा, परम-पवित्र महान ।
सत्य-सनातन-दिव्य-अज, व्यापक सकल जहान ।।१५।।
ऋषि-मुनि सब कहते यही, नारद-देवल-व्यास ।
असित ऋषी पुनि आप भी, दिला रहे विश्वास ।।१६।।
केशव कहते आप जो, समझूँ उसे यथार्थ ।
देव-दनुज जानें नहीं, बोले फिर यों पार्थ ।।१७।।
हे पुरुषोत्तम जग-पिता, देव-देव, भूतेश ।
उत्पादक हे विश्व के, सब में मम-प्रवेश ।।१८।।
स्वयं जानते आप ही, अपने को हैं आप ।
हो अथाह सागर हरे ! सका न कोई नाप ।।१९।।
स्वयं विभूती आपकी, कह सकते हो नाथ ।
व्याप रहे सब जगत में, तुम ही गोपीनाथ ।।२०।।
किस प्रकार योगी करें, धरें आपका ध्यान ।
किन-किन भावों में प्रभो, होय मुझे ज्यों भान ।।२१।।
योग-विभूती फिर कहो, सहित नाथ विस्तार ।
अमृत-रूपी बचन से, सुनिये नन्दकुमार ।।२२।।
तृप्त हुआ नहिं मन मेरा, समझाओ फिर ईश ।
पूर्ण-रूप से ज्ञान दो, जगपालक जगदीश ।।२३।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -
अर्जुन से सुनकर वचन, बोले श्री भगवान ।
अन्त विभूती का नहीं, यह है बड़ी महान ।।२४।।
जो हैं मुख्य विभूतियाँ, मैं कहता हूँ पार्थ ।
समझो उनको वीरवर, जो है बात यथार्थ ।।२५।।
सबके हृदयों में मेरा, अर्जुन रहता वास ।
आदि अन्त अरु मध्य में, सब भूतों में भास ।।२६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आदित्यों में विष्णु मैं, ज्योतिर्मय मैं भानु ।
हूँ मरीचि मैं, वायु मैं, उडुगण में शशि जान ।।२७।।
सामवेद हूँ वेद में, देवों में सुरराज ।
इन्द्रिय में 'मन' मान तू, बोले श्री ब्रजराज ।।२८।।
भूतों में हूँ चेतना, समझ ज्ञान का मर्म ।
जाने जो तर जात सो, सत्य सनातन-धर्म ।।२९।।
ग्यारह रुद्रों में समझ, शंकर मेरा रूप ।
रजनीकर अरु यक्ष मैं, हूँ कुबेर धन भूप ।।३०।।
अष्ट वसू मैं अग्नि मैं, समझो पार्थ सुजान ।
सब शिखरों में समझ तू, मुझको मेरु महान ।।३१।।
गुरुओं में मुझको गुरु, देव वृहस्पति जान ।
सेनापति में कार्तिकेय, सर में सागर मान ।।३२।।
महर्षियों में भृगु मुझे, शब्दों में ओंकार ।
यज्ञों में जप-यज्ञ मैं, समझो सहित विचार ।।३३।।
स्थावर में समझो मुझे, हिमगिरि ही तुम पार्थ ।
सदा अचल रहता बना, मानों वचन यथार्थ ।।।३४।।
वृक्षों में सुन्दर महा, पीपल मुझको जान ।
ऋषियों में मैं देव ऋषि, नारद-ज्ञान-निधान ।।३५।।
गन्धर्वों में चित्ररथ, मुझको समझो वीर ।
मुनियों में हूँ कपिल मुनि, सिद्ध पुरुष मतिधीर ।।३६।।
घोड़ों में उच्चैः श्रवा, अमृत से उत्पन्न ।
गज में ऐरावत समझ, हृष्ट-पुष्ट-सम्पन्न ।।३७।।
मनुज मात्र में हूँ नृपति, सुन अर्जुन बलवान ।
तत्त्व समझ यह ज्ञान का, बोले श्री भगवान ।।३८।।
हथियारों में वज्र मैं, कामधेनु गो माहिं ।
सन्तानोत्पादक सुनो, काम मैं संशय नाहिं ।।३९।।
सर्पों में हूँ वासुकी, ऐसा निश्चय मान ।
समझो अर्जुन वीरवर, बोले श्री भगवान ।।४०।।
नागों में मैं शेष हूँ, धरे धरा का भार ।
जलचर में हूँ वरुण मैं, बोले नन्दकुमार ।।४१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पितरों में मैं अर्यमा, शासक में यमराज ।
अधिपति समझो विश्व का, हे पाण्डव सिरताज ।।४२।।
दैत्यों में प्रह्लाद हूँ, गणना में हूँ काल ।
पशु में समझो सिंह तुम, खग में गरुड़ विशाल ।।४३।।
पावन कारक में पवन, करूँ जगत को शुद्ध ।
शस्त्रधारियों में गुनो, राम विजेता युद्ध ।।४४।।
मीनों में हूँ मैं मगर, जल में मेरा राज ।
नदियों में गंगा नदी, नाशे पाप समाज ।।४५।।
आदि मध्य अरु अन्त मैं, जगती का हूँ पार्थ ।
विद्या में अध्यात्म हूँ, समझो इसे यथार्थ ।।४६।।
वादावाद विवाद में, निर्णय मेरा रूप ।
कहा कृष्ण ने इस तरह, सुन अर्जुन भट-भूप ।।४७।।
अक्षर में ओंकार हूँ, औ समास में द्वन्द ।
महाकाल हूँ काल में, धाता हूँ स्वच्छन्द ।।४८।।
भक्षण करता जगत का, मृत्यु रूप ले मान ।
लक्ष्मी, वाणी, कीर्ति-धृति, क्षमा रूप ले जान ।।४९।।
मेधा अति सुन्दर महा, सु-स्मृति रूप निधान ।
हैं नारी के रूप ये, मेरे, समझ सुजान ।।५०।।
गीतों में श्रुति साम मैं, श्रवणों का आनन्द ।
छन्दों में शुभ छन्द मैं, गायत्री का छन्द ।।५१।।
द्वादश मासों में मुझे, समझो अगहन मास ।
ऋतुओं में मधुमास हूँ, मन में भरूँ हुलास ।।५२।।
छल-छन्दों में जुआ मैं, समझो वीर सुजान ।
तेजस्वी का तेज मैं, चमकूँ सूर्य समान ।।५३।।
जयकर्ताओं में विजय, मैं हूँ समझो पार्थ ।
सात्विक पुरुषों का सुनो, सात्विक भाव यथार्थ ।।५४।।
वृष्णि-वंश में स्वयं मैं, वासुदेव लो जान ।
पाण्डव कुल में तू मुझे, वीर धनञ्जय मान ।।५५।।
मुनियों में मैं व्यास हूँ, सुन लो अर्जुन वीर ।
कवियों में मैं शुक्र हूँ, ज्ञानवान मतिधीर ।।५६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोपनीय में मौन मैं, ज्ञानी का हूँ ज्ञान ।
समझ तत्त्व यह वीरवर हे, अर्जुन बलवान ।।५७।।
सकल जगत का बीच मैं, जग का कारण मूल ।
जड़ चेतन चर अचर सब, में हूँ मत यह भूल ।।५८।।
मेरी दिव्य-विभूति का, नहीं परन्तप अन्त ।
कहा यहाँ संक्षेप से, इसे समझते सन्त ।।५९।।
हे अर्जुन संसार में, विभव युक्त श्रीमान ।
कान्तिवान अरु शक्ति युत, महावीर बलवान ।।६०।।
ये सब मेरे तेज से, प्रकटे तू ले मान ।
उत्तम जितनी वस्तुएँ, सबमें मुझको जान ।।६१।।
बहुत जानना व्यर्थ है, बोले श्री भगवान ।
सकल जगत को धार कर, सुस्थित मुझको मान ।।६२।।
माया के इक अंश से, प्रकटाता संसार ।
तत्त्व रूप समझो मुझे, बोले नन्दकुमार ।।६३।।

ग्यारहवाँ अध्याय

श्री अर्जुन बोले -
अर्जुन ने श्रीकृष्ण से, कहा सुनो भगवान ।
मुझ पर करके कृपा यह, समझाया जो ज्ञान ।।१।।
गोपनीय अध्यात्म जो, दिया ज्ञान उपदेश ।
नष्ट हुआ है मोह सब, रहा न भ्रम का लेश ।।२।।
कमल नयन ! जो कुछ कहा, सृजन, विलय-विस्तार।
अविनाशी-माहात्म्य भी, सुना जगत करतार ।।३।।
पुरुषोतम ने जो कहा, सत्य आपके बैन ।
किन्तु तेजमय ज्ञान जो, कहा कृपा के ऐन ।।४।।
मैं लखना हूँ चाहता, वही रूप भगवान ।
हो मुझको प्रत्यक्ष वह, केशव कृपा निधान ।।५।।
किन्तु ज्ञान ऐश्वर्य-युत, और शक्ति बलवीर ।
तेज युक्त उस रूप को, दिखलाओ मति धीर ।।६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यदि मैं सकता देख हूँ, अविनाशी वह रूप ।
दिखला दें कृपया मुझे, अद्‌भुत रूप-स्वरूप ।।७।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

इस प्रकार सुन प्रार्थना, अर्जुन की भगवान ।
बोले अच्छा देख ले, मोहन, कृपानिधान ।।८।।
नाना वर्णाकार के, शत-सहस्त्र शत रूप ।
परम अलौकिक तेजमय, देखो रूप अरूप ।।९।।
हे अर्जुन अब देख तू, द्वादश अदिति-कुमार ।
अष्ट वसू भी देख ले, ग्यारह रुद्र सुसार ।।१०।।
लखो अश्विनी-पुत्र दो, मुझ में ही हे पार्थ ।
देखो उञ्चासो पवन, रूप विचित्र यथार्थ ।।११।।
जो न कभी देखा वही, अर्जुन देखो रूप ।
देख परम आश्चर्यमय, सुन्दर विविध स्वरूप ।।१२।।
देख चराचर जगत को, मुझ में एकहि स्थान ।
मुझ में ही सब देख तू, अग-जग-जीव-निधान ।।१३।।
प्राकृत-नेत्रों से न तू, मुझको सकता देख ।
इससे तुझको दे रहा, दिव्य-चक्षु अनिमेष ।।१४।।
देख सकेगा पार्थ तू, मेरे रूप अनूप ।
योग-शक्ति महिमा-महा, रूप-अरूप-सरूप ।।१५।।

संजय बोले -

संजय ने फिर यों कहा, सुनिए श्री महराज ।
दुरित-दलन योगेश जो, मन मोहन ब्रजराज ।।१६।।
दिखलाया फिर पार्थ को, अद्‌भुत रूप घिशाल ।
दिव्य-महा ऐश्वर्य-युत, शोभामय नँदलाल ।।१७।।
अगणित-लोचन, मुख-विविध, भूषण बहुत प्रकार ।
अस्त्र-शस्त्र-सज्जित महा, बाहु लिए साकार ।।१८।।
वन माला-भूषित विमल, सुन्दर कंठ विशाल ।
अंगराग शुंचि वसन वर, केशर चन्दन भाल ।।१९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विकट-विराट स्वरूप वह, लख आश्चर्य महान ।
सीमा रहित अगम्य अति, शोभा रूप निधान ।।२०।।
रवि सहस्त्र का तेज जो, चमके अति द्युतिमान ।
उससे बढ़कर कान्तिमय, था वह रूप महान ।।२१।।
परम दिव्य अद्भुत महा, अकथनीय अभिराम ।
अर्जुन ने देखा वहाँ, तेज पुञ्ज, छविधाम ।।२२।।
पृथक-पृथक सब जगत के, नाना रूप अपार ।
देखा सब हरि अंग में, जिसका वार न पार ।।२३।।
अति अद्भुत आश्चर्यमय, वेश विकट विकराल ।
कृष्ण रूप वैसा लखा, अर्जुन ने उस काल ।।२४।।
अर्जुन अति विस्मित हुआ, पुलकित लख वह रूप ।
नतमस्तक गद्‌गद हृदय, बोला जय सुरभूप ।।२५।।

श्री अर्जुन बोले -
सकल देवता देह में, और भूत समुदाय ।
कमलासन-आरूढ़ विधि, शंकर रूप लखाय ।।२६।।
ऋषि समस्त हूँ देखता, उत्तम जितने नाग ।
धन्य रूप यह आपका, देख जगे मम भाग ।।२७।।
हे परमेश्वर, विश्वपति, देख रहा तव रूप ।
विविध-उदर-मुख नेत्र बहु, व्यापक रूप अनूप ।।२८।।
है अनन्त तव रूप हरि, दीख रहा सब ओर ।
आदि मध्य अरु अन्त नहिं, दिखता ओर न छोर ।२९।।
शीश मुकुट कर में गदा, चक्र सुदर्शन हाथ ।
परम प्रकाशित तेजमय, रवि-पावक सम नाथ ।।३०।।
देख रहा मैं अति गहन, शोभा-धाम, अपार ।
तुम्हें चतुर्दिशि देखता, हे हरि जगदाधार ।।३१।।
अतः आपही हैं प्रभो, अविनाशी सर्वज्ञ ।
आश्रय हैं इस जगत के, धर्मपाल मर्मज्ञ ।।३२।।
अक्षय प्रभुवर आप हैं, नहीं आदि मध्यान्त ।
सत्य सनातन पुरुष हैं, यह मेरा सिद्धान्त ।।३३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रवि-शशि लोचन आपके, अगणित बाहु विशाल ।
अग्निरूप मुख प्रज्ज्वलित, तेजोमय सब काल ।।३४।।
देख रहा वह रूप मैं, केशव जगदाधार ।
तापमान है हो रहा, जिससे सब संसार ।।३५।।
स्वर्ग धरा के बीच में, व्यापक जो आकाश ।
और दिशाओं में सभी, करते तुम्हीं प्रकाश ।।३६।।
देख भयंकर रूप यह, तीन लोक भयभीत ।
विकल सकल संसार है, लख तव रूप अतीत ।।३७।।
सकल देवगण आप में, करते सतत प्रवेश ।
बहुतेरे भयभीत हो, जपते नाम अशेष ।।३८।।
कर जोड़े कितने खड़े, करते गुण गण गान ।
सिद्ध महा ऋषि मंत्र पढ़, सुस्तुति करें बखान ।।३९।।
एकादश जो रुद्र हैं, रवि द्वादश वसु आठ ।
साध्य मरुद्गण, विश्वपति, करते महिमा पाठ ।।४०।।
और अश्विनी सुत सकल, पित्रों का समुदाय ।
यज्ञ, सिद्ध गन्धर्व सब, देखें दृष्टि लगाय ।।४१।।
विस्मित देखें आपको, निशिचर संग सब लोग ।
निहित आप में हैं सभी, जप तप संयम योग ।।४२।।
महावाहु लख आपके, बहु मुख नयन अनेक ।
अगणित कर जंघा सुपद, भूले सभी विवेक ।।४३।।
पृथ्वी से आकाश तक, देख रूप विस्तार ।
भाँति-भाँति के भव्यतम, चित्रित नेत्र अपार ।।४४।।
हूँ अशान्त धीरज नहीं, देख-देख भयभीत ।
प्रसरित आनन दीर्घ अति, कम्पित हृदय विनीत ।।४५।।
दंत-पंक्ति विकराल अति, मुख लख अग्नि समान ।
चकित भ्रमित देवेश मैं, गया दिशा का ज्ञान ।।४६।।
नहीं प्राप्त है सुख मुझे, सुनिये जगन्निवास ।
हों प्रसन्न मुझ पर प्रभो, मैं चरणों का दास ।।४७।।
भीष्म पितामह, द्रोण गुरु, कर्ण अन्य नृपराज ।
पुत्र सभी धृतराष्ट्र के, सेनापति सरताज ।।४८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और हमारे वीरवर, देख रहा हूँ नाथ ।
मुख में आते वेग से, दबे डाढ़ सब साथ ।।४९।।
दांतों में कुचले पड़े, कुछ डाढ़ों के बीच ।
पूर्ण हुए सिर दीखते, मृत्यु रही है खींच ।।५०।।
जैसे सरिता जल प्रबल, बहता सागर ओर ।
उसी भाँति सब वीर भी, पड़ते मुख बरजोर ।।५१।।
जिमि दीपक पर मोहवश, आकर जलें पतंग ।
त्यों तब मुख में जा रहे, नृपति एक ही संग ।।५२।।
हे केशव प्रज्वलित मुख, ज्योतित परम प्रकाश ।
चाट रहे सब लोक हैं, यह होता आभास ।।५३।।
करता जग को तापमय, तेजोमय यह रूप ।
परम प्रकाशित विश्व है, जिससे अखिल अनूप ।।५४।।
कृपया मुझे बताइये, उग्र रूप हो कौन ।
है प्रणाम, देवेशमय, आदि रूप है जौन ।।५५।।
प्रकृति-रूप से आपको, नहीं सका पहचान ।
नमस्कार कर पूछता, मुझे दीजिए ज्ञान ।।५६।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

इस प्रकार सुनकर वचन, अर्जुन के भगवान ।
बोले समझो पार्थ तुम, तुझे दे रहा ज्ञान ।।५६।।
लोक विनाशक काल मैं, महाकाल का काल ।
प्रवृत्त हुआ हूँ इस समय, धार रूप विकराल ।।५७।।
निश्चित इनका मरण है, आए जो भूपाल ।
प्रति पक्षी सब नाश हों, जाँय काल के गाल ।।५८।।
मेरे द्वारा ही मरे, ये पहले से जान ।
निमित्त मात्र जिनको समझ, हे अर्जुन बलवान ।।५९।।
भीष्म-द्रोण-जयद्रथ बली, तथा कर्ण बलवान ।
अन्य वीरगण जो खड़े, मरा उन्हें तू जान ।।६०।।
भय को त्यागो पार्थ तुम, इनको डालो मार ।
विजयी निःसन्देह तू, होगा हो तैयार ।।६१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संजय बोले -

संजय बोले नृप सुनो, सुन केशव के बैन ।
कम्पित-तन गद्‌गद वचन, विह्वल-मन बेचैन ।।६२।।
वचन किरीटी ने कहे, नमित-शीश कर जोर ।
बारम्बार प्रणाम कर, कातर भय से घोर ।।६३।।

श्री अर्जुन बोले -

अन्तर्यामी आपका, गाकर नाम प्रभाव ।
हर्षित होता जग यथा, डूब रहे को नाव ।।६४।।
पाते सब अनुराग हैं, दानव जाते भाग ।
नमस्कार कर सिद्धगण, पाते प्रेम-पराग ।।६५।।
ब्रह्म-रचयिता आप ही, परब्रह्म भगवान ।
सत्य सच्चिदानन्द घन, महिमा अगम महान ।।६६।।
क्यों न नमें सुर-मुनि सभी, हे अनन्त देवेश ।
परे आप सत असत से, नहिं संशय लवलेश ।।६७।।
पुरुष सनातन आप हैं, आदि देव सर्वज्ञ ।
आश्रय सारे जगत के, परमधाम मर्मज्ञ ।।६८।।
व्याप्त आप में जगत सब, सबमें रहे विराज ।
हे अनन्त सब कुछ तुम्हीं, परमधाम अधिराज ।।६९।।
वायु-अग्नि-यम-वरुण-शशि ब्रह्म पिता अभिराम ।
पूज्य प्रजापति आपको, बारम्बार प्रणाम ।।७०।।
हे समर्थ सर्वात्मा, नमस्कार सौ बार ।
वन्दनीय सम्मुख विमुख, अभिनन्दन करतार ।।७१।।
हे अनन्त सबमें रमे, व्याप्त सकल संसार ।
परम पराक्रमवान प्रभु, नमस्कार हर बार ।।७२।।
हे परमेश्वर, हे सखे, हे यादव ब्रजराज ।
समझ सखा प्रभु आपको, किये अशोभित काज ।।७३।।
मेरे द्वारा प्रेम से, अथवा रहित प्रमाद ।
हठ वश जो कुछ हो कहा, विस्मृत हो या याद ।।७४।।
किये जौन परिहास में, मैंने जान अजान ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्षमा करें अपराध सब, हे अच्युत भगवान ।।७५।।
गुरुओं के हैं गुरु प्रभो, जगत्पिता जगनाथ ।
अति प्रभाव है आपका, जगत नवाता माथ ।।७६।।
तुम समान कोई नहीं, तीन लोक में देव ।
कैसे कोई अधिक हो, तुम देवों के देव ।।७७।
अतः प्रार्थना है यही, जगपालक जगदीश ।
चरण वन्दना मैं करूँ, बार बार हे ईश ।।७८।।
पिता पुत्र-अपराध को, मित्र-मित्र के दोष ।
पति-पत्नी के भूलता, समझ सदा निर्दोष ।।७९।।
वैसे ही मेरे प्रभो, क्षमा करें अपराध ।
भूल-चूक में जो हुए, हे हरि ! ज्ञान अगाध ।।८०।।
विश्व-मूर्तिमय देखकर, अनदेखा यह रूप ।
देव परम विस्मित हुआ, हर्षित देख स्वरूप ।।८१।।
भय से है व्याकुल हृदय, देख रूप भगवान ।
चतुर्भुजी निज रूप फिर, दिखलाएँ श्रीमान ।।८२।।
मुकुट शीश धारे प्रभो, गदा चक्र ले हाथ ।
दर्शन मुझको दीजिए, लोचन होंय सनाथ ।।८३।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

इस प्रकार अर्जुन वचन, सुन बोले भगवान ।
योग-शक्ति द्वारा प्रकट, तेज-पुंज द्युतिमान ।।८४।।
अगम-अगोचर रूप मम, सुन्दर परम विशाल ।
नहीं किसी ने जो लखा, अग-जग तीनों काल ।।८५।।
वही विराट-स्वरूप मम, देख रहा तू पार्थ ।
सीमा रहित अनादि जो, सत्य स्वरूप यथार्थ ।।८६।।
भूमण्डल में है नहीं, ऐसी शक्ति महान ।
वेद यज्ञ-तप-दानकर, या कर विविध-विधान ।।८७।।
देख सके मम रूप यह, नहिं समर्थ है और ।
भाग्यवान तू ही बड़ा, भक्तों में शिरमौर ।।८८।।
देख रूप विकराल अति, अनुपमेय बेजोड़ ।
हटा विकलता त्याग मय, मूढ़भाव दे छोड़ ।।८९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनः देख वह रूप मम, प्रेम-सहित अभिराम ।
शंख-चक्र-गद-पद्म युत, चतुर्भुजी छविधाम ।।९०।।

संजय बोले-

फिर संजय ने यों कहे, सुन्दर वचन विनीत ।
हे राजन् ! सुन हरि वचन, अर्जुन हुआ अभीत ।।९१।।
दिखलाया तत्काल फिर, सौम्य चतुर्भुज रूप ।
धैर्य धनंजय को दिया, समझ सखा अनुरूप ।।९२।।

श्री अर्जुन बोले -

पुनि अर्जुन ने यों कहा, देख श्याम छविधाम ।
शांत चित्त मैं हूँ हुआ, निज स्वभाव अभिराम ।।९३।।
सुन अर्जुन के वचन यों, बोले श्री भगवान ।
अति दुर्लभ मम रूप जो, देखा पार्थ सुजान ।।९४।।
सुरगण भी इच्छा करें, दर्शन हित नित वीर ।
अनुपम रूप अनूप मम, जो देखा मतिधीर ।।९५।।
वेद तपस्या दान से, और करे जो यज्ञ ।
देख सके नहिं रूप यह, जो देखा मर्मज्ञ ।।९६।।
मेरे भक्त अनन्य जो, जान सकें वे लोग ।
सत्य परन्तप बात यह, तत्व सहित यह योग ।।९७।।
देख सकें मम रूप वे, मुझमें करें प्रवेश ।
देखा अर्जुन रूप जो, बोले श्री गोपेश ।।९८।।
कर्म करे मम हेतु जो, सब कुछ मुझको मान ।
त्याग बैर आसक्ति को, सुन पाण्डव बलवान ।।९९।।
करता मुझको प्राप्त वह, ऐसा जो अनुरक्त ।
परम तत्व यह जान ले, तू है मेरा भक्त ।।१००।।

बारहवाँ अध्याय

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन ने कर जोड़कर, कहा सुनो भगवान ।
कुछ भजते हैं सगुण को, कुछ धर निर्गुण ध्यान ।।१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन दोनों में श्रेष्ठ जो, कहो नाथ है कौन ?
नतमस्तक यह पूछकर, हुआ पार्थ तब मौन ।।२।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -
परम भक्ति श्रद्धा सहित, नित भजते जो लोग ।
सगुण उपासक हृदय से, उत्तम उनका योग ।।३।।
इन्द्रिय मन वश में करें, त्याग विषय का भोग ।
परब्रह्म है अगम जो, ध्यान धरें जो लोग ।।४।।
सर्वव्यापी ईश को, चिन्तन से जो दूर ।
सदा एक ही रस रहे, अग-जग सब थल पूर ।।५।।
उसका सुमिरन करें जो, निशि वासर निःस्वार्थ ।
वे भी मुझको प्राप्त हों, समझो तत्त्व यथार्थ ।।६।।
किन्तु कठिन यह मार्ग है, निर्गुण भक्ति सुजान ।
निराकार की प्राप्ति है, दुर्लभ महा महान ।।७।।
है दुःसाध्य सदेह को, निर्गुण करना प्राप्त ।
सुस्थिर होता ब्रह्म में, करके मोह समाप्त ।।८।।
अर्पित करके कर्म सब, हो मुझमें तल्लीन ।
जो करके एकाग्र मन, करते भक्ति प्रवीन ।।९।।
ऐसे जन को पार्थ मैं, करता भव से पार ।
भजन करे लवलीन हो, हो उसका उद्धार ।।१०।।
इससे मन मुझ में लगा, धरो बुद्धि से ध्यान ।
तब कर लोगे प्राप्त तुम, मुझको पार्थ सुजान ।।११।।
यदि मन मुझ में थिर नहीं, करो योग अभ्यास ।
शनैः-शनैः अभ्यास से, होगा परम प्रकाश ।।१२।।
यदि करना अभ्यास भी, समझ शक्ति से दूर ।
क़र्म सभी मम हेतु कर, सिद्धि प्राप्त कर शूर ।।१३।।
यह भी कर सकता न जो, तो कर मम अनुराग ।
मेरे ही हित करे तू, सकल कर्म फल त्याग ।।१४।।
क्योंकि श्रेष्ठ अभ्यास से, समझो तुम है ज्ञान ।
ध्यान ज्ञान से श्रेष्ठ है, मानो पार्थ ! प्रमान ।।१५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रेष्ठ ध्यान से समझ तू, सर्व कर्म फल त्याग ।
शक्ति त्याग से प्राप्त हो, शीघ्र जायँ दुःख भाग ।।१६।।
द्वेष रहित जन मात्र से, प्रेमी सबका होय ।
दया करे हर जीव पर, ममता देवे खोय ।।१७।।
सुख-दुख सम समझै सदा, क्षमावान मतिमान ।
अपराधी अपराध का, मन में भूले भान ।।१८।।
हानि लाभ में एक सम, सदा रहे सन्तुष्ट ।
मन वश कर योगी बने, दृढ़ निश्चय मन पुष्ट ।।१९।।
मुझको ही मन बुद्धि से, समझ करे पहिचान ।
प्रिय मुझको है भक्त वह, प्रेमी परम महान ।।२०।।
खिन्न नहीं जिससे जगत, जो न जगत से खिन्न ।
हर्ष द्वेष से मुक्त जो, समदर्शी नहिं भिन्न ।।२१।।
अति प्यारा वह भक्त है, मुझको सुन बलवान ।
मुझको ही सब में लखे, सबको एक समान ।।२२।।
अभिलाषा से रहित हो, हो पवित्र औ दक्ष ।
उदासीन दुख हीन रह, सदा भक्ति ही लक्ष्य ।।२३।।
कर्तापन का त्याग कर, जो न करे अभिमान ।
अतिशय प्रिय वह भक्त है, मुझको परम सुजान ।।२४।।
हर्षित होता जो नहीं, और न करता शोक ।
कर्म शुभाशुभ त्याग कर, पाता है मम लोक ।।२५।।
शत्रु मित्र सम मानता, और मान-अपमान ।
सुख-दुख गर्मी शीत में, रहता एक समान ।।२६।।
दूर रहे आसक्ति से, रहे भक्ति में लीन ।
वह प्यारा मुझको सदा, सेवक परम प्रवीन ।।२७।।
निन्दा औ स्तुति मान ले, जो नर एक समान ।
यथा प्राप्ति सन्तुष्ट रह, त्यागे मोह महान ।।२८।।
ममता गृह की ना करै, सुस्थिर मति जो वीर ।
वही भक्त है प्रिय मुझे, ज्ञानी जो मति धीर ।।२९।।
धर्मयुक्त अमृत सने, मैंने कहै जो बैन ।
इसको श्रद्धा से समझ, भजें मुझे दिन रैन ।।३०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अति प्रिय मुझको भक्त वे, भजें सदा निष्काम ।
समझ धनञ्जय तत्त्व यह, बोले श्री घनश्याम ।।३१।।

तेरहवां अध्याय

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

सुन कुन्ती के पुत्र तू, यह शरीर है क्षेत्र ।
जो जाने मर्मज्ञ वह, ज्ञानी-जन का नेत्र ।।१।।
ज्ञाता समझो क्षेत्र का, मुझको ही तुम-तात ।
ज्ञानी कहते हैं यही, परम तत्त्व की बात ।।२।।
ज्ञान क्षेत्र मर्मज्ञ का, परम रम्य जो ज्ञान ।
जाने उसको तत्त्व से, वही ज्ञान तू मान ।।३।।
अस्तु पार्थ संक्षेप में, कहूँ क्षेत्र का हाल ।
जो जैसा जिस भाव का, सुन कुन्ती के लाल ।।४।।
जिससे जौन प्रभाव का, कहूँ तुझे समझाय ।
मर्म-युक्त है बात यह, समझ तत्त्व चितलाय ।।५।।
पृथक्-पृथक् ऋषि जनों ने, कहा बना बंहु छन्द ।
ब्रह्म-सूत्र अगणित लिखे, युक्ति-युक्त सानन्द ।।६।।
महाभूत जो पाँच हैं, पृथ्वी, जल, आकाश ।
वायु, अग्नि के साथ मिल, जिनसे सृष्टि-विकास ।।७।।
अहंकार औ बुद्धि सँग, माया मिले प्रवीन ।
सत-रज-तम-भय-रूप की, नित्यानित्य नवीन ।।८।।
इन्द्रिय दस पहचान तू, मन ग्यारहवाँ जान ।
कर्म इन्द्रियाँ पाँच हैं, पाँच ज्ञान की मान ।।९।।
पाँच इन्द्रियों के विषय, समझो पार्थ सुजान ।
रूप, गन्ध, रस तथा हैं, शब्द-स्पर्श विधान ।।१०।।
सुख-दुख इच्छा द्वेष है, पिंड, चेतना, ज्ञान ।
धैर्य सहित है क्षेत्र यह, सहित विकार प्रमान ।।११।।
हो अभिमान अभाव जब, और दम्भ हो दूर ।
क्षमा अहिंसा, सरलता, गुरु-सेवा भरपूर ।।१२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुस्थिर-चित्त-पवित्रता, इन्द्रिय मनोनिरोध ।
समझें इसको विज्ञ नर, लेंय तत्व यह शोध ।।१३।।
भोगों में वैराग्य हो, अहंकार का त्याग ।
जन्म-मरण, दुख जरा का, नित्य विचार विभाग ।।१४।।
व्याधि-दोष भी समझ ले, इन सबके जो साथ ।
समझे जो इस तत्व को, होते वही सनाथ ।।१५।।
भार्या-पुत्र-गृहादि में, होय नहीं अनुरक्ति ।
सम हो इष्टानिष्ट में, त्याग-मोह आसक्ति ।।१६।।
मुझ में भक्ति अनन्य कर, धरे ध्यान कर योग ।
रहे एक रस मन लगा, त्याग विषय अरु भोग ।।१७।।
बसै सदा एकान्त में, पावन हो जो देश ।
दुर्जन-जन से दूर रह, त्याग प्रेम औ द्वेष ।।१८।।
अध्यात्मात्मा-ज्ञान हो, मनन करे दिन-रात ।
यही ज्ञान शुचि ज्ञान है, और वृथा सब बात ।।१९।।
और जानने योग्य जो, अमृतोपम ले जान ।
तुझे बताऊँ पार्थ सब, परम तत्त्व का ज्ञान ।।२०।।
जो अनादि सद्ब्रह्म है, सदा सदासत् पार ।
अज अविनाशी अगम है, सब जग का करतार ।।२१।।
जो जाने वह हो अमर, परब्रह्म में लीन ।
अति दुर्लभ है, किन्तु यह, पावें भक्ति प्रवीन ।।२२।।
सर्वव्यापी ब्रह्म वह, हाथ पैर चहुँ ओर ।
आँख शीश औ मुख, श्रवण, जिनका ओर न छोर ।।२३।।
सब कुछ देखे सुने सब, चले फिरे हर धाम ।
कर्ता-धर्ता जगत का, करता सारे काम ।।२४।।
ज्ञाता इन्द्रिय मात्र का, धाता जग का मूल ।
विलग इन्द्रियों से रहे, ज्यों सुगन्धि तज फूल ।।२५।।
अनासक्त भर्ता-जगत, विश्वम्भर भगवान ।
निर्गुण होते हुए भी, भोगें गुण की खान ।।२६।।
बाहर भीतर सब जगह, सर्वव्यापी मान ।
अचर सचर सब कुछ वही, सूक्ष्म विशाल महान ।।२७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है अज्ञेय अदृश्य वह, और है पास ।
रूप सूक्ष्म से सूक्ष्मतम, सरल नहीं आभास ।।२८।।
उत्पादक पालक वही, संहारक भरपूर ।
सब में व्यापक रहे पर, फिर भी सब से दूर ।।२९।।
परम ज्योति की ज्योति वह, करता परम प्रकाश ।
मायापति होते हुए, रहे न माया पास ।।३०।।
सबके हृदयों में बसा, सबमें उसका भास ।
जानें ज्ञानी जन उसे, या जानें हरि दास ।।३१।।
क्षेत्र ज्ञान संक्षेप से, कहा ब्रह्म का रूप ।
तत्त्व सहित जो भक्तगण, समझें रूप अनूप ।।३२।।
मुझको करते प्राप्त हैं, ज्ञान भक्ति आरूढ़ ।
माया से जो ग्रसित हैं, क्या समझें वे मूढ़ ।।३३।।
त्रिगुणमयी ही प्रकृति है, समझो पार्थ सुजान ।
माया औ क्षेत्रज्ञ को, समझ अनादि महान ।।३४।।
राग तथा द्वेषादि हैं, और अनेक विकार ।
पैदा सब हैं प्रकृति से, त्रिगुणात्मक संसार ।।३५।।
कार्य-करण उत्पत्ति का, हेतु प्रकृति ही जान ।
सुख-दुःखों के भोग का, हेतु जीव को जान ।।३६।।
किन्तु प्रकृति में स्थिति पुरुष, सकल निगुणमय भोग।
भोगें सभी पदार्थ को, यही जीव संयोग ।।३७।।
और गुणों का संग ही, पुनर्जन्म का हेतु ।
योनि बुरी अच्छी मिले, यही सनातन सेतु ।।३८।।
वास्तव में वह ब्रह्म ही, सुस्थिर, देह-विराज ।
है अतीत त्रिगुणात्मक, करता है सब काज ।।३९।।
साक्षी उपदेष्टा बना, सम्पत्ति देय यथार्थ ।
अनुमन्ता धाता सकल, भर्ता जग निःस्वार्थ ।।४०।।
जीव रूप से भोगता, विधि का ईश महेश ।
सत्य सच्चिदानन्द घन, सर्वोपरि सर्वेश ।।४१।।
इस प्रकार उस पुरुष को, प्रकृति गुणों के साथ ।
लेय तत्व से जान जो, होता वही सनाथ ।।४२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनर्जन्म होता नहीं, प्रकृति कर्म अनुसार ।
क्षणा-भंगुर संसार सब, है अनित्य करतार ।।४३।
सूक्ष्म बुद्धि से देखता, कोई करके ध्यान ।
कर्मयोग निष्काम कर, या देखे सज्ञान ।।४४।।
मन्द-बुद्धि सुन-सुन तरे, कर ज्ञानी सत्संग ।
करे भक्ति श्रद्धा सहित, त्याग सकल रस रंग ।।४५।।
स्थावर जंगम जगत में, जो कुछ है उत्पन्न ।
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ से, होता है सम्पन्न ।।४६।।
अस्तु प्रकृति औ पुरुष ही, सब कुछ ले तू जान ।
नाशवान संसार सब, कर अनित्य अनुमान ।।४७।।
इस प्रकार जो जान कर, नश्वर जग को मान ।
सुस्थिर समझे जगत् को, सब में उसका भान ।।४८।।
जो समझे सम भाव से, भूतों में भगवान ।
वही देखता ब्रह्म को, वही तत्त्व का ज्ञान ।।४९।।
वह नर सब में एक रस, देख रहा भगवान ।
अपने द्वारा आपको, नष्ट न करता जान ।।५०।।
हो शरीर का नाश पर, जीव अमर ले जान ।
पाता है वह परम गति, संशय नही सुजान ।।५१।।
सब कर्मों को पुरुष जो, किये प्रकृति के मान ।
गुण ही गुण में बर्तते, कर लेता है भान ।।५२।।
समज तत्त्व-गुण प्रकृतिका, वर्ते गुण-गण साथ ।
समझे अक्रिय आत्मा, देखे वही सनाथ ।।५३।।
और पुरुष यह जिस समय, कर भूतों का ज्ञान ।
न्यारे-न्यारे भाव को, किये ईश अनुमान ।।५४।।
सभी ब्रह्म संकल्प से, भूतों का विस्तार ।
जब समझे तब प्राप्त हो, निराकार क़रतार ।।५५।।
अविनाशी परमात्मा, गुणातीत भगवान ।
रहते हुए शरीर में, हैं कल्पित ले जांन ।।५६।।
सदा अकर्ता रहे वह, उसका आदि न अन्त ।
अर्जुन समझे तत्त्व यह, वही भक्त औ संन्त ।।५७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्याप्त हुआ सर्वत्र है, सूक्ष्म रूप आकाश ।
वैसे रहकर देह में है, अलिप्त अविनाश ।।५८।।
है अर्जुन, ज्यों सूर्य से, सकल प्रकाशित लोक ।
वैसे आत्मा क्षेत्र में, करता है आलोक ।।५९।।
एक ब्रह्म से जगत सब, पाता परम प्रकाश ।
जड़ चेतन में व्याप्त है, कण-कण में आभास ।।६०।।
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के, इस प्रकार के भेद ।
ज्ञान नेत्र के तत्व से, जाने छूटे खेद ।।६१।।
मुक्त प्रकृति सविकार से, होते हैं जो सन्त ।
परब्रह्म को प्राप्त कर, पाते मोद अनन्त ।।६२।।

चौदहवां अध्याय

श्री कृष्णचन्द्र बोले -
फिर बोले श्री कृष्ण यों, कहता उत्तम ज्ञान ।
समझो उसको पार्थ तुम, शान्त चित्त मतिमान ।।१।।
मुनि-जन, ऋषि-गण हैं हुए, जिसे समझ भवपार ।
परम सिद्धि को प्राप्त कर, भगवद् भक्ति अपार ।।२।
आश्रय पा इस ज्ञान का, हो न कभी उत्पन्न ।
प्रलय-काल में भी नहीं, होते वे उत्सन्न ।।३।।
मम स्वरूप को प्राप्त कर, पाते परमानन्द ।
जन्म-मरण से मुक्त हो, पड़ें न भव के फन्द ।।४।।
महद् ब्रह्ममय प्रकृति को, योनि सृष्टि की जान ।
जन्मे उससे जीव सब, हे अर्जुन बलवान ।।५।।
होते हैं उत्पन्न जो, विविध योनि से पार्थ ।
त्रिगुण-मयी माया प्रबल, जननी मान यथार्थ ।।६।।
बीज रूप मैं हूँ पिता, रचता सब संसार ।
नाना रूप अनूप मम, जिनसे जग विस्तार ।।७।।
सत-रज-तम-गुण से बँधे, जीव देह में पार्थ ।
गूढ़-तत्व यह सृष्टि का, समझो बात यथार्थ ।।८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तीनों गुण में श्रेष्ठ है, निर्विकार गुण-सत्त्व
निर्मल परम प्रकाशमय, जिसका परम महत्त्व ।।९।।
प्रेरित करता ज्ञान में, और सुखों की ओर ।
मिलता सुख उसमें कहा, जिसका ओर न छोर ।।१०।।
राग-रूप है रजोगुण, सुन अर्जुन बलवान ।
तृष्णा अरु आसक्ति को, जननी इसकी जान ।।११।।
कर्म और फल ओर वह, प्रेरित करता वीर ।
काम रजोगुण का यही, समझो है मतिधीर ।।१२।।
मोह-रूप है तमोगुण, हे अर्जुन बलवान ।
यह प्रकटे अज्ञान से, मोहों की है खान ।।१३।।
यह करता उत्पन्न है, निद्रा, अलस, प्रमाद ।
महा भयानक तमोगुण, इससे हो अवसाद ।।१४।।
सुख में करै प्रवृत्त यह, सतगुण का यह काम ।
कर्म कराये रजोगुण, बोले श्री घनश्याम ।।१५।।
ढक लेता है ज्ञान को, उपजे प्रबल प्रमाद ।
काम तमोगुण का यही, उसका यही प्रसाद ।।१६।।
रजगुण-तमगुण दाबकर, सतगुण बढ़ता जान ।
रजगुण-तमगुण दाबकर, तमगुण बढ़े, महान ।।१७।।
सतगुण-सतगुण को दबा, बढ़ता रजगुण पार्थ ।
त्रयगुण के हैं तत्त्व ये, समझो बात यथार्थ ।।१८।।
इसीलिए जिस काल में, चेतनता का बोध ।
अन्तःकरण सुइन्द्रियाँ, लेय तत्त्व यह शोध ।।१९।।
समझो तुम उस काल में, बढ़ता सतगुण वीर ।
परम तत्त्व गुण-सत्त्व यह, हे अर्जुन मतिधीर ।।२०।।
रजगुण बढ़ता सखे जब, बढ़ता लालच लोभ ।
जी भरता नहिं कर्म से, चंचलता हो क्षोभ ।।२१।।
कर्तव्याकर्तव्य का, जाय ज्ञान सब भूल ।
हो प्रमाद औ मोह भी, सकल व्याधि का मूल ।।२२।।
आलस होवे काम में, बढ़े तमोगुण ज्ञान ।
अर्जुन समझो मर्म यह, बोले श्री भगवान ।।२३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यदि सतगुण की वृद्धि में, तन से त्यागे प्रान ।
उत्तम गति उसको मिले, कहें जिसे विद्वान ।।२४।।
देह रजोगुण में तजे, पावे फिर नर देह ।
पड़ा फेर में रहे वह, धन जन वैभव नेह ।।२५।।
जब हो वृद्धि तमोगुणी, करे देह यदि त्याग ।
पशु कीटादिक-योनि पड़, जरे नरक की आग ।।२६।।
सतगुण के फल जानिए, सौख्य ज्ञान वैराग्य ।
रजगुण का फल दुःख है, तमस अशान्ति अभाग्य ।।२७।।
सत में उपजे ज्ञान सुख, रज में उपजे लोभ ।
तम से मोह प्रमाद दुख, रहता मन में क्षोभ ।।२८।।
सतगुण से ऊँचे चढ़े, पहुँचे सुर गण धाम ।
रज से मध्य निवास हो, करे विविध विधि काम ।।२९।।
तम से होती अधोगति, जाते नीचे ओर ।
योनि कीट पशु नीच की, मिले सहे दुख घोर ।।३०।।
ये सत रज तम ही करें, जग के सारे काम ।
जीव न करता कार्य कुछ, गुण का सब परिणाम ।।३१।।
परे गुणों से तत्व जो, जाने मर्म यथार्थ ।
वह पाता मम भाव को, यही ज्ञान है पार्थ ।।३२।।
त्रयगुण हैं जो देह के, उन्हें करे जो पार ।
जन्म-मरण दुख जरा से, हो जाये उद्धार ।।३३।।

श्री अर्जुन बोले -

कहा पार्थ ने फिर प्रभो, कृष्णचन्द्र भगवान ।
गुण को करता पार जो, उसकी क्या पहिचान ।।३४।।
कौन करे आचरण वह, गुण से किमि हो पार ।
बता मुझे करके कृपा, जगनायक करतार ।।३५।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

कहा कृष्ण ने समझ लो, मोह प्रवृत्ति प्रकाश ।
जिस नर को व्यापे नहीं, ऐसा हो अभ्यास ।।३६।।
सत, रज, तम त्रय गुणों का, सब माने व्यवहार ।
दुख में करे न द्वेष जो, सुख में हर्ष-विचार ।।३७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रहे उदासी की तरह, चंचलता दे त्याग ।
गुण में पड़ भूले नहीं, सुस्थिर-चित्त विराग ।।३८।।
सुख दुख को सम जान ले, निज में रह सन्तुष्ट ।
सम समझे सब बस्तुएँ, ज्ञान भाव हो पुष्ट ।।३९।।
मिट्टी, पत्थर स्वर्ण को, समझे एक समान ।
प्रिय अप्रिय निन्दा-स्तुति, यही धीर की बान ।।४०।।
रहे मान अपमान में, जिसका एकहि भाव ।
मित्र शत्रु को सम लखे, दोनों में है चाव ।।४१।।
सकल कर्म आरम्भ के, कर्तापन से दूर ।
गुणातीत कहते उसे, समझ पार्थ रणशूर ।।४२।।
सदा एक सम भक्ति से, भजे मुझे निःस्वार्थ ।
वही गुणों से पार हो, मिलता ब्रह्म यथार्थ ।।४३।।
आश्रय मुझको ही समझ, परब्रह्म ले जान ।
अविनाशी अक्षय तथा, और धर्म की खान ।।४४।।
जिसे कहें एकान्त सुख, उसका मैं आधार ।
सब कुछ मुझको समझ तू, मैं सबका करतार ।।४५।।

पन्द्रहवाँ अध्याय

फिर बोले श्री कृष्ण जी, समझो पार्थ सुजान ।
जग सारा पीपल सदृश, सखे तत्व को जान ।।१।।
परमेश्वर इस वृक्ष का, आदि पुरुष है मूल ।
ब्रह्मरूप शाखा विविध, अक्षय तरु अनुकूल ।।२।।
जिसके पत्ते वेद हैं, जो समझे यह तत्व ।
ज्ञाता समझो वेद का, समझा वही महत्व ।।३।।
जगत रूप उस वृक्ष की शाखाएँ छविमान ।
त्रिगुण रूप जल से सिंची, बढ़ी चढ़ी सुवितान ।।४।।
विषय-भोग रूपी सुधा, कोंपल के परिधान ।
देव मनुज जग जन्तु सब, शाखाएँ अनुमान ।।५।।
सब लोकों में व्याप्त हैं, जिसकी जड़ें विशाल ।
बँधे कर्म अनुसार पर, फैला सब जग जाल ।।६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किन्तु कहीं जो बात यह, मिलती नहीं सुजान ।
इस सांसारिक वृक्ष का, कठिन मर्म बलवान ।।७।।
आदि अन्त इसका नहीं, नहिं सुस्थित है ठीक ।
ज्ञान अस्त्र काटे इसे, हो तब नर निर्भीक ।।८।।
अतः खोज अच्छी करे, तब पावे निर्वान ।
जाकर आता फिर नहीं, वह सुन्दर सुस्थान ।।९।।
आदि पुरुष जो विश्व का, निर्माता है ईश ।
निश्चय ही उसकी शरण, मन से जो जगदीश ।।१०।।
मान मोह जिनका हुआ, नष्ट समझ बलवान ।
जीत लिया आसक्ति को, हुई ब्रह्म पहिचान ।।११।।
नष्ट कामनाएँ हुईं, सुख दुख से हो दूर ।
ज्ञानी जन पाते उसे, जो सबमें भरपूर ।।१२।।
नहीं प्रकाशित कर सकें, सूर्य अग्नि औ चन्द ।
स्वयं प्रकाशित रूप वह, उससे सब है मन्द ।।१३।।
प्राप्त सच्चिदानन्द कर, मिलता परमानन्द ।
फिर आता संसार नहिं, छूटें सब भव फन्द ।।१४।।
परम धाम मेरा वही, समझ धनञ्जय वीर ।
सब जल में पावन महा, ज्यों गंगा का नीर ।।१५।।
देह मात्र में जीव जो, अंश लेय मम जान ।
सत्य सनातन अंश वह, है अर्जुन बलवान ।।१६।।
मन इन्द्रिय खींचे वही, जो है माया बीच ।
यही जीव का कार्य बस, इन्द्रिय मन ले खींच ।।१७।।
जैसे मारुक संग ही, उड़ जाती है गन्ध ।
वैसे इन्द्रिय आत्मा, का समझो सम्बन्ध ।।१८।।
श्रवण-नयन-नासा-सहित, रसना सुन्दर चाम ।
इनके द्वारा ही सदा, भोगे भोग ललाम ।।१९।।
सुस्थित रहकर देह में, त्याग देह को लोग ।
अथवा गुण में युक्त हो, भोगे भोग अभोग ।।२०।।
नहीं समझते मूर्ख जन, सत्य आत्मा रूप ।
ज्ञानी जन देखें सदा, सुन्दर दिव्य स्वरूप ।।२१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

योगी जन ही यत्न से, कर लेते हैं भान ।
मूढ़ यत्न कर भी नहीं, पाते हैं पहिचान ।।२२।।
सूर्य चन्द्र औ अग्नि में, सुन्दर तेज महान ।
जगत प्रकाशित जो करे, वह मेरा ही मान ।।२३।।
धरा बीच मैं ही रहूँ, धारे सब संसार ।
मैं ही शशि बन कर करूँ, औषधि पुष्ट अपार ।।२४।।
मैं ही जठरालन बनूँ, धारे प्रान अपान ।
अन्न पचा करके करूँ, जीवन रस का दान ।।२५।।
बसता सब के हृदय में, देता सुस्मृति ज्ञान ।
संशय का छेदन करूँ, बनकर बुद्धि महान ।।२६।।
सब वेदों का वेद्य मैं, सबमें मम गुण गान ।
कर्त्ता हूँ वेदान्त का, मैं वेदज्ञ सुजान ।।२७।।
सकल सृष्टि में पुरुष दो, विद्यमान हैं पार्थ ।
नाशवान हैं भूत सब, आत्मा अमर यथार्थ ।।२८।।
इन दोनों से परे जो, परम पुरुष सो ईश ।
तीन लोक में व्याप्त वह, पाले जग जगदीश ।।२९।।
अस्तु विनाशी से परे, अविनाशी से दूर ।
लोक वेद में इसी से, पुरुषोत्तम मशहूर ।।३०।।
इस प्रकार तत्त्वज्ञ जो, पुरुषोत्तम ले जान ।
सब का ज्ञाता है वही, भजे सदा भगवान ।।३१।।
अनघ पार्थ तुझसे कहा, मैंने तत्व-ज्ञान ।
जाने इसको पुरुष जो, हो कृतार्थ धीमान ।।३२।।

सोलहवाँ अध्याय

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

फिर बोले श्री कृष्ण यों, सुन अर्जुन मतिमान ।
दैवी सम्पत्ति आसुरी, जो जैसी ले जान ।।१।।
भय नहिं रहता पास हो, अन्तः करण पवित्र ।
ध्यान योग सुस्थित रहे, देखे रूप विचित्र ।।२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दमन इन्द्रियों का करे, करे नित्य प्रतिदान ।
यज्ञ और स्वाध्याय कर, रहे नम्र तपवान ।।३।।
सत्य अहिंसा ब्रत धरे, करे नहीं वह क्रोध ।
त्यागी होकर शान्त रह, ले तत्त्वों को शोध ।।४।।
चुगुलखोर चित से न हो, सब पर रहे दयाल ।
लोलुपता से रहित हो, सादी होवे चाल ।।५।।
लज्जा से संयुक्त हो, चंचलता से दूर ।
सदा प्रेम सबसे करे, भजे ईश भरपूर ।।६।।
तेज-क्षमा-धीरज धरे, बाहर भीतर शुद्ध ।
द्रोह नहीं जनमात्र से, गर्व-रहित हो, बुद्ध ।।७।।
दैवी सम्पत्ति चिन्ह ये, समझो पार्थ सुजान ।
और आसुरी भी कहूँ, बोले श्री भगवान ।।८।।
दम्भ, दर्प, अभिमान कर, रहता भरा गुमान ।
क्रोधी हृदय कठोर अति, भरा रहे अज्ञान ।।९।।
चिन्ह आसुरी के यही, सदा रहे मन खिन्न ।
अर्जुन दोनों मार्ग ये, सदा परस्पर भिन्न ।।१०।।
दैवी सम्पत्ति मुक्ति दे, भव-बन्धन दे खोल ।
बँधे आसुरी में रहें, उन्हें पोल ही पोल ।।११।।
चर्म चढ़े सुन्दर बजे, यदपि काठ का ढोल ।
बिना चर्म निःशब्द है, रहती खाली पोल ।।१२।।
तुम लो सम्पत्ति आसुरी, रिक्त ढोल सम जान ।
दैवी सम्पति मढ़ बजे, हों प्रदेश ध्वनिमान ।।१३।।
दो प्रकार प्राणी समझ, अलग-अलग पहिचान ।
हो स्वभाव जिस मनुज का, दैवी वह धीमान ।।१४।।
जिनके गुण हों आसुरी, उनका विकट स्वभाव ।
चित्त सदा पापी रहे, नहीं पुण्य में चाव ।।१५।।
जो कर्ता कर्तव्य का, होता उन्हें न ज्ञान ।
नहिं पवित्रता सत्यता, भ्रष्ट आचरण जान ।।१६।।
कहते रहते वे सदा, यह असत्य संसार ।
ईश्वर है कर्ता नहीं, भ्रम केवल करतार ।।१७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नारी-नर के भोग से, उपजी सारी सृष्टि ।
जग सारा है भोगहित, यही एक है दृष्टि ।।१८।।
रहती ऐसी धारणा, नष्ट ज्ञान मतिमन्द ।
उग्र कर्म करते सदा, जग-नाशक निर्द्वन्द ।।१९।।
होते ऐसे पुरुष हैं, जग-विनाश के हेतु ।
नष्ट करें जग चन्द को, बने राहु औ केतु ।।२०।।
दम्भ-मान-मदयुक्त हों, रहें कामना-चूर ।
मिथ्या ही सिद्धान्त है, कर्म भ्रष्ट मगरूर ।।२१।।
रहते सदा अशुद्ध हैं, मिलती तृप्ति न शान्ति ।
इच्छुक रहते भोग के, रहे चित्त में भ्रान्ति ।।२२।।
रहें सदा चिन्ता ग्रसित, जब तक तन में प्रान ।
विषय-भोग ही में पड़े, यही सार लें मान ।।२३।।
इसको ही आनन्द वे, समझें दिन औ रात ।
रहें भोग में लिप्त वे, और न मानें बात ।।२४।।
आशा तृष्णा में पड़े, सोचें विविध प्रकार ।
जिस विधि संचित द्रव्य हो, मन में यही विचार ।।२५।।
काम-क्रोध अरु मोह में, पड़े हुए वे लोग ।
बार बार सौ बार वे, सोचें कामुक भोग ।।२६।।
नहीं न्याय अन्याय का, उनको रहे विचार ।
चंचल चित प्रतिपल रहे, नहीं ज्ञान संचार ।।२७।।
निशिदिन सोचें-यह मिला, वह पाऊँ तत्काल ।
यह धन मेरे पास है, मिलें जवाहर-लाल ।।२८।।
सदा चाह धन की रहे, नहीं बुझे यह प्यास ।
करते कर्म कुकर्म सब, लगी द्रव्य की आस ।।२९।।
मार दिया वह शत्रु है, और शत्रु दूँ मार ।
मैं ही ईश्वर रूप हूँ, हूँ स्वतंत्र करतार ।।३०।।
जो चाहूँ वह ही करूँ, हो न रोक औ टोक ।
सर्वेसर्वा हूँ स्वयं, जीतूँ सारे लोक ।।३१।।
सिद्ध सुखी बलवान मैं, मम सम जग नहिं और ।
फूले फूले वे फिरें, रहें मत्त हर ठौर ।।३२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मैं धनवान, कुलीन मैं, मम समान है कौन ?
यज्ञ करूँगा और जो, माँगे पावे तौन ।।३३।।
सुखी रहूँगा हर समय, करते यही विचार ।
भगवत् को भूले रहें, मन में रहे विकार ।।३४।।
भ्रान्ति चित्त मोहित सदा, रहें भोग में लीन ।
पड़ें नरक में पुरुष वे, जैसे जल में मीन ।।३५।।
श्रेठ समझते स्वयं को, रहें गर्व में चूर ।
धन-बल, मान मदान्ध वे, समझें निज को शूर ।।३६।।
दम्भ दिखा यज्ञादि कर, आडम्बर ही काम ।
करते थोड़ा, कहें अति, केवल चाहें नाम ।।३७।।
अहंकार बल कामना, दम्भी महा घमण्ड ।
निन्दक क्रोधी धूर्त वे, लम्पट औ उद्दण्ड ।।३८।।
द्वेष करें मुझसे सदा, नहीं उन्हें कुछ ज्ञान ।
आत्मा चीन्हें निज नहीं, रहते सदा अजान ।।३९।।
ऐसे द्वेषी पुरुष जो, पापी महा महान ।
बार-बार पटकूँ उन्हें, नीच योनि में आन ।।४०।।
जन्म आसुरी योनि में, लेते बारम्बार ।
प्राप्ति न मेरी कर सकें, हो न कभी उद्धार ।।४१।।
नीचों से भी नीच गति, उन्हें मिले त्रयकाल ।
दुख में ही रहते सदा, फँसे मोह के जाल ।।४२।।
काम, क्रोध औ लोभ ही, समझ नरक के द्वार ।
तीनों त्यागे पार्थ जो, वह हो भव से पार ।।४३।।
हे कुन्ती के पुत्र ! सुन, त्यागे जो ये तीन ।
वही नरक से छूटता, ज्ञानी परम प्रवीन ।।४४।।
काम क्रोध औ लोभ से, होते जो जनमुक्त ।
बँधते भवबन्धन नहीं, धर्म कर्म से युक्त ।।४५।।
विधि त्यागे जो शास्त्र की, करता मन की बात ।
नहिं पाता वह सिद्धि है, मिले न सुख गति तात ।।४६।।
अतः समझ लो वीरवर, कर्माकर्म महत्त्व ।
निर्णायक है शास्त्र ही, सब कुछ जिसमें तत्त्व ।।४७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर्म शास्त्र में जो लिखे, वे ही हैं सब ठीक ।
शास्त्रविहित ही कर्म कर, तू होकर निर्भीक ।।४८।।

सत्रहवाँ अध्याय

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन ने फिर यों कहा, सुनिये श्री भगवान ।
शास्त्र-युक्त यदि नहिं करे, जैसा लिखा विधान ।।१।।
श्रद्धा से करते अगर, प्रेम-भक्ति के साथ ।
यज्ञ आदि शुभ कर्म सब, सुनिये श्री ब्रजनाथ ।।२।।
निष्ठा उसकी सात्विकी, समझूँ मैं यह नाथ ।
प्रभु समझूँगा राजसी, या कि तामसी साथ ।।३।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

फिर बोले श्रीकृष्ण यों, सुन अर्जुन मतिधीर ।
होती श्रद्धा तीन हैं, स्वाभाविक ही वीर ।।४।।
सात्विक, राजस, तामसी, तीनों तीन प्रकार ।
समझो उनका तत्व तुम, कहूँ शास्त्र अनुसार ।।५।।
जैसी जिसकी आत्मा, वैसी श्रद्धा होय ।
श्रद्धामय हैं पुरुष सब, तुमसे करूँ न गोय ।।६।।
जैसी हो श्रद्धा परम, जिस नर की हे तात ।
वैसा ही बस रूप हो, उसका, जानो बात ।।७।।
उनमें जो सात्विक पुरुष देव पूजते धीर ।
पूजा राक्षस यक्ष की, करते राजस वीर ।।८।।
भूत-प्रेत को पूजते, तामस गुण के लोग ।
उन मनुजों की कामना, प्राप्त होय बस भोग ।।९।।
शास्त्र-लिखित करते नहीं, करते मनका काम ।
मन कल्पित तप घोर जो, करते, आठों याम ।।१०।।
अहंकार अरु दम्भ का, बल का हो अभिमान ।
सदा कामना पूर्ण हो, कर आसक्ति महान ।।११।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और भूत-समुदाय को, देह रूप जो पार्थ ।
कृश करते हैं जो उसे, देही मुझे यथार्थ ।।१२।।
प्रकृति आसुरी मान लो, उनकी तुम हे तात ।
तत्त्व-ज्ञान से हीन अरु, मदमाती सी बात ।।१३।।
श्रद्धा तीन प्रकार की, ज्यों अर्जुन बलवान ।
भोजन तीन प्रकार का, उसी तरह लो जान ।।१४।।
और यज्ञ तप दान भी, होते तीन प्रकार ।
कहता तुमसे पार्थ ! मैं, उन्हें सहित विस्तार ।।१५।।
आयु, बुद्धि ताकत तथा, स्वास्थ्य सौख्य औ प्रीति ।
इन्हें बढ़ाता जो रहे, रसमय परम पुनीत ।।१६।।
चिकना सुस्थिर और जो, मनका रुचिकर भोग ।
भोजन ऐसी वस्तु का, नित करते जो लोग ।।१७।।
सात्विक जन उनको समझ, करते भोजन शुद्ध ।
सदा संयमी वे रहें, होती बुद्धि प्रबुद्ध ।।१८।।
कडुवे खट्टे अति गरम, भोजन औ नमकीन ।
तीखी रूखी और जो, दाहक चीज मलीन ।।१९।।
दुःख शोक औ रोगप्रद, ऐसे जो आहार ।
खाते जन हैं राजसी, समझो भली प्रकार ।।२०।।
अर्द्धपका रसहीन जो, वासी-युत दुर्गन्ध ।
जूठा अरु अपवित्र ही, खायँ तामसी अन्ध ।।२१।।
विधिवत् करते यज्ञ हैं, करें न फल की चाह ।
समझें वे कर्तव्य को, करते धर्म निबाह ।।२२।।
वे जन सात्विक समझ तू, सात्विक उनका यज्ञ ।
सात्विक जन सबसे भले, धर्म-शास्त्र मर्मज्ञ ।।२३।।
यज्ञ करें जो दम्भ-हित, फल की आशा साथ ।
समझ राजसी यज्ञ वह, बोले त्रिभुवननाथ ।।२४।।
शास्त्र मंत्र से हीन जो, बिना दक्षिणा यज्ञ ।
बिन भोजन श्रद्धा रहित, करें तामसिक अज्ञ ।।२५।।
देव-द्विजों गुरु विज्ञ का, पूजन सरल स्वभाव ।
ब्रह्मचर्य अरु नम्रता, सदा अहिंसा चाव ।।२६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शारीरिक तप जान ये, ऐ अर्जुन ! बलवान ।
उत्तम हैं ये आचरण, बोले श्री भगवान ।।२७।।
सदा श्रवण प्रिय शान्तिदा, तथा सत्य प्रिय बात ।
करे शास्त्र स्वाध्याय चित, भजे ईश दिन रात ।।२८।।
वाणी तपमय वीर यह, उत्तम सदा महान ।
प्रखर बुद्धि को करे यह, हे अर्जुन बलवान ।।२९।।
मन प्रसन्न रहता सदा, शान्त भाव हरि भक्ति ।
अन्तः करण पवित्र अरु, भाव-शुद्धि अनुरक्ति ।।३०।।
मानस तप इसको कहें, मन से हो उत्पन्न ।
जो करते इसको रहें, रहते सदा प्रसन्न ।।३१।।
फल की त्यागे कामना, रहे सदा निष्काम ।
योगी जन तप इस तरह, करते हैं सुखधाम ।।३२।।
त्रिविध तपस्या सात्विकी, सबसे है यह श्रेष्ठ ।
करते योगी जन जिसे, समझो धर्म यथेष्ट ।।३३।।
और मान सत्कार हित, जो तप विविध प्रकार ।
करें संग पाखण्ड के, लोलुप सहित विकार ।।३४।।
वही अनिश्चित क्षणिक तप, समझ पार्थ बलवान ।
कहते राजस उसी को, बोले श्री भगवान ।।३५।।
जो तप है अज्ञानमय, हठवश पीड़ा युक्त ।
और हानिकर अन्य की, मन वाणी संयुक्त ।।३६।।
तामस वह तप तू समझ, हे अर्जुन बलवीर ।
करे मूढ़ मति नित्य प्रति, सह शारीरिक पीर ।।३७।।
दान सदा कर्त्तव्य है, समझ करें जो दान ।
देश पात्र अरु काल का, जिनको समुचित ध्यान ।।३८।।
करते रहते दान हैं, समय समझ अनुकूल ।
नहीं कामना और कुछ, देकर जाते भूल ।।३९।।
प्रत्युपकार न चाहते, और न चाहें मान ।
अर्जुन ! तू यह समझ ले, वही सात्विकी दान ।।४०।।
क्लेश अनिच्छा पूर्वक, और प्रयोजन साथ ।
एक हाथ से दान कर, चाहे दुसरे हाथ ।।४१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दान राजसी है यही, चाहे फल तत्काल ।
करें दान फल प्राप्ति पर, सुन कुन्ती के लाल ।।४२।।
और बिना सत्कार के, तिरस्कार के साथ ।
देशकाल विपरीत जो, दे अयोग्य के हाथ ।।४३।।
नीच कर्म में निरत जो, चोर, जार, बटमार ।
और सुरापी को दिया, दान जाय बेकार ।।४४।।
वही तामसी दान है, बिन समझे जो देत ।
नहीं भला यह दान है, व्यर्थ पाप है लेत ।।४५।।
ऊँ तत्सत् त्रिगुणात्मक, नाम सच्चिदानन्द ।
रचे सृष्टि आरम्भ में, वेद-यज्ञ-द्विजवृन्द ।।४६।।
ऊँ नाम कहते प्रथम, वेद विज्ञ मर्मज्ञ ।
शस्त्र विहित करते सदा, कर्म दान तप यज्ञ ।।४७।।
करते जग कल्याण हित, विविध कर्म जो नित्य ।
तत् जगदीश्वर समझ सब, जप तप दान अनित्य ।।४८।।
सत्य नाम परमात्मा, परम तत्त्व का तत्त्व ।
ॐ तत् सत् ही ईश है, समझे वही महत्व ।।४९।।
मर्म कहूँ सत् शब्द का, सुन अर्जुन बलवान ।
सत् सच है, सत् साधु है, सत् सुकर्म भगवान ।।५०।।
सुस्थित तप अरु दान में, यज्ञादिक में सत्य ।
कर्म ईश हित सत्य सब, होते और असत्य ।।५१।।
सुन अर्जुन श्रद्धा-रहित, करे हवन तप दान ।
उसका फल है व्यर्थ सा, मिथ्या कर्म महान ।।५२।।
नहीं लाभ इस लोक में, और नहीं परलोक ।
इससे चहिए हर समय, बिना रोक औ टोक ।।५३।।
चिन्तन करता रहे नर, सत्य सच्चिदानन्द ।
निरत रहे श्रद्धा सहित, त्याग कामना द्वन्द ।।५४।।
भाव सत्य निष्काम ही, जो कि शास्त्र अनुकूल ।
मन में भर उत्साह दे, कर्म न जाये भूल ।।५५।।
सत्य सच्चिदानन्द घन, कर चिन्तन दिन-रात ।
भजता हरि को ही रहे, यही तत्व की बात ।।५६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अठारहवाँ अध्याय

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन ने फिर यों कहा, सुनिये जगदाधार ।
पृथक-पृथक समझाइये, न्यास त्याग का सार ।।१।।
महा कठिन जो त्याग है, किस विधि लूँ मैं जान ।
इसी तरह संन्यास भी, जो है महा महान ।।२।।

श्री कृष्णचन्द्र बोले -

कहा कृष्ण ने समझ यों, हे अर्जुन बलवान ।
कुछ पण्डित इमि मानते, कर स्वबुद्धि अनुमान ।।३।।
फल इच्छा संयुक्त है, जितने जग के काम ।
त्याग उन्हीं का मानते, है संन्यास ललाम ।।४।।
सकल कर्म फल त्याग को, कहते वे हैं त्याग ।
ज्ञानी जन मानें इसे, समझो पार्थ विभाग ।।५।।
कहते हैं धीमान कुछ, सब कर्मों में दोष ।
इससे त्यागे कर्म सब, तब होवे सन्तोष ।।६।।
कहते हैं कुछ विज्ञ यों, यज्ञ दान तप कर्म ।
नहीं त्यागने योग्य वे, इनसे बढ़ता धर्म ।।७।।
मेरा मत सुन पार्थ तू, समझ लगाकर ध्यान ।
तीन भाँति के पार्थ तू, त्यागों को ले जान ।।८।।
सात्विक, राजस, तीसरा, तामस ले तू जान ।
तीन तरह के त्याग ये, होते हैं बलवान ।।९।।
यज्ञ, दान तप वीरवर, नहीं त्यागने योग्य ।
इनसे हृदय पवित्र हो, ये साधन के योग्य ।।१०।।
ऐसे जो शुभ कर्म सब, करे सदा निष्काम ।
छोड़े सब आसक्तियाँ, ले न कभी फल नाम ।।११।।
किन्तु नियत जो कर्म हैं, नहीं त्यागना ठीक ।
करे त्याग जो मोह से, तामस बात अलीक ।।१२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समझ दुःख कर्तव्य को, भय से दे जो छोड़ ।
त्याग राजसी वह सखे, नहिं सात्विक के जोड़ ।।१३।।
लेशमात्र होता नहीं, फल उसका ले जान ।
समझ व्यर्थ का त्याग वह, हे अर्जुन बलवान ।।१४।।
करना है कर्तव्य यह, समझ करे जो कर्म ।
फल इच्छा को त्याग कर, त्याग सात्विकी मर्म ।।१५।।
कर्म शास्त्रयुत ही करे, फल की हो नहिं चाह ।
उत्तम सात्विक त्याग यह, हो स्वधर्म निर्वाह ।।१६।।
द्वेष न अकुशल कर्म से, नहीं कुशल से राग ।
सतो गुणी ज्ञानी वही, संशय रहित सुभाग ।।१७।।
उसको ही त्यागी समझ, हे अर्जुन बलवान ।
त्याग न सकता है पुरुष सभी कर्म धीमान ।।१८।।
इससे त्यागी है वही, करे कर्म फल त्याग ।
उसको कहते वीर हैं, सदा सहित अनुराग ।।१९।।
और सकामी पुरुष के, कर्मों का फल जान ।
मरने के पश्चात् भी, मिले तीन विधि मान ।।२०।।
भला बुरा मिश्रित हुआ, फल मिलता है पार्थ ।
उन्हें कामना करे जो, है यह बात यथार्थ ।।२१।।
कर्मों का फल हो नहीं, कभी किसी भी काल ।
त्यागी नर जो कुछ करें, कर्म नहीं महिपाल ।।२२।।
समझ महाबाहो इसे, लिखे सांख्य में धीर ।
पाँच हेतु हैं सिद्धि के, तुझे बताऊँ बीर ।।२३।।
उन्हें समझ तू इस तरह, कहूँ सांख्य अनुसार ।
कर्त्ता विधि आधार अरु, करण विविध व्यापार ।।२४।।
मनसा वाचा कर्मणा, कर्म करें जो लोग ।
न्याय या कि अन्याय के, यही पाँच हैं योग ।।२५।।
इनके ही संयोग से, होते हैं सब कर्म ।
अर्जुन समझो बात यह, यही कर्म का मर्म ।।२६।।
ऐसे भी होते बहुत, जिनकी बुद्धि मलीन ।
कर्ता जाने आत्मा, दुष्ट पुरुष मति हीन ।।२७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वास्तव में समझे नहीं, अज्ञानी जन तत्त्व ।
यह रहस्यमय बात है, समझो पार्थ महत्त्व ।।२८।।
जो कर्ता समझे नहीं, अपने को मतिधीर ।
भोगों में आसक्ति नहिं, जिसकी मति वरवीर ।।२९।।
सबको हत करके रहे, निष्पापी यह जान ।
वास्तव में हन्ता नहीं, वही पुरुष धीमान ।।३०।।
हे पारथ समझो इसे, कर्म प्रयोजन तीन ।।
ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता यही, जानो तीन प्रवीन ।।३१।।
क्रिया कर्म कर्ता सहित, होते सबही कर्म ।
यही तत्त्व की बात है, यही कर्म का मर्म ।।३२।।
ज्ञान कर्म कर्ता सभी, गुण स्वभाव अनुसार ।
साँख्य शास्त्र में है लिखा, इनके तीन प्रकार ।।३३।।
उन सबको मुझसे सुनो, पूर्ण रूप से पार्थ ।
मर्म बताता हूँ तुम्हें, उनका गूढ़ यथार्थ ।।३४।।
ऐ अर्जुन जिस ज्ञान से, सब भूतों में ईश ।
निर्विकार समभाव से, अविनाशी जगदीश ।।३५।।
देखे एक समान ही, है यह सात्विक ज्ञान ।
सब ज्ञानों में श्रेष्ठ यह, महिमा अमित महान ।।३६।।
रखते जन जिस ज्ञान से, न्यारे न्यारे भाव ।
सब भूतों में देखते, नाना रूप प्रभाव ।।३७।।
इस प्रकार के ज्ञान को, कहते राजस ज्ञान ।
समता इसमें है नहीं, मध्यम इसको जान ।।३८।।
क्षणभंगुर नर देह जो, हो अवश्य ही नाश ।
उसको समझे आत्मा, फँसा मोह के पाश ।।३९।।
उसमें ही आसक्त हो, ऐसा है जो ज्ञान ।
युक्ति रहित विपरीत वह, तामस उसको जान ।।४०।।
कर्म भेद कहता सुनो, मेरे प्यारे पार्थ ।
यह भी तीन प्रकार का, समझो मर्म यथार्थ ।।४१।।
शास्त्र लिखित शुभ कर्म को, कर्तापन से दूर ।
फल इच्छा से रहित हो, राग द्वेष कर चूर ।।४२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्तम नर करते जिसे, है वह सात्विक कर्म ।
ऐसे सात्विक कर्म से, होता है शुभ धर्म ।।४३।।
अहंकार से युक्त हो, करके फल की चाह ।
पूरा करने को जिसे, मेहनत करे अथाह ।।४४।।
अर्जुन ऐसे कर्म को, कहते राजस कर्म ।
गहन परिश्रम युक्त यह, समझो इसका मर्म ।।४५।।
बिन सोचे परिणाम के, करते हैं जो कर्म ।
क्षय हिंसा सामर्थ्य का, ज्ञात न जिनको मर्म ।।४६।।
कर्म करे अज्ञानवश, मनमाने ही काम ।
ऐसे ही जो काम हैं, तामस उनका नाम ।।४७।।
जो कर्ता आसक्ति से, रहित रहे जिय जान ।
अहंकार करता नहीं, बोले वचन प्रमान ।।४८।।
धीरज अरु उत्साह से, सदा रहे संयुक्त ।
कार्य सिद्धि हो या नहीं, इन भावों से युक्त ।।४९।।
सात्विक कर्ता है वही, समझो पार्थ सुजान ।
लाभ हानि को सर्वदा, समझे एक समान ।।५०।।
युक्त सदा आसक्ति से, फल का रखता चाव ।
लोभी-हिंसक चित्त से, सदा अपावन भाव ।।५१।।
हर्ष शोक से युक्त जो, करता है ये कर्म ।
राजस उसको जान ले, यही शास्त्र का मर्म ।।५२।।
सुस्थिर जिसका मन नहीं, शिक्षा से है दूर ।
धूर्त, घमण्डी आलसी, रहे शोक में चूर ।।५३।।
नष्ट करे पर जीविका, मन में भरा दुराव ।
रहे दीर्घसूत्री सदा, तामस में ही चाव ।।५४।।
भीतर बाहर से भरा, जिसके मन में स्वार्थ ।
ऐसे कर्ता को समझ, तामस कर्ता पार्थ ।।५५।।
बुद्धि धारणा शक्ति के, समझ भेद लो तीन ।
पृथक-पृथक तुमसे कहूँ, अर्जुन सुनो प्रवीन ।।५६।।
गुनै प्रवृत्ति निवृत्ति औ, कर्तव्याकर्तव्य ।
बन्ध-मुक्तिमय-अभय को, बुद्धि सात्विकी भव्य ।।५७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समझ इसे ही पार्थ तू, सात्विक बुद्धि सुजान ।
मिलती जिसको धन्य वह, ज्ञानी महा महान् ।।५८।।
जिससे धर्माधर्म का, होता उचित न ज्ञान ।
कर्तव्याकर्तव्य का, ठीक न होता भान ।।५९।।
ऐसी राजस बुद्धि है, समझो अर्जुन वीर ।
मध्यम राजस बुद्धि है, हे प्रियवर मतिधीर ।।६०।।
समझे धर्म अधर्म को, अर्थ सभी प्रतिकूल ।
वही तामसी बुद्धि है, सर्व पाप की मूल ।।६१।।
समझ धारणा तीन अब, प्रिय अर्जुन बलवान ।
सात्त्विक राजस तामसी, बुधजन करें बखान ।।६२।।
ध्यान योग करके समझ, ऐ अर्जुन बलवान ।
रहित दोष व्यभिचार से, कर धारणा महान ।।६३।।
मन इन्द्रिय अरु प्राण की, क्रिया लेयँ जो धार ।
समझ धारणा सात्त्विकी, उसको पाण्डु कुमार ।।६४।।
पृथा पुत्र अर्जुन सुनो, करके फल की चाह ।
जो नर अति आसक्ति से, करे कर्म निर्वाह ।।६५।।
धर्म अर्थ अरु काम को, धारण करता पार्थ ।
यही राजसी धारणा, बुधजन कहें यथार्थ ।।६६।।
निद्रा भय चिन्ता प्रबल, दुःख और उन्माद ।
पार्थ न जिससे छूटते, घेरे रहें विषाद ।।६७।।
उसे धारणा तामसी कहते हैं धीमान ।
ऐसी निन्दित धारणा, करते नहीं सुजान ।।६८।।
सुख भी समझो तीन अब, होते जौन प्रकार ।
रमता मन अभ्यास से, जिसमें पाण्डुकुमार ।।६९।।
सच्चा सुख पाता जहाँ, दुख जाता है भाग ।
दुःख नष्ट होता जभी, होता हरि अनुराग ।।७०।।
विष-सा लगता प्रथम है, अमृत-सा परिणाम ।
होता बुद्धि प्रसाद से, सुख सात्त्विक है नाम ।।७१।।
इन्द्रिय भोग सँयोग से, जो होता उत्पन्न ।
पहले अमृत सा लगे, किन्तु गरल निष्पन्न ।।७२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिद्ध हुए विष ही रहे, ऐसा है परिणाम ।
कहते पण्डित जन उसे, राजस सुख है नाम ।।७३।।
मोहित करता आत्मा, निद्रा और प्रमाद ।
आलस सँग उत्पन्न हो, रहता भरा विषाद ।।७४।।
विष केवल परिणाम हो, आदि होय या अन्त ।
उसे तामसी सुख कहें, बुद्धिमान अरु सन्त ।।७५।।
धरा स्वर्ग अरु देव में, नहिं ऐसा कोई वीर ।
तीन गुणों से अलग हो, सुन अर्जुन मतिधीर ।।७६।।
सुनो परन्तप कहूँ मैं, सब वर्णों के कर्म ।
जिसका जौन प्रभाव है, समझो वह सब मर्म ।।७७।।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु, शूद्र वर्ण ये चार ।
स्वाभाविक करते सभी, कर्म स्वमति अनुसार ।।७८।।
निग्रह अन्तःकरण का, भीतर बाहर शुद्ध ।
दमन इन्द्रियों का करें, रहते सदा प्रबुद्ध ।।७९।।
क्षमा भाव अरु सरलता, आस्तिकता अरु ज्ञान ।
ईश्वर का अनुभव करें, शास्त्र परायण जान ।।८०।।
गूढ़ तत्त्व चिन्तन करें, विज्ञानी हो पार्थ ।
स्वाभाविक द्विज कर्म ये, रहें सदा निःस्वार्थ ।।८१।।
क्षत्रिय के लो कर्म अब, सभी धनञ्जय जान ।
शूर वीरता तेज अरु, धैर्य चतुरता दान ।।८२।।
छलक रहा जो हृदय में, उसके स्वामी भाव ।
मुख मोड़े नहिं युद्ध से, ऐसा हो रण चाव ।।८३।।
जन पालक हो हृदय से, प्रजा पुत्र ले जान ।
स्वाभाविक ये कर्म सब, क्षत्रिय के धीमान ।।८४।।
गौ पाले खेती करे, क्रय-विक्रय व्यापार ।
स्वाभाविक ये कर्म हैं, वैश्य वर्ण के चार ।।८५।।
शूद्र वर्ण का भी सुनो, स्वाभाविक जो कर्म ।
सब वर्णों की वह करे, सेवा पाले धर्म ।।८६।।
श्रद्धा सेवा में रहे, शूद्र कर्म यह तात ।
सेवा में मेवा भरी, सेवा सुन्दर बात ।।८७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने-अपने कर्म में, लगा रहे जो जान ।
सिद्धि प्राप्त करता वही, पाले धर्म महान ।।८८।।
कहता हूँ जो अब सुनो, सिद्धि प्राप्ति का तत्व ।
पार्थ मित्र ! तुम ध्यान से, समझो धर्म महत्व ।।८९।।
जिससे जग उत्पत्ति है, जो सब में है व्याप्त ।
पाल-पाल कर्तव्य निज, करें उसी को प्राप्त ।।९०।।
सिद्धि प्राप्त करते वही, स्वाभाविक कर कर्म ।
स्वाभाविक ही कर्म है, श्रेष्ठ धनञ्जय धर्म ।।९१।।
सब धर्मों से श्रेष्ठ है, अपना ही सुन धर्म ।
यही बात मानो सदा, यही समझ लो मर्म ।।९२।।
धर्म दूसरों के सुनो, चाहे हों वे श्रेष्ठ ।
पर माने निज धर्म ही, सब धर्मों से ज्येष्ठ ।।९३।।
निश्चित कर्म स्वभाव के, करें सदा जो लोग ।
उन्हें पाप लगता नहीं, यही कर्म का योग ।।९४।।
सुन कुन्ती के पुत्र तू, समझ गूढ़ ले बात ।
दोष-युक्त भी हो भले, सहज कर्म जो तात ।।९५।।
तो भी त्यागें उन्हें मत, करें समझ कर धर्म ।
धुआँ अग्नि के संग जिमि, दोष युक्त तिमि कर्म ।।९६।।
संग कर्म के दोष हैं, दृढ़ इनका संबंध ।
जैसे रहता समझ लो, पृथ्वी के सँग गन्ध ।।९७।।
रहित सदा आसक्ति से, ले जो मन को जीत ।
इच्छाओं से रहित हो, करे ईश की प्रीति ।।९८।।
वह भी कर संन्यास को, करे सिद्धि को प्राप्त ।
कण-कण में देखे वही, ईश रहा है व्याप्त ।।९९।।
सिद्धि प्राप्त करके सुनो, करे ब्रह्म को प्राप्त ।
ज्ञान परा निष्ठा कहूँ, जिसमें सब हैं व्याप्त ।।१००।।
कहता हूँ संक्षेप में, समझ धनञ्जय बात ।
सिद्धि ज्ञान का हेतु है, ज्ञान ब्रह्म का तात ।।य१०१।।
शुद्ध बुद्धि से युक्त हो, धर धीरज मतिधीर ।
करे नियंत्रित स्वयं को, त्याग विषय सब वीर ।।१०२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग द्वेष का नाश कर, करे वास एकान्त ।
अल्पाहारी रह सदा, मन को रक्खे शान्त ।।१०३।।
संयम रक्खे देह का, वाणी पर अधिकार ।
ध्यान योग में निरत हो, रहे विराग विचार ।।१०४।।
अहंकार बलदर्प को, मन से देवे त्याग ।
काम-क्रोध संग्रह सभी, छोड़ देय सब राग ।।१०५।।
तब कर सकता प्राप्त नर, शुद्ध सच्चिदानन्द ।
प्राप्ति ब्रह्म की हो तभी, छूटे माया फन्द ।।१०६।।
ब्रह्मज्ञानी हर्षयुत, इच्छा करे न सोच ।
सब प्राणी को सम लखे, ऊंच नीच औ पोच ।।१०७।।
वही प्राप्त करता समझ, परम भक्ति है पार्थ ।
जग जाने जगदीश मय, जगती में निःस्वार्थ ।।१०८।।
जैसा जौन प्रभाव है, मेरा लेता जान ।
भक्ति सहित पहिचान कर, तत्त्व शोध कर ज्ञान ।।१०९।।
वह मुझमें मन मग्नकर, रहे सदा आधीन ।
करता रहकर कर्म सब, होता मुझमें लीन ।।११०।।
यह सब मेरी कृपा से, पाता है मतिधीर ।
भक्तों पर करता दया, यही बानि मम वीर ।।१११।।
अतः धनञ्जय कर्म सब, अर्पण कर मम हेत ।
बुद्धि योग से युक्त हो, भजो मुझे कर चेत ।।११२।।
मुझमें चित्त लगायकर, गुनो निरन्तर तात ।
होती जब मेरी कृपा, सब संकट टल जात ।।११३।।
अहंकारवश नहिं सुनो, यदि मेरी यह बात ।
नष्ट-भ्रष्ट होगे यहाँ, सत्य बात यह तात ।।११४।।
अहंकारवश यदि न तू, करता है संग्राम ।
मिथ्या यह तेरा कथन, प्रकृति कराये काम ।।११५।।
क्षत्रियपन बस स्वयं ही, युद्ध करेगा वीर ।
हों स्वभाव के कार्य भी, चले न कुछ तदबीर ।।११६।।
स्वाभाविक जिस कार्य से, बँधा हुआ तू पार्थ ।
नहीं चाहता मोहवश, करना युक्ति यथार्थ ।।११७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करना ही यह पड़ेगा, परवश होकर काम ।
बच सकता इससे नहीं, चढ़ा शीश संग्राम ।।११८।।
हीन तपस्या पुरुष जो, बिना भक्ति जो लोग ।
नहीं सुनें जो प्रेम से, और न साधें योग ।।१२९।।
निन्दक मेरा शत्रु जो, नास्तिक बुद्धि विकार ।
इन सबसे कहना नहीं, यह जो विमल विचार ।।१३०।।
जिनमें हो ये दोष नहिं, कहना उससे पार्थ ।
परम तत्व की बात यह, सुनकर होय कृतार्थ ।।१३१।।
कहे तत्व जो गुप्त यह, मम भक्तों से वीर ।
निश्चय ही मुझमें मिले, अनायास सुन धीर ।।१३२।।
सबसे बढ़कर प्रिय मुझे, हैं वे नर सुन पार्थ ।
कहें सुनें गीता सदा, समझें तत्व यथार्थ ।।१३३।।
उनसे बढ़कर है नहीं, मम प्रिय कारक और ।
होंगे भी ऐसे नहीं, भक्तों में शिर मौर ।।१३४।।
हे अर्जुन सम्वाद यह, धर्म युक्त लो जान ।
जो समझे सद् ज्ञान यह, और करे गुणगान ।।१३५।।
उनके द्वारा जान लो, पूजित हूँगा वीर ।
ज्ञान यज्ञ द्वारा समझ, यह मेरा मत धीर ।।१३६।।
दोष-दृष्टि से रहित हो, औ हो श्रद्धावान ।
श्रवण मात्र से प्राप्त हो, शुभ लोकों में स्थान ।।१३७।।
सुना सभी एकाग्रमन, हो करके क्या पार्थ ?
मोह हुआ क्या नष्ट है, कह दो बात यथार्थ ? १३८।।

श्री अर्जुन बोले -

अर्जुन ने फिर यों कहा, हे अच्युत भगवान ।
मोह नष्ट सब हो गया, पाकर सच्चा ज्ञान ।।१३९।।
नाथ कृपा से स्थिर हुआ, नष्ट हुआ सन्देह ।
कहा करूँगा आपका, हे करुणा के गेह ।।१४०।।

संजय बोले -

इस प्रकार अद्भुत सुना, कृष्णार्जुन सम्वाद ।
रोमाँचक सम्वाद में, मिला सुधा का स्वाद ।।१४१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुना व्यास की कृपा से, गोपनीय यह योग ।
श्री मुख से श्रीकृष्ण के, ऐसा मिला सुयोग ।।१४२।।
हे अर्जुन ! श्रीकृष्ण अरु, अर्जुन का सम्वाद ।
हर्षित होता चित्त है, बार-बार कर याद ।।१४३।।
सुमिरन कर हरि रूप वह, अद्भुत महा महान् ।
होता विस्मय है बड़ा, और हर्ष श्रीमान् ।।१४४।।
योगेश्वर श्री कृष्ण हैं, जहाँ स्वयं भगवान ।
और पार्थ हैं साथ में, धनुधारी बलवान ।।१४५।।
वहीं विजय औ श्री वहीं, वहीं बिभूति महान ।
अचल नीति भी हैं वहीं, मेरा ऐसा ज्ञान ।।१४६।।
यही कहा धृतराष्ट्र से, संजय ने समझाय ।
समझ लेय जो तत्व यह, मुक्ति प्राप्त हो जाय ।।१४७।।

भीष्म पितामह का युद्ध व शर शय्या पर सोना

गीता का उपदेश सुन, बोला अर्जुन वीर ।
जो आज्ञा है आपकी, सुनिये कृष्ण सुधीर ।।१।।
वही करूँगा नाथ मैं, बोला ले धनु हाथ ।
रथ को ले चलिये प्रभो, काटूँ रिपु के माथ ।।२।।
टंकृत कर गाण्डीव धनु, किया शब्द घनघोर ।
कहा भीष्म सन्मुख चलो, हे हरि नन्द किशोर ।।३।।
पाण्डव कौरव सैन्य फिर, भिड़ी एक से एक ।
धर्म युद्ध होने लगा, सुन्दर सहित विवेक ।।४।।
पैदल से पैदल भिड़े, गज से गज असवार ।
रथी-रथी से लड़ रहे, ले भाला तलवार ।।५।।
शान्तनु सुत श्री भीष्म ने, गरज कहे यों बैन ।
सुन दुर्योधन बात तू, क्यों होता बेचैन ।।६।।
करूँ प्रतिज्ञा आज मैं, सुन ले वीर समाज ।
दश दिन तक संग्राम कर, पूर्ण करूँ यों काज ।।७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दश सहस्त्र नित प्रति रथी, कर दूँगा संहार ।
पड़े उठाना अस्त्र भी, हरि को हो लाचार ।।८।।
उठवाऊँगा शस्त्र मैं, हरि से रण के बीच ।
जो न करूँ इस कार्य को, तो गति पाऊँ नीच ।।९।।
इतना कह धनु हाथ ले, छोड़े अगणित तीर ।
पाण्डव की सब सैन्य को, क्षण में किया अधीर ।।१०।।
सूर्य अस्त तक युद्ध कर, मारे दसों हजार ।
रण स्थली के बीच में, बही रक्त की धार ।।११।।
अश्वारोही गज रथी, पैदल सैन्य अपार ।
हनी भीष्म ने क्रुद्ध हो, जिसका नहीं शुमार ।।१२।।
वीर धनञ्जय ने किया, विकट घोर संग्राम ।
विचलित कौरव दल हुआ, आई आखिर शाम ।।१३।।
लखकर सायंकाल को, बन्द हुआ संग्राम ।
गयी शिविर को सैन्य फिर, करने को विश्राम ।।१४।।
होत भोर रण में जुटे, कौरव पाण्डव वीर ।
अस्त्र-शस्त्र सज्जित सभी, लिये धनुष औ तीर ।।१५।।
छिड़ा युद्ध घमसान फिर, सुरगण चढ़े विमान ।
घोर विकट संग्राम लख, रहे अचम्भा मान ।।१६।।
जो कौतुक श्री भीष्म ने, दिखलाया उस काल ।
नहिं देखा था किसी ने, ऐसा रण विकराल ।।१७।।
तरकस से इक तीर ले, धरा धनुष पर लाय ।
खीचत धनु 'शर' सौ भये, छूटत सहस दिखाँय ।।१८।।
चलत भये दस सहस पुनि, हरे लक्ष के प्राण ।
शान्तनु सुत तुम धन्य हो, गंगा सुत बलवान ।।१९।।
देख निपुणता भीष्म की, सुरगण करें बखान ।
रुधिर नदी बहने लगी, पारावार समान ।।२०।।
हाथी घोड़े बह चले, मानो मगर महान ।
हाथ पैर नर मुण्ड थे, दिखते मत्स्य समान ।।२१।।
त्राहि-त्राहि आवाज थी; गुञ्जित चारों ओर ।
शीश भुजा कट-कट गिरें, लाखों और करोर ।।२२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महा भयंकर युद्ध था, जिसका वार न पार ।
चकित हो उठा लख जिसे, यह सारा संसार ।।२३।।
इसी तरह अर्जुन लड़े, काट रहे रिपु सैन ।
अद्भुत कौशल पार्थ के, देख थकित थे नैन ।।२४।।
सूर्य अस्त होने लगा, लाल हुआ आकाश ।
लाल-लाल सब भूमि थी, बहतीं अगणित लाश ।।२५।।
खप्पर भर-भर पी रहे, रुधिर भूत वैताल ।
नाचें गावें योगिनी, करैं शब्द विकराल ।।२६।।
भाई से भाई छुटा, छुटा मित्र से मित्र ।
पिता पुत्र से छुट गये, देखा दृश्य विचित्र ।।२७।।
संध्या समय विलोक कर, हुआ युद्ध था बन्द ।
अनी शिविर को चल पड़ी, देख गगन पर चन्द ।।२८।।
नित प्रति प्रातः काल में, जुड़े अनी रण भूमि ।
लड़ैं वीर हुँकार दै, एक-एक से झूमि ।।२९।।
क्षात्र धर्म आरूढ सब, बली एक से एक ।
धीर धनुर्धर वीरवर, भीषण भट प्रत्येक ।।३०।।
महारथी नृपराज गण, सुरपति से बलवान ।
गदा खड्ग तलवार ले, उड़ते काल समान ।।३१।।
एक-एक के प्राण ले, काटें धड़ से शीश ।
रुण्ड मुण्ड उठ-उठ लड़ैं, विकट वीर अवनीश ।।३२।।
अद्भुत कौशल कर रहे, भीष्म प्रतापी वीर ।
दौड़ रहा रथ इस तरह, जैसे दौड़े तीर ।।३३।।
घुमा रहे रथ चाक सम, कृष्णचन्द्र यदुराय ।
जहाँ धनञ्जय दिख पड़े, त्राहि-त्राहि मचि जाय ।।३४।।
कौरव पाण्डव सैन्य का, होता नित्य विनाश ।
लिये कामना विजय की, लड़ैं छोड़कर त्रास ।।३५।।
आठ दिवस नित भीष्म ने, किया युद्ध घनघोर ।
पाण्डव सेना में मचा, हाहाकार अथोर ।।३६।।
सैन्य तीन अक्षौहिणी, करी भीष्म ने नष्ट ।
पीड़ित पाण्डव को किया, देकर अतुलित कष्ट ।।३७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुमिर प्रतिज्ञा भीष्म ने, छोड़े हरि पर बान ।
रोम-रोम को बेध कर, कीन्हा लहू लुहान ।।३८।।
विचलित हरि को कर दिया, छूटी कर से रास ।
क्रोधवन्त तब थे हुए, श्री हरि रमानिवास ।।३९।।
भूल प्रतिज्ञा को गये, क्रोधवन्त भगवन्त ।
कूद पड़े उस काल फिर, रथ से श्याम तुरन्त ।।४०।।
पहिया रथ का पड़ा था, रणस्थली में एक ।
उठा लिया घनश्याम ने, भूला सभी विवेक ।।४१।।
अँगुली पर ले चक्र सम, लगे घुमाने श्याम ।
छोड़ धनुष तब भीष्म ने, हरि को किया प्रणाम ।।४२।।
और कहा कर जोड़ कर, जय-जय-जय ब्रजचन्द ।
भक्त बछल भगवान जय, मोहन आनँद कन्द ।।४३।।
स्वीय प्रतिज्ञा तोड़ कर, रक्खी मेरी टेक ।
जय माधव गोविन्द जय, तारे भक्त अनेक ।।४४।।
बड़ी पुरातन रीति है, भक्त बछल भगवान ।
भक्तों के हित भूलते, अपना मान गुमान ।।४५।।
परब्रह्म भगवान हरि, अच्युत माधव ईश ।
अशरण शरण ब्रजेश मैं, पाहि-पाहि जगदीश ।।४६।।
जग नायक मायापते, देव-देव भगवान ।
दयासिन्धु करुणायतन, रक्षक कृपा निधान ।।४७।।
विनय प्रार्थना कर रहे, गंगा सुत बलवान ।
कूद पड़ा रथ से उधर, अर्जुन वीर महान ।।४८।।
कहा कृष्ण से विनय कर, पहिया दो हरि फेंक ।
शस्त्र उठाऊँगा नहीं, कीन्हा प्रण सविवेक ।।४९।।
सुमिरण कर लो नाथ प्रण, तज दो प्रभु आवेश ।
श्री गोविन्द गोपाल हरि, त्रिभुवन पति देवेश ।।५०।।
निराकार साकार तुम, पूर्ण कला छविधाम ।
मर्यादा पति तुम प्रभो, बारम्बार नमाम ।।५१।।
शान्त हुए श्री कृष्ण तब, अर्जुन के सुन बैन ।
पहिया फेंका भूमि पर, गोविंद करुणा ऐन ।।५२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वेला सायंकाल की, सूर्य रहे थे डूब ।
लड़-लड़ कर दोनों अनी, थकी गयी थीं ऊब ।।५३।।
चलीं शिविर की ओर थी, दोनों दल की सैन ।
निकले नभ नक्षत्रगण, आई शीतल रैन ।।५४।।
पहुँच शिविर में फौज का, होने लगा शुमार ।
वीर गये सुरधाम जो, उन पर करें विचार ।।५५।।
नौ दिन लड़कर भीष्म ने, किया हाल बेहाल ।
विचलित पाण्डव हो गये, लखकर युद्ध कराल ।।५६।।
धर्मराज का जुड़ा फिर, निशि में ही दर्बार ।
महारथी सब बैठकर, करने लगे विचार ।।५७।।
भीष्म पितामह से करें, किस प्रकार संग्राम ।
करते यही विचार सब, तब बोले घनश्याम ।।५८।।
अस्त्र कला में निपुण वे, विद्या बुद्धि निधान ।
जग में उनसा धनुर्धर, और नहीं बलवान ।।५९।।
पूज्य पितामह आपके, सुनो युधिष्ठिर तात ।
वर पाकर वह अमर हैं, यह है जग विख्यात ।।६०।।
चाहें मरना स्वयं जब, तब आयेगा काल ।
बिना स्वयं इच्छा किये, होय न बाँका बाल ।।६१।।
इससे हम तुम चलें सब, अब उनके ही पास ।
युक्ति बतायेंगे वही, हमें पूर्ण विश्वास ।।६२।।
मान कृष्ण की बात सब, लेकर सँग घनश्याम ।
गये युधिष्ठिर वीरवर, सँग भ्राता छविधाम ।।६३।।
पहुँच भीष्म के शिविर में, मिले भीष्म से जाय ।
कर प्रणाम चरनन पड़े, पाण्डव सुत सब भाय ।।६४।।
नमस्कार हरि ने किया, भीषम को उस काल ।
मर्यादा पति कृष्ण जय, भक्त बछल गोपाल ।।६५।।
कहा भीष्म से कृष्ण ने, सुनो भीष्म महराज ।
दोनों पौत्र समान तव, पाण्डव अरु कुरुराज ।।६६।।
क्षात्र धर्म से आप हैं, कुरु पति के ही साथ ।
महावीर हो अमर हो, काल आपके हाथ ।।६७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आये पाण्डव आश ले, स्वयं बताओ युक्ति ।
बध करने को आपके, किसकी करें नियुक्ति ।।६८।।
जब तक जीवित आप हैं, विजय न फटके पास ।
दृढ़ निश्चय यह बात है, हम सबको विश्वास ।।६९।।
स्वयं कहा है आपने, दिया स्वयं बरदान ।
विजय प्राप्त पाण्डव करें, सुनिये दया निधान ।।७०।।
पूर्ण बात यह हो सके, कैसे सुनिये तात ।
युक्ति आपके हाथ है, स्वयं बतावें बात ।।७१।।
दुर्योधन ने किया है, इन पर अत्याचार ।
सभी जानते आप हैं, छिपा न कुछ व्यवहार ।।७२।।
बिना दया अब आपकी, किस विधि पायें राज ।
वीर धीर गम्भीर हो, हाथ आपके लाज ।।७३।।
हंसे भीष्म हरि बात सुन, औ बोले इस तौर ।
पाण्डव रक्षक आप हैं, देव देव शिर मौर ।।७४।।
होय विजय इनकी अवशि, इसमें नहिं सन्देह ।
उनसा बड़ भागी कहाँ, जिस पर हरि का नेह ।।७५।।
तुमने पूँछी मुझी से, मेरे बध की बात ।
अच्छा सुन लो कह रहा, हे हरि ! श्यामल गात ।।७६।।
धनुष लिये धनुधर अगर, मेरे सन्मुख होय ।
महाकाल तक लड़े जो, रण में जाये सोय ।।७७।।
काशिराज का पुत्र जो, पाण्डव सँग है नाथ ।
पुरुष नपुन्सक समझकर, लड़ूँ न उसके साथ ।।७८।।
खड़ा शिखण्डी को करै, मेरे सम्मुख लाय ।
यही रास्ता एक है, काम सिद्ध हो जाय ।।७९।।
जब वह सम्मुख आयगा, नहीं चलाऊँ अस्त्र ।
युक्ति यही मम मरण की, रख दूँगा मैं शस्त्र ।।८०।।
धन्य भीष्म बलवान तुम, शान्तनु सुत बलवीर ।
स्वयं बतायी मौत की, पाण्डव को तदवीर ।।८१।।
नहीं और कोई हुआ, धर्म धुरीण प्रवीण ।
तुमसा इस संसार में, जरा मरण भय हीन ।।८२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

युक्ति भीष्म से प्राप्त कर, धर्मराज महराज ।
कर प्रणाम पलटे सभी, संग में श्री ब्रजराज ।।८३।।
राजनीति मर्मज्ञ हरि, धर्म शास्त्र सर्वज्ञ ।
ज्ञाता चारों वेद के, सकल कला विद प्रज्ञ ।।८४।।
पाण्डव के रक्षक बनें, करते कार्य विचित्र ।
धनि-धनि लीला धाम धनि, निर्गुण ब्रह्म पवित्र ।।८५।।
भीष्म पितामह से स्वयं, कहलाई यह बात ।
अनहोनी होनी करी, धनि-धनि श्यामल गात ।।८६।।
निज जन के संग में रहैं, भक्त बछल गोविन्द ।
ज्यों अरविन्द समीप ही, रहता सदा मिलिन्द ।।८७।।
होत भोर रण भूमि में, बाजे बजे अनेक ।
शंख बजे दुन्दुभि बजी, सजा वीर प्रत्येक ।।८८।।
सेना नायक उस दिवस, किया शिखण्डी शूर ।
अँग रक्षक अर्जुन बने, शौर्य वीर्य भर पूर ।।८९।।
कौरव पाण्डव लड़ रहे, मन में भर उत्साह ।
एक-एक को मार कर, हुलसित होंय अथाह ।।९०।।
शीश भुजा कट-कट गिरे, ज्यों आँधी से आम ।
हाथी घोड़े कट रहे, पैदल मरे तमाम ।।९१।।
बेशुमार सेना कटी, मचा घोर संग्राम ।
पौरुष लखकर भीष्म का, थके नयन अभिराम ।।९२।।
सुर किन्नर गन्धर्व सब, चकित रहे थे देख ।
होनी होकर ही रहे, मिटे न विधि की रेख ।।९३।।
विचलित पाण्डव सैन्य थी, विचलित पाण्डव वीर ।
मघा बूँद से बरसते, श्री भीष्म के तीर ।।९४।।
विचलित लखकर सैन निज, बोले श्री घनश्याम ।
करो शिखण्डी सामने, होय सिद्धि सब काम ।।९५।।
चला शिखण्डी रथ लिये, आगे रण के बीच ।
सन्मुख जाकर भीष्म के, लिया धनुष को खींच ।।९६।।
पीछे थे अर्जुन खड़े, कर में धनु गाण्डीव ।
तीक्ष्ण बाण थे छोड़ते, व्याल समान अतीव ।।९७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देख शिखण्डी सामने, लिये धनुष औ बाण ।
कहा गरज कर भीष्म ने, सुनो वीर बलवान ।।९८।।
क्षात्र धर्म शिक्षा यही, लड़ें वीर के साथ ।
अबला क्लीब अनाथ पर, नहीं उठायें हाथ ।।९९।।
इतना कह धनु त्याग कर, हुए भीष्म निःशस्त्र ।
बोले हरि अर्जुन सुनो, छोड़ो-छोड़ो अस्त्र ।।१००।।
सर-सर 'शर' छोड़े तभी, बिंधा अंग प्रत्यङ्ग ।
आहत गंगा सुत गिरे, बदल गया रण-रङ्ग ।।१०१।।
कौरव पाण्डव कर रहे, मन में महा विषाद ।
बन्द हुआ रण घोर तब, मार काट उन्माद ।।१०२।।
धर्मराज दौड़े उधर, ले भ्रातों को साथ ।
पड़े भीष्म थे इस तरह, मानों पड़े अनाथ ।।१०३।।
रोम-रोम में थे घुसे, अगणित तीखे बाण ।
धरा वहाँ की हो रही, लथ-पथ लहू-लुहान ।।१०४।।
कर्ण द्रोण कृप साथ में, दुर्योधन बलवान ।
कौरव आये थे सभी, हो शोकार्त महान ।।१०५।।
कौरव-पाण्डव ने किया, विह्वल हृदय प्रणाम ।
आर्तनाद कर रो पड़े, खड़े साथ घनश्याम ।।१०६।।
कहा भीष्म ने सुत सुनो, लटक रहा मम माथ ।
तकिया दे ऊँचा करो, लेटूँ मैं सुख साथ ।।१०७।।
कौरव लाये तुरत ही, तकिये मृदुल अनेक ।
देख भीष्म ने कहा यह, तुमको नहीं विवेक ।।१०८।।
अर्जुन तकिया चाहिए, मुझे समय अनुसार ।
तुम्हीं करो इस कार्य को, करके सुदृढ़ विचार ।।१०९।।
अर्जुन ने तूणीर से, लिये प्रखर शर तीन ।
भेद पितामह-माथ को, तकिया दिया नवीन ।।११०।।
शर-शय्या पर पड़े थे, शान्तनु-सुत उस काल ।
वीरोचित तकिया मिला, प्रमुदित गंगा-लाल ।।१११।।
कहा भीष्म ने उसी क्षण, मुझे लगी है प्यास ।
उत्तम जल देकर मुझे, पूर्ण करो अभिलाष ।।११२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कंचन के शुचि पात्र में, कौरव लाये नीर ।
तृषा बुझे इससे नहीं, सुनो सुयोधन वीर ।।११३।।
देख धनञ्जय की तरफ, बोले भीष्म सुजान ।
शान्त करो मेरी तृषा, हे अर्जुन बलवान ।।११४।।
तुरत धरा गाण्डीव पर, तब अर्जुन ने तीर ।
फोड़ रसातल को दिया, निकला निर्मल नीर ।।११५।।
बाण गंग प्रकटी वहाँ, निज सुत लख बेचैन ।
पूर्ण तृप्त क्षण में किया, धनि गंगा की दैन ।।११६।।
पान किया जब भीष्म ने, श्री गंगा का नीर ।
क्षण में भागे दुःख सब, मिटी देह की पीर ।।११७।।
अमर भीष्म का नाम है, अमर भीष्म के काम ।
जय गंगा सुत भीष्म जय, शान्तनु-सुत अभिराम ।।११८।।
सुरगण चढ़े विमान पर, बरसाते थे फूल ।
धन्य पराक्रम आपका शूल, बन गये तूल ।।११९।।
शर शय्या पर थे पड़े, भीष्म पितामह वीर ।
कौरव पाण्डव थे खड़े, भरे नयन में नीर ।।१२०।।
अनहोनी होकर रही, होनी महा महान ।
जो चाहे होनी करे, हरि इच्छा बलवान ।।१२१।।
बस में जिन के काल था, डरते सुर गन्धर्व ।
ऐसे वीर महान पर, है भारत को गर्व ।।१२२।।
सूर्य दक्षिणायन अभी, त्यागूँ नहीं शरीर ।
पड़ा रहूँ रण भूमि में, सुन लो तुम सब वीर ।।१२३।।
अब सब जाओ शिविर को, कहे भीष्म ने चैन ।
पांडव कौरव चल पड़े, लिये हृदय बेचैन ।।१२४।।
जा-जाकर निज शिविर में, किया विकल विश्राम ।
कोई भजता शम्भु को, कोई भजता श्याम ।।१२५।।
यही जगत का खेल है, जो आया सो जाय ।
यही परस्पर कह रहे, सैनिक अरु नृपराय ।।१२६।।
ज्ञान वार्ता में हुए, फिर वे सब मन मग्न ।
लगी लालसा विजय की, यही हृदय में लग्न ।।१२७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सोये निशि में वीर सब, सोच हृदय यह बात ।
विजय भूमिका बाँधते, आया सुखद प्रभात ।।१२८।।
काल चक्र ऐसा प्रबल, आता सब का काल ।
युवा जरठ बचता नहीं, बचे न नन्हा बाल ।।१२९।।
जो जन्मा है मरे वह, रङ्क होय या भूप ।
केवल आत्मा अमर है, उसका दिव्य स्वरूप ।।१३०।।
नहीं सार संसार में, है असार संसार ।
हरि को भजता जो यहाँ, उसका बेड़ा पार ।।१३१।।
काम क्रोध मद लोभ को, छोड़ भजो गोविन्द ।
तरणी है भव सिन्धु की, जिनके पद अरविन्द ।।१३२।।
जय मायापति श्याम जय, जय-जय लीलाधाम ।
जन 'किशोर' भजता तुम्हें, नट नागर घनश्याम ।।१३३।।

श्री द्रोणाचार्य का सेनापति होना

संजय ने धृतराष्ट्र से, बतलाया सब हाल ।
भीष्म पितामह दस दिवस, लड़े युद्ध विकराल ।।१।।
वे लेटे शर-सेज पर, जिनसे डरता काल ।
होनी होकर ही रहे, होनी विकट भुवाल ।।२।।
शान्तनु सुत गंगा तनय, जो वसु के अवतार ।
जीता था जिन काम को, काल सकै नहिं मार ।।३।।
परशुराम अवतार ने, रक्खे सम्मुख अस्त्र ।
पूर्ण कला गोविन्द से, उठवाया था अस्त्र ।।४।।
वशीभूत सब काम के, मदन बड़ा बलवान ।
सुर किन्नर डरते जिसे, डरता सकल जहान ।।५।।
जीत लिया उस मदन को, धन्य भीष्म तुम धन्य ।
दृढ़ प्रतिज्ञ तुम सा बली, हुआ न जग में अन्य ।।६।।
ब्रह्मचर्य व्रत रत हुआ, जग में ऐसा कौन ।
धन्य भीष्म तुम धन्य लिख, हुई लेखनी मौन ।।७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मायापति माया प्रबल, होनी महा महान ।
होनी से बचते नहीं, सुर-मुनि जान-अजान ।।८।।
जो चाहे होनी करे, क्या अनुरक्त विरक्त ।
होती होनी सबों पर, हो अभक्त या भक्त ।।९।।
होनी ने ऐसा किया, हुए भीष्म निस्तेज ।
ऐसा दिन भी आ गया, पड़े भूमि शर-सेज ।।१०।।
दुर्योधन व्याकुल हृदय, बिगड़े होश हवाश ।
दुःशासन शकुनी सहित, गया कर्ण के पास ।।११।।
खिन्न चित्त चञ्चल हृदय, दुर्योधन भूपाल ।
कहा कर्ण से वीरवर, करो युद्ध विकराल ।।१२।।
सिवा मित्र ! अब आपके, नैया लगे न पार ।
तुम्हीं बताओ अब भला, कौन गहे पतवार ।।१३।।
सेनापति किसको करें, करे विजय जो प्राप्त ।
पाण्डव युत जो सैन्य को, करदे शीघ्र समाप्त ।।१४।।
अस्त्र उठाओ मित्रवर, करो स्वयं संग्राम ।
गाढ़े सँकरे समय पर, मित्रहिं आवें काम ।।१५।।
दुर्योधन के वचन सुन, कहें कर्ण यों बैन ।
क्यों घबराते आप हैं, क्यों होते बेचैन ।।१६।।
भरद्वाज सुत द्रोण भट, जब हैं अपने साथ ।
लड़े काल के साथ वे, जीत सकें सुरनाथ ।।१७।।
सेनापति पद के लिए, उनसा और न वीर ।
विजय प्राप्त होगी अवशि, मन में धारो धीर ।।१८।।
बातों में बीती निशा, आखिर आया भोर ।
दोनों सेना चल पड़ीं, युद्ध भूमि की ओर ।।१९।।
कर्ण दुशासन शकुनि अरु, दुर्योधन नृपराज ।
शल्य जयद्रथ आदि हैं, संग सुभट सरताज ।।२०।।
गये द्रोण के शिविर में, सब मिलकर एक साथ ।
सबने किया प्रणाम तब, धर कर भू पर माथ ।।२१।।
और कहा तब कर्ण ने, सुनिये श्री गुरुदेव ।
नाविक बनकर आपही, कौरव-नैया खेव ।।२२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हम सब सेवक आपके, आप हमारे नाथ ।
विजय दिलायें आपही, विजय आपके हाथ ।।२३।।
सेनापति ऋषिवर बनो, चहते यह हम लोग ।
श्रेष्ठ धनुर्धर आपही, हैं इस पद के योग ।।२४।।
दुर्योधन है आपका, शिष्य चरण का दास ।
सेनापति बनकर प्रभो, पूर्ण करो अभिलाष ।।२५।।
इसी तरह विनती करी, सबने मिलकर साथ ।
कौरव दल के आपही, सर्वे सर्वा नाथ ।।२६।।
ऋषिवर द्रोणाचार्य ने, कहे गर्ज यों बैन ।
दुर्योधन धीरज धरो, मत हो यों बेचैन ।।२७।।
सेनापति मैं बनूँगा, करूँ घोर संग्राम ।
सन्मुख पाण्डव कृष्ण के, मारूँ सैन्य तमाम ।।२८।।
निज पौरुष भर लडूँ मैं, रक्खो मन परतीत ।
हानि-लाभ हरि हाथ है, होय धर्म की जीत ।।२९।।
शंख फुँके बाजे बजे, गरजे कौरव वीर ।
चन्दन अक्षत पुष्प फल, लेकर निर्मल नीर ।।३०।।
दुर्योधन निज हाथ से, पूजन कर सानन्द ।
सेनापित गुरुवर हुए, वेद पढ़ैं, द्विज वृन्द ।।३१।।
कौरव दल हर्षित महा, प्रमुदित सारी सैन ।
कहे सुयोधन ने तभी, सुनो वीर मम बैन।।३२।।
कर्ण दुशासन् शकुनि अरु, कृतवर्मा बलवान ।
अस्त्र शस्त्र सज्जित सभी, लेकर धनु औ बान ।।३३।।
कृपाचार्य को साथ ले, रहे द्रोण के पास ।
अँग रक्षक बन कर रहें, रिपु का करें विनास ।।३४।।
और वीर सब युद्ध कर, पाण्डव को लें जीत ।
क्षत्री का रण धर्म है, उत्तम दिव्य पुनीत ।।३५।।
व्यूह रचा गुरु द्रोण ने, अद्भुत परम विशाल ।
शर-सर-सर छोड़े विकट, मानो व्याल कराल ।।३६।।
शीश भुजा कट-कट गिरे, बही रुधिर की धार ।
मार-मार की धुनि विकट, लड़ें, वीर ललकार ।।३७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धनुधर द्रोणाचार्य के, सम्मुख जो रिपुआय ।
क्षण में मूर्छित होय वह, या सुर पुर को जाय ।।३८।।
धनु विद्या कौशल महा, दिखलाये द्विजनाथ ।
चमत्कार अद्‌भुत प्रबल, करते थे निज हाथ ।।३९।।
तरकस से कब ले लिया, रक्खा कब धनु तीर ।
नहिं दिखता था किसी को, लखें अचम्भित वीर ।।४०।।
कभी व्याल से बाण हैं, लगते कटते शीश ।
अर्द्धचन्द्र से हैं कभी, लगे गिरे अवनीश ।।४१।।
भाले से तीखे प्रबल, महा नुकीले बान ।
हाथी घोड़े के लगे, होते लहू-लुहान ।।४२।।
कभी कदा से तीर लग, रथ हों चकनाचूर ।
चलना रखना धनुष पर, देख न पावें शूर ।।४३।।
गिरते मनों अकाश से, लगते हरते प्रान ।
सुर नर कहते हैं यही, धन्य द्रोण बलवान ।।४४।।
छिन्न-भिन्न क्षण में करी, पाण्डव की सब सैन ।
अश्वारोही गजरथी, सबको कर बेचैन ।।४५।।
कर्ण दुशासन कृप लड़े, छोड़े तीखे तीर ।
अश्वत्थामा, शल्य अरु, कृतवर्मा रणवीर ।।४६।।
स्वयं सुयोधन लड़ रहा, जयद्रथ बली प्रचण्ड ।
मार्तण्ड दिन में छिपे, शर दिखते नवखण्ड ।।४७।।
इसी तरह अर्जुन लड़े, धृष्टद्युम्न रणधीर ।
भीम नकुल सहदेव अरु, द्रुपद पुत्र बलवीर ।।४८।।
सात्यकि, वीर बिराटवर, करें घोर संग्राम ।
महाबली अभिमन्यु भी, करता अद्‌भुत काम ।।४९।।
कौरव पाण्डव वीर सब, लड़ें एक से एक ।
सभी बली धनुधर सभी, शूर वीर प्रत्येक ।।५०।।
लिये लालसा विजय की, लड़ते काल समान ।
सुर, किन्नर, गन्धर्व रण, देखें चढ़े विमान ।।५१।।
लड़ते-लड़ते आ गया, आखिर सायंकाल ।
युद्ध बन्द तब हो गया, लौटे वीर भुवाल ।।५२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहता जन समुदाय था, कहते सुर गन्धर्व ।
धन्य द्रोण धनुधर प्रबल, यही कहें मिल सर्व ।।५३।।
पाण्डव कौरव सैन्य फिर, चली शिविर की ओर ।
बन्द हुआ उस काल फिर, मार काट का शोर ।।५४।।
प्रमुदित कौरव वीर सब, देख द्रोण का युद्ध ।
विजय अवशि अब प्राप्त हो, समझे यही प्रबुद्ध ।।५५।।
कौरव सेना शिविर में, पहुँच गई जिस काल ।
कर्ण शकुनि को साथ ले, दुर्योधन भूपाल ।।५७।।
गया द्रोण के शिविर में, जाकर किया प्रणाम ।
और कहा इस तौर फिर, करिये ऐसा काम ।।५८।।
टले व्याधि जिससे सभी, सुनिये गुरु कृपाल ।
कैद युधिष्ठिर को करें, मम हित दीनदयाल ।।५९।।
कर सकते हैं आप ही, कार्य सिद्धि कुरुराज ।
पकड़ युधिष्ठिर जाय जब, बन जाये सब काज ।।६०।।
पाण्डव के बस प्रेम को, मन से देंय भुलाय ।
तभी कार्य यह सिद्ध हो, सुनिये श्री द्विजराय ।।६१।।
करें आप संग्राम अब, तज कर शिशु का मोह ।
यह सुन द्रोणाचार्य के, हुआ हृदय में छोह ।।६२।।
और कहा तब क्रुद्ध हो, सुन दुर्योधन बात ।
कृष्ण धनञ्जय जीतना, सहज नहीं है तात ।।६३।।
अर्जुन के रहते हुए, होय न बाँका बाल ।
कैद युधिष्ठिर होंय नहिं, मानो सत्य भुवाल ।।६४।।
संग युधिष्ठिर से सुनो, अर्जुन हों जब दूर ।
धर्मराज मैं पकड़ लूँ, सुन लो तुम सब शूर ।।६५।।
जब तक अर्जुन कृष्ण हैं, धर्मराज के संग ।
नहिं पकड़े वे जायँगे, लड़े काल जो जंग ।।६६।।
वीर त्रिगर्ती थे सभी, महाबली बलवान ।
बोल उठे बस गरज कर, सुनिये द्रोण सुजान ।।६७।।
करें प्रतिज्ञा हम सभी, लड़ें धनञ्जय साथ ।
होत भोर संग्राम में, दिखलायें निज हाथ ।।६८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्जुन को ले जायेंगे, रणस्थली से दूर ।
अवशि मार डालें उसे, कहा सुशर्मा शूर ।।६९।।
पाँचों भाई हम लड़ें, लेकरअपनी सैन ।
पकड़ युधिष्ठिर आप लें, कहे गरज कर बैन ।।७०।।
सभी त्रिगर्तों ने किया, प्रण मिलकर उस ठाम ।
कल अर्जुन को हम हनें, करें विकट संग्राम ।।७१।।
अग्नि सूर्य साखी करें, सुनो हमारी टेक ।
मारें या मर जायेंगे, हम त्रिगर्त प्रत्येक ।।७२।।
वीर सुशर्मा भ्रात सब, सुरपति से बलवान ।
सुरथ सुधर्मा शूर भट, योधा सधनु महान ।।७३।।
धनुधर वीर सुबाहु अति, बल में बली अथाह ।
लड़ने को रण काल से, मन में उमंग उछाह ।।७४।।
वीर मालवा देश के, नारायण, गोपाल ।
महाबली बलवान वे, दोनों विकट कराल ।।७५।।
कहे गरज कर बैन यों, सुनलो कौरव वीर ।
मरे धनंजय अवशि अब, धारो मन में धीर ।।७६।।
इसी तरह कहते सभी, बढ़-बढ़ कर नृप बात ।
सुन-सुन कुरुपति मग्नहों, बीत रही थी रात ।।७७।।
प्रात हुआ सेना चली, समरस्थल की ओर ।
शंख ध्वनि से व्योम तक, शोर हुआ घनघोर ।।७८।।
गुरुवर द्रोणाचार्य ने, अद्‌भुत खींचा चित्र ।
गरुड़ व्यूह रचना करी, चकित देख रिपुमित्र ।।७९।।
पाण्डव की सेना खड़ी, लिये धनुष तलवार ।
व्यूह विकट रचकर प्रबल, अर्ध मंडलाकार ।।८०।।
दोनों दल की सैन्य के, सैनिक भरे उमङ्ग ।
लड़ने मरने को खड़े, फड़क रहे थे अङ्ग ।।८१।।
अर्जुन को ललकार कर, गरज कहे यों बैन ।
नृप त्रिगर्त आगे बढ़ा, पीछे उसकी सैन ।।८२।।
वीर धनंजय तुम करो, हम सबसे संग्राम ।
बड़े बली धनुधर बड़े, बड़ा तुम्हारा नाम ।।८३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आज देखना है हमें, तुम कितने बलवान ।
पता चलेगा युद्ध का, हरें तुम्हारे प्रान ।।८४।।
क्रोधवन्त अर्जुन हुए, सुन त्रिगर्त की बात ।
धृष्टद्युम्न अरु सत्यजित, योधा जग विख्यात ।।८५।।
उनसे बोले रहे तुम, धर्मराज के पास ।
स्वयं त्रिगर्तों से लडूँ, इनका करूँ विनाश ।।८६।।
भीम नकुल सहदेव अरु, द्रुपदराज महराज ।
सात्यकि वीर घटोत्कच, अरु विराट बलराज ।।८७।।
धर्मराज महराज के, सँग रहकर सब वीर ।
रक्षक बन रक्षा करो, होना नहीं अधीर ।।८८।।
और कहा श्री कृष्ण से, अर्जुन ने तत्काल ।
चलो त्रिगर्तों की तरफ, रथ लेकर गोपाल ।।८९।।
रण से दक्षिण ओर को, थे त्रिगर्त बलवीर ।
रथ मोड़ा उस ओर हरि, अर्जुन छोड़े तीर ।।९०।।
प्राण हथेली पर लिए, लड़े सभी बलवान ।
रथी सहस दस वीर सब, गज पर चढ़े जवान ।।९१।।
अश्वारोही शूर भट, पैदल सैन्य अपार ।
त्रिगर्त मालवा वीर वर, करें युद्ध ललकार ।।९२।।
वीर सुशर्मा ने किया, युद्ध विकट घनघोर ।
सिंह नाद करता प्रबल, घन गर्जन का शोर ।।९३।।
मघा विन्दु से शर बरस, गरजे सिंह दहाड़ ।
सेना हाथी की बड़ी, मानो खड़े पहाड़ ।।९४।।
छोड़ रहे थे बान सब, अर्जुन पर एक साथ ।
सब शर काटे बीच में, अर्जुन ने निज हाथ ।।९५।।
वीर धनंजय कर रहे, अनुपम अद्‌भुत कार्य ।
शत्रु सहस्रों से लड़े, वीर धनंजय आर्य ।।९६।।
कृष्ण कला दिखला रहे, रथ हाँके इस तौर ।
चहुँ दिशि अर्जुन दिखपड़े, रिपु को दिखें न और ।।९७।।
पूरब में अर्जुन खड़े मार रहे हैं सैन ।
छिन में पश्चिम दिखपड़ें, रिपु होते बेचैन ।।९८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्तर दक्खिन में दिखें, छिन में अर्जुन वीर ।
शीश भुजा कट-कट गिरें, बरसाते यों तीर ।।९९।।
छोड़ा मोहन अस्त्र फिर, मोहित की रिपु सैन ।
अर्जुन ही दिखने लगे, हुए शत्रु बेचैन ।।१००।।
समझ धनञ्जय लड़ रहे, आपस में सब वीर ।
अपने को आपो हने, ऐसे हुए अधीर ।।१०१।।
भ्रात सुशर्मा चार तब, लड़े धनंजय साथ ।
अस्त्र-शस्त्र सज्जित सभी, लिए तीर धनु हाथ ।।१०२।।
इधर त्रिगर्तों से लड़े, स्वयं धनंजय वीर ।
उधर द्रोण बरसा करें, पाण्डव पर बहु तीर ।।१०३।।
गरुड़ व्यूह मुख पर खड़े, लड़ें द्रोण बलवान ।
व्यूह शीश पर भ्रात संग, दुर्योधन मतिमान ।।१०४।।
नेत्र व्यूह के बने वह, दोनों धुनधुर वीर ।
कृपाचार्य बलवान अति, कृत वर्मा रणधीर ।।१०५।।
कलिंग देश के भूपवर, सिंहल के बलवान ।
पूरब के राजे सभी, अमरक वीर महान ।।१०६।।
बली दशेटक शक बली, काम्बोज नृपराज ।
यवन शूर केकय बली, सूरसेन महाराज ।।१०७।।
भद्र देश के भट बली, भद्र सुभट भूपाल ।
ग्रीवा में वह व्यूह के, खड़े हुए उस काल ।।१०८।।
सोमदत्त अरु शल्य संग, भूरश्रवा रणधीर ।
ब्राह्वीक संग यह सभी, दक्षिण लड़ें सुवीर ।।१०९।।
अश्वत्थामा साथ में, बिन्दु खड़ा बलवान ।
और खड़ा अनुबिन्द भी, लिये धनुष औ बान ।।११०।।
वीर सुदक्षिण संग में, खड़ा सूर कम्बोज ।
अम्बट देशी नृप बली, काल सरिस बल ओज ।।१११।।
शकुनि वीर गान्धार सब, खड़े अनेकों वीर ।
कर्ण खड़ा था पूँछ पर, महाबली भरपूर ।।११२।।
ऋषिवर द्रोणाचार्य सँग, खड़े अनेकों वीर ।
पाण्डव पर सब छोड़ते, भीषण तीखे तीर ।।११३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बढ़ते जाते द्रोण थे, करते रण विकराल ।
विविध भाँति के शर प्रचुर, छोड़ रहे ज्यों व्याल ।।११४।।
पकड़ युधिष्ठिर लेयँगे, ठानें मन में ठान ।
होनी जो होकर रहे, विधि का यही विधान ।।११५।।
पाण्डव के मुख द्वार पर, धृष्टद्युम्न बलवान ।
अस्त्र शस्त्र सज्जित खड़ा, योधा काल समान ।।११६।।
धर्मराज से यों कहा, द्रुपद पुत्र बलवान ।
रोकूँ द्रोणाचार्य को, मारूँ सैन्य महान ।।११७।।
निर्भय रह कर आप नृप, देखें मम संग्राम ।
यह कहता आगे बढ़ा, गया द्रोण के ठाम ।।११८।।
अगणित तीखे शरों से, दिया द्रोण को ढाँप ।
कौरव विचलित हो गये, गये हृदय में काँप ।११९।।
छिन्न-भिन्न क्षण में करी, कौरव सैन तमाम ।
कौरव सेना में मचा, भगदड़ औ कोहराम ।१२०।।
दुर्योधन आगे बढ़ा, सँग में उसके भ्रात ।
धृष्टद्युम्न से यों कहा, बहुत किया उत्पात ।।१२१।।
अब मारूँगा मैं तुझे, कर मुझसे संग्राम ।
जान पड़ेगा अब तुझे, पड़ा किसी से काम ।।१२२।।
रोम रोम वेधित किया, छोड़ अनोखे तीर ।
ध्वज काटा, घोड़े हने, दुर्योधन बलवीर ।।१२३।।
पाण्डव की सब सैन्य को, क्षण में किया अधीर ।
शर वर्षा ऐसी करी, दुर्योधन रण धीर ।।१२४।।
सात्यकि और विराट पर, छोड़े अगणित बान ।
नकुल और सहदेव को, कीन्हा लहू लोहान ।।१२५।।
पुत्र द्रोपदी के सभी, द्रुपद सुभट बलवान ।
शर दुर्योधन ने हने, सब पर ब्याल समान ।।१२६।।
मुखिया पाण्डव वीर जो, सब पर छोड़े तीर ।
अट्टहास कर विकट ध्वनि, गरजा कुरुपति वीर ।।१२७।।
बढ़ता पाण्डव ओर फिर, चला सुयोधन शूर ।
काल बना रिपु सैन्य का, मद में अपने चूर ।।१२८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किया मान मर्दन विकट, पाण्डव के जो वीर ।
दस-दस शर मारे प्रखर, सब को किया अधीर ।।१२९।।
देख बिकल निज सैन्य को, भीमसेन बलवान ।
आया सम्मुख रथ लिए, गरजा सिंह समान ।।१३०।।
दुर्योधन औ भीम का, हुआ भयानक युद्ध ।
एक-एक के काल बन, लड़ते होकर क्रुद्ध ।।१३१।।
अस्त्र शस्त्र घोड़े विकट, लगी परस्पर होड़ ।
लड़ते सिंह समान यह, दोनों हैं बेजोड़ ।।१३२।।
शस्त्र कला में निपुण वे, दुर्योधन औ भीम ।
थे दोनों विषधर सरिस, दोनों बली असीम ।।१३३।।
अद्भुत शर वर्षा करें, देख चकित दोउ सैन ।
सुर किनर नभ से लखैं, गड़े उन्हीं पर नैन ।।१३४।।
भीमसेन तुम धान्य हो, दुर्योधन भी धान्य ।
ऐसे योद्धा जगत में, नहीं दीखते अन्य ।।१३५।।
किया कार्य यह भीम ने, अद्भुत विकट कराल ।
हना सारथी अश्व को, ध्वज काटा तत्काल ।।१३६।।
और सुयोधन पर हने, छिन में फिर सौ बान ।
विचलित तत्क्षण हो गया, दुर्योधन बलवान ।।१३७।।
दु:शासन ने लखा जब, कुरुपति हाल बेहाल ।
निजरथ ला उस पर बिठा, गया दूर तत्काल ।।१३८।।
क्रोधवन्त अति भीम था, आखें रुधिर समान ।
कौरव-दल में धँस गया, महावीर बलवान ।।१३९।।
पकड़-पकड़ गज शुण्ड को, घुमा फिरा दे फेंक ।
उड़ते फिरे अकाश में, हाथी प्रबल अनेक ।।१४०।।
घोड़े सँग रथ को उठा, रथ पर देते डाल ।
रथी सारथी सभी का, बना भीम था काल ।।१४१।।
करै अमानुष कर्म वह, जहां खड़ी हो सैन ।
गज रथ फेंके वह वहां, होंय सभी बेचैन ।।१४२।।
दुर्योधन के भ्रात सौ, बली एक से एक ।
अस्त्र-शस्त्र में निपुण सब, शूर-वीर प्रत्येक ।।१४३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्मुख आये भीम के, एक साथ में तीस ।
शर बरसा कर चाहते, देंय भीम को पीस ।।१४४।।
भाला बर्छा गदा से, करने लगे प्रहार ।
प्रण सुमिरन कर भीम ने, कर लेकर तलवार ।।१४५।।
एक-एक कर सभी के, काटे धड़ से शीश ।
लाशों पर लाशें पटीं, मरे गिरे अवनीश ।।१४६।।
देख कर्म यह भीम का, विचलित कौरव वीर ।
रथ लाकर फिर द्रोण ने, छोड़े अगणित तीर ।।१४७।।
हुआ परस्पर युद्ध फिर, लड़े द्रोण औ भीम ।
गुरू शिष्य रण बाँकुरे, दोनों बली असीम ।।१४८।।
एक-एक पर छोड़ते, तान-तान कर बान ।
दोनो ही थे चाहते, हर लें रिपु के प्रान ।।१४९।।
गुरुवर द्रोणाचार्य ने, छोड़े अगणित तीर ।
रोम-रोम बेधित हुआ, भीमसेन बलवीर ।।१५०।।
विचलित लखकर भीम को, सतजित वीर महान ।
आया सम्मुख द्रोण के, छोड़े तीखे बान ।।१५१।।
ऐसी शर वर्षा करी, बदल दिया रण रंग ।
चकित हुए कौरव सभी, सुर नर लखकर दंग ।।१५२।।
धनुष ध्वजा ऋषि द्रोणकी, क्षण में डारी काट ।
लाशों पर लाशें गिरा, दिया धरा को पाट ।।१५३।।
अश्वारोही गज रथी, मारे रथ असवार ।
विपुल सैन्य पल में हनी, जिसका नहीं शुमार ।।१५४।।
जैसे वर्षा काल में, बरसे नभ से नीर ।
त्यों रण में बरसा रहा, सतजित योधा तीर ।।१५५।।
पाञ्चाल के वीर सब, लड़ते काल समान ।
भ्रात-भ्रात से युद्ध कर, हरते उसके प्रान ।।१५६।।
मित्र-मित्र से लड़ रहे, पिता पुत्र के साथ ।
सगे सनेही युद्धकर, काट रहे थे माथ ।।१५७।।
मोह प्रेम सब त्याग कर, लड़ें वीर अवनीश ।
एक एक पर क्रुद्ध हो, काटें धड़ से शीश ।।१५८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं हुआ संसार में, ऐसा युद्ध महान ।
अद्वितीय बलवान भट, जाने रण विज्ञान ।।१५९।।
अति क्रोधित हो द्रोणने, ले द्वितीय धनु हाथ ।
सतजित पर शर छोड़कर, काट दिया तब माथ ।।१६०।।
अगणित शर बरसायकर, मारे अगणित वीर ।
पाञ्चाल योधा सभी, विचलित हुए अधीर ।।१६१।।
महाबली भगदत्त नृप, रूप पर्वताकार ।
ऐरावत सम गज प्रबल, रण में बली अपार ।।१६२।।
हाथी काल समान वह, रथ उठाय दे फेंक ।
पग से रौंदे सैन्य को, मारे शूर अनेक ।।१६३।।
चेकितानव युयुत्सवा, धृष्टकेतु बल वीर ।
धृष्टद्युम्न अभिमन्यु भट, द्रुपद शूर रणवीर ।।१६४।।
नकुल वीर सहदेव अरु, सात्यकि बली विराट ।
भीमसेन योधा प्रबल, बड़े-बड़े सम्राट ।।१६५।।
पाण्डव के सब वीर वर, लेकर रथ एक साथ ।
घेरा हाथी सबों ने, तीर धनुष ले हाथ ।।१६६।।
सब ने छोड़े शर प्रचुर, गज पर विकट कराल ।
फिर भी गज रणमत्त हो, दौड़ रहा जिमि काल ।।१६७।।
जिधर दौड़ता गज प्रबल, होय साफ मैदान ।
महारथी विचलित हुए, थे गज से हैरान ।।१६८।।
घन गर्जन सी गर्जना, करता बारम्बार ।
अगणित पाण्डव सैन्य को, क्षण में दीन्हा मार ।।१६९।।
विचलित पाण्डव वीर सब, विचलित पाण्डव सैन ।
गर्जन सुन भगदत्त् का, कहे धनंजय बैन ।।१७०।।
मधुसूदन रथ ले चलो, जिधर युधिष्ठिर भ्रात ।
गर्जन यह भगदत्त का, सह न सकूँ मैं तात ।।१७१।।
अवशि वीर भगदत्त ने, युद्ध किया विकराल ।
महारथी विकराल गज, उसकी नहीं मिसाल ।।१७२।।
अवशि विपति में सैन्यमम, ऐसा है अनुमान ।
शीघ्र चलो उस ओर ही, केशव कृपानिधान ।।१७३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रथ मोड़ा उस ओर जब, केशव करुणा ऐन ।
कहाँ चले रथ छोड़कर, कहे सुशर्मा बैन ।।१७४।।
या छोड़ो धनु हाथ से, या कर लो संग्राम ।
बिना लड़े हम सबों से, कहाँ चले किस ठाम ।।१७५।।
असमंजस में थे पड़े, शूर धनंजय वीर ।
प्रथम यहीं रण करूँ मैं, सोचा यही सुधीर ।।१७६।।
धनुष चढ़ा गाण्डीव फिर, छोड़े अगणित बान ।
पवन अस्त्र फिर छोड़कर, अन्धड़ किया महान ।।१७७।।
संसप्तक बलवान सब, और मालवा वीर ।
सब पर शर बरसा रहा, एक धनंजय धीर ।।१७८।।
ऐसी शर वर्षा करी, जिसकी नहीं मिसाल ।
अगणित गज घोड़े हने, हुई धरा सब लाल ।।१७९।।
भुजा शीश कट कट गिरें, बही रुधिर की धार ।
तीर सहस्त्रों निमिष में, छोड़े पाण्डु कुमार ।।१८०।।
वीर मालवा सैन्य अरु, नृप त्रिगर्त की सैन ।
हनी धनंजय ने विपुल, किया उन्हें बेचैन ।।१८१।।
जैसे कमल समूह को, करता है गज नष्ट ।
वैसे अर्जुन ने दिया, रिपु को अतुलित कष्ट ।।१८२।।
जिमि गर्जन से सिंह के, मृग होते भयभीत ।
तिमि अर्जुन से हुए सब, कम्पित हृदय अतीत ।।१८३।।
मरे सहस्त्रों वीरवर, संसप्तक बलवीर ।
बची खुची सेना भगी, चंचल हृदय अधीर ।।१८४।।
तब अर्जुन ने कृष्ण से, कहे वचन इस तौर ।
भगदत सन्मुख चलो अब, देव-देव शिरमौर ।।१८५।।
रथ हाँका गोविन्द ने, चले द्रोण की ओर ।
मिला सुशर्मा बीच में, बोला करके शोर ।।१८६।।
ठहर धनंजय ठहर अब, कर मुझसे संग्राम ।
तुझको माँरू अभी मैं, पूर्ण करूँ यह काम ।।१८७।।
यों कह शर वर्षा करी, अर्जुन पर गम्भीर ।
काट दिये मग में सभी, अर्जुन ने रिपु तीर ।।१८८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शूर सुशर्मा भ्रात भी, लड़े धनंजय साथ ।
अर्जुन ने उन सबों के, धड़ से काटे माथ ।।१८९।।
विकल सैन उसकी करी, छोड़ अनेकों अस्त्र ।
और सुशर्मा पर हने, महा भयंकर शस्त्र ।।१९०।।
शूर सुशर्मा को किया, मूर्छित रण के बीच ।
रथ मोड़ा तव कृष्ण ने, बागडोर को खींच ।।१९१।।
जिधर खड़ा भगदत्त था, चले उसी की ओर ।
वायु वेग सा रथ चला, घर घर करता शोर ।।१९२।।
मग में कौरव वीर जो, खड़े अनेकों शूर ।
चहते अर्जुन रोक लें, मद में अपने चूर ।।१९३।।
जैसे आँधी में उड़ें, तृण पत्ते औ धूल ।
त्यों अर्जुन के बाण लग, हुई सैन्य निर्मूल ।।१९४।।
रोक न पाया एक भी, अर्जुन को उस काल ।
लड़ा सहस्त्रों भटों से, एक पाण्डु का लाल ।।१९५।।
जैसे सूखे विपिन को, पावक करता क्षार ।
वैसे अर्जुन ने किया, त्रिगर्तों का संहार ।।१९६।।
दल त्रिगर्त को नष्ट कर, रथ पहुँचा उस ठाम ।
वीर प्राग्ज्योतिष जहाँ, करता था संग्राम ।।१९७।।
शर वर्षा ऐसी करी, अर्जुन ने उस काल ।
जैसे सुरपति लड़े थे, दैत्यों से विकराल ।।१९८।।
या खरदूषण से लड़े, एक अकेले राम ।
अगणित राक्षस हने थे, रघुकुल लीलाधाम ।।१९९।।
वैसे अर्जुन लड़ रहा, कौरव दल के साथ ।
इन्द्रजीत से ज्यों लड़े, लक्ष्मण दो दो हाथ ।।२००।।
एक अकेला पाण्डुसुत, अगणित कौरव शूर ।
शर बरसाता सबों पर, रिपु होते थे चूर ।।२०१।।
निर्भय विचरे सिंह सम, रण में काल समान ।
बड़े-बड़े योद्धा हने, जो थे भरे गुमान ।।२०२।।
हाथी फिर भगदत्त का, हना मार दस बान ।
गिरा धरा पर गज विकट, निकले उसके प्रान ।।२०३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेकर तत्क्षण दिव्य शर, काटा भगदत शीश ।
गिरा भूमि भगदत्त तब, मरा बली अवनीश ।।२०४।।
होनी चाहे जो करे, है होनी बलवान ।
भगदत बली महान वह, डरता जिसे जहान ।।२०५।।
आज पड़ा है भूमि पर, जैसे पड़ा अनाथ ।
क्या जाने कब क्या करे, सब होनी के हाथ ।।२०६।।
क्षण भर पहले जो अभी, गज पर था असवार ।
डरते जिससे पाण्डु भट, करते हाहाकार ।।२०७।।
भावी वश वह ही सुभट, वह ही गज विकराल ।
क्षण भर में ऐसा हुआ, गये काल के गाल ।।२०८।।
भगदत मरण निहारकर, प्रमुदित पाण्डव वीर ।
बजा बजा निज शंखसब, करैं नाद गम्भीर ।।२०९।।
कौरव की सब सैन्य पर, छोड़ सहस्त्रों तीर ।
वीर धनंजय कर रहा, रिपु को दुखी अधीर ।।२१०।।
देख सैन्य निज विकल तब, द्रोण वीर तत्काल ।
अर्जुन से सम्मुख हुए, छोड़े वाण कराल ।।२११।।
अर्जुन औ गुरु द्रोण का, विकट हुआ संग्राम ।
एक एक के काट शर, अद्‌भुत करते काम ।।२१२।।
अस्त्र कला में निपुण भट, अद्वितीय बलवान ।
महाबली गुरु द्रोण हैं, अर्जुन बली महान ।।२१३।।
सुरगण चढ़े विमान पर, देख रहे संग्राम ।
दोनों दल रण छोड़कर, देखें इनके काम ।।२१४।।
धन्य द्रोण कहते सभी, धन्य धनंजय शूर ।
दोनों बली महान हैं, शूरवीर भरपूर ।।२१५।।
लड़ते-लड़ते आ गया, आखिर सायंकाल ।
बन्द हुआ तब युद्ध था, मारकाट विकराल ।।२१६।।
दो दिन लड़कर द्रोण ने, मारी सैन्य अपार ।
अर्जुन ने भी किया था, कौरव दल संहार ।।२१७।।
चलीं शिविर की ओर फिर, दोनों दल की सैन्य ।
बेचैनी क्षण को हटी, पायी सब ने चैन ।।२१८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पहुँच शिविर में हुआ फिर, भोजन औ विश्राम ।
बतलाया धृतराष्ट्र से, संजय ने संग्राम ।।२१९।।
हाल बताया युद्ध का, पूर्ण रूप समझाय ।
संजय से सब हाल सुन, विस्मित थे कुरुराय ।।२२०।।

चक्र-व्यूह में अभिमन्यु

निशि में सोये शूर सब, कौरव पाण्डव वीर ।
नित्य कर्म उठ प्रात कर, रण को सजे सुधीर ।।२२१।।
दुर्योधन संग कर्ण ले, गया द्रोण के पास ।
कर प्रणाम गुरु देव को, बोला सह विश्वास ।।२२२।।
अगर युद्ध सुरपति करें, चाहे लड़ ले काल ।
अवशि जीत सकते उसे, तुम गुरु दीनदयाल ।।२२३।।
फिर पाण्डव क्या चीज हैं, इनकी कौन मिसाल ।
मगर होय सब बात तब, भूलें शिषका ख्याल ।।२२४।।
जब तक पाण्डव प्रेम को, भूल न जायें आप ।
नहीं विजय मुझको मिले, नहीं मिटे सन्ताप ।।२२५।।
कहा आपने पकड़ लूँ, धर्मराज महराज ।
पकड़ सके फिर भी नहीं, पूर्ण हुआ नहिं काज ।।२२६।।
आप हमारे पूज्य हैं, आप हमारे साथ ।
अर्जुन के सुस्नेह को, भूलें दीनानाथ ।।२२७।।
बिना भुलाये हृदय से, पाण्डव की अब प्रीति ।
विजय न मुझको प्राप्त हो, दुर्लभ है मम जीत ।।२२८।।
दुर्योधन के वचन सुन, बोले द्रोणाचार्य ।
सुन दुर्योधन बात तू, आज करूँ यों कार्य ।।२२९।।
चक्र व्यूह रचना करूँ, जिसकी नहीं मिसाल ।
कोई पाण्डव वीर का, बध हो आज भुवाल ।।२३०।।
अर्जुन औ श्रीकृष्ण ही, सकैं व्यूह को तोड़ ।
और पड़े जो व्यूह में, नहीं सके वह फोड़ ।।२३१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्जुन को तुम आज फिर, करो यहाँ से दूर ।
पाण्डव का बस गर्व फिर, होगा चकनाचूर ।।२३२।।
सँसप्तक ही आज फिर, लड़ें धनञ्जय साथ ।
ऐसा करो प्रबन्ध तुम, कहा द्रोण द्विजनाथ ।।२३३।।
इतना कह रथ पर चढ़े, ऋषिवर द्रोणाचार्य ।
शंख बजे बाजे बजे, हुआ युद्ध का कार्य ।।२३४।।
सँसप्तक आगे बढ़े, महारथी बलवान ।
अर्जुन को ललकार कर, बोले सह अभिमान ।२३५।।
आज लड़ो हम सबों से, बड़े बने हो वीर ।
अवशि हनेंगे हम तुम्हें, यह कह छोड़े तीर ।।२३६।।
लड़ते-लड़ते ले गये, अर्जुन को वे दूर ।
घोर युद्ध करने लगे, मद में अपने चूर ।।२३७।।
गुरुवर द्रोणाचांर्य ने, व्यूह रचा तत्काल ।
चक्र व्यूह रचना करी, अद्‌भुत परम विशाल ।।२३८।।
मुख्य द्वार पर स्वयं ही, खड़े हुए ऋषिनाथ ।
कृपाचार्य औ कर्ण भी, खड़े हुए ऋषि साथ ।।२३९।।
बली जयद्रथ वीरवर, रक्षक दुसरे द्वार ।
वर पाकर वह शम्भु का, निर्भय निडर अपार ।।२४०।।
द्वार तीसरे पर खड़ा, दुःशासन बलवान ।
दस सहस्त्र गज बल भरा, योधा महा महान ।।२४१।।
रक्षक चौथे द्वार के, अश्वत्थामा वीर ।
खड़े पाँचवें द्वार पर, कृतवर्मा रणधीर ।।२४२।।
छठे द्वार शकुनी खड़ा, महा भयंकर शूर ।
गांधार सेना लिये, मद में अपने चूर ।।२४३।।
खड़े सातवें द्वार पर, कुरुपति सँग सब भ्रात ।
बली एक से एक सब, योधा जग विख्यात ।।२४४।।
सिन्धु सरिस गम्भीर अति, कौरव की वह सैन ।
अस्त्र-शस्त्र सज्जित खड़ी, लड़ने को बेचैन ।।२४५।।
खड़े सामने पाण्डु भी, रचकर व्यूह अभेद ।
गरज रहे रण मत्त सब, रिपु को डालें छेद ।।२४६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देख द्रोण के व्यूह को, धर्मराज महराज ।
चिन्तित हो कहने लगे, किस विधि हो अब काज ।।२४७।।
चक्र व्यूह को तोड़ना, महा कठिन यह कर्म ।
सिवा धनञ्जय वीर के, और न जाने मर्म ।।२४८।।
कहा तभी अभिमन्यु ने, मत हो चिन्तित तात ।
घुसना अन्दर व्यूह के, मैं जानूँ यह बात ।।२४९।।
तोड़ व्यूह फिर पलटना, नहीं मुझे है ज्ञात ।
धृष्टद्युम्न औ भीम ने, कही तुरत यह बात ।।२५०।।
धँसे वीर अभिमन्यु जब, होंगे हम सब साथ ।
तोड़ व्यूह डालें सभी, सुनिये श्री नृपनाथ ।।२५१।।
चला वीर अभिमन्यु तब चक्र व्यूह की ओर ।
शंख बजाते वीर सब, घन गर्जन सा शोर ।।२५२।।
भीम नकुल सहदेव अरु, धृष्टद्युम्न बलवीर ।
स्वयं चले नृपराज भी, वीर युधिष्ठिर धीर ।।२५३।।
द्रुपदराज पांचाल सब, महारथी बलवान ।
सात्यकि वीर विराटवर, योधा महा महान ।।२५४।।
आगे रथ अभिमन्यु का, पीछे ये सब लोग ।
चले व्यूह को तोड़ने, करने भीष्म प्रयोग ।।२५५।।
पहुँच द्रोण सम्मुख गये, छिड़ा विकट संग्राम ।
अर्जुन सुत अभिमन्यु ने, कीन्हा अद्भुत काम ।।२५६।।
ऐसी शर वर्षा करी, जैसे बरसे नीर ।
शीश भुजा कट-कट गिरें, चहुँ दिशि दिखते तीर ।।२५७।।
द्रोण चलाते तीर जो, मग में देता काट ।
काट-काट रिपु सैन्य भी, रहा धरा को पाट ।।२५८।।
अर्जुन सुत रण बाँकुरा, वीर सुभद्रा लाल ।
अर्जुन सा ही लड़ रहा, युद्ध महा विकराल ।।२५९।।
शर बरसाता द्रोण पर, गरजा सिंह समान ।
मुख्य द्वार पर खड़े जो, जोधा वीर महान ।।२६०।।
शर बरसाये सबों पर, अगणित तीखे तीर ।
और घुसा वह व्यूह में, कौरव दल को चीर ।।२६१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भीम नकुल सहदेव अरु, वीर युधिष्ठिर धीर ।
प्रविशे संग सब व्यूह में, महा प्रतापी वीर ।।२६२।।
हक्का बक्का से खड़े, द्रोण रहे मुख ताक ।
धनि बालक अभिमन्यु तू, मुख से निकला वाक ।।२६३।।
पहुँच दूसरे द्वार पर, छिड़ा युद्ध घमसान ।
जयद्रथ पर अभिमन्यु ने, छोड़े अगणित बान ।।२६४।।
दोनों बली महान हैं, अस्त्रा कला परवीन ।
एक-एक पर छोड़ते, अगणित अस्त्र नवीन ।।२६५।।
एक-एक के काटते, मग में ही सब अस्त्र ।
ताक-ताक कर छोड़ते, महा भयंकर शस्त्र ।।२६६।।
शूर वीर अभिमन्यु ने, दिव्य अस्त्र ले हाथ ।
जयद्रथ पर छोड़े प्रचुर, अगणित शर एक साथ ।।२६७।।
मार सारथी को दिया, काटा ध्वज तत्काल ।
विचलित जयद्रथ को किया, वीर धनञ्जय लाल ।।२६८।।
बिना सारथी अश्व फिर, भगे दूसरी ओर ।
द्वार दूसरा तोड़ कर, शंख बजा घनघोर ।।२६९।।
चढ़ा तीसरे द्वार पर, अर्जुन सुत बलवीर ।
पहुँच दुःशासन सामने, छोड़े अगणित तीर ।।२७०।।
रास थाम निज हाथ में, जयद्रथ बली महान ।
रथ लाकर झट द्वार पर, खड़ा किया बलवान ।।२७१।।
भीम नकुल सहदेव से, लड़ा युद्ध घमसान ।
नहीं व्यूह में जा सके, धर्म पुत्र धीमान ।।२७२।।
लड़े अकेला चार से, सिंधु राज बलवीर ।
शिव से पा वरदान वह, निर्भय सुदृढ़ सुधीर ।।२७३।।
नहीं व्यूह में जा सका, कोई दुसरा और ।
हुआ अकेला व्यूह में, अभिमन्यू इस तौर ।।२७४।।
हुआ अकेला वीर पर, विचरै सिंह समान ।
कौरव दल को काटता, जैसे खेत किसान ।।२७५।।
दुःशासन से युद्ध कर, तोड़ तीसरा द्वार ।
अश्वारोही गज रथी, मारे वीर अपार ।।२७६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रक्तमयी पृथ्वी हुई, चहुँ दिशि लालो लाल ।
बना वीर अभिमन्यु था, कौरव दल का काल ।।२७७।।
अश्वत्थामा सामने, रथ पहुँचा तत्काल ।
लगा छोड़ने बाण तब, उन पर विकट कराल ।।२७८।।
किया युद्ध अभिमन्यु ने, द्रोण पुत्र के साथ ।
विचलित कौरव को किया, काटे अगणित माथ ।।२७९।।
अश्वत्थामा पर हने, अगणित तीखे बान ।
अश्व हने ध्वज काट कर, कीन्हें लहू लुहान ।।२८०।।
धनुष काट गुरु पुत्र का, मूर्छित कर तत्काल ।
धँसा व्यूह अभिमन्यु फिर, जोधा विकट विशाल ।।२८१।।
पहुँच पाँचवें द्वार पर, युद्ध किया घनघोर ।
कृतवर्मा बलवान पर, छोड़े अस्त्र कठोर ।।२८२।।
छिन्न-भिन्न कर द्वार को, क्षण में डाला तोड़ ।
काट रहा रिपु सैन्य को, तीक्षण सब शर छोड़ ।।२८३।।
शकुनी के सम्मुख पहुँच, गया तुरत वह वीर ।
सिंह सरिस उन पर झपट, छोड़े अगणित तीर ।।२८४।।
गांधार की सैन्य का, क्षण में किया विनाश ।
बड़े-बड़े योधा हने, बने काल के ग्रास ।।२८५।।
शकुनी औ अभिमन्यु का, हुआ विकट संग्राम ।
दौड़ रहे रथ चाक सम, इधर-उधर सब ठाम ।।२८६।।
क्रोधित हो अभिमन्यु ने, दिव्य अस्त्र ले हाथ ।
शकुनी के हिय में हने, दस शर एकहि साथ ।।२८७।।
रथ पर मूर्छित गिर पड़ा, शकुनी वीर महान ।
बढ़ा वीर अभिमन्यु फिर, देख साफ मैदान ।।२८८।।
पहुँच सातवें द्वार पर, गया प्रतापी शूर ।
कुरुपति के अभिमान को, करता चकना चूर ।।२८९।।
दुर्योधन सुत आ गया, सम्मुख लक्ष्मण वीर ।
शूर वीर अभिमन्यु पर, छोड़े अगणित तीर ।।२९०।।
लड़े युद्ध दोनों बली, दोनों राजकुमार ।
अस्त्र कला दिखला रहे, कर करके निज बार ।।२९१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पंख सुनहरे प्रखर शर, महा नुकीले बान ।
एक-एक पर छोड़ते क्रोधित महा महान ।।२९२।।
लक्ष्मण ने अभिमन्यु पर, फेंकी गदा प्रचण्ड ।
मग में ही अभिमन्यु ने, करदी उसको खण्ड ।।२९३।।
और शीघ्रता से तुरत, लेकर भल्ल स्वहाथ ।
लक्ष्मण पर छोड़ा उसे, काट दिया तब माथ ।।२९४।।
लक्ष्मण का बध देखकर, विचलित कौरव वीर ।
दुर्योधन व्याकुल हुआ, कम्पित हृदय अधीर ।।२९५।।
लेने बदला पुत्र का, सम्मुख आया आप ।
लड़ा युद्ध अभिमन्यु से, भरा हृदय संताप ।।२९६।।
क्रोधित हो अभिमन्यु पर, छोड़े अगणित बान ।
मग में ही शर काटता, अर्जुन सुत बलवान ।।२९७।।
और हने दस बान फिर, दुर्योधन के तान ।
मार सारथी अश्व को, गरजा सिंह समान ।।२९८।।
चढ़ा कर्ण के रथ तुरत, दुर्योधन घबराय ।
और कहा मारो इसे, बचकर निकल न जाय ।।२९९।।
बीर बली अभिमन्यु ने, काटे कैकय शूर ।
गान्धार सेना बली, मर्द मिलाई धूर ।।३००।।
अगणित हाथी काट कर, गिरा दिये रण भूमि ।
अश्वारोही मार कर, रहा सिंह सम झूमि ।।३०१।।
बड़े बड़े बलवान जो, महारथी रणधीर ।
खड़े न सन्मुख हो सके, कोई कौरव वीर ।।३०२।।
एक अकेला शूर वह, वीर धनंजय लाल ।
कौरव दल का था बना, महा भयंकर काल ।।३०३।।
कर्ण दुशासन द्रोण भट, अश्वत्थामा वीर ।
महारथी बलवान सब, कृतवर्मा रणधीर ।।३०४।।
और वृहद्बल बली नृप, कृपाचार्य बलवान ।
पुत्र दुशासन अति बली, योधा काल समान ।।३०५।।
घेर लिया अभिमन्यु को, इन सबने एक साथ ।
सबके मन मे था यही, काटें इसका माथ ।।३०६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सब ने किया प्रहार तब, महारथी सब लोग ।
लड़ा अकेला सबों से, करता कठिन प्रयोग ।।३०७।।
गुरुवर द्रोणाचार्य के, मारे सत्तर बान ।
कृपाचार्य के हृदय को, कीन्हा लहू लुहान ।।३०८।।
वीर कर्ण के हृदय को, छेदा हन के तीर ।
अश्वत्थामा को किया, विह्वल हृदय अधीर ।।३०९।।
दुःशासन औ शकुनि पर, बरसाये बहु बान ।
काट वृहद्वल शीश को, हर लीन्हें फिर प्रान ।।३१०।।
देख रहे थे युद्ध जो, नभ पर चढ़े विमान ।
धन्य वीर अभिमन्यु वह, सुरगण करें बखान ।।३११।।
ग्रीषम ऋतु के सूर्य ज्यों, तपते महा प्रचण्ड ।
सूखै जल झुलसै विपिन, विचलित हो नवखण्ड ।।३१२।।
वैसे ही अभिमन्यु से, विचलित कौरव सैन ।
महारथी व्याकुल सभी, मन में थे बेचैन ।।३१३।।
हने कर्ण ने अश्व तब, दिया सारथी मार ।
काट दिया धनु द्रोण ने, लगी न क्षण की वार ।।३१४।।
कूद पड़ा अभिमन्यु तब, रथ से ले तलवार ।
सब ने मिलकर किया फिर उस पर प्रबल प्रहार ।।३१५।।
दुःशासन सुत ने तुरत, गदा उठा निज हाथ ।
हनी हृदय अभिमन्यु के, बड़े जोर के साथ ।।३१६।।
गिरा धरा अभिमन्यु तब, निकले उसके प्रान ।
होनी जो चाहे करै, होनी प्रबल महान ।।३१७।।
कौरव प्रमुदित हो गये, लखकर अपनी जीत ।
छह ने मारा एक को, ऐसी करी अनीत ।।३१८।।
महारथी छइयौ प्रखर, मिल करके सब साथ ।
तब मारा अभिमन्यु को, क्या अनीति की गाथ ।।३१९।।
सुना पाण्डवों ने जभी, यह दुख का सम्वाद ।
रुदन करैं विलखें सभी, कर अभिमन्यू याद ।।३२०।।
बेला सायंकाल की, युद्ध हुआ तब बन्द ।
सूर्य गये थे डूब तब, नभ पर निकला चन्द ।।३२१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चली शिविर की ओर फिर, दोनों दल की सैन ।
हर्षित कौरव सैन थी, पाण्डव थे बेचैन ।।३२२।।
धर्मराज ने तब कहा, यों सबको समझाय ।
मरा नहीं अभिमन्यु है, गया अमर पद पाय ।।३२३।।
एक अकेले वीर ने हने, हजारों शूर ।
क्षात्रधर्म पालन किया, सुत ने है भरपूर ।।३२४।।
नहीं सोच के योग्य है, अभिमन्यू बलवान ।
गया स्वर्ग को वीर वह, हरि इच्छा बलवान ।।३२५।।
आये वेद व्यास थे, दिया ज्ञान उपदेश ।
मुक्ति मिली अभिमन्यु को, गया ब्रह्म के देश ।।३२६।।
मत चिन्ता उसकी करो, है संसार असार ।
दुर्लभ मानव के लिए, यहाँ मुक्ति का द्वार ।।३२७।।
वह पद उसने प्राप्तकर, की मानवता धन्य ।
नर से नारायण बना, होकर ब्रह्म अनन्य ।।३२८।।
नहीं सोच के योग्य है, अभिमन्यू बलवान ।
ऐसा मत उपदेश दे, गये व्यास भगवान ।।३२९।।
संसप्तक गण से उधर, कर अर्जुन संग्राम ।
पलटा था जब शिविर को, अशकुन लखे तमाम ।।३३०।।
बोला वह श्री कृष्ण से, क्या कारण है नाथ ।
चञ्चल चित हो रहा है, बुद्धि न देती साथ ।।३३१।।
कुछ अनिष्ट निश्चित हुआ, पाण्डव दल में आज ।
होती यही प्रतीति है, सुनिये हे ब्रजराज ।।३३२।।
धर्मराज अरु भ्रात सब, क्या हैं प्रभु ! सानन्द ।
मेरा चित सुस्थिर नहीं, क्यों होता ब्रजचन्द ।।३३३।।
मन्द मन्द हँसते हुए, बोले श्याम सुजान ।
धर्मराज अरु भ्रात सब, कुशल क्षेम से जान ।।३३४।।
पर अनिष्ट निश्चित हुआ, ऐसा हो आभास ।
चलो शिविर तब ज्ञात हो, बोले रमा निवास ।।३३५।।
पहुँच शिविर में गये जब, लखा वहाँ कुहराम ।
सुने न मंगल गीत औ, शंख ध्वनि अभिराम ।।३३६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शोक ग्रस्त सैनिक दिखैं, करैं न मुख से बात ।
दिखा शोक भी शोक युत, देखे विह्वल भ्रात ।।३३७।।
धर्मराज का भी लखा, शोक ग्रस्त मुख दीन ।
नकुल, भीम, सहदेव भी, शोभा हीन मलीन ।।३३८।।
कर प्रणाम श्रीकृष्ण अरु, अर्जुन कम्पित गात ।
कुशल क्षेम कहिये नृपति, कौन नई है बात ।।३३९।।
क्यों उदास सब लोग हैं, कारण क्या है तात ।
दिख न रहा अभिमन्यु क्यों, कहो-कहो मम भ्रात ।।३४०।।
कहा युधिष्ठिर ने तभी, करके नीचे नैन ।
चक्र व्यूह रच द्रोण ने, किया हमें बेचैन ।।३४१।।
गया तोड़ने व्यूह जो, वीर सुभद्रा लाल ।
संग में हम सब लोग भी, थे उसके उस काल ।।३४२।।
तोड़ व्यूह वह धँस गया, एक अकेला वीर ।
जयद्रथ ने हम सबों को, रोका किया अधीर ।।३४३।।
शंकर का वरदान पा, जयद्रथ हुआ महान ।
रोक लिया हम सबों को, होनी प्रबल सुजान ।।३४४।।
हुआ अकेला इस तरह, फँसा व्यूह के वीच ।
होनी ने सब कुछ किया, ले गई उसको खींच ।।३४५।।
लड़ा अकेला वह वहाँ, हने हजारों शूर ।
कर्ण, दुशासन, द्रोण का, किया गर्व था चूर ।।३४६।।
अश्वत्थामा, कृप बली, और शकुनि बलवान ।
लड़ा अकेला सबों से, निर्भय सिंह समान ।।३४७।।
मार वृहद्वल को दिया, काटा उसका शीश ।
मारे उसने युद्ध में, बड़े-बड़े अवनीश ।।३४८।।
घेरा फिर उस एक को, छह ने मिलकर साथ ।
दुःशासन के पुत्र ने, मारा था निज हाथ ।।३४९।।
इतना कह रोने लगे, धर्मराज महराज ।
सुन मूर्च्छित अर्जुन हुआ, विकल दिखे ब्रजराज ।।३५०।।
होश हुआ अर्जुन उठे, बोले यों तत्काल ।
अच्छा जयद्रथ ही बना, मेरे सुत का काल ।।३५१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करूँ प्रतिज्ञा सुनो सब, कहता हूँ ललकार ।
कल पहले सूर्यास्त के, डालूँ जयद्रथ मार ।।३५२।।
जो न करूँ प्रण पूर्ण तो, पाऊँ मैं गति नीच ।
या तो जयद्रथ ही मरे, या हो मेरी मीच ।।३५३।।
गुरू पिता के हनन से, जो होता है पाप ।
गो द्विज हत्या पाप का, लगे मुझे अभिशाप ।।३५४।।
पर धन हरते पुरुष जो, या खाते हैं व्याज ।
पर पत्नी गामी अधम, करें जो कुत्सित काज ।।३५५।।
चुगली करते व्यर्थ जो, परनिन्दक मतिमन्द ।
साधु अवज्ञा करें जो, और करें छल छन्द ।।३५६।।
और अनेकों पाप जो, करते पापी लोग ।
उन पापों के पाप का, भोगूँ मैं ही भोग ।।३५७।।
सूर्य अस्त हो जायँ यदि, और न पाऊँ मार ।
स्वयं चिता में जलूँ मैं, कहता हूँ ललकार ।।३५८।।
इतना कह गाण्डीव ले, किया घोर टंकार ।
सुन प्रण हर्षित हो उठे, नागर नन्द कुमार ।।३५९।।
पाञ्चजन्य निज शंख को, लगे बजाने श्याम ।
देवदत्त फूँका, तभी, अर्जुन ने अविराम ।।३६०।।
शंख ध्वनि सुन कर सभी, काँपे तीनों लोक ।
कौरव दल विचलित हुआ, व्यापा फिर से शोक ।।३६१।।
शोक रहित पाण्डव हुए, ऐसा बना संयोग ।
सिंहनाद करने लगे, वीर नृपति सब लोग ।।३६२।।
कहा सुयोधन से उधर, गुप्तचरों ने हाल ।
जयद्रथ बध का प्रण किया, अर्जुन ने इस काल ।।३६३।।
सूर्य अस्त से प्रथम ही, डालें उनको मार ।
प्रण अपूर्ण रह जाय यदि, प्रविशै अग्नि मँझार ।।३६४।।
जयद्रथ भी संग कर्ण के, और अनेकों वीर ।
गये द्रोण के पास तब, व्याकुल चित्त अधीर ।।३६५।।
बतलाया गुरुदेव को, जाकर के सब हाल ।
क्या करना है कहो अब, गुरुवर दीनदयाल ।।३६६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जयद्रथ की रक्षा प्रभो, कर सकते हैं आप ।
सिवा आपके विश्व में, कौन हरे संताप ।।३६७।।
कर्ण दुःशासन शकुनि अरु, कृपाचार्य बलवान ।
सब तकते मुख द्रोण का, कर करके सम्मान ।।३६८।।
तब बोले द्विजराज यों, गुरुवर द्रोणाचार्य ।
शकट व्यूह कल रचूँ मैं, मत घबड़ाओ आर्य ।।३६९।।
निर्भय सोओ वीरवर, छोड़ो चित से खेद ।
विकट व्यूह रचना करूँ, सके न कोई भेद ।।३७०।।
बीती निशि कर मंत्रणा, ज्यों ज्यों हुआ प्रभात ।
जहाँ तहाँ सब कह रहे, जयद्रथ बध की बात ।।३७१।।
कौरव पाण्डव सैन्य सब, आई तब रण भूमि ।
दोनों दल के वीर वर, रहे परस्पर झूमि ।।३७२।।
शकट व्यूह गुरु द्रोण ने, रच कर किया तयार ।
मुख्य द्वार पर स्वयं रह, बोले यों ललकार ।।३७३।।
भूरिश्रवा अरु कर्ण शल, कृपाचार्य वृषसेन ।
अश्वत्थामा आदि संग, लेकर भारी सैन ।।३७४।।
पीछे जाओ कोस छह, वहाँ रहो निर्भीक ।
लड़ूँ धनञ्जय से स्वयं, करूँ काम सब ठीक ।।३७५।।
शकटव्यूह लम्बा बड़ा, रहा कोस चौबीस ।
चौड़ा था दस कोस जो, खड़े जहाँ अवनीश ।।३७६।।
व्यूह बीच में व्यूह रच, पद्म गर्भ निर्भेद्य ।
गुप्त व्यूह उसमें रचा, सूची मुख निश्छेद्य ।।३७७।।
महाव्यूह ऐसा रचा, जिसकी नहीं मिसाल ।
मुख्य द्वार पर डट गये, भरद्वाज के लाल ।।३७८।।
सूचीमुख के द्वार पर, कृतवर्मा बलवान ।
लिये साथ सेना अगम, सङ्गी वीर महान ।।३७९।।
काम्बोजनृप कर्ण अरु, दुर्योधन जलसन्ध ।
खड़े किये योधा प्रवर, ऐसा किया प्रबन्ध ।।३८०।।
अग्रभाग रक्षा करें, लाखों वीर जवान ।
अश्वारोही गजरथी, योधा काल समान ।।३८१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन सबके पीछे खड़ा, सिन्धुराज निर्द्वन्द ।
पर होनी होकर रहे, चले न कोई फन्द ।।३८२।।
शंखध्वनि होने लगी, बजे नगाड़े ढोल ।
केशव ! रथ को ले चलो, बोले अर्जुन बोल ।।३८३।।
रथ हाँका गोविन्द ने, दुर्मर्षण की ओर ।
जिसकी गज सेना अगम, मिलता ओर न छोर ।।३८४।।
सर-सर शर छोड़े प्रखर, अर्जुन ने विकराल ।
गज सेना संहार कर, बढ़े पाण्डु के लाल ।।३८५।।
दुःशासन आया तुरत रखकर विचलित सैन ।
लगा युद्ध करने विकट, बोल-बोल कटु बैन ।।३८६।।
युद्ध किया घनघोर फिर, अर्जुन ने उस काल ।
क्षण में मारी सैन सब, रिपु को किया विहाल ।।३८७।।
अच्युत ! रथ को ले चलो, गुरु द्रोण के पास ।
सुनकर अर्जुन के वचन, मोड़ी हरि ने रास ।।३८८।।
सन्मुख ला गुरु द्रोण के, रथ रोका उस ठाम ।
अर्जुन ने गुरुद्रोण को, तत्क्षण किया प्रणाम ।।३८९।।
और कहा गुरु आप हैं, मेरे पिता समान ।
जयद्रथ वध की आज है, ठानी मैंने ठान ।।३९०।।
अवशि जयद्रथ को हनूँ, करूँ प्रतिज्ञा पूर्ण ।
मत रोको गुरु राह को, करूँ कार्य सम्पूर्ण ।।३९१।।
हँसकर गुरुवर ने कहा, लड़ो प्रथम मम सङ्ग ।
मुझे पराजित किये बिन, व्यूह न होगा भङ्ग ।।३९२।।
इतना कह धनु को चढ़ा, छोड़े तीखे बान ।
तब गुरु से लड़ने लगा, पाण्डु सुवन बलवान ।।३९३।।
गुरुवर छोड़े अस्त्र जो, मग में देता काट ।
और सहस्त्रों वीर वर, दिये धरा में पाट ।।३९४।।
गज रथ पैदल सैन्य का, करके महा विनाश ।
घुसे व्यूह के मध्य में, जैसे सूर्य अकाश ।।२९५।।
कृतवर्मा श्रुत आयु जय, अरु काम्बोज नरेश ।
आये सम्मुख वीर ये, जिनसे डरें सुरेश ।।३९६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रोक राह लड़ने लगे, ये सब रथी महान ।
कृतवर्मा मूर्च्छित हुआ, मारे अर्जुन बान ।।३९७।।
काम्बोज सेना हनी, जिसका नहीं शुमार ।
बची खुची सेना भगी, करती हाहाकार ।।३९८।।
युद्ध श्रुतायुध ने किया, अर्जुन ने घनघोर ।
वर पाकर वर वरुण का, करे सिंह सा शोर ।।३९९।।
गदा वरुण ने दी उसे, रखना इसको पास ।
युद्ध विरत मत मारना, वर्ना होय विनास ।।४००।।
किन्तु विकट संग्राम में, गया भूल यह बात ।
युद्ध विरत श्रीकृष्ण पर, किया गदा आघात ।।४०१।।
पलट गदा शिर में लगी, मरा श्रुतायुध वीर ।
लड़ा सुदक्षिण आय तब, छोड़े अगणित तीर ।।४०२।।
काम्बोज नृप सुवन वह, महावीर बलवान ।
लड़ा युद्ध घमसान पर, होनी महा महान ।।४०३।।
अर्जुन ने गाण्डीव पर, प्रखर बान सन्धान ।
तान सुदक्षिण के हने, निकले उसके प्रान ।।४०४।।
शूरसेन अभिषाह शिबि, अरु बसाति विख्यात ।
छह हजार योद्धा हने, हुआ रक्त का पात ।।४०५।।
महाबली श्रुत आयु औ, अच्युतायु बलवान ।
धरा शायि दोनों हुए, खा अर्जुन के बान ।।४०६।।
सुत उनके बलवान दो, दोनों वीर महान ।
अर्जुन से आकर लगे, करने रण घमसान ।।४०७।।
नियत-आयु दीर्घायु भी, कर करके संग्राम ।
अर्जुन के शर से गये, दोनों यम के धाम ।।४०८।।
पूरब दक्षिण अङ्ग अरु, नृप कलिंग इत्यादि ।
अर्जुन ने तत्क्षण किया, शर वर्षा से छादि ।।४०९।।
तब राजा अम्बष्ठ भी, लड़ा धनञ्जय साथ ।
एक बाण से ही हना, काटे कर अरु माथ ।।४१०।।
पाञ्चजन्य शुचि शंख को, फूँका श्री ब्रजराय ।
देवदत्त निज शंख को, अर्जुन रहे बजाय ।।४११।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कौरव सेना विकल अति, अर्जुन का लख युद्ध ।
आया द्रोणाचार्य ढिग, दुर्योधन नृप क्रुद्ध ।।४१२।।
बोला गुरुवर से तभी, क्रोधवन्त मति भंग ।
व्यूह भेद अर्जुन धँसा, बदला है रण रंग ।।४१३।।
रहते गुरुवर आप के, यह अनहोनी बात ।
जयद्रथ बध क्या होयगा, रक्षक जब हैं तात ।।४१४।।
कहा आप ने स्वयं था, रोकूँ अर्जुन वीर ।
जयद्रथ की रक्षा करूं, निर्भय रहो सुधीर ।४१५।।
जयद्रथ की रक्षा नहीं, अब दिखती है नाथ ।
बड़े दुःख की बात है, लाज आप के हाथ ।।४१६।।
रक्षक बन रक्षा करो, भूले अर्जुन प्रेम ।
हम भी तो शिष आपके, फिर कैसा यह नेम ।।४१७।।
जयद्रथ जाना चाहता, था भगकर निज देश ।
ढाढस दे, रोका स्वयं, दे देकर उपदेश ।।४१८।।
अब रक्षा उसकी करें, सोचें स्वयं उपाय ।
धिक पौरुष है आपका, जो जयद्रथ मर जाय ।।४१९।।
कहा तभी गुरु द्रोण ने, मत होवो भयभीत ।
अर्जुन से रण स्वयंकर, लो तुम उसको जीत ।।४२०।।
स्वर्ण कवच देता तुम्हें, जो सर्वथा अभेद ।
सुरपति को शिव ने दिया, दैत्य सका नहिं छेद ।।४२१।।
वृत्रासुर जैसा बली, कवच सका नहिं फोड़ ।
पहिन इसे तुम रण करो, यह अभेद बेजोड़ ।।४२२।।
दिया अङ्गिरा को रहा, सुरपति ने उस काल ।
फेर वृहस्पति को मिला, सुवरण कवच विशाल ।।४२३।।
सुरगुरु ने अर्पित किया, अग्निवेश्य के हेत ।
उनसे मुझको यह मिला, राजन् ! मन्त्र समेत ।।४२४।।
सो मैं तुमको दे रहा, उसी मंत्र के साथ ।
पहिन इसे तुम रण करो, यों बोले द्विज नाथ ।।४२५।।
पहनाया कुरुराज को, पढकर वैदिक मन्त्र ।
और कहा जाकर लड़ो, होकर परम स्वतंत्र ।।४२६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मैं रक्षक हूँ द्वार का, छोड़ न सकता द्वार ।
अर्जुन से तुम युद्ध कर, करो घोर संहार ।।४२७।।
पहन कवच रण को चला, दुर्योधन बलवान ।
संग त्रिगर्तों को लिये, गरजा सिंह समान ।।४२८।।
इधर पाण्डु सेना बढ़ी, मुख्य द्वार की ओर ।
धृष्टद्युम्न सात्यकि, बली, करें शोर घनघोर ।।४२९।।
लड़े द्रोण से युद्ध ये, पाण्डव वीर सुधीर ।
मघा बिन्दु से बरसते, उभय पक्ष के तीर ।।४३०।।
अगणित सेना नष्ट कर, गरजे द्रोणाचार ।
धृष्टद्युम्न अरु सात्यकी, ने भी किया संहार ।।४३१।।
हुआ युद्ध घनघोर था, बही रक्त की धार ।
हुआ उधर सुयोधन वीर वर, लड़ता दे हुँकार ।।४३२।।
अर्जुन से संग्राम कर, छोड़े अगणित बान ।
इतनी शर वर्षा करी, छिपे गगन में भान ।।४३३।।
वीर बिन्दु अनुविन्द उत, लड़े धनञ्जय साथ ।
महावीर दोनों विकट, दिखा रहे निज हाथ ।।४३४।।
किया युद्ध विकराल था, वीर धनंजय संग ।
लड़े युद्ध इस तौर वे, बदल दिया रण रंग ।।४३५।।
क्रोधवन्त अर्जुन हुए, क्षुरप अस्त्र ले हाथ ।
चढ़ा धनुष पर फिर उन्हें, काटे उनके माथ ।।४३६।।
श्रमित पिपासित अश्व लख, बोले अर्जुन बैन ।
थकन दूर इनकी करो, हे हरि ! करुणा ऐन ।।४३७।।
बिंधे बाण इनके प्रभो, दीजै उन्हें निकाल ।
घाव स्वच्छ कर करों से, मोहन दीन दयाल ।।४३८।।
परस करों का पाय कर, दुख से होयँ निवृत्त ।
कृपा छोर पा आप की, हों फिर से रण मत्त ।।४३९।।
तब तक मैं केशव सुनो, रोके हूँ रिपु सैन ।
लड़ूँ अकेला सबों से, तब बल करुणा ऐन ।।४४०।।
तुरत बाण ले एक फिर, पढ़कर विधिवत् मंत्र ।
धरा गर्म से नीर को, क्षण में किया स्वतंत्र ।।४४१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दिव्य सरोवर रच दिया, अर्जुन ने रण मध्य ।
भीति शरों की कर खड़ी, घोड़े किये अबध्य ।।४४२।।
अश्व सहित गोविन्द गये, श्रम हरने तत्काल ।
लेकर कर गाण्डीव धनु, खड़ा पाण्डु का लाल ।।४४३।।
कौरव दल ने जब लखा, अर्जुन सारथि हीन ।
क्यों न समय का लाभ लें, हुए शक्ति से क्षीण ।।४४४।।
सब मिलकर इस समय अब, करें युद्ध घनघोर ।
शर वर्षा करते हुए, बढ़े धनञ्जय ओर ।।४४५।।
कौरव सेना सिन्धु सम, अगम अनंत अथाह ।
लहर बाण ध्वज भाँवरें, विजयेच्छा सुप्रवाह ।।४४६।।
मगर मच्छ हाथी दिखें, मछली पैदल सैन ।
बजैं शंख औ दुन्दुभी, घन गर्जन से बैन ।।४४७।।
रथ समूह अगणित बना, अनुपम तरल तरंग ।
कछुआ पगड़ी बन गए, छत्र फेनका रङ्ग ।।४४८।।
गज शरीर सुन्दर शिला, थे अर्जुन तट रूप ।
रोक-रोक रण वारि को, करते युद्ध अनूप ।।४४९।।
एक अकेला पाण्डु सुत, अगणित कौरव वीर ।
केहरि सम लड़ता खड़ा, रिपु गज दल को चीर ।।४५०।।
बाल न बाँका कर सके, कौरव वीर भुवाल ।
कृपा कोर थी श्याम की, लड़ा पाण्डु का लाल ।।४५१।।
घोड़ों को नहला धुला, और पिला शुचि नीर ।
स्वस्थ किया गोविन्द ने, हर ली सारी पीर ।।४५२।।
और जोत हरि आ गये, कृष्ण धनञ्जय पास ।
रथ में फिर बैठा उसे, बोले रमा निवास ।।४५३।।
प्रहर तीसरा लग गया, प्रण करना है पूर्ण ।
करो युद्ध निर्भीक हो, लगा शक्ति सम्पूर्ण ।।४५४।।
भूरिश्रवा, शल, शल्य, कृप, अरु वृष, कर्ण समेत ।
महारथी छह साथ हैं, जयद्रथ रक्षा हेत ।।४५५।।
इन सबसे लड़ना तुम्हें, पानी विजय सुजान ।
तब जयद्रथ बधकर सको, बोले श्री भगवान् ।।४५६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इतना कह रथ हाँक कर, पहुँचे रण के बीच ।
कौरव दल की आ गई, नये सिरे से मीच ।।४५७।।
महारथी छह लड़ रहे, एक धनञ्जय साथ ।
रण कौशल करते प्रबल, दिखा दिखा निज हाथ ।।४५८।।
जो शर छोड़े वीर यह, देता अर्जुन काट ।
और सहस्त्रों शरों से, रिपु सेना दी पाट ।।४५९।।
अश्वारोही गज रथी, मारे अमित अपार ।
पैदल सेना हनी जो, उसका नहीं शुमार ।।४६०।।
मार मार रिपु सैन्य को, क्षण में किया विहाल ।
अस्त व्यस्त सेना लखी, दुर्योधन भूपाल ।।४६१।।
स्वर्ण कवच धारण किये, सम्मुख आया वीर ।
अर्जुन पर छोड़े तभी, उसने अगणित तीर ।।४६२।।
लड़े युद्ध दोनों विकट, सुभट महा बलवान ।
हने कृष्ण पर कुपित हो, कुरुपति ने दस बान ।।४६३।।
बींधे चारों अश्व फिर, प्रखर छोड़ शर चार ।
चाबुक काटी एक से, करके प्रबल प्रहार ।।४६४।।
मारे चौदह बाण फिर, अर्जुन ने कर क्रोध ।
पर निष्फल होकर गिरे, हुआ धनञ्जय बोध ।।४६५।।
गुरुवर द्रोणाचार्य ने, कवच दिया पहनाय ।
समझा अर्जुन वीर सब, निर्भय लख कुरुराय ।।४६६।।
प्रखर बाण फिर एक ले, धर कर धनुगाण्डीव ।
हना हथेली पर जभी, कुरुपति व्यथित अतीव ।।४६७।।
कृपाचार्य पर फिर हने, अर्जुन ने सौ बान ।
कर्ण वक्ष पर दस हने, शल कर लहू लुहान ।।४६८।।
भूरिश्रवा धनु काट कर, मारे बान पचास ।
और किया वृषसेन का, तत्क्षण वहीं विनाश ।।४६९।।
अश्वत्थामा शल्य पर, मारे अगणित तीर ।
विचलित सबके सब हुए, महारथी रणधीर ।।४७०।।
महारथी सातों किये, विह्वल और अधीर ।
हरि ने रथ आगे किया, जिधर जयद्रथ वीर ।।४७१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुख्य द्वार पर लड़ रहे, उधर द्रोण बलवान ।
रोक लिये पाण्डव बली, छिड़ा युद्ध घमसान ।।४७२।।
बृहत्क्षत्र केकय बली, महा प्रतापी शूर ।
शर बरसाता द्रोण पर, मद में अपने चूर ।।४७३।।
क्षेमधूर्ति सम्मुख हुआ, छोड़ सहस्रों बाण ।
बृहत्क्षत्र को रोक कर, लड़ा युद्ध घमसान ।।४७४।।
धृष्टकेतु आचार्य पर, झपटा ज्यों तत्काल ।
त्यों ही सम्मुख आ गया, धन्वा वीर भुवाल ।।४७५।।
दुर्मुख ने सहदेव को, रोका कर संग्राम ।
सात्यकि से भिड़ गया तब, व्याघ्रदत्त बलवान ।।४७६।।
द्रुपद सुता के सुतों से, युद्ध किया घनघोर ।
सोमदत्त के पुत्रगण, बल में बली अथोर ।।४७७।।
दैत्य अलम्बुस भीम से, लड़ा युद्ध विकराल ।
भिड़े युधिष्ठिर द्रोण से, धनुधर लिये विशाल ।।४७८।।
धर्मराज ने हने फिर, गुरु पर नब्बे बान ।
क्रोधवन्त तब हो गये, द्विजवर वीर महान ।।४७९।।
खींच धनुष तत्काल फिर, छोड़े शर पच्चीस ।
अश्व सहित घायल हुए, धर्मराज अवनीश ।।४८०।।
मार सारथी अश्व फिर, छोड़ सहस्रों तीर ।
धनुष ध्वजा को काटकर, गरजे नाद गंभीर ।।४८१।।
रथ पर तब सहदेव के, चढ़े युधिष्ठिर धाय ।
चला गया रथ ले उन्हें, रण से दूर लिवाय ।।४८२।।
क्षेमधूर्ति का बध हुआ, बृहत्क्षत्र के हाथ ।
धृष्टकेतु ने उसी क्षण, काटा धन्वा माथ ।।४८३।।
वीर बली सहदेव ने, दुर्मुख किया विहाल ।
और बली निरमित्र का, काटा क्षण में भाल ।।४८४।।
सैन्य त्रिगर्तों की हुई, कम्पित विकल अधीर ।
राजपुत्र का मरण लख, शोक ग्रस्त थे वीर ।।४८५।।
नकुल और विकरण लड़े, दोनों वीर महान ।
गरज-गरज हुँकार कर, लड़ते काल समान ।।४८६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्याघ्रदत्त सात्यकि भिड़े, रण कौशल के साथ ।
सात्यकि ने काटा तुरत, व्याघ्रदत्त का माथ ।।४८७।।
मगध देश की सैन्य ने, किया घोर संग्राम ।
सात्यकि ने उन सबों को, पहुँचाया सुर धाम ।।४८८।।
द्रुपद सुता के सुतों से, शल करता था युद्ध ।
उसका शिर सहदेव सुत, ने काटा हो क्रुद्ध ।।४८९।।
लड़े अलम्बुष भीम सँग, कर माया पाखण्ड ।
भीमसेन ने क्रोध कर, छोड़ा अस्त्र प्रचण्ड ।।४९०।।
अस्त्र विश्वकर्मा प्रखर, करता माया नष्ट ।
भाग अलम्बुष तब गया, पाकर अतुलित कष्ट ।।४९१।।
रोक घटोत्कच ने लिया, उसको मग में जाय ।
असुर बली दोनों लड़े, माया प्रबल दिखाय ।।४९२।।
कभी लड़े वे भूमि पर, कभी लड़े आकाश ।
अन्धकार क्षण में करें, क्षण में करें प्रकाश ।।४९३।।
भीमसेन के पुत्र ने, क्रोधित हो उस काल ।
उठा अलम्बुष को लिया, पकड़ा उसे सँभाल ।।४९४।।
घुमा फिरा चहुँ ओर फिर, पटका भू पर धाय ।
गला घोट उसका तुरत, सुरपुर दिया पठाय ।।४९५।।
सिंह नाद पाण्डव करें, मरा अलम्बुष देख ।
होनी प्रबल महान है, धनि विधिना की रेख ।।४९६।।
सात्यकि अरु गुरु द्रोण उत, लड़े वीर बलवान ।
युद्ध कला में निपुण दोउ, योधा मंहा महान ।।४९७।।
कौरव पाण्डव कर रहे, घोर युद्ध उस काल ।
शर वर्षा ऐसी करें, जिसकी नहीं मिसाल ।।४९८।।
एक-एक से लड़ रहे, बड़े-बड़े अवनीश ।
रक्तमयी पृथ्वी हुई, कटें भुजा औ शीश ।।४९९।।
बोले अर्जुन से तभी, कृष्णाचन्द्र भगवान ।
मैं माया हूँ कर रहा, सुन लो पार्थ सुजान ।।५००।।
सूर्य दिखेंगे अस्त अब, किन्तु न होंगे अस्त ।
अस्त समझ कर सूर्य को, कौरव होंगे मस्त ।।५०१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उसी समय बध करो तुम, जयद्रथ का हे पार्थ ।
यही मार्ग उत्तम सुनो, समझो यही यथार्थ ।।५०२।।
इतना कह कर कृष्ण ने, माया की तत्काल ।
अरुण सूर्य दिखने लगे, मानो सायंकाल ।।५०३।।
रथ हाँका श्रीकृष्ण ने, फिर जयद्रथ की ओर ।
वायु वेग सा रथ बढ़ा, घर-घर करता शोर ।।५०४।।
जयद्रथ के सम्मुख पहुँच, बोले श्री भगवान ।
देखो जयद्रथ देखता, सिर ऊँचा कर भान ।।५०५।।
यही समय है बध करो, गिरे न भू पर शीश ।
वृद्धक्षत्र इसके पिता, धर्म निष्ठ अवनीश ।।५०६।।
संध्या करते इस समय, लखकर सायंकाल ।
स्यमन्त पञ्चक क्षेत्र के, बैठे पार भुवाल ।।५०७।।
वृद्धक्षत्र की गोद में, पहुँचे जयद्रथ भाल ।
ऐसा करो उपाय तुम, वीर पाण्डु के लाल ।।५०८।।
अगर शीश भू पर गिरे, दुसरा है वरदान ।
नष्ट होय जो भी हने, सुन लो पार्थ सुजान ।।५०९।।
सुनकर हरि की बात को, अर्जुन वीर महान ।
दिव्य अस्त्र धनु में चढ़ा, किया उसे संधान ।।५१०।।
शीश काट कर शर उड़ा, नभ में बाज समान ।
वृद्धक्षत्र की गोद में, शिर ले पहुँचा बान ।।५११।।
वृद्धक्षत्र ने गोद से, फेंका भू पर शीश ।
सौ टुकड़े उसके हुए, मरा तुरत अवनीश ।।५१२।।
पाञ्चजन्य निज शंख को, लेकर के घनश्याम ।
लगे बजाने मोद से, मोहन लीलाधाम ।।५१३।।
कौरव व्याकुल हो गये, लख जयद्रथ संहार ।
पाण्डव हर्षित हो करें, मिलकर जय-जयकार ।।५१४।।
किया कार्य घनश्याम ने, अद्भुत और महान ।
पूर्ण कराया पार्थ प्रण, कर माया भगवान ।।५१५।।
निज जनहित करते सदा, सब कुछ लीला धाम ।
धनि लीला गोविन्द की, धन्य-धन्य घनश्याम ।।५१६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चोट खाय कर साँप ज्यों, क्रोधित होय महान ।
जयद्रथ वध त्यों देखकर, कोपे कौरव म्लान ।।५१७।।
टूटे पाण्डव सैन्य पर, भूखे सिंह समान ।
लपक-लपक शिर काटते, मचा युद्ध घमसान ।।५१८।।
सात्यकि से तब कर्ण का, छिड़ा युद्ध घनघोर ।
अर्जुन के सम्मुख हुए, कृपाचार्य बरजोर ।।५१९।।
गुरू शिष्य का युद्ध फिर, हुआ विकट उस काल ।
दोनों ही शर छोड़ते, जैसे विषधर व्याल ।।५२०।।
कृपाचार्य के बाण सब, अर्जुन देता काट ।
काट काट रिपु सैन्य को, रहा रणस्थल पाट ।।५२१।।
नहीं धनञ्जय चाहता, हरना गुरु के प्राण ।
जिनसे सीखी धनुकला, प्राप्त किया विज्ञान ।।५२२।।
महापाप कैसे करूँ, गुरु का बध निज हाथ ।
चित चंचल अरु खिन्न था, ठनक रहा था माथ ।।५२३।।
कम्पित कर खर शर गहे, शूर धनञ्जय वीर ।
बचा बचा मर्माङ्ग को, छोड़ रहा था तीर ।।५२४।।
फिर भी मूर्च्छित हो गये, कृपाचार्य बलवान ।
तब रथ सारथि ले गया, छोड़ युद्ध घमसान ।।५२५।।
अश्वत्थामा आ गया, तत्क्षण करने युद्ध ।
अर्जुन पर शर छोड़ता, होकर अतुलित क्रुद्ध ।।५२६।।
अर्जुन ने गुरु सुत समझ, समझा इसे अवध्य ।
तीखे शर छोड़े नहीं, इसीलिए रण मध्य ।।५२७।।
अश्वत्थामा छोड़ता, तीखे पैने बान ।
फिर भी भगना ही पड़ा, उसे छोड़ मैदान ।।५२८।।
लड़ लड़ कौरव हो गये, थे अर्जुन से त्रस्त ।
तब तक दिनमणि भी हुए, पश्चिम दिशि में अस्त ।।५२९।।
कौरव-पाण्डव सैन्य फिर, चली शिविर की ओर ।
देख धनञ्जय पूर्ण प्रण, पाण्डव हुए विभोर ।।५३०।।
अपने अपने शिविर में, पहुँच किया विश्राम ।
करें मन्त्रणा भूपगण, प्रात होय संग्राम ।।५३१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होत भोर नित कर्म कर, कौरव कह त्रिपुरारि ।
पाण्डव भी रण को बढ़े, भजकर कृष्ण मुरारि ।।५३२।।
कौरव-पाण्डव व्यूह रच, खड़े हुए रण बीच ।
एक दूसरे पर हनें, तीर शरासन खींच ।।५३३।।
दुर्योधन के भ्रातगण, मिल करके इकतीस ।
टूट पड़े सब भीम पर, मन में था दें पीस ।।५३४।।
गदा खड्ग तलवार से, करने लगे प्रहार ।
भीमसेन ने सबों का, क्षण में किया सँहार ।।५३५।।
और घुसा फिर क्रोधकर, कौरव सेना बीच ।
लगा मारने सैन्य को, बनकर उनकी मीच ।।४३६।।
गुरुवर द्रोणाचार्य ने, छोड़े अगणित बान ।
पाञ्चाल योद्धा हने, बड़े-बड़े बलवान ।।५३७।।
भीमसेन के पुत्र से, बोले श्री घनश्याम ।
आज लड़ो तुम कर्ण से, कर भीषण संग्राम ।।५३८।।
मायावी हो शूर हो, और बड़े रणधीर ।
कौरव दल को दो दिखा, अपना बल बलवीर ।।५३९।।
दैत्य सैन्य निज सङ्ग ले, भीमपुत्र बलवान ।
टूटा कौरव सैन्य पर, भूखा सिंह समान ।।५४०।।
अगणित गज उसने हने, रथ कर चकनाचूर ।
मिला दिये तब धूलि में, जाने कितने शूर ।।५४१।।
माया कर फिर वह गया, उड़कर तुरत अकाश ।
वर्षा कर पाषाण बहु, करता रिपु का नाश ।।५४२।।
कभी छोड़ता बाण था, कभी छोड़ता शूल ।
कभी गदा के घात से, काट रहा अरि मूल ।।५४३।।
अभी गगन में दिख रहा, अभी धरा के मध्य ।
कौरव दल के वीर सब, समझें उसे अवध्य ।।५४४।।
कर्ण दुशासन द्रोण कृप, कृतवर्मा बलवान ।
अश्वत्थामा वीरवर, चकित थकित भयमान ।।५४५।।
दुर्योधन अरु भ्रात सब, बड़े-बड़े जो वीर ।
वीर घटोत्कच के तभी, बरसे सब पर तीर ।।५४६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सब विह्वल भयभीत थे, कम्पित सब के गात ।
कही कर्ण से सबों ने, मिलकर यह ही बात ।।५४७।।
मार शक्ति इसका करो, अब जल्दी ही नाश ।
बिना शक्ति सम्भव नहीं, इसका कर्ण ! विनाश ।।५४८।।
तभी कर्ण ने शक्ति का, उस पर किया प्रहार ।
गिरा घटोत्कच व्योम से, करता हाहाकार ।।५४९।।
वीर घटोत्कच को हुई, तभी बीरगति प्राप्त ।
रण में मरने से हुआ, आवागमन समाप्त ।।५५०।।
शक्ति गयी सुरलोक को, तब सुरपति के पास ।
शक्ति रहित हो कर्ण यह, चहते रमा निवास ।।५५१।।
वही हुआ जो चाहते, थे श्री करुणा ऐन ।
अर्जुन से बोले तभी, हँसकर मोहन बैन ।।५५२।।
अब लड़ना तुम कर्ण से, हो अर्जुन निर्भीक ।
इसीलिए था रोकता, और यही था ठीक ।।५५३।।
शक्ति तुम्हारे ही लिये, लिये कर्ण था पास ।
करता पूजन नित्य था, विधिवत सह विश्वास ।।५५४।।
तुम पर करे प्रहार वह, उसका था संकल्प ।
पर विकल्प ऐसा हुआ, टली तुम्हारी अल्प ।।५५५।।
यह कह कर श्रीकृष्ण ने, दिया ज्ञान उपदेश ।
जो होना था सो हुआ, बोले श्री गोपेश ।।५५६।।
युद्ध हुआ घनघोर फिर, कौरव पाण्डव बीच ।
मरे उभयतः भूप भट, नाची खुलकर मीच ।।५५७।।
भीमसेन सुत मरण लख, कोपा कर अति कोप ।
कौरव सेना मार कर, दिया धरा को थोप ।।५५८।।
दुर्योधन के भ्रातगण, बली वीर छब्बीस ।
गदा मार कर भीम ने, दिये इकट्ठा पीस ।।५५९।।
गुरुवर द्रोणाचार्य ने, होकर के अति क्रुद्ध ।
भीमसेन से फिर किया, तत्क्षण भीषण युद्ध ।।५६०।।
इतनी शर वर्षा करी, दिया भीम को ढाँप ।
पाण्डव पक्षी वीरवर, गये हृदय में काँप ।।५६१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पाञ्चाल सेना हनी, और हने भूपाल ।
बड़े बड़े योद्धा हने, गये काल के गाल ।।५६२।।
देख युद्ध गुरुद्रोण का, बोले यों घनश्याम ।
अगर लड़े ये शाम तक, सेना हने तमाम ।।५६३।।
इनका वध अब तुरत ही, हो जाना है ठीक ।
भीमसेन तुम आय कर, कह दो हो निर्भीक ।।५६४।।
अश्वत्थामा मर गया, उनको देव सुनाय ।
सुनकर विचलित द्रोण हों, बाकी यही उपाय ।।५६५।।
अस्त्र त्याग गुरु द्रोण दें, बोले श्री गोपाल ।
सुनकर के सुत को मरा, चिन्तित हों तत्काल ।।५६६।।
अस्त्र लिये गुरु द्रोण का, मरना बड़ा मोहाल ।
सुरपति को भी जीत लें, करके युद्ध कराल ।।५६७।।
मन्द-मन्द हँसते हुए, सुन्दर श्यामल गात ।
इतना कहकर श्याम ने, बतलायी यह बात ।।५६८।।
नृपति मालवा देश का, इन्द्र वर्म बलवान ।
अश्वत्थामा नाम का, हाथी पास महान ।।५६९।।
उसका वध तत्काल कर, डालो तुम अब भीम ।
बली वीर बलवान तुम, योधा विकट असीम ।।५७०।।
भीमसेन ने तुरत ही, डाला हाथी मार ।
मार मार कर गदा से, करके विकट प्रहार ।।५७१।।
द्रोणाचार्य समीप तब, गया भीम तत्काल ।
अश्वत्थामा मर गया, बोला हो बाचाल ।।५७२।।
अनहोनी यह बात है, बोले द्रोणाचार ।
अश्वत्थामा वीर है, कौन सकेगा मार ।।५७३।।
मिथ्या भाषी भीम तुम, रहे झूठ हो बोल ।
मिथ्या भाषण पाप है, सत्य सदा अनमोल ।।५७४।।
कहा भीम ने सत्य है, किंचित् नहीं असत्य ।
अश्वत्थामा मर गया, समझो गुरुवर सत्य ।।५७५।।
कहा द्रोण ने सत्य तब, मानूँगा यह बात ।
कहें युधिष्ठिर नृप अगर सतवादी विख्यात ।।५७६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धर्मराज से तुरत फिर, बोले करुणाऐन ।
अश्वत्थामा मर गया, कहने होंगे बैन ।।५७७।।
नहीं कहो तो बने नहिं, बिगड़ जाय सब काम ।
राजनीति भी धर्म है, बोले श्री घनश्याम ।।५७८।।
झूठ बोलना घृणित है, महापाप अभिशाप ।
फिर भी बोलूँ झूठ मैं, केशव ! कहते आप ।।५७९।।
धर्मराज ने तब कहा, सत्य कहूँगा सत्य ।
अश्वत्थामा मर गया, किंचित् नहीं असत्य ।।५८०।।
अवशि कहूँगा किन्तु मैं, नर-कुञ्जर की बात ।
कौन मरा, सच मैं सुनो, है मुझको अज्ञात ।।५८१।।
सम्मुख जा तब द्रोण के, धर्मराज महराज ।
कर प्रणाम पूछा तुरत, क्या आज्ञा गुरुराज़ ।।५८२।।
कहा द्रोण ने सच कहो, सत्य वचन प्रतिपाल ।
अश्वत्थामा मर गया, सतवादी भूपाल ।।५८३।।
कहा युधिष्ठिर ने तभी, ऊँचे स्वर में बोल ।
अश्वत्थामा हत हुआ, बजे शंख अरु ढोल ।।५८४।।
नर कुञ्जर की बात फिर, वाद्य ध्वनि के साथ ।
कही युधिष्ठिर ने वहाँ, जो न सुनी द्विजनाथ ।।५८५।।
अश्वत्थामा मरण सुन, दिये अस्त्र सब त्याग ।
गुरु द्रोण बैठे तभी, रथ के पिछले भाग ।।५८६।।
समाधिस्थ हो ध्यान मय, हुए ब्रह्म में लीन ।
होनी चाहे जो करे, उसके सब आधीन ।।५८७।।
धर्मराज मिथ्या कहें, देयँ धर्म को छोड़ ।
धनि होनी महिमा प्रबल, नहि तेरी है होड़ ।।५८८।।
धृष्टद्युम्न दौड़ा तुरत, ले नङ्गी तलवार ।
अनुचित उचित विचार तजि, दिया द्रोण को मार ।।५८९।।
कोलाहल तब मच गया, दोनों दल के बीच ।
गुरुद्रोण के साथ यह, कर्म हुआ है नीच ।।५९०।।
कौरव पाण्डव वीर वर, कहते यह ही बात ।
गुरुद्रोण पर है हुआ, सचमुच यह अपघात ।।५९१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्षात्र धर्म विपरीत है, धृष्टद्युम्न का कार्य ।
ऐसा किया कुकर्म यह, जो नहिं करते आर्य ।।५९२।।
अपनी अपनी कह रहे, अलग अलग सब लोग ।
होनी होकर ही रहे, जैसा लिखा सँयोग ।।५९३।।
कहा कृष्ण ने तुरत फिर, सबको यों समुझाय ।
धृष्टद्युम्न का जन्म ही, हुआ इसी हित आय ।।५९४।।
कौरव सेना भग चली, हो करके भयभीत ।
बड़े-बड़े योधा भगे, जो थे जीत अजीत ।।५९५।।
कृपाचार्य शकुनी भगे, दुःशासन बलवान ।
कर्ण सुयोधन छोड़ रण, करने लगे पयान ।।५९६।।
कौरव सेना सब भगी, छोड़ युद्ध मैदान ।
जो चाहे होनी करे, होनी महा महान ।।५९७।।
अश्वत्थामा ने लखी, विचलित कौरव सैन ।
भाग रही रण छोड़कर, होकर के बेचैन ।।५९८।।
रथ तुरन्त दौड़ाय कर, आ दुर्योधन पास ।
क्या कारण राजन् ! कहो, दिखते आप उदास ।।५९९।।
महारथी सब भग रहे, छोड़ युद्ध मैदान ।
पूज्य पिता दिखते नहीं, कहो कहो श्रीमान् ।।६००।।
दुर्योधन विह्वल हृदय, भरे नैन में नीर ।
कृपाचार्य को देखता, कम्पित हृदय अधीर ।।६०१।।
कृपाचार्य ने तब कहा, द्रोण मरण का हाल ।
सुनते ही मूर्च्छित हुआ, वीर द्रोण का लाल ।।६०२।।
होश हुआ कहने लगा, लौटो रण की ओर ।
मैं मारूँ सबको अभी, करूँ युद्ध घनघोर ।।६०३।।
नारायण के अस्त्र का, करके अभी प्रयोग ।
नष्ट करूँ पाण्डव तथा, पाञ्चाल के लोग ।।६०४।।
कौरव सेना चल पड़ी, पुनः युद्ध के हेतु ।
धृष्टद्युम्न शशि के लिए, द्रोण पुत्र बन केतु ।।६०५।।
महा युद्ध होने लगा, जिसका वार न पार ।
अश्वत्थामा ने हने, अगणित राजकुमार ।।६०६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिर नारायण अस्त्र ले, छोड़ा कर सन्धान ।
कोटि-कोटि गिरने लगे, नभ से तत्क्षण बान ।।६०७।।
स्वाहा सी होने लगी, पाण्डव सैन तुरन्त ।
दिखा पाण्डवों को तभी, मानो आया अन्त ।।६०८।।
धर्मराज ने तब कहा, रक्षा करो मुरार ।
नहीं द्रोण सुत करेगा, अब सबका संहार ।।६०९।।
अस्त्र रहित सब लोग हों, तजि वाहन समुदाय ।
इससे बचने के लिए, केवल यही उपाय ।।६१०।।
त्याग अस्त्र भू पर खड़े, पाण्डव दल के वीर ।
अस्त्र शान्त तब हो गया, धन्य श्याम तदबीर ।।६११।।
देख विफल निज अस्त्र को, अश्वत्थामा वीर ।
फेंक धनुष रथ पर दिया, कातर हृदय अधीर ।।६१२।।
और कहा सब झूठ है, अस्त्र शस्त्र धनुबान ।
नारायण के अस्त्र का, झूठा रहा गुमान ।।६१३।।
उसी समय रवि जा रहे, अस्ताचल की ओर ।
युद्ध बन्द तब हो गया, मार काट घनघोर ।।६१४।।
दुखी हृदय कौरव चले, मन मलीन तनक्षीन ।
हर्षित पाण्डव फिरे तब, देख उन्हें यों दीन ।।६१५।।
धन्य कृष्ण कहते सभी, पाण्डव सब बलवान ।
रक्षा की हम सबों की, केशव कृपा निधान ।।६१६।।
भक्तों की रक्षा करें, यही सनातन बान ।
जय गोविन्द जय श्याम जय, जय माधव भगवान ।।६१७।।
पाँच दिवस लड़कर हनी, अगणित पाण्डव सैन ।
धनुधर द्रोणाचार्य फिर, गये अमर पुर ऐन ।।६१८।।

जो इच्छा थी श्याम की,
हुई वही सब बात ।
कह 'किशोर' जय कृष्ण जय,
जय-जय श्यामल गात ।।६१९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर्ण का सेनापतित्व

पहुँच शिविर पाण्डव तथा, कौरव करें सलाह ।
पार करें किस भाँति अब, यह रण सिन्धु अथाह ।।१।।
कृपाचार्य के पास फिर, दुर्योधन नृप जाय ।
कर प्रणाम विनती करी, सोचें नाथ उपाय ।।२।।
सेनापति हो कौन अब, ले पाण्डव दल जीत ।
विजय प्राप्त कर सके जो, योद्धा प्रबल अजीत ।।३।।
कृपाचार्य ने तब कहा, कर्ण महा बलवान ।
सेनापति के योग्य है, जीते समर सुजान ।।४।।
कर्ण धनुर्धर श्रेष्ठ है, रण कौशल में विज्ञ ।
अस्त्र-शस्त्र में निपुण वह, योद्धा परम अभिज्ञ ।।५।।
मान बात कुरुराज तब, गये कर्ण के पास ।
अश्वत्थामा शकुनि संग, कृप गुरु सहित हुलास ।।६।।
दुःशासन अरु बन्धुगण, शल्यराज महराज ।
पहुँच कर्ण के शिविर में, मिले जाय कुरुराज ।।७।।
और किया सबने तभी, कर्ण कीर्ति का गान ।
सेनापति बनकर लड़ो, तुम हो वीर महान ।।८।।
पाण्डव दल दलकर तुम्हीं, रण सकते हो जीत ।
कहा सबों ने एक स्वर, हम सबको परतीत ।।९।।
दुर्योधन ने किया तब, सेनापति अभिषेक ।
जयति कर्ण बलवान जय, कहता था प्रत्येक ।।१०।।
कहा कर्ण ने शौर्य से, करूँ युद्ध विकराल ।
कृष्ण सरिस सारथि अगर, मिले सुनो भूपाल ।।११।।
करें शल्य नृपराज यदि, सारथि पद स्वीकार ।
सिद्ध काम तब होय नृप, मेरा सुदृढ़ विचार ।।१२।।
विनय करी तब शल्य से, सबने मिलकर साथ ।
कुरुपति ने फिर कहा यों, लाज आप के हाथ ।।१३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शल्यराज ने तब कहा, सुनिये कुरुपति ! बात ।
सूतपुत्र का सारथी, बनना कहते तात ।।१४।।
अच्छा तब हित करूँगा, मैं सारथि का काम ।
मगर शर्त मेरी यही, सुन लें वीर तमाम ।।१५।।
चाहे मैं जो भी कहूँ, यह मत समझे हेय ।
मेरे वचनों का कभी, कर्ण न उत्तर देय ।।१६।।
दुर्योधन अरु कर्ण ने, किया इसे स्वीकार ।
शल्य सारथी बन गये, होनी अपरम्पार ।।१७।।
कौरव दल की सैन्य फिर, हर्षित हुई अपार ।
सेनापति लख कर्ण को, करती जय-जयकार ।।१८।।
व्यूह रचा सेना डटी, सम्मुख पाण्डव आय ।
पाण्डव सेना भी बढ़ी, सँग अर्जुन ब्रजराय ।।१९।।
सूर्य पुत्र रणधीर भट, कर्ण वीर बलवान ।
भीष्म द्रोण से भी प्रखर, लड़ा युद्ध घमसान ।।२०।।
अस्त्र कला ऐसी कभी, सका न कोई देख ।
नहीं हुआ संसार में, ऐसा युद्ध अदेख ।।२१।।
कभी बरसती आग है, कभी गिरें पाषाण ।
कभी गदा गिरतीं प्रचुर, करती लहू लुहान ।।२२।।
लोहे के गोले गिरें, लगें वज्र से आय ।
महारथी पाण्डव सभी, गये देख घबराय ।।२३।।
कभी हवा इतनी चले, मानों है तूफान ।
गज रथ से गिरते नृपति, पैदल उड़ैं, महान ।।२४।।
घास-फूस तृण काठ जिमि, पावक देय जलाय ।
तिमि पांडव की सैन्य को, कर्ण रहा विलखाय ।।२५।।
चहुँ दिशि दिखते युद्ध में, कर्ण वीर के तीर ।
पौरुष लखकर कर्ण का, विचलित पांडव वीर ।।२६।।
पांडव की बहु सैन्य का, करके विकट विनास ।
कर्ण वीर कहने लगा, अट्टहास कर हास ।।२७।।
कहा कर्ण ने शल्य से, सुनो वीर भूपाल ।
अर्जुन के सम्मुख चलो, रथ लेकर तत्काल ।।२८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उसे दिखा दूँ आज मैं, रण का दिव्यानन्द ।
अर्जुन को मारूँ अवशि, सम्मुख युदुकल चन्द ।।२९।।
हँसा शल्य यह बात सुन, और कहा इस तौर ।
गीदड़ भी क्या सिंह का, छीन सका है कौर ।।३०।।
वीर धनञ्जय भानु सम, तू जुगुनू सा अल्प ।
हाँक रहा तू कर्ण क्यों, झूठ मूठ की गल्प ।।३१।।
हंस काग दोनों उड़े, करें समुन्दर पार ।
पार हंस तो हो गया, काग गिरा मँझधार ।।३२।।
काग सरिस तू कर्ण है, हंस धनञ्जय वीर ।
भूलेगा अभिमान सब, खा अर्जुन के तीर ।।३३।।
इस प्रकार से कर्ण का, भंग किया उत्साह ।
वचन-वद्ध चुप कर्ण था, मन में क्रोध अथाह ।।३४।।
रथ हाँका फिर शल्य ने, वीर धनञ्जय ओर ।
अर्जुन से कहने लगे, माधव नंन्दकिशोर ।।३५।।
करो कर्ण से युद्ध अब, मारो इसको वीर ।
इसके मरते ही सुनो, कौरव होयँ अधीर ।।३६।।
युद्ध हुआ घमसान फिर, दोनों वीर महान ।
एक-एक पर छोड़ते, दिव्य अस्त्र शुचितान ।।३७।।
महारथी दोनों प्रवर, अरु कला परवीन ।
रण कौशल दिखला रहे छोड़े अस्त्र नवीन ।।३८।।
इसी तरह लड़ते रहे, कर्ण धनंजय शूर ।
भीम दुशासन का हुआ, उधर युद्ध अति क्रूर ।।३९।।
दस सहस्त्र गज बल बली, दोनों वीर महान ।
गदा युद्ध करते विकट, गरजें सिंह समान ।।४०।।
एक दूसरे पर करें, दोनों वज्र प्रहार ।
दुःशासन पर भीम ने, किया गदा का वार ।।४१।।
दुःशासन भू पर गिरा, दौड़ पड़ा तब भीम ।
भुजा उखाड़ी तुरत फिर, दिखला शक्ति असीम ।।४२।।
वक्षस्थल फिर खड्ग से, दुःशासन का चीर ।
रक्तपान करने लगा, भीमसेन बलवीर ।।४३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूर्ण प्रतिज्ञा यों करी, भीमसेन बलवान ।
रण में विहरै सिंह सम, योद्धा महा महान ।।४४।।
और भीम ने फिर हने, कुरुपति के दस भ्रात ।
गज दल पर करने लगा, विकट गदा आघात ।।४५।।
सात्यकि धृष्टद्युम्न ने, किया युद्ध घनघोर ।
अगणित कौरव सैन्य हन, कर घनगर्जन शोर ।।४६।।
विचलित कौरव सैन्य कर, लड़ें वीर बलवान ।
कृतवर्मा आचार्य कृप, करैं युद्ध घमसान ।।४७।।
दोनों दल के वीरवर, करैं युद्ध बेजोड़ ।
लेयँ जीत रिपु मार कर, लगी परस्पर होड़ ।।४८।।
अगणित पांडव सैन्य अरु, रथी वीर बलवान ।
गये स्वर्ण रण भूमि में, तजकर मान गुमान ।।४९।।
इसी तरह कौरव मरे, अगणित वीर सुधीर ।
लड़कर पायी वीर गति, हुई स्वर्ग में भीर ।।५०।।
इसी तरह लड़ते रहे, दिन भर दोनों पक्ष ।
लिए लालसा विजय की, पूर्ण करें निज लक्ष ।।५१।।
अस्ताचल की ओर जब, गए सूर्य भगवान ।
उभय दलों ने तुरत तब, किया शिविर प्रस्थान ।।५२।।
होत प्रात रण भूमि में, पहुँची दोनों सैन ।
लिये लालसा विजय की, मन चंचल बेचैन ।।५३।।
कौरव पांडव लड़ रहे, महा भयंकर युद्ध ।
एक-एक को मारते, हो-हो कर अति क्रुद्ध ।।५४।।
कर्ण वीर बलवान ने, कहे शल्य से बैन ।
आज धनञ्जय मार कर, मैं पाऊँगा चैन ।।५५।।
चाहे रक्षक इन्द्र हों, या हों स्वयं महेश ।
अवशि धनञ्जय मरेगा, देखेंगे गोपेश ।।५६।।
कहा शल्य ने उसी क्षण, व्यर्थ बजाता गाल ।
गर्जन सुनकर सिंह का, कँपते सदा श्रृगाल ।।५७।।
महाबली धनुधर प्रबल, अर्जुन सबसे वीर ।
सम्मुख लख उस वीर को, छूटेगा तव धीर ।।५८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नखत सरिस तू कर्ण है, अर्जुन चन्द्र समान ।
कह-कहकर यों शल्य ने, किया कर्ण अपमान ।।५९।।
रथ दौड़ाकर तुरत ही, अर्जुन सम्मुख लाय ।
खड़ा किया तब शल्य ने, युद्ध भूमि में आय ।।६०।।
कहा कृष्ण ने शीघ्र ही, अर्जुन से समझाय ।
आज तुम्हारे बाण से, बचकर कर्ण न जाय ।।६१।।
महाबली हो, शूर हो, अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान ।
धनुधर सबसे श्रेष्ठ हो, पाण्डु पुत्र बलवान ।।६२।।
सूत पुत्र मृग सम करण, सिंह सरिस तुम वीर ।
क्षुद्र नदी सा कर्ण है, तुम सागर गम्भीर ।।६३।।
उत्साहित कर कृष्ण ने, साहस दिया बढ़ाय ।
युद्ध हुआ घनघोर फिर, गए बाण नभ छाय ।।६४।।
जो शर अर्जुन छोड़ते, कर्ण करे वे नष्ट ।
और बाण वर्षाय निज, रिपु को देता कष्ट ।।६५।।
अगणित शर वर्षाय कर, काट रहा रिपु सैन ।
विचलित पांडव दल किया, दिन में कर दी रैन ।।६६।।
अन्धकार छाया प्रबल, इतने छोड़े तीर ।
कर्णार्जुन का युद्ध लख, शंकित सुर नर वीर ।।६७।।
तब अर्जुन ने फेंक कर, वायव्यास्त्र महान ।
अन्धकार सब नष्ट कर, किया उदित फिर भान ।।६८।।
नाग बाण ले कर्ण ने, किया शीघ्र सन्धान ।
साध निशाना कर्ण ने, चाहा ले लूँ प्रान ।।६९।।
समझ गए भगवान तब, मोहन कृपा निधान ।
अरु रथ को निज भार से, दाबा श्री भगवान ।।७०।।
टेहुँनी बल घोड़े किये, पहिये घुसे जमीन ।
रक्षा की यों श्याम ने, माधव परम प्रवीन ।।७१।।
चूक निशाना गया तब, हुआ नागशर व्यर्थ ।
मुकुट धनञ्जय का गिरा, होते बचा अनर्थ ।।७२।।
उसी समय ही शापवश, हुई कर्ण गति वक्र ।
और धँस गये भूमि में, रथ के दोनों चक्र ।।७३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परशुराम के शाप वश, भूला अस्त्राक्षेप ।
होनी नाची शीश पर, गया कर्ण तब झेंप ।।७४।।
कूदा रथ से कर्ण फिर, पहिया पकड़ा धाय ।
लगा खींचने जोर से, सका न किन्तु उठाय ।।७५।।
तब बोला वह शीघ्र ही, सुनो धनञ्जय वीर ।
अस्त्र रहित मैं इस समय, मत छोड़ो तुम तीर ।।७६।।
धर्म युद्ध है वीरवर लूँ, मैं चक्र निकाल ।
तब लड़ना ही धर्म है, बोला यों वाचाल ।।७७।।
कहा कृष्ण ने इस समय, क्यों करता बकवाद ।
द्रुपद सुता अपमान की, भी करले तू याद ।।७८।।
भीमसेन विषपान अरु, लाक्षागृह सम्वाद ।
और बाल अभिमन्यु बध, कहाँ धर्म मर्याद ।।७९।।
धर्म दुहाई दे रहा, करके महा अधर्म ।
कहाँ गया था धर्म जब, करता रहा कुकर्म ।।८०।।
और धनञ्जय से कहा, है अवसर उपयुक्त ।
इसे मार कर इसी क्षण, झंझट से हो मुक्त ।।८१।।
राजनीति बस है यही, बैरी डाले मार ।
विजय प्राप्ति ही धर्म है, सुन लो पाण्डु कुमार ।।८२।।
सुनकर केशव के वचन, दिव्य अस्त्र ले हाथ ।
और शीघ्र संधान कर, काटा उसका माथ ।।८३।।
शीश गिरा कट भूमि पर, ज्योति गई आकाश ।
लीन हुई वह सूर्य में, फैला दिव्य प्रकाश ।।८४।।
करण मरण लखकर सभी, कौरव हुए विहाल ।
सैन्य भगी रण छोड़ कर, विचलित शल्य भुवाल ।।८५।।
हर्षनाद पाण्डव करें, निज-निज शंख बजाय ।
जय माधव गोविन्द जय, जय-जय-जय ब्रजराय ।।८६।।

शल्य का सेनापतित्व

मरते ही बस कर्ण के, शल्य गया घबराय ।
रथ लेकर तत्क्षण मिला, दुर्योधन से आय ।।१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और कहा फिर शल्य ने, आती सबकी मीच ।
सदा सिद्धि मिलती नहीं, धीर धरो मन बीच ।।२।।
यह क्रीड़ा प्रारब्ध की, होनी प्रबल महान ।
भीष्म गिरे रण भूमि में, जो थे काल समान ।।३।।
गुरुवर द्रोणाचार्य से, महा धनुर्धर वीर ।
कर्ण प्रतापी शूर भट, सब ने तजा शरीर ।।४।।
जीवन समझें प्रबल सब, मृत्यु तुच्छ लें मान ।
किन्तु मृत्यु है अति बली, निर्बल जीवन जान ।।५।।
फिर भी साहस छोड़ना, नहीं वीर का धर्म ।
फल की कांक्षा छोड़कर, करता रहे सुकर्म ।।६।।
मन ही मन कुरुपति गुने, अपने सब दुष्कार्य ।
जीवन भर मैंने किये, सचमुच कार्य अनार्य ।।७।।
फिर भूला यह बात सब, दुर्योधन मति मन्द ।
और लगा कहने तुरत, होकर यों स्वच्छन्द ।।८।।
मरना जीना सृष्टि का, हुआ न अब तक मन्द ।
दिन में निकलें सूर्य नित, और रात्रि में चन्द ।।९।।
अब भी सकता जीत मैं, मुझे पूर्ण विश्वास ।
यदि सेनापति आप हों, मिटे सकल दुख त्रास ।।१०।।
इन्द्र वरुण यम काल भी, करें अगर संग्राम ।
तो भी सकते जीत तुम, राजन् ! बल के धाम ।।११।।
सिवा आपके इस समय, मुझे न दिखता और ।
राजन् ! सारे विश्व में, वीर आप सिरमौर ।।१२।।
एक कृष्ण क्या चीज है, आवें कृष्ण हजार ।
पाण्डव को सकते तुम्हीं, एक अकेले मार ।।१३।।
विजय हमारी अवशि है, इसमें नहिं सन्देह ।
पाण्डु सुतों से त्याग दें, यदि राजन् ! निज नेह ।।१४।।
कहा शल्य ने गरज कर, सिंह सदृश कर बात ।
सेनापति मैं बनूँगा, मेटूँगा उत्पात ।।१५।।
तुरत सुयोधन ने दिया, सेनापति पद भार ।
वेद मंत्र पढ़ द्विजों ने, किया मंगलाचार ।।१६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चित्रस्सेन सुषेण अरु, अश्वत्थामा वीर ।
कृपाचार्य धृतसेन नृप, कृतवर्मा रणधीर ।।१७।।
जयत्सेन शकुनी सुभट, अरु अरिष्ट बलवान ।
बजा-बजा निज शंख को, गरजे मेघ समान ।।१८।।
धर्मराज ने जब सुनी, शंखध्वनि घनघोर ।
शल्यराज नृप हो गए, सेनापति उस ओर ।।१९।।
कहा कृष्ण से उसी क्षण, सुनिये श्री भगवान ।
अब क्या करना चाहिए, कहिये कृपा निधान ।।२०।।
शल्य महा बलवान है, युद्ध करे अब कौन ।
युक्ति बतायें आप कह, हुये युधिष्ठिर मौन ।।२१।।
मृदुल मन्द मुसकान युत, बोले करुणा ऐन ।
शल्य अवशि बलवान है, सत्य तुम्हारे बैन ।।२२।।
भीष्म पितामह द्रोण सम, अस्त्र कला में दक्ष ।
इन्द्र, वरुण, यम, काल, अरु, परशुराम समकक्ष ।।२३।।
उससे लड़ने के लिए, आप पूर्ण उपयुक्त ।
कर सकते हैं शल्य को, रण में जीवन मुक्त ।।२४।।
मरते ही बस शल्य के, निष्कंटक है राह ।
करना है इस भाँति ही, क्षात्र धर्म निर्वाह ।।२५।।
भूलें माया मोह को, करें विकट संग्राम ।
धर्मराज ! लें मान यह, बोले श्री घनश्याम ।।२६।।
निश्चित कर यह शिविर में, कह जय नन्दकुमार ।
गये सभी विश्राम हित, निज-निज शयनागार ।।२७।।
प्रातकाल नितकर्म कर, दोनों दल के शूर ।
लड़ने मरने को बढ़े, अपने मद में चूर ।।२८।।
व्यूह सर्वतोभद्र तब, रचाकर किया तयार ।
स्वयं शल्य धनुधर सुभट, खड़ा हुआ मुख द्वार ।।२९।।
वीर शिखण्डी सात्यकी, धृष्टद्युम्न बलवान ।
सन्मुख आये शल्य के, पाण्डव सैन प्रधान ।।३०।।
छिड़ा युद्ध घमसान फिर, भिड़ी परस्पर सैन ।
सिंहनाद दोनों करें, गरज-ग़रज कर बैन ।।३१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चित्रसेन अरु नकुल का, हुआ युद्ध घनघोर ।
चित्रसेन को मार कर, गरजा पाण्डु किशोर ।।३२।।
क्रोधित हो आये तभी, चित्रसेन के भ्रात ।
सत्यसेन बलवान अरु, श्री सुषेण विख्यात ।।३३।।
बली नकुल ने झट किया, सत्यसेन संहार ।
श्री सुषेण ने तब दिया, नकुल सारथी मार ।।३४।।
अश्व मार ध्वज काटकर, लेकर तीखे बान ।
नकुल वक्ष पर हने तब, होकर क्रुद्ध महान ।।३५।।
और सैन्य मारी बहुत, पाण्डव की उस काल ।
छोड़ अस्त्र अरु शस्त्र बहु, गरजा वह विकराल ।।३६।।
रथ से कूदा नकुल तब, ले नङ्गी तलवार ।
अरु सुषेण के रथ चढ़ा, दिया शीघ्र ही मार ।।३७।।
बन्धु सुयोधन बीस मिल, चढ़े भीम पर धाय ।
भीमसेन ने सबों को, सुरपुर दिया पठाय ।।३८।।
शल्य युधिष्ठिर लड़ रहे, दोनों वीर भुवाल ।
मामा भाञ्जे युद्ध कर, बने परस्पर काल ।।३९।।
शर बरसा कर शल्य ने, पाण्डु वाहिनी मध्य ।
मारे अगणित वीरवर, जो थे वध्य अवध्य ।।४०।।
अगणित गज संहारकर, रथी अनेकों मार ।
पैदल इतने हन दिये, जिनका नहीं शुमार ।।४१।।
भीष्म द्रोण अरु कर्ण ने, नहीं किया जो काम ।
एक अकेले शल्य ने, सेना हनी तमाम ।।४२।।
धर्मराज पर हने फिर, तीखे तीखे बान ।
सिंहनाद करने लगा, प्रमुदित सह अभिमान ।।४३।।
चेकितान का बध किया, दुर्योधन ने आप ।
और हने बलवान बहु, दिया धरा को ढाँप ।।४४।।
भरे युधिष्ठिर क्रोध में, नैन हुए अति लाल ।
मार दिया द्रुमसेन को, करके रण विकराल ।।४५।।
अश्वत्थामा ने दिया, इधर सुरथ को मार ।
उधर युधिष्ठिर ने किया, शल्य वीर पर वार ।।४६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काट शीश उसका दिया, छोड़ नुकीला बान ।
और शल्य के भ्रात के, हरे तुरत ही प्रान ।।४७।।
हर्षित केशव हो गये, देख शल्य का नाश ।
धन्य युधिष्ठिर ! धन्य हो, बोले रमा निवास ।।४८।।
यही एक बलवान था, कौरव दल में शेष ।
विजय अवशि अब प्राप्त हो, बोले श्री गोपेश। ।।४९।।
मद्रराज बलवान भट, शल्य गये सुरलोक ।
कौरव दल में छा गया, भय विह्वलता शोक ।।५०।।
पाण्डव हर्षित हो रहे, करें युद्ध घनघोर ।
भीमसेन आगे बढ़ा, करता घन सा शोर ।।५१।।
छोड़ बाण मारे तुरत, पैदल अमित अपार ।
अश्वारोही गज रथी, पर भी किया प्रहार ।।५२।।
विचरे रण में काल सम, भीमसेन बलवान ।
कौरव दल भगने लगा, देख युद्ध घमसान ।।५३।।
दुर्योधन ने तुरत ही, कहे गरज यों बैन ।
ठहरो रण में वीरवर !, क्यों होते बेचैन ।।५४।।
युद्ध करूँ मैं स्वयं अब, देखो मम संग्राम ।
क्षात्र धर्म पालन करो, वीर बली इस ठाम ।।५५।।
शाल्व सुभट गज पर चढ़ा, म्लेच्छ राज बलवान ।
टूटा पाण्डव सैन्य पर, छोड़ सहस्त्रों बान ।।५६।।
ऐरावत सम मत्त गज, धँसा पाण्डु की सैन ।
लगा कुचलने सैन्य को, सबको कर बेचैन ।।५७।।
धृष्टद्युम्न अरु भीम से, छिड़ा शाल्व का युद्ध ।
भीमसेन निज गदा ले, दौड़ा होकर क्रुद्ध ।।५८।।
गज मस्तक पर किया फिर, विकट गदा का वार ।
फटा कुम्भ गज का तुरत, बही रुधिर की धार ।।५९।।
सात्यकि ने शर साधकर, दिया शाल्व पर छोड़ ।
शीश कटा अरु शाल्व ने, शीघ्र दिया दम तोड़ ।।६०।।
शाल्व मरण लख कर तभी, दुर्योधन भूपाल ।
युद्ध लगा करने सुभट, जिसकी नहीं मिसाल ।।६१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वह पाण्डव की सैन्य पर, छाड़े बाण कराल ।
क्षण में मारे वीर बहु, किया हाल बेहाल ।।६२।।
कुरुपति के भ्राता बली, द्वादश सुभट महान ।
भीमसेन से लड़ रहे, छोड़ सहस्त्रों बान ।।६३।।
एक अकेला भीम था, ये बारह बलवीर ।
छेदें भीम शरीर को, मार मार कर तीर ।।६४।।
क्रोधवन्त हो भीम ने, उठा गदा तत्काल ।
कर प्रहार अति वेग से, फोड़े उनके भाल ।।६५।।
सिंह नाद पाण्डव करें, हो प्रसन्न उस काल ।
जयति भीम बलवान जय, जय केशव गोपाल ।।६६।।
कहा कृष्ण ने पार्थ से, सुनो वीर बलवान ।
कौरव दल के वीर बहु, गये स्वर्ग तज प्रान ।।६७।।
दुर्योधन के भ्रात भी, लड़कर हुए समाप्त ।
भीमसेन के हाथ से, सद्गति की है प्राप्त ।।६८।।
बचा सुदर्शन एक ही, दुर्योधन के सङ्ग ।
सेना भी थोड़ी रही, सरल जीतना जङ्ग ।।६९।।
अश्वत्थामा, कृप, शकुनि, अरु त्रिगर्त नृपराज ।
कृतवर्मा बलवान अरु, हैं उलूक अधिराज ।।७०।।
इने गिने ये ही बचे, योद्धा केवल शेष ।
और थके हैं ये सभी, बोले श्री गोपेश ।।७१।।
इन्हें मार कर वीरवर, कर दो काम तमाम ।
युद्ध आज ही जीतकर, करो खत्म संग्राम ।।७२।।
दुर्योधन का है अभी, बिगड़ा होश हवास ।
संग सुदर्शन के करो, तुम कुरुपति का नास ।।७३।।
सुनकर केशव के वचन, बोले अर्जुन वीर ।
इन दोनों का वध करें, स्वयं भीम रणधीर ।।७४।।
और शेष से मैं स्वयं, करूँ युद्ध तत्काल ।
रथ को आगे ले चलो, हे केशव गोपाल ।।७५।।
रथ हाँका गोविन्द ने, अर्जुन छोड़े बान ।
वीर सुशर्मा शकुनि से हुआ, युद्ध घमसान ।।७६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भीम सुदर्शन से भिड़े, कुरुपति से सहदेव ।
विकट युद्ध होने लगा, देखें देव अदेव ।।७७।।
प्राण लोभ तजकर लड़े, दोनों दल के वीर ।
एक दूसरे पर हने, विकट नुकीले तीर ।।७८।।
सतकर्मा, सत्येषु नृप, मरे धनञ्जय हाथ ।
वली सुशर्मा का दिया, काट क्षुरप से माथ ।।७९।।
बली सुशर्मा के लड़े, पैंतालिस सुतवीर ।
अर्जुन ने मारे सभी, छोड़ अनोखे तीर ।।८०।।
उसी समय ही भीम ने, उठा गदा विकराल ।
हनी सुदर्शन शीश पर, बनकर उसका काल ।।८१।।
मरा सुदर्शन वीर जब, भागी कौरव सैन ।
किया वीर सहदेव ने, कुरुपति को बेचैन ।।८२।।
शकुनी पुत्र उलूक से, युद्ध किया घनघोर ।
और एक ही क्षुरप से, डाला मस्तक फोर ।।८३।।
मरा देख निज पुत्र को, शकुनी हुआ अधीर ।
विह्वल हो रोने लगा, बहा नयन से नीर ।।८४।।
क्रोधित होकर तुरत ही, छोड़े अगणित बान ।
ढाँप दिया सहदेव को, गरजा सिंह समान ।।८५।।
किन्तु बली सहदेव ने, काटे उसके तीर ।
और अनेकों शरों से, छेदा सकल शरीर ।।८६।।
तब भागा रण छोड़कर, शकुनी हो भयभीत ।
कहा तभी सहदेव ने, त्याग न क्षत्रिय नीत ।।८७।।
क्षत्रिय का रण धर्म है, जायें चाहे प्राण ।
पीठ दिखावे पर नहीं, है यह नीति विधान ।।८८।।
यह पाँसों का छल नहीं, जीत लिया धन धाम ।
ठहर-ठहर ऐ दुष्ट तू, कर मुझसे संग्राम ।।८९।।
अभी मारकर तुझे मैं, भेजूँ यम के लोक ।
रे पापी निर्लज्ज अब, क्यों करता है शोक ।।९०।।
कड़ुवे तीखे व्यंग्य युत, सुनकर अट-पट बैन ।
पलट पड़ा रण हित तुरत, शकुनि हृदय बेचैन ।।९१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और वीर सहदेव पर, करके गदा प्रहार ।
अरु दौड़ा सम्मुख तुरत, ले नङ्गी तलवार ।।९२।।
गदा काट सहदेव ने, बचा लिया वह वार ।
और काट तलवार को, गरजा कर हुँकार ।।९३।।
भल्ल मार सहदेव ने, दिया शकुनि शिर काट ।
और सैन्य संहार कर, दिया धरा को पाट ।।९४।।
दुर्योधन ने उसी क्षण, बुला शेष निज सैन ।
गरज-गरज कहने लगा, सैनिक दल से बैन ।।९५।।
करो युद्ध बलवान तुम, लगा पूर्ण निज शक्ति ।
जीतो पाण्डव सैन्य को, बचे न कोई व्यक्ति ।।९६।।
लड़े वीर हुंकार कर, तज प्राणों का मोह ।
पर क्षण में मारे गये, बढ़ा सुयोधन छोह ।।९७।।
बचा अकेला वीर था, दुर्योधन भूपाल ।
पाण्डव हर्षित देख कर, मन चंचल बेहाल ।।९८।।
नहीं सहायक एक भी, सम्मुख था उस काल ।
गदा लिये करमें भगा, दुर्योधन भूपाल ।।९९।।
होनी प्रबल महान है, होनी वश संसार ।
बचे न इससे सुर-असुर, सब पर करे प्रहार ।।१००।।
जो ग्यारह अक्षौहिणी, सेना का था नाथ ।
वह दुर्योधन भागता, पैदल, एक न साथ ।।१०१।।
पहुँच सरोवर के निकट, कर माया का जाल ।
धँसा सरोवर में तभी, दुर्योधन भूपाल ।।१०२।।
कृतवर्मा, आचार्य कृप, अश्वत्थामा वीर ।
कौरव दल में बचे थे, तीन यही रण धीर ।।१०३।।
ये भी उस सर के निकट, पहुँच गये तत्काल ।
जिस सर में था धँस गया, दुर्योधन भूपाल ।।१०४।।
अश्वत्थामा ने कही, दुर्योधन से बात ।
मैं पाण्डव को मार कर मेटूँगा उत्पात ।।१०५।।
पाञ्चाल के वीर अरु, अन्य बचे जो शूर ।
उन सबको रण मे हनूँ, कर दूँ चकनाचूर ।।१०६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आप चलें रण भूमि में, हम लोगों के साथ ।
हम काफी हैं चार ही, लड़ने को नर नाथ ।।१०७।।
दुर्योधन ने तब कहा, थका बहुत मैं वीर ।
अवशि प्रात संग्राम में, लड़ूँ सङ्ग रणधीर ।।१०८।।
तुम भी तीनों हो थके, करो आज विश्राम ।
प्रातकाल मिलना यहीं, सिद्ध करे तब काम ।।१०९।।
रहे वधिक कुछ उस जगह, और रहे कुछ ग्वाल ।
सुनी बात सब उन्होंने, जान लिया सब हाल ।।११०।।
आपस में करने लगे, मिलकर सभी सलाह ।
कहें बात यह भीम से, पावें द्रव्य अथाह ।।१११।।
अश्वत्थामा और कृप, कृतवर्मा बलवान ।
गये सरोवर छोड़ कर, निकल दूर मैदान ।।११२।।
एक वड़ा वट वृक्ष लख, बैठ गये उस ठाम ।
अश्व खोल रथ से दिये, और किया विश्राम ।।११३।।
उधर युधिष्ठिर ने कहा, सुनो कृष्ण भगवान ।
भाग सुयोधन है गया, छोड़ युद्ध मैदान ।।११४।।
भेजे कितने गुप्तचर, पता लगाने नाथ ।
पर न पता अब तक लगा, कहाँ गया कुरुनाथ ।।११५।।
इतने में आये वहाँ, बधिक और कुछ ग्वाल ।
बतलाया सर में छिपा, दुर्योधन भूपाल ।।११६।।
दिया द्रव्य उनको अतुल, बिदा किया तत्काल ।
और कहा श्रीकृष्ण ने, सुनो पाण्डु के लाल ।।११७।।
चलोअभी मिलकर सभी, तुरत सरोवर तीर ।
थका हुआ है इस समय, दुर्योधन बलवीर ।।११८।।
इसी समय बस मार दो, राजनीति यह मीत ।
चूक जायँ, अवसर अगर, दुर्लभ होगी जीत ।।११९।।
शत्रु होय बलहीन जब, उसे तुरत दे मार ।
चलो अभी सब लोग तुम, बोले नन्द कुमार ।।१२०।।
भीम नकुल सहदेव अरु, अर्जुन को ले साथ ।
धृष्टद्युम्न सात्यकि सहित, धर्मराज नर नाथ ।।१२१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बची खुची सेना लिए, चले संग घनश्याम ।
पहुँच सरोवर तीर पर, गये सभी बलधाम ।।१२२।।
कहे युधिष्ठिर ने तभी, कड़ुवे तीखे बैन ।
अरे सुयोधन छिपा यों, मरवा कर सब सैन ।।१२३।।
कुरु सुवंश में जन्म ले, रण से आया भाग ।
छिपा सरोवर में यहाँ, कुल मर्यादा त्याग ।।१२४।।
गुरू पितामह पुत्र अरु, सगे सनेही लोग ।
मरवाया इन सबों को, चाहा भोगूँ भोग ।।१२५।।
रहा भरा अभिमान में, मद में अपने चूर ।
आ सम्मुख अब युद्ध कर, बनकर सच्चा सूर ।।१२६।।
और कहे ऐसे वचन, देंय हृदय को छेद ।
सुने सुयोधन ने जभी, उपजा उर में खेद ।।१२७।।
कहा सरोवर से तभी, सुनो युधिष्ठिर ! बात ।
बहुत श्रमित हूँ इस समय, लड़ूँ अवश्य प्रभात ।।१२८।।
और अकेला शस्त्र बिन, रथ सारथि से हीन ।
नहीं सैन्य, साथी नहीं, समझो जरा, प्रवीन ।।१२९।।
फिर भी डर मुझको नहीं, लेश मात्र भी वीर ।
स्वयं अकेला ही लड़ूँ, प्रात अवशि रणधीर ।।१३०।।
लड़े एक से एक ही, श्रेष्ठ धर्म है क्षात्र ।
उसको पालें आप भी, कहना इतना मात्र ।।१३१।।
कहा युधिष्ठिर ने तुरत, लड़ो अभी इस काल ।
हम पाँचों में एक से, सुनो वीर भूपाल ।।१३२।।
जिससे चाहो युद्ध कर, लेव एक को जीत ।
भोगो पृथ्वीराज तुम, रक्खो मन परतीत ।।१३३।।
कायर बन छिपना अधम, क्षात्र धर्म प्रतिकूल ।
दुर्योधन के हृदय में, चुभे वचन जिमि शूल ।।१३४।।
निकल पड़ा लेकर गदा, सिंह सदृश बलवान ।
महाकाल सा दिख रहा, आँखें रुधिर समान ।।१३५।।
उधर कृष्ण ने भीम से, कहे वचन इस तौर ।
पूर्ण प्रतिज्ञा निज करो, कब मारोगे और ।।१३६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गदा उठा निज हाथ में, सन्मुख आया भीम ।
दुर्योधन अरु भीम हैं, दोनों बली असीम ।।१३७।।
उसी समय बलराम जी, गये वहाँ पर आय ।
तीर्थ भ्रमण करते हुए, पलटे थे सुधि पाय ।।१३८।।
दुर्योधन अरु भीम ने, उनको किया प्रणाम ।
शिष्य रहे बलराम के, दोनों बल के धाम ।।१३९।।
धर्मराज श्री कृष्ण ने, गहे चरण अभिराम ।
नमस्कार सबने किया, अभिवादन बलराम ।।१४०।।
पाण्डव कौरव युद्ध का, कहा हाल गोपाल ।
होनी ने सब कुछ किया, होनी महा विशाल ।।१४१।।
दुर्योधन अरु भीम अब, करें युद्ध इस काल ।
देखें भ्राता आप अब, बोले श्री नन्दलाल ।।१४२।।
हुआ युद्ध प्रारम्भ फिर, भिड़े सुयोधन भीम ।
दाँव पेंच करते हुए, लड़ते बली असीम ।।१४३।।
गदा-गदा पर पड़े जब, शब्द होय घनघोर ।
निकलें पावक कण बिखर, फैलें चारों ओर ।।१४४।।
विद्युत सी चमके चमक, झप जाते थे नैन ।
कड़क-कड़क कर लड़ रहे, लपक झपक बेचैन ।।१४५।।
एक-एक पर कर रहे, सँभल-सँभल कर वार ।
दोनों के मन में यही, देवें अरि को मार ।।१४६।।
उछल-उछल कर लड़ रहे, भरे हृदय उत्साह ।
लिये लालसा विजिय की, दोनों बली अथाह ।।१४७।।
गदा युद्ध में निपुण था, दुर्योधन भूपाल ।
भीमसेन से भी कुशल, था योद्धा विकराल ।।१४८।।
सभी जानते श्याम थे, मन मोहन गोपाल ।
अर्जुन से बोले तुरत, माधव दीन दयाल ।।१४९।।
करो सखा संकेत तुम, भीमसेन ले जान ।
पूर्ण प्रतिज्ञा करे निज, तोड जाँघ बलवान ।।१५०।।
नहीं दूसरा मार्ग है, यही युक्ति है एक ।
और अङ्ग सब बज्र सम, समझो सहित विवेक ।।१५१।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्जुन ने तत्काल फिर, पटक जाँघ पर हाथ ।
किया इशारा भीम को, बहुत युक्ति के साथ ।।१५२।।
समझ भीम तब गया सब, अर्जुन का संकेत ।
गदा घुमा दौड़ा तुरत, जैसे दौड़े प्रेत ।।१५३।।
दुर्योधन की जाँघ पर, हनी गदा तत्काल ।
गिरा भूमि पर उसी क्षण, दुर्योधन भूपाल ।।१५४।।
गदा युद्ध विपरीत था, भीमसेन का काम ।
क्रोधित हो हल को उठा, गरजे श्री बलराम ।।१५५।।
नाभी से नीचे नहीं, होता गदा प्रहार ।
भीमसेन ने किया यह, अनुचित अरि पर वार ।।१५६।।
मेरे सम्मुख ही हुआ, महा घोर अन्याय ।
फिर कैसे लूँ सहन कर, ले हल दौड़े धाय ।।१५७।।
पकड़ लिया तब कृष्ण ने, और कही यह बात ।
पूर्ण प्रतिज्ञा निज करी, भीमसेन ने तात ।।१५८।।
पूर्ण प्रतिज्ञा निज करे, है क्षत्रिय का धर्म ।
वही किया है भीम ने, जो क्षत्रिय का कर्म ।।१५९।।
दुर्योधन ने किये हैं, अब तक बिपुल अनर्थ ।
इस अनीति को देखकर, क्रोध करें मत व्यर्थ ।।१६०।।
द्रुपद सुता का चीर हर, भरी सभा के बीच ।
किया उन्होंने प्रथम ही, कर्म बहुत ही नीच ।।१६१।।
छल के पाँसों से छला, लिया छीन सब राज ।
जहर पिलाया भीम को, किये पाप के काज ।।१६२।।
लाक्षागृह में भेज कर, दी थी आग लगाय ।
किये कार्य कितने अधम, बोले श्री ब्रजराय ।।१६३।।
और सुभद्रा लाल को, छह ने मिलकर साथ ।
मारा था उस एक को, बोले श्री ब्रजनाथ ।।१६४।।
समझ गये बलराम तब, कृष्णचन्द्र की बात ।
है इच्छा हरि की यही, हुए शान्त बल भ्रात ।।१६५।।
गए द्वारका चले वह, तत्क्षण श्री बलराम ।
होनी चाहे जो करे, अद्‌भुत उसके काम ।।१६६।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आज भूमि पर पड़ा वह, कुरू वंश सम्राट ।
जिससे डरता विश्व था, रहे अनोखे ठाट ।।१६७।।
भीष्म द्रोण, कृप, कर्ण से, योद्धा जिसके सङ्ग ।
भ्राता जिसके सौ बली, सुर किन्नर पर रङ्ग ।।१६८।।
वही पड़ा है धूल में, एक अकेला आज ।
अंग-भंग हैं शिथिल सब, धनि होनी के काज ।।१६९।।
होनी खेले खेल जो, सका न कोई जान ।
होनी चाहे जो करे, होनी प्रबल महान ।।१७०।।
जो चहते गोविन्द थे, होनी थी वह बात ।
मृदुल मन्द हँसते हुए, बोले श्यामल गात ।।१७१।।
चलो शिविर को चलें अब, पूर्ण हुए सब काज ।
भ्रात संग ले चल दिये, धर्मराज महराज ।।१७२।।
पड़ा अकेला ही रहा, दुर्योधन भूपाल ।
हुआ न कोई विश्व में, जो होनी दे टाल ।।१७३।।
शंख बजाते जा रहे, पाण्डु सुवन उस ओर ।
कहते सब गोपाल जय, नागर नन्द किशोर ।।१७४।।

अश्वत्थामा का सेनापतित्व

कृतवर्मा, कृप साथ में, अश्वत्थामा वीर ।
बैठ मंत्रणा कर रहे, विह्वल चित्त अधीर ।।१।।
खबर मिली तत्क्षण उन्हें, हुआ युद्ध विकराल ।
गदा घात खा गिर पड़ा, दुर्योधन भूपाल ।।२।।
भीमसेन ने गदा का, किया जाँघ पर वार ।
तीनों आये वहीं पर, चिन्तित चित्त अपार ।।३।।
पड़ा अकेला भूमि पर, दुर्योधन को देख ।
अश्वत्थामा ने कहा, धनि विधना की रेख ।।४।।
चक्रवर्ति भूपाल यह, पड होनी के फेर ।
अवसर आया आज यह, लगी न क्षण की देर ।।५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिर क्रोधित हो गया, वह, अरु बोला यह बात ।
मै मारूँ अब पाण्डु सुत, वीर विश्व विख्यात ।।६।।
करूँ प्रतिज्ञा सुनो नृप !, मैं मेटूँ उत्पात ।
मुझको सेनापति करो, होवे युद्ध प्रभात ।।७।।
दुर्योधन ने कहे फिर, कृपाचार्य से बैन ।
सेनापति अभिषेक कर, दो गुरु ! करुणा ऐन ।।८।।
अश्वत्थामा को दिया, सेनापति का भार ।
और कहा कल युद्ध में, मारो पाण्डुकुमार ।।९।।
कृतवर्मा कृप साथ ले, अश्वत्थामा वीर ।
गये वहाँ से चले तब, तीनों वीर सुधीर ।।१०।।
एक बड़ा वट वृक्ष लख, बैठ गये सब लोग ।
कृतवर्मा कृप सो गये, ऐसा बना सँयोग ।।११।।
अश्वत्थामा जागते, करते रहे विचार ।
होत प्रात मैं युद्ध कर, दूँगा रिपु को मार ।।१२।।
बट में थे बैठे बहुत, रहते काग अनेक ।
सोये सब जब काग थे, उल्लू आया एक ।।१३।।
सोते में उन सबों पर, उसने किया प्रहार ।
एक-एक कर सबों को, डाला उसने मार ।।१४।।
अश्वत्थामा ने लखा, जब यों खग संहार ।
युक्ति बहुत ही सरल यह, हर्षित चित्त अपार ।।१५।।
मैं भी निशि में ही हनूँ, पाण्डव जन इस तौर ।
सरल मार्ग सबसे यही, कठिन मार्ग है और ।।१६।।
कृतवर्मा कृप को तुरत, उसने दिया जगाय ।
और बताया हाल यह, उसने सब समझाय ।।१७।।
अभी इसी क्षण जाऊँ मैं, निशि में ही दूँ मार ।
कृपाचार्य ने तब कहा, अच्छा नहीं विचार ।।१८।।
वीर पुरुष करते नहीं, ऐसे निन्दित कर्म ।
अस्त्र रहित सोते हुए, रिपु पर वार अधर्म ।।१९।।
कही नीति अरु धर्म की, कृप ने बात अनेक ।
अश्वत्थामा ने मगर, बात न मानी एक ।।२०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रथ पर चढ़ चल दिया वह, पाञ्चालों की ओर ।
भावीवश करने चला, निन्दित कर्म कठोर ।।२१।।
कृपाचार्य ने फिर कही, कृतवर्मा से बात ।
पीछे इसके चलो अब, यही ठीक है तात ।।२२।।
शंखध्वनि करते उधर, निज भ्रातों के साथ ।
पहुँचे पाण्डव शिविर जब, संग लिये ब्रजनाथ ।।२३।।
अन्तर्यामी श्याम ने, जानी निशि की बात ।
अश्वत्थामा आ यहाँ, करे घोर उत्पात ।।२४।।
पाँचों भाई शिविर में, नहीं रहें इत आज ।
निश्चय कर यह हृदय में, बोले श्री ब्रजराज ।।२५।।
शिवशंकर की कृपा से, हुई तुम्हारी जीत ।
त्याग शिविर निशि में भजो, शंकर नाम पुनीत ।।२६।।
लेकर पाण्डव साथ में, छोड़ शिविर तत्काल ।
चले गये शिव भजन को, मोहन मदन गोपाल ।।२७।।
शिव मंदिर में पहुँच कर, किया शम्भु का ध्यान ।
हो प्रसन्न प्रकटे तभी, श्री शंकर भगवान ।।२८।।
प्रेम सहित लख शम्भु को, श्री मोहन नँदलाल ।
शंकर से कहने लगे, सुनिये दीन दयाल ।।२९।।
प्रभु पाण्डव के शिविर के, निशि रक्षक हों आप ।
यही विनय है आप से मेटें भावी ताप ।।३०।।
एवमस्तु कह शम्भु ने, मानी हरि की बात ।
पहुँच शिविर शंकर गये, पहरा देने रात ।।३१।।
कर कृपाण शंकर लिये, लिपटे अंग भुजंग ।
पहरा देते शिविर का, भूत प्रेत थे संग ।।३२।।
अश्वत्थामा जब उधर, गया शिविर के पास ।
देख शम्भु रक्षक वहाँ, उपजा मन में त्रास ।।३३।।
द्रोण पुत्र तब तुरत ही, मन में धर कर धीर ।
निश्चय कर कर्त्तव्य का, लड़ा शम्भु से वीर ।।३४।।
दिव्य अस्त्र पढ़ मंत्र को, छोड़े शिव पर तीर ।
कुपित हृदय लड़ रहा अति, करे नाद गम्भीर ।।३५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निष्फल होते अस्त्र थे, लगकर शिव के अंग ।
अद्भुत लखकर दृश्य यह, द्रोण पुत्र था दंग ।।३६।।
लड़ते-लड़ते थका वह, हुआ अस्त्र से हीन ।
अस्तुति कर श्री शम्भु की, कहे वचन हो दीन ।।३७।।
आशुतोष भगवान शिव, भोला-भोला नाथ ।
औढर दानी आप हैं, मुझको करें सनाथ ।।३८।।
दे दें अपना शस्त्र यह, राह छोड़ दें नाथ ।
प्रविश शिविर रिपु हनूँ मैं, कह कर जोड़े हाथ ।।३९।।
एवमस्तु कह शम्भु ने, दे दी निज तलवार ।
और धँसावह शिविर में, क्रोधित हृदय अपार ।।४०।।
धृष्टद्युम्न जिस जगह पर, सोया था बलवान ।
द्रोण पुत्र पहुँचा वहाँ, कर में लिये कृपाण ।।४१।।
मार लात उसको जगा, दिया शीघ्र ही मार ।
और शिखण्डी पर किया, घातक तुरत प्रहार ।।४२।।
द्रुपदराज पर वार कर, काटा उनका शीश ।
अट्टहास करता फिरे, मार-मार अवनीश ।।४३।।
चुने-चुने सब वीरवर, योद्धा हने तमाम ।
काल बना रिपु सैन्य का, किया विकट संग्राम ।।४४।।
पुत्र द्रौपदी के रहे, पाँच वीर बलधाम ।
सोते थे वे वहाँ पर, पाण्डव के ही ठाम ।।४५।।
अश्वत्थामा समझ मन, ये हैं पाण्डव वीर ।
धोखे में मारे सभी, त्याग धर्म रणधीर ।।४६।।
कटे शीश लेकर चला, दुर्योधन के पास ।
पाँचों पाण्डव बध समझ, मन में भरा हुलास ।।४७।।
उधर शिविर बाहर खड़े, कृतवर्मा कृपवीर ।
जो रिपु भागे शिविर से, हनते उन पर तीर ।।४८।।
तीनों ने मिलकर किया, निशि में प्रबल संहार ।
होनी चाहे जो करे, होनी अपरम्पार ।।४९।।
ये तीनों फिर चल दिये, दुर्योधन के पास ।
और बताया हाल सब, जिस विधि किया विनास ।।५०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अश्वत्थामा ने कहा, सुन लो राजन् ! आप ।
धृष्टद्युम्न को मार कर, मेटा सब सन्ताप ।।५१।।
पाञ्चालों की सैन्य सब, द्रुपद शिखण्डी साथ ।
सबके सब मारे नृपति, काटे सब के माथ ।।५२।।
पाँचों पाण्डव भी मरे, लाया उनके शीश ।
सबके सब रिपु आपके, मारे हैं अवनीश ।।५३।।
लेव युधिष्ठिर शीश यह, मेटो हिय सन्ताप ।
ले दुर्योधन हाथ में, प्रमुदित मन था आप ।।५४।।
फोड़ युधिष्ठिर शीश को, दुर्योधन भूपाल ।
फेंका था फिर भूमि में, हर्षित चित उस काल ।।५५।।
दिया भीम का शीश फिर, दुर्योधन के हाथ ।
दोनों कर से दाब कर, चूर्ण किया वह माथ ।।५६।।
चूर्ण हुआ जब शीश वह, शंकित हुआ नरेश ।
नहीं भीम का शीश यह, इससे बढ़ा कलेश ।।५७।।
पाण्डु पुत्र मारे नहीं, मारे उनके लाल ।
हुआ अनर्थ महान यह, समझ गया भूपाल ।।५८।।
अश्वत्थामा ने किया, भ्रमवश कार्य कराल ।
दुर्योधन अति दुखित हो, मौन रहा कुछ काल ।।५९।।
अश्वत्थामा से कही, रो रोकर यह बात ।
बुरा किया तुमने बहुत, कर पुत्रों का घात ।।६०।।
नहीं कर्म ऐसा कभी, करता कोई वीर ।
महापाप तुमने किया, कहकर हुआ अधीर ।।६१।।
तुमने तो मम वंश के, दीपक दिए बुझाय ।
हाय-हाय कर रो पड़ा, महा दुखित नृपराय ।।६२।।
विधिना ने लिख दिया था, दुर्योधन के भाल ।
दुख-सुख व्यापें साथ जब, तब आयेगा काल ।।६३।।
सुखी हुआ सुनकर प्रथम, रिपु का पूर्ण विनाश ।
पाण्डव सुत बध जानकर, उपजा सँग-सँग त्रास ।।६४।।
दुख-सुख दोनों साथ ही, उपजे हिये भुवाल ।
तत्क्षण त्याग शरीर वह, गया काल के गाल ।।६५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होनी सब कुछ कर सके, होनी प्रबल महान ।
होनी आती सभी पर, विधि का यही विधान ।।६६।।
कृतवर्मा रोने लगा, कृपाचार्य के साथ ।
अश्वत्थामा विकल था, धरे माथ पर हाथ ।।६७।।
कृपाचार्य ने तब कहा, भाग तुरत तुम जाव ।
भला इसी में समझ लो, अपने प्राण बचाव ।।६८।।
भागा रथ चढ़ तुरत तब, अश्वत्थामा वीर ।
कृतवर्मा, कृप भी गये, भाग तुरत रणधीर ।।६९।।
होनी चाहे जो करे, सका न कोई जान ।
कब क्या होगा जगत में, नहीं किसी को भान ।।७०।।
धृष्टद्युम्न का सारथी, बचा मौत से एक ।
गया युधिष्ठिर पास वह, हत बुधि विगत विवेक ।।७१।।
कहा हाल सब शिविर का, मारे सब रणधीर ।
अश्वत्थामा ने हने, निशि में सारे वीर ।।७२।।
बच न सका कोई, मरे सब पांचाली शूर ।
पुत्र द्रौपदी के मरे, हुआ कर्म है क्रूर ।।७३।।
अश्वत्थामा ने किया, कृप कृतवर्मा संग ।
किया कर्म दुष्कर्म यह निशि में काटे अंग ।।७४।।
दुखी युधिष्ठिर हो गये, सुन करके यह हाल ।
विकल रुदन करते हुए, गिरे भूमि भूपाल ।।७५।।
भेज नकुल को तुरत फिर, दिया द्रौपदी पास ।
लाओ यहाँ बुला उसे, समझा मेटूँ त्रास ।।७६।।
सुना द्रौपदी ने जभी, यह दुख का सम्बाद ।
मूर्च्छित हो गिर पड़ी वह, फैला हृदय विषाद ।।७७।।
पहुँच युधिष्ठिर पास सब, कम्पित गात अधीर ।
चिल्लाते रोते खड़े, नयन बरसते नीर ।।७८।।
कहा द्रौपदी ने तभी, देख भीम की ओर ।
अश्वत्थामा ने किया, कैसा कार्य कठोर ।।७९।।
मणि उसके जो शीश में, लाओ उसे निकाल ।
ला उसको दीजै मुझे, वीर पाण्डु के लाल ।।८०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बदला उससे लो चुका, मारो उसको आप ।
तभी हृदय मम शान्त हो, और मिटे सन्ताप ।।८१।।
बना सारथी नकुल को, रथ पर हुये सवार ।
अश्वत्थामा हनन का, करके हृदय विचार ।।८२।।
कृष्णचन्द्र भगवान ने, देख भीम का कार्य ।
कहा चलो सँग भीम के, सुनो युधिष्ठिर आर्य ।।८३।।
अश्वत्थामा अति बली, ब्रह्म अस्त्र है पास ।
वह चाहे क्षण में करे, सकल सृष्टि का नाश ।।८४।।
गुरुवर द्रोणाचार्य ने, दिया उसे यह अस्त्र ।
अर्जुन को भी है दिया, ब्रह्म अस्त्र अरु शस्त्र ।।८५।।
इससे अर्जुन सँग ले, चलो सभी उस ठाम ।
तभी सिद्ध होगा सुनो, मन चाहा यह काम ।।८६।।
चले सभी उस ओर फिर, अर्जुन सँग भगवान ।
रक्षा करते भक्त की, केशव कृपा निधान ।।८७।।
अश्वत्थामा भाग कर, जाता था जिस ओर ।
भीम सहित ये चले फिर, करने को रण घोर ।।८८।।
अश्वत्थामा भाग कर, पहुँचा गंगा तीर ।
बैठे वेद व्यास तहँ, ऋषि मुनि सहित सुधीर ।।८९।।
घृत लेपन कर अंग में, अश्वत्थामा शूर ।
बैठा था उस जगह पर, आनन्दित भर पूर ।।९०।।
भीमसेन ने दूर से, देख उसे उस ठाम ।
ललकारी कटु वचन कह, कर मुझसे संग्राम ।।९१।।
धनुधर के ही संग हैं, मोहन नन्द किशोर ।
द्रोण पुत्र क्रोधित हुआ, देख भीम की ओर ।।९२।।
सीक उठाकर एक फिर, करके दृढ़ संकल्प ।
सोच रहा क्या करूँ मैं, मन में बहुत विकल्प ।।९३।।
दृढ़ निश्चय कर हृदय में, पाण्डव कुल का नाश ।
ब्रह्म अस्त्र फेंका तुरत, करके मन्त्र प्रकाश ।।९४।।
कहा कृष्ण ने शीघ्र तब, सुनो धनञ्जय वीर ।
ब्रह्म अस्त्र तुम भी हनो, एक यही तदबीर ।।९५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्जुन ने तत्काल फिर, लेकर धनु निज हाथ ।
कूद पड़ा रथ से तुरत, झुका भूमि को माथ ।।९६।।
हो मंगल गुरु पुत्र का, बचें पाण्डु के लाल ।
यही किया संकल्प तब, पढ़ा मंत्र तत्काल ।।९७।।
छोड़ दिया ब्रह्मास्त्र को, निकली अग्नि प्रचण्ड ।
दशो दिशा कम्पित हुईं, विचलित थे नवखण्ड ।।९८।।
श्रीयुत वेद व्यास अरु, नारद मुनि ऋषिराज ।
खड़े हुए आ मध्य में, निखिल विश्व के काज ।।९९।।
अश्वत्थामा से कहा, किया कर्म अति क्रूर ।
ब्रह्म अस्त्र रण में कभी, नहीं छोड़ते शूर ।।१००।।
लौटाओ इसको तुरत, छोड़ो यह दुष्कर्म ।
शूर वीर करते नहीं, ऐसा कभी अधर्म ।।१०१।।
अर्जुन ने तत्काल फिर, पढ़कर मन्त्र महान ।
लौटाया निज अस्त्र को, मुनि का कर सम्मान ।।१०२।।
अश्वत्थामा ने कहा, मुझे नहीं है ज्ञात ।
लौटाना इस अस्त्र का, मानो मेरी बात ।।१०३।।
भेज रहा हूँ इसलिए, इसको मैं इसकाल ।
देवि उत्तरा गर्भ में, है सुस्थित जो बाल ।।१०४।।
कहा कृष्ण ने ठीक है, गर्भ न होगा नष्ट ।
मर कर भी जीवित बचे, टल जायेगा कष्ट ।।१०५।।
दिया विप्र ने उत्तरा, को है यह वरदान ।
होगा पुत्र महाबली, करे विश्व सम्मान ।।१०६।।
अश्वत्थामा शीश की, मणि लेकर उस काल ।
लौट पड़े पाण्डव सहित, मोहन दीनदयाल ।।१०७।।
मणि रक्खी तब आयकर, द्रुपद सुता के हाथ ।
शोक तजो उपदेश दे, भ्रम मेटा ब्रजनाथ ।।१०८।।
बध करना गुरु पुत्र का, महा भयानक कर्म ।
इससे मारा है नहीं, समझो इसे अधर्म ।।१०९।।
मणि जो उसके शीश में, उसको लिया निकाल ।
मृतक सदृश वह हो गया, बोले श्री गोपाल ।।११०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहा द्रौपदी ने तभी, हुआ ठीक यह काम ।
धर्मराज को दी तभी, मणि वह दिव्य ललाम ।।१११।।
मायापति माया प्रबल, माया वश संसार ।
जो चाहें वह ही करें मोहन नन्द कुमार ।।११२।।
मोह दूर सबका किया, देकर सत उपदेश ।
जय माधव गोविन्द जय, जय गिरिधर गोपेश ।।११३।।
कह 'किशोर' जय कृष्ण जय,
मधुसूधन ब्रजचान्द ।
हिय में मेरे आ बसो,
भगंवन् ! आनँद कन्द ।।११४।।

श्रीकृष्ण को गान्धारी का शाप तथा रण में मारे गये शूर वीरों की अन्त्येष्टि क्रिया

विधिना ने जैसा लिखा, जो कुछ जिसके भाग ।
होता वही जरूर है, त्याग और अनुराग ।।१।।
कुरुपति नृप धृतराष्ट्र से, संजय ने यह हाल ।
सब विवरण के साथ में, बतलाया उस काल ।।२।।
दुखित नृपति सुनकर हुए, विचलित चित्त महान ।
मूर्च्छित होकर गिर पड़े, धनि होनी बलवान ।।३।।
आये वेद व्यास जी, सँग में विदुर सुजान ।
दिया ज्ञान, उपदेश बहु, कह मिथ्या जग जान ।।४।।
कह कर कथा अनेक फिर, भ्रम सब दिया मिटाय ।
और कहा होनी प्रबल, समझो हे नृपराय ।।५।।
सँग गान्धारी के चलो, कुरुक्षेत्र धीमान ।
और करो अन्तिम क्रिया, जिससे हो निर्वान ।।६।।
और पाण्डु सुत इस समय, समझो पुत्र समान ।
यही मार्ग सन्मार्ग है, इसमें ही कल्यान ।।७।।
चले संग ऋषिराज के, कुरुक्षेत्र सब लोग ।
सबको ही मिलता सदा, निज कर्मों का भोग ।।८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तर्यामी श्याम ने, जाना सारा हाल ।
गान्धारी क्रोधित महा, आती है इस काल ।।९।।
सोच युक्ति सब श्याम ने, मन ही मन अनुमान ।
रक्षित जिस विधि पाण्डु हों, समझे कृपा निधान ।।१०।।
कहा युधिष्ठिर से तभी, माधव ने समझाय ।
आते हैं धृतराष्ट्र इत, मिलें चलो हम जाय ।।११।।
कुछ आगे जाकर मिले, केशव सँग सब लोग ।
विकल हृदय व्याकुल सभी, ऐसा बना सँयोग ।।१२।।
जब देखा धृतराष्ट्र को, माधव ने उस काल ।
जान लिया सब कुछ तभी, उनके मन का हाल ।।१३।।
और कही कुरुराज से, समझा कर यह बात ।
होनी चाहे जो करें, दिन को करती रात ।।१४।।
मैंने पहले कहा था, छिड़े न जिससे जङ्ग ।
किन्तु हुई सबकी तभी, होनी वश मति भङ्ग ।।१५।।
होता है सब वही बस, जो विधि लिखा ललाट ।
मिटते हैं क्षण मात्र में, बड़े बड़े सम्राट ।।१६।।
जो जन्मा मरता वही, जन्म मरण के हेतु ।
सूर्य चन्द्र बचते नहीं, घेरें राहू केतु ।।१७।।
फिर भी लड़के आपके, और वंश के व्यक्ति ।
पालन कर निज धर्म को, लड़े युद्ध भर शक्ति ।।१८।।
क्षात्र धर्म करके गये, सबके सब सुरधाम ।
उनके हित दुख मानना, ठीक नहीं है काम ।।१९।।
क्या समझाऊँ आपको, आप स्वयं धीमान ।
भली भाँति सब धर्म का, प्रबल आपको ज्ञान ।।२०।।
पाण्डु सुवन हैं आपके, सदा भक्त अरु दास ।
पिता सदृश ही मानते, करें पूर्ण विश्वास ।।२१।।
तभी युधिष्ठिर ने किया, चरण स्पर्श प्रणाम ।
सेवक हूँ मैं आपका, बतलाया निज नाम ।।२२।।
गले लगा धृतराष्ट्र ने, दी उनको आशीष ।
देख दृश्य उस क्षण हुये, प्रमुदित मन जगदीश ।।२३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और समझ तत्काल ही, गये कृष्ण भगवान ।
भीमसेन से कुपित हैं, कुरुपति विकट महान ।।२४।।
लौह भीम की मूर्ति को, कर आगे घनश्याम ।
और कहा चुप भीम से, नृप को करो प्रणाम ।।२५।।
लौह भीम को नृपति ने, लिपटाया निज वक्ष ।
कस कर दाबा बाहु से, मन में समझ विपक्ष ।।२६।।
चाहा डालूँ पीस मैं, सुत संहारक भीम ।
बली बड़े धृतराष्ट्र थे, योद्धा शक्ति असीम ।।२७।।
लौह भीम कण कण हुआ, क्षण में ही उस ठाम ।
बचा लिया था भीम को, कर माया श्रीश्याम ।।२८।।
उधर हृदय धृतराष्ट्र का, करके कुत्सित काम ।
शोकाकुल तत्क्षण हुआ, लज्जित मन उस ठाम ।।२९।।
हाय भीम कहते हुये, रोते थे नृपराज ।
हा मैंने क्या कर दिया, क्रोधित हो दुष्काज ।।३०।।
कहा कृष्ण ने तुरत फिर, समझा कर भूपाल ।
लौह भीम को आपने, मारा है इस काल ।।३१।।
बचा भीम है आपका, चिन्ता करें न आप ।
कर प्रणाम तब भीम ने, मेटा मन सन्ताप ।।३२।।
गले लगा फिर भीम को, देकर आशीर्वाद ।
हर्षित कुरुपति हो गये, छूटा हृदय विषाद ।।३३।।
नकुल और सहदेव ने, वीर धनंजय साथ ।
कर प्रणाम कुरुराज को, धरे चरण पर माथ ।।३४।।
आशिष देकर नृपति ने, सबको फिर सानन्द ।
देख कार्य इस तौर फिर, हर्षित मन ब्रजचन्द ।।३५।।
संकट टालें भक्त के, भक्त वसल गोपाल ।
जय माधव गोविन्द जय, नँदनन्दन नँदलाल ।।३६।।
अगणित कौरव रानियाँ, विधवा दुखमय दीन ।
चिल्लाती रोतीं सभी, मुख थे शोभा हीन ।।३७।।
सँग गान्धारी के चलीं, कुरुक्षेत्र की ओर ।
मरे पड़े लख नृपति गण, जिनका ओर न छोर ।।३८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पिता, पुत्र, पति, स्वजन लखि, करतीं हाहाकार ।
दुख का उमड़ा सिन्धु था, जिसका वार न पार ।।३९।।
दिव्य दृष्टि का व्यास ने, देकर के वरदान ।
गान्धारी को दिया था, सचमुच दिव्य ज्ञान ।।४०।।
पट्टी बाँधे आँख पर, पर था सब आभास ।
दिव्य दृष्टि से देखती, जल थल अरु आकाश ।।४१।।
देखा जब उसने वहाँ, मरे पड़े बहु वीर ।
क्रोधवती विचलित हुई, उठी हृदय में पीर ।।४२।।
हाहा कर रोने लगी, ले वीरों के नाम ।
कर्ण, द्रोण, शल आदि के, कह-कह कर गुण ग्राम ।।४३।।
दुर्योधन को देखकर, मरे पड़े रण भूमि ।
अंग-भंग लथ-पथ लहू, गिरी लोथ पर झूमि ।।४४।।
हाय पुत्र कहती हुई, लिपटी उसके अंग ।
शोकाकुल इतनी हुई, ज्ञान शून्य मति भंग ।।४५।।
कहा कृष्ण से कुपित हो, रण में हुआ अधर्म ।
तुमने ही सब कुछ किया, करवाया दुष्कर्म ।।४६।।
क्षात्र धर्म विपरीत जब, किया भीम ने कार्य ।
तुमने देखा चुप रहे, करते कार्य अनार्य ।।४७।।
ज्ञानी, वीर, समर्थ तुम, फिर भी सके न रोक ।
भाई से भाई लड़ा, उपजाया यह शोक ।।४८।।
कौरव पाण्डव की तरह, हो यदुवंश विनाश ।
आपस में लड़कर मरें, बँधे काल के पाश ।।४९।।
हो अनाथ की भाँति ही, कृष्ण तुम्हारा अन्त ।
देती हूँ यह शाप मैं, पाओ क्लेश अनन्त ।।५०।।
जैसे रोती नारियाँ, हैं कुरु कुल की आज ।
वैसे ही यदुवंश की, भी धुल जाये लाज ।।५१।।
तुम देखो निज नैन से, समय पाय ब्रजराज ।
होंगे सारे कार्य ये, दिया शाप जो आज ।।५२।।
सुन गान्धारी शाप को, हँसे श्याम निष्काम ।
जो होनी थी वही सुन, बोले यों सुख धाम ।।५३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिरोधार्य है शाप तव, मुझे न दुख लवलेश ।
जो उपजा वह मरेगा, बचे न कोई शेष ।।५४।।
दुख-सुख केवल कल्पना, है मन का सन्देह ।
झूठा जग, सपना सभी, झूठा सब का नेह ।।५५।।
जो इच्छा घनश्याम की, होते वे ही काम ।
हर्ष शोक से मुक्त हैं, परब्रह्म घनश्याम ।।५६।।
गान्धारी ने सुने ज्यों, कृष्ण चन्द्र के बैन ।
क्रोध हटा चित से तुरत, हुई बहुत बेचैन ।।५७।।
आकर मैं आवेश में, क्या कर बैठी काम ।
बड़ा बुरा मैंने किया, दिया शाप जो श्याम ।।५८।।
कहा कृष्ण से तुरत फिर, क्षमा-क्षमा गोपाल ।
क्रोधित हो मैंने दिया, शाप तुम्हें नँदलाल ।।५९।।
क्रोध चढ़े सम्मोह हो, रहता नहीं विवेक ।
ज्ञानी जन भी भूलते, बचा न उससे एक ।।६०।।
फिर नारी मैं कृष्ण हूँ, ज्ञानहीन मति मन्द ।
भूली धर्म अधर्म सब, पड़ माया के फन्द ।।६१।।
खो बैठी मैं धर्म को, दिया शाप हे नाथ ।
क्षमाशील गोविन्द तुम, दया सिन्धु जगनाथ ।।६२।।
इतना कह रोने लगी, उठी हृदय में शूल ।
तड़प रही थी मीन सी, समझ बड़ी निज भूल ।।६३।।
मन्द-मन्द हँसते हुए, बोले श्री भगवान ।
होना था इस भाँति ही, विधि का यही विधान ।।६४।।
शाप नहीं वरदान यह, क्यों करती हो शोक ।
होनी होकर ही रहे, सके न कोई रोक ।।६५।।
सब दुख त्यागो हृदय से, करो न पश्चाताप ।
रण में मर सुरपुर गये, पुत्र पौत्र निष्पाप ।।६६।।
कह कर कथा अनेक फिर, मिथ्या जग समझाय ।
दूर किया भ्रम सवों का, श्री मोहन यदुराय ।।६७।।
और कहा धृतराष्ट्र से, धारा मन में धीर ।
मृतकों की अन्तिम क्रिया, करवाओ कुरुवीर ।।६८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आज्ञा दी धृतराष्ट्र ने, सुनो युधिष्ठिर बात ।
कर प्रबन्ध दो श्राद्ध का, विधि विधान से तात ।।६९।।
और बताओ तुम मुझे, धर्मराज ! यह बात ।
रण में कितने हैं मरे, शूर ज्ञात-अज्ञात ।।७०।।
महाबाहु ! सर्वज्ञ तुम, तुमको आत्मज्ञान ।
कुरु कुलदीपक विज्ञ तुम, तुमको सब कुछ भान ।।७१।।
कहा युधिष्ठिर ने तभी, समझो हे नृपराय ।
मर कर सुर पुर गये जो, उनको रहा गिनाय ।।७२।।
एक अरब योद्धा प्रबल, गिनिये छाछठ कोटि ।
बीस सहस बलवीर हैं, गये भूमि पर लोटि ।।७३।।
हैं इनके अतिरिक्त भी, कुछ योद्धा अज्ञात ।
गणना चौदह सहस है, उनकी सुनलो तात ।।७४।।
पता न जिनका चल सका, ऐसे वीर महान ।
दस सहस्त्र शत एक अरु, पैंसठ का अनुमान ।।७५।।
सुन बोले कुरुपति पुनः, कहो युधिष्ठिर राय ।
किसको कैसी गति मिली, यह भी दो बतलाय ।।७६।।
कहा युधिष्ठिर ने तभी, सुनिये हे भूपाल ।
दिव्य दृष्टि से कह रहा, स्वर्ग लोक का हाल ।।७७।।
युद्ध यज्ञ में हर्ष युत, की आहुति निज देह ।
गति पाई है उन्होंने, सुरपति सम सस्नेह ।।७८।।
मरना सबको एक दिन, यह चित में अनुमान ।
हर्ष सहित लड़ते हुए, त्यागे जिनने प्रान ।।७९।।
गन्धर्वों में जा मिले, वे सब वीर सुधीर ।
बसे वहाँ आनन्द से, छोड़ सकल भव पीर ।।८०।।
यक्ष लोक में वे गये, जो थे अति भयभीत ।
भागे थे रण भूमि से, सके न रिपु को जीत ।।८१।।
ब्रह्मलोक उनको मिला, जो थे अति बलधाम ।
शस्त्र हीन होते हुए, छोड़ा नहि संग्राम ।।८२।।
प्राण दान मांगा नहीं, नहीं दिखाई पीठ ।
काल बने रिपु के रहे, लाल लाल कर दीठ ।।८३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्षात्र धर्म पालन किया, मोह त्याग तज प्रान ।
पाया है उन सबों ने, सुर दुर्लभ निर्वान ।।८४।।
समर देखने के लिए; आकर त्यागे प्रान ।
वे उत्तर कुरुक्षेत्र में, जन्मेंगे धीमान ।।८५।।
फिर बोले धृतराष्ट्र यों, है आश्चर्य महान ।
दिव्य दृष्टि का मिला है, तुमको किससे ज्ञान ।।८६।।
कही युधिष्ठिर ने तभी, ज्ञान योग की बात ।
दिव्य दृष्टि जिससे मिली, सुनो पूज्य हे तात ।।८७।।
पाकर आज्ञा आपकी, किया जभी बनवास ।
लोमस ऋषि की कृपा से, हुआ मुझे आभास ।।८८।।
और युधिष्ठिर ने किया, अन्तिम क्रिया प्रबन्ध ।
घृत चन्दन की चिता जल, फैली गन्ध सुगन्ध ।।८९।।
क्रिया-कर्म विधिवत् किया, सबका एक समान ।
गंगा तट को चल दिये, कुरुपति पाण्डु सुजान ।।९०।।
कृष्ण संग ऋषि व्यास थे, नारदादि मुनिराज ।
गंगा तट पहुँचे सभी, नर अरु नारि समाज ।।९१।।
कर स्नान सबने किया, मृतकों को जलदान ।
पिण्डदान अरु श्राद्ध कर, किया विप्र सम्मान ।।९२।।
लिखा हुआ जो शास्त्र में, विधिवति कर सब कर्म ।
शुद्ध हुए गोदान दे, पाले निज कुल धर्म ।।९३।।
शोकाकुल चिन्तित महा, मन में पश्चाताप ।
धर्मराज के हृदय में, व्याप्त हुआ सन्ताप ।।९४।।
तुच्छ राज्य-हित वंश का, करवाया है नाश ।
महापाप मुझसे हुआ, सोच-सोच मन त्रास ।।९५।।
नहीं करूँगा राज्य अब, बसूँ विपिन में जाय ।
बोले सबसे यही फिर, धर्मराज समझाय ।।९६।।
कही भीम ने विविध विधि, धर्मशास्त्र अरु नीति ।
नकुलार्जुन सहदेव भी, बोले वही सप्रीति ।।९७।।
करें राज्य पालें प्रजा, क्षात्र धर्म अनुरूप ।
सब शास्त्रों का मत यही, मानें निश्चय भूप ।।९८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुनिवर वेद व्यास अरु, नारदादि मुनि धीर ।
वेद शास्त्र उपदेश दे, बोले गिरा गम्भीर ।।९९।।
छोड़ो मन वैराग्य तुम, करो युधिष्ठिर राज ।
जनहित चित लेकर करो, निःस्वारथ यह काज ।।१००।।
नहीं मरा कोई यहाँ, लो मन में यह जान ।
आत्मा मरती है नहीं, तुम्हें स्वयं यह ज्ञान ।।१०१।।
किन्तु युधिष्ठिर का हृदय, कर न सका स्वीकार ।
तब बोले फिर स्वयं ही, मोहन नन्द कुमार ।।१०२।।
है अनार्य का मारना, क्षात्र धर्म अनुकूल ।
किया धर्म ही आपने, हुई न कोई भूल ।।१०३।।
जो उपजा मरता वही, यह ही जग की रीति ।
शोक वृथा मत करो तुम, मानो वचन प्रतीति ।।१०४।।
कह कर कथा अनेक फिर, जो जन्मे भूपाल ।
धर्म निष्ठ त्यागी बड़े, तपसी वीर कृपाल ।।१०५।।
होते आये आदि से, ऐसे पुरुष महान ।
बचे न वे भी काल से, समझो तुम धीमान ।।१०६।।
इससे त्यागो शोक को, करो राज महराज ।
जन हित इसमें ही सुनो, है उत्तम यह काज ।।१०७।।
विविध भांति उपदेश दे, धर्म नीति समझाय ।
लाय हस्तिनापुर उन्हें, संग में श्री ब्रजराय ।।१०८।।
हुआ राज्य-अभिषेक फिर, वेद ध्वनि के साथ ।
अभिनन्दन कर प्रजा ने, उन्हें झुकाया माथ ।।१०९।।
भीमसेन को किया फिर, हरि ने था युवराज ।
मन्त्री पद का विदुर को, सौंप दिया सब काज ।।११०।।
हयगयरथ आदिक अमित, रत्न अनेक प्रकार ।
दिये दान बहु भांति के, कर द्विजगण सत्कार ।।१११।।
प्रजा हुई सन्तुष्ट सब, मन चाहा लख काम ।
हर्ष नाद करते हुए, बोले सब जय श्याम ।।११२।।
जो चाहें वह ही करें, त्रिभुवन पति ब्रजचन्द ।
कवि 'किशोर' भजते रहो, कृष्ण सच्चिदानन्द ।।११३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भीष्मपितामह का उपदेश

शोभित फिर से हुई वह, पुरी हस्तिनापूर ।
प्रजा सुखी सन्तुष्ट सब, दुख द्वन्दों से दूर ।।१।।
धर्मराज के राज में, राष्ट्र भक्त सब लोग ।
बैर द्वेष ईर्ष्या नहीं, नहीं किसी को रोग ।।२।।
प्रजातंत्र था राज्य में, सुन्दर सभी प्रबन्ध ।
प्रजा राज्य का परस्पर था, उत्तम सम्बन्ध ।।३।।
ऋषि-मुनि आते नित्य ही, धर्मराज के पास ।
हरि चर्चा होती सदा, सहित प्रेम विश्वास ।।४।।
कृष्णचन्द्र थे संग में, जो त्रिभुवन के नाथ ।
धर्म ज्ञान उपदेश दे, करते सदा सनाथ ।।५।।
एक दिवस की बात है, धर्मराज महराज ।
गये भवन श्रीकृष्ण के, हरि दर्शन के काज ।।६।।
ध्यानावस्थित कृष्ण थे, पद्मासन आरुढ़ ।
रूप अलौकिक दिव्य वपु, थी समाधि अति गूढ़ ।।७।।
खड़े युधिष्ठिर देखते, ठगे-ठगे से नैन ।
हरि मुख शोभा देखते, बोल सके नहिं बैन ।।८।।
खड़े रहे कुछ काल फिर, हरि ने खोले नैन ।
कर प्रणाम नृपराज ने, कहे कृष्ण से बैन ।।९।।
किसका करते ध्यान थे, आप स्वयं भगवान ।
संशय मेरे चित्त का, दूर करें श्रीमान ।।१०।।
जग भजता है आपको, सब देवों के देव ।
आप भजें किसको प्रभो ! समझ न पाया भेव ।।११।।
मंद-मंद हँसते हुए, बोले श्री घनश्याम ।
भीष्मपितामह भक्त है, सुमिर रहा मम नाम ।।१२।।
गंगा शान्तनु तनय वह, ब्रह्मनिष्ठ बलवान ।
शर शय्या में पड़ा जो, लगा रहा है ध्यान ।।१३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुद्ध चित्त निष्काम जो, धरता है मम ध्यान ।
मैं जाता हूँ वहीं पर, यह है मेरी बान ।।१४।।
कुरु कुल में गंगा तनय, सर्व श्रेष्ठ धीमान ।
वेद-शास्त्र उपनिषद अरु, सब तत्वों का ज्ञान ।।१५।।
आत्मज्ञानी है नहीं, जग में उनसा और ।
ब्रह्मचर्य व्रत निष्ठ वे, महापुरुष सिरमौर ।।१६।।
उत्तर दिशि में सूर्य जब, मकर राशि में जाहिं ।
भीष्म तजेंगे प्राण तब, इसमें संशय नाहिं ।।१७।।
समय निकट है समझ लो, चलो चलें हम लोग ।
फिर आने का है नहीं, ऐसा शुभ संयोग ।।१८।।
धर्म ज्ञान उपदेश लें, चलकर उनके पास ।
धर्मराज से इस तरह, बोले रमा निवास ।।१९।।
पाँचों भ्राता साथ ले, चले कृष्ण सुखधाम ।
दर्शन देने भीष्म को, अन्तर्यामी श्याम ।।२०।।
जा पहुँचे कुरुक्षेत्र में, शरशय्या के तीर ।
श्याम भजन में लीन थे, जहाँ भीष्म बलवीर ।।२१।।
बैठे उनके पास थे, श्रीयुत वेद व्यास ।
नारद, वात्स्य, सुमन्तु ऋषि, जिनको दिव्याभास ।।२२।।
देवल अरु शाण्डिल्य थे, कौशिक और वशिष्ठ ।
लोमश, दत्तात्रेय गुरु, कश्यप दक्ष, वशिष्ठ ।।२३।।
कपिल, च्यवन, बाल्मीकि थे, तुम्बुरू सनत् कुमार ।
परशुराम, मौद्गल्य, कुरु, शोभा अपरम्पार ।।२४।।
पुलह अङ्गिरा, धौम्य क्रतु, कच मुनि मार्कण्डेय ।
अश्मक, देवस्थान, ऋषि, जैमिनि अरु मैत्रेय ।।२५।।
मग्रव्रती संवर्त ऋषि, काश्यप और पुलस्त्य ।
वायु, पराशर, धौम्र भृगु, भास्करि, पूर्ण, अगस्त्य ।।२६।।
ऋषि मरीचि, गौतम तथा, पिप्पलाद मुनिराज ।
गालव अरु तृण विन्दु ऋषि, श्रेष्ठ काश्य ऋषिराज ।।२७।।
श्री विभाण्ड, माण्डाव्य अरु, ऋषि उलूक, हारीत ।
अनुभौतिक ऋषि कृष्ण थे, घेरे उन्हें सप्रीत ।।२८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और अनेक महर्षि थे, बैठे भीष्म समीप ।
करते हरि गुणगान थे, जला ज्ञान का दीप ।।२९।।
श्रद्धा शम दम शौच से, सब ऋषि मुनि सम्पन्न ।।
जल फल दुग्धाहार युत, नहिं खाते जो अन्न ।।३०।।
सबने अभिवादन किया, देख श्याम छविधाम ।
भीष्मपितामह ने किया, हरि को हेर प्रणाम ।।३१।।
पाण्डु सुतों ने तुरत तब, सबको किया प्रणाम ।
भीष्मपितामह के चरण, परसे वहाँ ललाम ।।३२।।
सबने आशिष दी उन्हें, प्रेम हर्ष के साथ ।
भीष्मपितामह से तभी, बोले श्री ब्रजनाथ ।।३३।।
धर्मराज के हृदय कुछ, शंकायें उत्पन्न ।
उन्हें मिटा सकते तुम्हीं, धर्म-शास्त्र सम्पन्न ।।३४।।
सब वेदों के विज्ञ हो, तुम हो नीति निधान ।
कर्मयोग योगी तुम्हें, सब धर्मों का ज्ञान ।।३५।।
सुन माधव के वचन यों, भीष्मपितामह धीर ।
जयति-जयति जय कृष्ण कह, बोले गिरा गँभीर ।।३६।।
परब्रह्म भगवान हरि, निराकार साकार ।
सर्वव्यापी सर्वपति, तुम हो जगदाधार ।।३७।।
जो कुछ मुख से कहें प्रभु, वही वेद का तत्व ।
मैं जुगुनू प्रभु भानु हैं, मेरा कौन महत्त्व ।।३८।।
और शिथिल सब अङ्ग हैं, चित चंचल है नाथ ।
फिर भी आज्ञा आपकी, है मेरे सिर माथ ।।३९।।
कहा युधिष्ठिर से तभी, गोविन्द ने समझाय ।
मन में जो सन्देह हो, लो तुम उसे मिटाय ।।४०।।
उठे युधिष्ठिर तुरत फिर, बढ़े पितामह ओर ।
चरणों में निज शीश धर, बोले बचन निहोर ।।४१।।
पूज्य पितामह आप हैं, कुरुकुल के अवतंस ।
ज्ञान सरोवर बीच हैं, स्वयं आप कलहंस ।।४२।।
पहिले मुझे बताइये, राज धर्म विस्तार ।
धर्म अर्थ अरु काम के, सहित मोक्ष व्यवहार ।।४३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंकुश वश जिमि गज रहे, और करै सब काम ।
घोड़े को वश में करै, जैसे एक लगाम ।।४४।।
उसी भांति संसार की, मर्यादा के हेतु ।
अगम नीति के सिन्धु में, राजधर्म है सेतु ।४५।।
भीष्मपितामह ने कहा, सुनो युधिष्ठिर वीर ।
सत्य सनातन धर्म नृप, सुनो धार उर धीर ।।४६।।
प्रथम धर्म है नृपति का, रक्खे प्रजा प्रसन्न ।
सुर द्विज पूजा रत रहे, दया धर्म सम्पन्न ।।४७।।
सदा रहे पुरुषार्थ रत, रहे न दैवाधीन ।
नृप की नीति प्रधान यह, रहे यत्न में लीन ।।४८।।
सत्य परायण जितेन्द्रिय, शीलवान गुणवान ।
हर्षित मुख कोमल हृदय, दीनों को दे दान ।।४९।।
कोमल और कठोर बन, समय समय अनुसार ।
जो शासन करता सदा, उसका बेड़ा पार ।।५०।।
उपज अग्नि की नीर से, अरु पत्थर से लोह ।
क्षत्रिय उपजा विप्र से, उचित न पितु से द्रोह ।।५१।।
अग्नि नीर संघार्ष में, होता पावक नष्ट ।
लोहा पत्थर से भिड़े, होता कुण्ठित भ्रष्ट ।।५२।।
क्षत्रिय करता द्वेष यदि, है ब्राह्मण के साथ ।
अपनी दुष्कृति का कुफल, पाता हाथे हाथ ।।५३।।
इससे ब्राह्मण का करे, भूप सदा सत्कार ।
यही मार्ग सन्मार्ग है, समझो पाण्डु कुमार ।।५४।।
किन्तु विप्र यदि युद्ध हित, दे सम्मुख ललकार ।
कैद करै उस विप्र को, राज धर्म अनुसार ।।५५।।
विप्र करे अपराध यदि, देय न दैहिक दण्ड ।
निष्कासित कर देश से, करदे नष्ट घमण्ड ।।५६।।
कुन्ती नन्दन ! नीति के, समझो चार प्रमान ।
आगम अरु प्रत्यक्ष सँग, अनुमति अरु उपमान ।।५७।।
इन चारों से ही करे, निज पर की पहचान ।
आवश्यक हर नृपति को, इन चारों का ज्ञान ।।५८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दूर दुर्व्यसन से रहे, सोच समझ धीमान ।
व्यसनी नृप का सर्वदा, होता है अपमान ।।५९।।
जैसे नारी गर्भिणी, रखे गर्भ का ध्यान ।
गर्भ स्थित शिशु के लिए, भोगे कष्ट महान ।।६०।।
खान पान नियमित करे, इच्छित तजे पदार्थ ।
रक्षा हित निज गर्भ की, छोड़े अगणित स्वार्थ ।।६१।।
ज्यों ही नृप को चाहिए, रहे प्रजाहित लीन ।
सुत सम समझे प्रजा को, वह है भूप प्रवीन ।।६२।।
कभी न त्यागे धैर्य को, दोषी को दे दण्ड ।
प्रेम सहित पाले प्रजा, त्यागे सदा घमण्ड ।।६३।।
अनुचर को सेवक समझ, करे प्रेम व्यवहार ।
तजे हास-परिहास नृप, समझो पाण्डु कुमार ।।६४।।
क्योंकि भृत्य परिहास से, हो मर्यादा नष्ट ।
अपमानित होता नृपति, राज्य कार्य हों भ्रष्ट ।।६५।।
इससे सेवक से सदा, ले सेवा का काम ।
कार्य पूर्ति पर दे उन्हें, राजा सदा इनाम ।।६६।।
राजाओं को चाहिए, करें पूर्ण उद्योग ।
भोग भोग कर भोग के, रहें सदा निर्भोग ।।६७।।
चूहे जो बिल में रहें, निर्बल बनकर दीन ।
नाग निगल जाता उन्हें, समझो नृपति प्रवीन ।।६८।।
नृप ब्राह्मण घर बैठकर, होंय न उन्नति शील ।
यही शुक्र की नीति है, समझो पुत्र सुशील ।।६९।।
जो विरोध के पात्र हों, उनसे करे विरोध ।
जो कि प्रेम के पात्र हों, करे सन्धि अनुरोध ।।७०।।
राज्य अंग शुचि सात हैं, राजा मन्त्री कोष ।
मित्र देश, सेना किला, इन्हें बनावे ठोस ।।७१।।
इनका करे विरोध जो, राज द्रोह ले मान ।
चाहे प्रिय अरु मित्र हो, हर ले उनके प्रान ।।७२।।
नृप मरुत्त की नीति है, जो गुरु हो उद्दण्ड ।
पूजनीय दुष्पथ चले, देवे उसको दण्ड ।।७३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नृपति सगर ने नगर हित, सुत को दिया निकाल ।
प्रजा हेतु सब कुछ करे, वही श्रेष्ठ भूपाल ।।७४।।
देना जिसको जिस समय, रक्खे उसका ध्यान ।
सत्य क्षमा उद्योग को, पाले भूप सुजान ।।७५।।
क्रोध जीत जिसने किया, मन पर है अधिकार ।
नहीं प्रकट करता कभी, अपने गुप्त विचार ।।७६।।
धर्म अर्थ अरु काम सँग, करे मुक्ति के यत्न ।
भूप समझ लो तुम उसे, राजाओं में रत्न ।।७७।।
चारो वर्णों के करे, धर्मों का सम्मान ।
नहीं किसी के धर्म का, कभी करे अपमान ।।७८।।
विश्वासी का भी कभी, करे न नृप विश्वास ।
अविश्वस्त भी हो नहीं, रहे नीति का दास ।।७९।।
काम क्रोध मद लोभ से, मन को लेवे खींच ।
दुनियाँ में रहते हुए, फँसे न दुनियाँ बीच ।।८०।।
राजनीति षड्गुणमयी, सन्धि, युद्ध अरु यान ।
आसन द्वैधी भाव अरु, वीर ! समाश्रय जान ।।८१।।
इन सबके गुण दोष पर, रक्खे अपनी दृष्टि ।
यम समान न्यायी बने, कर करुणा की वृष्टि ।।८२।।
धन कुबेर सम जोड़कर, करे राज्य की वृद्धि ।
धन राजा का अङ्ग है, धन ही सकल समृद्धि ।।८३।।
निर्धन को धन दे सदा, भूखों को दे अन्न ।
हँसमुख, रहकर हर समय, रक्खे प्रजा प्रसन्न ।।८४।।
सेवा वृद्धों की करे, गुरुजन से कर प्रीति ।
त्यागे आलस लोभ को, यह पाले जो नीति ।।८५।।
वही राज्य के योग्य है, राजा सुनो प्रवीन ।
प्रजा सुखी सन्तुष्ट है, नहीं हीन अरु दीन ।।८६।।
दुर्जन से धन छीन कर, दे सज्जन को दान ।
शुद्ध सदाचारी स्वयं, रहे सदा यह ध्यान ।।८७।।
करे सहायक सर्वदा, शूर-वीर अरु भक्त ।
हृष्ट-पुष्ट बलवान अरु, शिष्ट पुरुष अनुरक्त ।।८८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धर्म परायण अटल हों, पर्वत-साधु समान ।
रक्षक हों सम्मान के, शास्त्रों के विद्वान ।।८९।।
राज भक्ति आरूढ़ हों, सके न दुश्मन फोड़ ।
आन-बान अरु शान में, जो होवें वेजोड़ ।।९०।।
सुनो सहायक साथ है - नृप का नृप ! क्या धर्म ।
अपना सा सुख-भोग दे, पाले नृप का कर्म ।।९१।।
छत्र हुकूमत छोड़कर, हो व्यवहार समान ।
सहयोगी अरु नृपति का, इसमें ही कल्यान ।।९२।।
क्रोध और दुर्व्यसन से, रहे सदा नृप दूर ।
इन्द्रिय पर अधिकार हो, प्रजा प्रेम भरपूर ।।९३।।
राजा मनु की नीति है, नृप ! यह मानव धर्म ।
जन-जन का कर्तव्य है, जन-जन का यह कर्म ।।९४।।
सदुपदेश देवे नहीं, जो आचार्य प्रवीन ।
ऋत्विक होकर भी रहे, वेद मंत्र से हीन ।।९५।।
नृप रक्षक होवे नहीं, कटु वचना हो नार ।
गोपालक जंगल तजे, करे गाँव से प्यार ।।९६।।
सेवक जंगल में बसें, रहें गाँव से दूर ।
इन छह को त्यागे सदा, जनता हो मजबूर ।।९७।।
जैसे टूटी नाव से, होय न सागर पार ।
त्याग नाव देते सभी, होकर के लाचार ।।९८।।
इससे नृप का धर्म है, पाले प्रजा सप्रीति ।
राज्य करे निर्भय वही, यह ही मनु की नीति ।।९९।।
सब धर्मों का सार है, पाले प्रजा नरेश ।
राजधर्म यह प्रथम है, शास्त्रों का सन्देश ।।१००।।
पूज्य वृहस्पति, शुक्र मनु, भरद्वाज अरु दक्ष ।
विशालाक्ष मुनि गौर शिर, सुरपुर के अध्यक्ष ।।१०१।।
इन सबकी सम्मति यही, समझो नृपति सुजान ।
प्रजा पालने का सदा, रक्खे राजा ध्यान ।।१०२।।
गुप्तचरों से कार्य ले, पूछे सारे भेद ।
प्रजा सुखी सम्पन्न रख, मेटे उनके खेद ।।१०३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राजद्रोह में रत अगर, हो कोई समुदाय ।
घोर दण्ड देकर उसे, जड़ से देय मिटाय ।।१०४।।
राजदूत अरु गुप्तचर, होवें उत्तम व्यक्ति ।
हित चिन्तक सत्पुरुष हों, सहित ज्ञान बल शक्ति ।।१०५।।
ये साधन दो नृपति के, सुनो युधिष्ठिर धीर ।
अब जो शंका और हो, सो पूछो बलवीर ।।१०६।।
प्रश्न युधिष्ठिर ने किया, सुनो पितामह धीर ।
राजा कैसे बना है, समझाओ हे ! वीर ।।१०७।।
सब नर एक समान हैं, पंच तत्त्व सब एक ।
फिर राजा का भेद क्यों, कहिए सहित विवेक ।।१०८।।
भीष्मपितामह ने कहा, सुनो युधिष्ठिर तात ।
सतयुग के आरम्भ में, नहीं राज्य की बात ।।१०९।।
फिर राजा की बात्त क्या, कैसा राजा नाम ।
दण्ड्य, दण्ड भी था नहीं, नहीं पाप के काम ।।११०।।
सबकी सबसे प्रीति थी, सम सबका व्यवहार ।
सब रक्षक थे परस्पर, सबसे सबका प्यार ।।१११।।
बीता जब कुछ काल तो, हुआ परस्पर भेद ।
भूला ज्ञान विवेक तब, बढ़ा मोह औ खेद ।।११२।।
बढ़ा लोभ तृष्णा बढ़ी, चहते सब सुख भोग ।
बढ़ी कामना काम की, बढ़े राग ज्यों रोग ।।११३।।
भूल गये कर्तव्य को, भूल गए सब धर्म ।
मर्यादा को त्याग कर, करते कर्म-कुकर्म ।।११४।।
मृत्यु लोक में धर्म का, जब न रहा आभास ।
गए देवता त्रस्त हो, श्री ब्रह्मा के पास ।।११५।।
मृत्यु लोक में इस समय, हुआ धर्म का लोप ।
दूर इसे प्रभु कीजिए, जो है दैवी कोप ।।११६।।
यह सुन ब्रह्मा ने कहा, डरो न तुम सुर वृन्द ।
युक्ति सोच ली सुदृढ है, मिट जायें दुख द्वंद्व ।।११७।।
एक लाख अध्याय रचि, बतलाया सुचि पन्थ ।
अर्थ धर्म अरु काम का, तीन वर्ग मय ग्रन्थ ।।११८।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मोक्ष वर्ग चौथा कहा, तीन वर्ग से भिन्न ।
जो समझे इस तत्व को, होय न वह फिर खिन्न ।।११९।।
नीति शास्त्र रचकर किया, ब्रह्मा ने विस्तार ।
ग्रन्थ अगम विस्तृत महा, समझे श्री त्रिपुरार ।।१२०।।
शिवशंकर, गुरु इन्द्र अरु, शुक्राचार्य महान ।
सूक्ष्म रूप इसका किया, मिलता यही प्रमान ।।१२१।।
नरश्रेष्ठ पृथु हुए जब, जन जन के प्रतिपाल ।
अपना कर इस नीति को, बने भूप भूपाल ।।१२२।।
रञ्जन करके प्रजा का, किया राज पद प्राप्त ।
मेटे भू के पाप सब, किये अधर्म समाप्त ।।१२३।।
तब से राजा जगत में, पाता रहा महत्व ।
धर्मराज को भीष्म ने, समझाया यह तत्व ।।१२४।।
और बहुत सी नीति कह, समझाये सब धर्म ।
वर्णाश्रम का मर्म अरु, नृप का क्या है कर्म ।।१२५।।
ऋषि मुनि भूपों की कथा, कहकर अमित अनेक ।
समझाया सब सत्य था, संयत सहित विवेक ।।१२६।।
इसी भांति नित आयकर, भीष्म पितामह पास ।
धर्मराज श्रीकृष्ण सँग, सुनैं पूर्व इतिहास ।।१२७।।
अमित कथा विस्तार से, कहते भीष्म सुजान ।
धर्मराज अनुजों सहित, सुनते कर सम्मान ।।१२८।।
धर्म शास्त्र अरु नीति है, जैसे सिन्धु अगाध ।
पाना इसका पार है, दुर्गम कठिन असाध ।।१२९।।
सो पाऊँ मैं पार किमि, अल्प बुद्धि मतिहीन ।
यही सूक्ष्म, विस्तृत समझ, गुन लें चतुर प्रवीन ।।१३०।।
सब शङ्कायें दूर कर, लेकर विस्तृत ज्ञान ।
गये हस्तिनापूर सँग, धर्मराज भगवान ।।१३१।।
कुछ दिन रह कर कृष्ण जी, धर्मराज के साथ ।
राज काज सब सुदृढ़ कर, बोले ब्रज के नाथ ।।१३२।।
मैं जाऊँ अब द्वारका, सुनो युधिष्ठिर धीर ।
जननि जनक दर्शन करूँ, हुये दिवस बहु बीर ।।१३३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिरोधार्य आज्ञा प्रभो, बोले कुन्ती लाल ।
समुचित सभी प्रबन्ध कर, भेजे श्री गोपाल ।।१३४।।
संग सुभद्रा भी गई, पुरी द्वारिका धाम ।
हाथ जोड़ मस्तक झुका, सबने किया प्रणाम ।।१३५।।
पहुँचाने कुछ दूर तक, प्रजा सहित भूपाल ।
गये विदुर भी साथ में, संग पाण्डु के लाल ।।१३६।।
लौटाये श्रीकृष्ण ने, समझाकर सब लोग ।
पुनः मिलेंगे आयकर, पाकर शुभ संयोग ।।१३७।।
दारुक अरु सात्यकी से, बोले श्री घनश्याम ।
तेज करो घोड़े जरा, खींचो शीघ्र लगाम ।।१३८।।
सारथि रथ गति तीव्रकर, चले द्वारका ओर ।
वायु वेग सा रथ चला, घर घर करता शोर ।।१३९।।
पहुँचे प्रभु द्वारावती, प्रमुदित लख समुदाय ।
जय गिरिधर गोपाल जय, कहते सब हुलसाय ।।१४०।।
मिले कृष्ण सबसे वहाँ, सबका कर सम्मान ।
जय माधव गोविन्द जय, जय केशव भगवान ।।१४१।।
जय अनादि घनश्याम जय, जय अच्युत गोपाल ।
जन 'किशोर{ के कृष्ण जय, जय गिरिधर नँदलाल ।।१४२।।

स्वधाम प्रयाण

निराकार साकार हो, रहें जहाँ भगवान ।
धाम द्वारका का करें, सुर मुनि सभी बखान ।।१।।
धन्य द्वारका धाम है, धन्य वहाँ के लोग ।
बसैं संग भगवान के, रहे परम सुख भोग ।।२।।
वंश बड़ा भगवान का, नितप्रति बढ़ता जाय ।
हो असंख्य जब बढ़ गये, यदुवंशी समुदाय ।।३।।
सभी वीर बलवान हैं, रूपवान गुणवान ।
नीतिशास्त्र औ' धर्म का, सबको समुचित ज्ञान ।।४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सब बसते आनन्द से, थे सब सुख संयुक्त ।
नित करते थे दान सब, होकर हस्तोन्मुक्त ।।५।।
सुख के दिन थे बीतते, होता हास विलास ।
प्रमुदित चित सबके रहें, सँग में रमा निवास ।।६।।
अतिशय लास विलास से, हो जाती मति भ्रष्ट ।
अतिशय सुख होता जहाँ, वहीं उपजता कष्ट ।।७।।
माँ सीता अति रूपसी, हरीं गई बन बीच ।
रावण के अति गर्व था, आई उसकी मीच ।।८।।
अति दानी बलि नृपति थे, करते थे अति दान ।
बाँधा बलि भगवान ने, अति का यही निदान ।।९।।
अति की हिरना कशिप ने, दिया पुत्र को कष्ट ।
प्रकट हुए नरसिंह तब, उसे कर दिया नष्ट ।।१०।।
अति वर्जित सर्वत्र है, इसके विविध प्रमान ।
जहाँ-जहाँ भी अति हुई, पहुँचा कष्ट महान ।।११।।
पड़ अति भोग विलास में, यदुवंशी समुदाय ।
सुरा सुन्दरी में रमा, सब सद्बुद्धि विहाय ।।१२।।
देख दशा यदुवंश की, चकित हुए भगवान ।
लगे सोचने कृष्ण तब, विधि का विकट विधान ।।१३।।
मन ही मन भगवान के, आया यही विचार ।
पूर्ण हुए सब कार्य्य हैं, अव रहना बेकार ।।१४।।
वंश बढ़ा यदुराज का, जिसका वार न पार ।
मन आया गोविन्द के, हो इसका संहार ।।१५।।
इसी बीच आये वहाँ, हरि इच्छा अनुसार ।
गाधि-तनय नारद सहित, ऋषिवर कण्व उदार ।।१६।।
दुर्वासा मुनि आदि जो, परम तपस्वी धीर ।
बसे तीर्थ में आय कर, तपकर करैं शरीर ।।१७।।
सेवा यदुवंशी करैं, ऋषियों की सानन्द ।
होनी होकर ही रहै, कटै न उसका फन्द ।।१८।।
ज्ञानी से ज्ञानी बड़े, भूलें, होनी बीच ।
होनी प्रबल महान है, सबको लेती खींच ।।१९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रामचन्द्र भगवान थे, सब था उनको ज्ञान ।
कंचन-मृग मारीच है, रहे सभी कुछ जान ।।२०।।
फिर भी होनी ने किया, भ्रमवश राम सुजान ।
पीछे उसके हो लिये, राम शरासन तान ।।२१।।
सारण पर होनी चढ़ी, गई बुद्धि बौराय ।
कृष्ण पुत्र श्री शाम्ब को, नारी वेश बनाय ।।२२।।
बाँध कड़ाही पेट पर, गर्भवती कर रूप ।
पहुंचे ऋषियों के निकट, अद्भुत धरे स्वरूप ।।२३।।
ऋषियों से बोले तभी, सुनिये कृपा निधान ।
यह स्त्री श्री वभ्रु की, आई है श्रीमान ।।२४।।
क्या है इसके गर्भ में, देवें आप बताय ।
देख रूप छलछन्द का, कुपित हुए ऋषिराय ।।२५।।
शाप दिया तत्काल ही, मूसल इसके पेट ।
हो उत्पन्न विनाश हित, जो यदुकुल दे मेट ।।२६।।
सहम गये सुनकर वचन, चंचल चित्त अधीर ।
भूल मसखरी गये तब, उठी ह्रदय में पीर ।।२७।।
धरा कड़ाही ने तुरत, मूसल का आकार ।
उग्रसेन विचलित हुए, करते हा-हा-कार ।।२८।।
रेती से रेतवा उसे, दिया सिंधु में फेंक ।
होनी होकर ही रहे, कौन सका है छेंक ।।२९।।
लहर उठी तब सिंधु में, होनी महा महान ।
लगे किनारे लौहकण, हरि माया बलवान ।।३०।।
सरपत होकर उगे वे, और हुआ विस्तार ।
कण लोहे के उगे तो, बनी शस्त्र की धार ।।३१।।
मूसल रित कर बचा था, कुछ लोहे का अंश ।
खा उसको मछली गई, नाश हेतु यदुवंश ।।३२।।
मछली वह पकड़ी गई, डाल सिंधु में जाल ।
लुब्धक के हाथों लगी, चला चक्र उस काल ।।३२३।।
मछली के फिर पेट से; वह ही लौह निकाल ।
लुब्धक ने निज बाण पर, लगा लिया तत्काल ।।३४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिन्तित फिर भी हृदय में, यदुवंशी समुदाय ।
शंकित रहते थे सभी, सोचें, नित्य उपाय ।।३५।।
दी आज्ञा नृपराज ने, दें सब मदिरा त्याग ।
रहें परस्पर प्रेम से, और करें अनुराग ।।३६।।
कुछ दिन बीते इसी विधि, और हुए निःशङ्क ।
भूले निज अभिमान में, समझे नहिं विधि अंक ।।३७।।
जो इच्छा श्रीकृष्ण की, हुए वही सब काम ।
हुआ शाप इस हेतु ही, जय-जय लीलाधाम ।।३८।।
अन्धक वृष्णी वंश के, यदुवंशी समुदाय ।
अशुभ स्वप्न देखें विविध, निशि में नित घबराय ।।३९।।
इसी भाँति चिंतित रहें, मन चंचल बेचैन ।
दिन में भाता कार्य्य नहिं, नींद न आती रैन ।।४०।।
आपस में मंत्रणा की, चलें तीर्थ सब लोग ।
पावन क्षेत्र प्रभास में, रह कर साधें योग ।।४१।।
यही सोच कर चले सब, पावन क्षेत्र प्रभास ।
योग साधने के लिए, सँग में रमानिवास ।।४२।।
पहुँच तीर्थ में, नित्य ही, करते थे सब दान ।
नियम धर्म सब साधकर, भजते थे भगवान ।।४३।।
योंही बीते कुछ दिवस, सबके सब सानन्द ।
हरि-माया ऐसी हुई, हुए सभी स्वच्छन्द ।।४४।।
जो इच्छा थी श्याम की, यदुवंशी हों नष्ट ।
सुरापान करने लगे, इस से हो मति भ्रष्ट ।।४५।।
पी-पी कर मदहोश हो, खो कर सारा ज्ञान ।
आपस में लड़ने लगे, हरि माया बलवान ।।४६।।
समझाया बलराम ने, और कृष्ण ने साथ ।
पर मानी नहिं एक ने, लड़े खड्ग ले हाथ ।।४७।।
अस्त्र शस्त्र से लगे वे, करने प्रबल प्रहार ।
एक-एक को मार कर, पाते हर्ष अपार ।।४८।।
अस्त्र शस्त्र जब हो गए, उनके सभी समाप्त ।
तब सरपत से युद्ध कर, किया मोक्ष को प्राप्त ।।४९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसी भाँति लड़कर हुआ, नष्ट स्वयं यदुवंश ।
क्योंकि कृष्ण थे चाहते, यदुकुल का विध्वंश ।।५०।।
यदुवंशी सब नष्ट लख, सोचे मन बलराम ।
जाना मुझे अभीष्ट है, अब मेरा क्या काम ।।५१।।
साध योग माया तुरत, हुये सिन्धु में लीन ।
शेष बचो श्रीकृष्ण ही, योगीराज प्रवीन ।।५२।।
सुन्दर पीपल वृक्ष लख, लेटे करुणाधाम ।
मन ही मन कहने लगे, शेष न अब कुछ काम ।।५३।।
शान्त-भाव से भूमि पर, लेटे श्री घनश्याम ।
घुटने पर रख पैर को, प्रमुदित लीलाधाम ।।५४।।
इसी समय आया वहाँ, लुब्धक नामक व्याध ।
प्रभु-पद-पद्म विलोक कर, लिया निशाना साध ।।५५।।
भ्रान्ति हुई मृग-नेत्र की, भूला सारा ज्ञान ।
मत्स्य-प्राप्त लौहांश-युत, छोड़ा वह ही बान ।।५६।।
लगा कृष्ण के चरण में, बही रुधिर की धार ।
लुब्धक ने आकर लखा, अच्युत कृष्ण मुरार ।।५७।।
दुखी हुआ रोने लगा, कर-कर पश्चाताप ।
अभय-दान दे कृष्ण ने, मेट दिया संताप ।।५८।।
और कहा हरि ने तभी, तुमतो हो निर्दोष ।
इच्छा मेरी थी यही, मुझे न इसमें रोष ।।५९।।
नहीं पाप तुमको लगे, होगी सद्गति प्राप्त ।
तुम मेरे ही अंश हो, होगे मुझ में व्याप्त ।।६०।।
दारुक सारथि ने कहा, धर चरणों पर माथ ।
रथ पर जायें बैठ प्रभु, चलें द्वारका नाथ ।।६१।।
कहा कृष्ण ने जाव तुम, पुरी द्वारका धाम ।
बतलाना यह हाल सब, बोले लीलाधाम ।।६२।।
अर्जुन, जननी जनक से, कहना यों समझाय ।
छोड़ द्वारका देंय सब, देर न होने पाय ।।६३।।
अर्जुन के सँग जाँय सब, पुरी हस्तिनापूर ।
लीन सिन्धु में होयगी, द्वारावति भरपूर ।।६४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गया द्वारका सारथी, आज्ञा धर कर शीश ।
चलने हित निज लोक को, सोचे श्री जगदीश ।।६५।।
क्या गान्धारी शाप वह, क्या दुर्वासा शाप ।
क्या लुब्धक का बाण वह, क्या उसके कर चाप ।।६६।।
यह तो केवल खेल था, हेतु मात्र की बात ।
बिन इच्छा गोविन्द की, हिलता एक न पात ।।६७।।
जो इच्छा हो आपकी, बानक बनते आप ।
क्या इच्छा है आपकी, कौन सका है भाँप ।।६८।।
जो चाहो वह ही करो, सभी आपके हाथ ।
जय माधव गोविन्द जय, जगत्पते जदुनाथ ।।६९।।
हरि गुण अगम अथाह है, महिमा महा महान ।
नेति-नेति कह वेद में, वर्णित हैं गुणगान ।।७०।।
वर्णन कर थक गये हैं, सुर-गण मुनि ऋषि सन्त ।
सबने आखिर कहा है, अच्युत अगम अनन्त ।।७१।।
गुण गाये श्री व्यास ने, लिखकर पुण्य पुरान ।
जिनको पढ़ भव पार हों, जन-जन पावें ज्ञान ।।७२।।
ब्रह्मा शिव सुरराज औ{, वरुणादिक सुरवृन्द ।
बरसाते थे पुष्प सब, कह जय-जय ब्रजचन्द ।।७३।।
धरा भार हल्का किया, सुरगण किये निहाल ।
जय माधव गोविन्द जय, जय जय श्री गोपाल ।।७४।।
दीनबन्धु भगवान जय, जय जय करुणाधाम ।
जय गिरधर गोपाल जय, जय माधव जय श्याम ।।७५।।
निराकार साकार जय, परब्रह्म भगवान ।
मधुसूदन जय कृष्ण जय, जय-जय कृपानिधान ।।७६।।
इसी बीच श्रीकृष्ण ने, करके योगाभ्यास ।
नयन बन्द अपने किये, श्री हरि रमानिवास ।।७७।।
चले गये निज लोक को, होकर अन्तर्धान ।
सत्य सच्चिदानन्दघान, निराकार भगवान ।।७८।।
सुर-द्विज-गो-दुख-हरण हरि, जय माधव ब्रजचन्द ।
गुण गाते सुरगण सभी, जय हरि आनँद कन्द ।।७९।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पता न सुरगण पा सके, कहाँ गये भगवान ।
लीला लीलाधाम की, कौन सका है जान ।८०।।
गुण गाते ही गये सब, सुरगण निज-निज धाम ।
भक्त वछल गोविन्द जय, मधुसूदन घनश्याम ।।८१।।
पार न पाया किसी ने, महिमा महा महान ।
पूर्ण कला अवतार हरि, परब्रह्म भगवान ।।८२।।
अगम अथाह असीम वह, उसका वार न पार ।
व्यापक सबमें है वही, उसका सब संसार ।।८३।।
हैं अनन्त भगवन्त हरि, सत्य सच्चिदानन्द ।
निराकार माया रहित, रूप हीन स्वच्छन्द ।।८४।।
पता न जिनका है कहाँ, कैसा उनका वेश ।
जड़ चेतन सबमें वही, ऐसे हैं सर्वेश ।।८५।।
सब भजते हैं उन्हीं को, गुणातीत भगवान ।
नेति-नेति कहि वेद भी, करते जिनका गान ।।८६।।
भक्त जनों के हेतु ही, लेते हैं अवतार ।
श्याम सलोना रूप धर, आते बन साकार ।।८७।।
निराकार साकार हरि, योगेश्वर घनश्याम ।
लीलापति लीला अगम, करें चरित अभिराम ।।८८।।
ध्रुव ने सुमिरा कृष्ण को, था अबोध वह बाल ।
भक्त-बछल आये तुरत, मनमोहन गोपाल ।।८९।।
राज्य भोग इस भूमि पर, पाया फिर ध्रुवलोक ।
आनन्दित बसता वहाँ, जहाँ न हर्ष न शोक ।।९०।।
सुवा पढ़ा गणिका तरी, है प्रसिद्ध यह बात ।
नारायण कह कर तरा, अजामील विख्यात ।।९१।।
मरा-मरा कहकर भजा, किया आपको प्राप्त ।
बाल्मीकि के पास सब, क्षण में हुए समाप्त ।।९२।।
गज ने टेरा आपको, धाये नंगे पाँव ।
ग्राह मार रक्षा करी, पहुँच तुरत उस ठाँव ।।९३।।
और अनेकों तर गये, गाकर हरि गुण गान ।
कृष्ण कथा महिमा महा, किस विधि करूँ बखान ।।९४।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुण गण श्री घनश्याम के, अगम अथाह अनन्त ।
शारद शेष महेश अरु, गाते ऋषि मुनि सन्त ।।९५।।
पढ़ै सुनै जो हरि कथा, मनचाहा फल पाय
इस जग में सब कुछ मिलै, भव बंधन छुट जाय ।।९६।।
भक्ति भाव से पढ़ इसे, हरदम हरि-गुण गाव ।
कृष्ण कथा ही जगत में, भवसागर की नाव ।।९७।।
मुक्त परीक्षित को किया, साज मुक्ति के साज ।
धन्य-धन्य शुकदेव मुनि, परमहंस ऋषिराज ।।९८।।
हरि-गुण गायक और जो, हुये प्रवीण अनन्त ।
कवि पण्डित ऋषि मुनि तथा, भक्त साधु औ सन्त ।।९९।।
उन सबके पद-कमल की, धरूँ शीश मैं धूल ।
जिनके पुण्य प्रभाव से, मिला ज्ञान अनुकूल ।।१००।।
हरि चर्चा में लगे जो, उनको करूँ प्रणाम
हिय में जिनके हरि बसैं, नटनागर घनश्याम ।।१०१।।
इस असार संसार में, सार कृष्ण का नाम ।
कृष्ण-कृष्ण कहते रहो, पूर्ण होंय मन काम ।।१०२।।
करो कृपा गोविन्द यह, भजूँ सदा निष्काम ।
श्याम-श्याम कहता रहूँ, और न भावे काम ।।१०३।।
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतपटी तन धार ।
मुरली अधरन धरे हरि, नागर नन्दकुमार ।।१०४।।
बसो रमापति दृगों में, देखूँ आठो याम ।
उर 'किशोर' के आ रमो, रूप मनोहर श्याम ।।१०५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेखक-परिचय

पूज्य पितामह मम रहे, लाला मातादीन
गो ब्राह्मण के भक्त थे, राम-नाम-रस-लीन ।।१।।
उनके सुत मम पिता थे, बाबू ताराचन्द ।
नित सुरसरि सेवा निरत, पाया परमानन्द ।।२।।
मातामह कविवर रहे, श्री द्वारका प्रसाद ।
भारतेन्दु के समय में, दिया काव्य-रस-स्वाद ।।३।।
राधा औ श्रीकृष्ण का, गाया गुण-गन-गान ।
नाम 'द्वारका शतक' रख, गये 'अवध'* मतिमान ।।४।।
सुन्दर देवी नाम की, सुन्दर देवी मात ।
धर्म कर्म आरूढ़ नित, भजतीं श्यामल गात ।।५।।
उन्निस सौ छप्पन रहा, विक्रमीय शुभ साल ।
कार्तिक कृष्णा पंचमी, मैं जन्मा जिस काल ।।६।।
मेरा नाम 'किशोर' है, चन्द सहित मैं मन्द ।
पढ़ा लिखा कुछ हूँ नहीं, भजता हूँ ब्रजचन्द ।।७।।
नित आते थे विप्रगण, पूज्य पितामह पास ।
करते हरि-गुण-गान थे, सह श्रद्धा विश्वास ।।८।।
वे विप्रों के भक्त थे, करते यही बखान ।
सचो मन से मान लो, ब्राह्मण है भगवान ।।९।।
मैं भी बचपन में रहा, बैठा उनके सङ्ग ।
सुनता हरि-गुण गान था, लखता उनके ढङ्ग ।।१०।।
कथा कहानी समझ कर, सुनता था सोल्लास ।
खेल कूद सब भूलकर, पूज्य पितामह पास ।।११।।

---

*औध-यह वही प्रसिद्ध 'औध' कवि है जो सातन पुरवा जिला रायबरेली के निवासी थे। द्वारका जी ने अपने ग्रन्थ 'द्वारका शतक' में लिखा है — अवध प्रसाद बाजपई से समुझाकर 'द्वारका शतक' याको नाम धरवाय है ।

स्व० नाना जी एक बड़े रईस थे । उनको अच्छे अच्छे कवियों का सत्सग प्राप्त रहता था । इतिहास में 'अवध' जी का नाम अयोध्या प्रसाद उल्लिखित है पर 'द्वारका शतक' के उल्लेख से अवध प्रसाद ही ठीक जान पड़ता है 'द्वारका शतक' के छन्दों में भी 'अवध' कवि की सी अनुप्रास प्रियता है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दादा जी ने दी मँगा, मुझको कथा अनेक ।
जो उर्दू में थी छपी, सुनते सहित विवेक ।।१२।।
मैं पढ़ता नितप्रति रहा, सुनते दादा आप ।
'सुख सागर' की कथा को, धुलते जिससे पाप ।।१३।।
तुलसीकृत भी दी मँगा, सुने राम गुन-गान ।
ग्रन्थ महाभारत तथा, और अनेक पुरान ।।१४।।
दादा के सत्संग से, मिला मुझे यह ज्ञान ।
हरि-गुण ही चित में वसे, राम कृष्ण भगवान ।।१५।।
शुक्ल वंश अवतंस हैं, कवियों के सम्राट ।
पूज्य 'सनेही' गुरु प्रवर, जिनका सुयश विराट ।।१६।।
पूर्वज पुण्य प्रताप से, सद्गुरु का सत्संग ।
नितप्रति होता ही रहा, मिला काव्य रस रंग ।।१७।।
गुरुवर ने बतला दिया, मुझको दोहा छन्द ।
और कहा गाया करो, हरि-चरित्र सानन्द ।।१८।।
योगिराज श्री कृष्ण के, चरित मनोज्ञ पवित्र ।
लगा खींचने पद्य में, उनके मनहर चित्र ।।१९।।
उन्निस सौ अठानवे, विक्रमीय था साल ।
श्री 'व्रजचन्द्र विनोद' की, रचना का शुभ काल ।।२०।।
एकाधिक दो सहस में, समझें गुणी प्रवीन ।
लगभग पूरा हो गया, लगे वर्ष कुल तीन ।।२१।।
जहाँ चूक मुझसे हुई, लेवें सुवुध सुधार ।
नत मस्तक होकर सदा, मानूँगा उपकार ।।२२।।
भाषा का नहिं वोध कुछ, नहीं काव्य का ज्ञान ।
श्री गुरुवर की कृपा से, हुए द्रवित भगवान ।।२३।।
सरस सुधा-रस हरि चरित, मेरो विरस वखान ।
माटी हू के घट भरे, घटे न सुरसरि मान ।।२४।।
गुण ही गुण देखें गुणी, हरि-गुण अवगुण हीन ।
अवगुण मेरे और मैं, ज्ञानहीन मति दीन ।।२५।।
श्री व्रज-चन्द्र विनोद की, कथा पढ़ैं जो भक्त ।
प्रेमी श्री गोविंद के, सुनकर हों अनुरक्त ।।२६।।
उनसे विनय 'किशोर' की, नत मस्तक कर जोर ।
यह वर दें 'जव जंन्म लूँ, सुमिरूँ नन्द-किशोर' ।।२७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शताब्दि वर्ष पर

गौ, ब्राह्मण सेवी स्व0 बाबू किशोर चन्द जी कपूर की विशेष ख्याति दोहाकार के रूप में है। दोहाकार में भी ब्रजचन्द विनोद जैसे महाग्रन्थ की रचना के बाद उन्हें साहित्य में भक्त कवि के रूप में स्वीकार किया गया। उनका निश्छल व्यक्तित्व निश्चय ही भक्ति के उदात्त भावों के पुष्पन पल्लवन के लिए एक आदर्श क्षेत्र था किन्तु कोई भी व्यक्ति कवि होता ही तब है जब वह संवेदना को जीता है, उसके हृदय में करुणा का स्फुरण होता है, उसका भाव जगत इतना विस्तृत हो जाता है कि फिर उसके लिए कोई पराया नहीं रह जाता। कपूर साहब ने इस उदात्त मनो भूमि पर बड़े ठाठ से कविता के बीज बोए और इनके पौधों से भक्ति के मुक्ता फल प्राप्त किए। बाबू जी की बीज से फल तक की इस यात्रा में जो पड़ाव पड़े वे अभी तक अचर्चित और अनछुए हैं। उन्होंने एक कवि के रूप में स्वतन्त्रता आंदोलन को भी अपनी कविता का विषय बनाया और जीवन के अन्य सुखद-दुखद प्रसंगों को भी। अपनी बेटी दुर्गा के निधन पर उन्होंने जो दोहे रचे उनमें एक पिता की पीड़ा परिवार के मुखिया की समझदारी, और एक चिन्तनशील भारतीय का मृत्यु के प्रति दृष्टिकोण कुछ इस ढंग से काव्य बद्ध हुआ है कि पाठक कुछ समय के लिए स्तब्ध सा हो जाता है। आपके भक्ति पद एवं गीत प्रचुर संख्या में हैं। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं--

'चलो सखि दर्शन करि आवें आवत नन्द किशोर।
मोर मुकुट पीताम्बर धारे, मोहि लियो मन मोर।
ग्वाल बाल सब संग सखागन, घेरे हैं चहुँ ओर।'

'यह संसार असार सार इसमें क्या पाना है।
झूठा सब व्यवहार जगत में, झूठा कारोबार जगत में,
झूठा सब व्यापार जगत में, झूठा सब अधिकार जगत में,
फिर क्यों भूला फिरे, साथ कुछ भी नहिं जाना है।'

बाबू जी ने लावनी और खयाल रचना में भी अपनी एक पहचान बनाई किन्तु उनका यह सब साहित्य अभी अप्रकाशित है। बाबू जी का यह शताब्दि वर्ष है। इस अवसर पर उनके पुत्र द्वय मोहन चन्द्र जी कपूर तथा मदन चन्द जी कपूर ने अपने पूज्य पिताश्री की काव्य साधना के सर्वाधिक गमकते पुष्प ब्रज चन्द विनोद' का पुनर्प्रकाशन करके पितृ ऋण से उऋण होने का एक विनम्र सार्थक प्रयास किया है और इस कार्य में मुझे भी यत्किञ्चित सहयोग का सुअवसर प्रदान कर उपकृत होने का अवसर दिया है। मुझे विश्वास है कि वे अभी मुझे अपने इस उपकार से मुक्ति प्राप्त करने का अवसर नहीं देंगे और हम हिन्दी पाठकों के समक्ष स्व0 बाबू किशोर चन्द जी कपूर की अन्य कृतियाँ भी शीघ्र प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकेंगे।

प्रतीक मिश्र (डॉ०)
रीडर, हिन्दी-विभाग
डी.ए-वी. कालेज, कानपुर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शताब्दि वर्ष पर

गौ, ब्राह्मण सेवी स्व0 बाबू किशोर चन्द जी कपूर की विशेष ख्याति दोहाकार के रूप में है। दोहाकार में भी ब्रजचन्द विनोद जैसे महाग्रन्थ की रचना के बाद उन्हें साहित्य में भक्त कवि के रूप में स्वीकार किया गया। उनका निश्छल व्यक्तित्व निश्चय ही भक्ति के उदात्त भावों के पुष्पन पल्लवन के लिए एक आदर्श क्षेत्र था किन्तु कोई भी व्यक्ति कवि होता ही तब है जब वह संवेदना को जीता है, उसके हृदय में करुणा का स्फुरण होता है, उसका भाव जगत इतना विस्तृत हो जाता है कि फिर उसके लिए कोई पराया नहीं रह जाता। कपूर साहब ने इस उदात्त मनो भूमि पर बड़े ठाठ से कविता के बीज बोए और इनके पौधों से भक्ति के मुक्ता फल प्राप्त किए। बाबू जी की बीज से फल तक की इस यात्रा में जो पड़ाव पड़े वे अभी तक अचर्चित और अनछुए हैं। उन्होंने एक कवि के रूप में स्वतन्त्रता आंदोलन को भी अपनी कविता का विषय बनाया और ज़ीवन के अन्य सुखद-दुखद प्रसंगों को भी। अपनी बेटी दुर्गा के निधन पर उन्होंने जो दोहे रचे उनमें एक पिता की पीड़ा परिवार के मुखिया की समझदारी, और एक चिन्तनशील भारतीय का मृत्यु के प्रति दृष्टिकोण कुछ इस ढंग से काव्य बद्ध हुआ है कि पाठक कुछ समय के लिए स्तब्ध सा हो जाता है। आपके भक्ति पद एवं गीत प्रचुर संख्या में हैं। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं--

'चलो सखि दर्शन करि आवें आवत नन्द किशोर।
मोर मुकुट पीताम्बर धारे, मोहि लियो मन मोर।
ग्वाल बाल सब संग सखागन, घेरे हैं चहुँ ओर।'

'यह संसार असार सार इसमें क्या पाना है।
झूठा सब व्यवहार जगत में, झूठा कारोबार जगत में,
झूठा सब व्यापार जगत में, झूठा सब अधिकार जगत में,
फिर क्यों भूला फिरे, साथ कुछ भी नहिं जाना है।'

बाबू जी ने लावनी और खयाल रचना में भी अपनी एक पहचान बनाई किन्तु उनका यह सब साहित्य अभी अप्रकाशित है। बाबू जी का यह शताब्दि वर्ष है। इस अवसर पर उनके पुत्र द्वय मोहन चन्द्र जी कपूर तथा मदन चन्द जी कपूर ने अपने पूज्य पिताश्री की काव्य साधना के सर्वाधिक गमकते पुष्प ब्रज चन्द विनोद' का पुनर्प्रकाशन करके पितृ ऋण से उऋण होने का एक विनम्र सार्थक प्रयास किया है और इस कार्य में मुझे भी यत्किञ्चित सहयोग का सुअवसर प्रदान कर उपकृत होने का अवसर दिया है। मुझे विश्वास है कि वे अभी मुझे अपने इस उपकार से मुक्ति प्राप्त करने का अवसर नहीं देंगे और हम हिन्दी पाठकों के समक्ष स्व0 बाबू किशोर चन्द जी कपूर की अन्य कृतियाँ भी शीघ्र प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकेंगे।

प्रतीक मिश्र (डॉ०)
रीडर, हिन्दी-विभाग
डी.ए-वी. कालेज, कानपुर